राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

[राजस्थानी - हिन्दी साहित्य-श्रेणी]

प्रकाशित ग्रन्थ

(१) कान्हड़दे प्रबन्ध – महाकवि पद्मनाभ।
(२) क्यामखां रासा – नवाब अलफखां (कविवर जान)।
(३) लावा रासा – चारण कविया गोपालदान।
(४) राजस्थानी साहित्य-संग्रह, भाग १।
(५) बांकीदासरी ख्यात – महाकवि बांकीदास।

प्रेस में

(१) उक्तिरत्नाकर – पं० साधुसुन्दर गणि।
(२) वसन्त विलास – अज्ञात कर्तृक।
(३) गोरा बादल पदमिणी चऊपई – कवि हेमरतन।
(४) मुंहता नैणसीरी ख्यात – मुंहता नैणसी।
(५) राजस्थान में संस्कृत साहित्य की खोज – एस आर. भंडारकर।
(६) सुजान सवत् – कवि उदयराम।
(७) चन्द्रवंशावली – मोतीराम।
(८) जुगल विलास – कवि पीथल।
(९) वीरवांण – ढाढी बादर।
(१०) राजस्थानी दूहा-संग्रह।
(११) कविन्द्र कल्पलतिका – कवीन्द्राचार्य।

बाँकीदासरी ख्यात

संपादन-कर्ता

प० नरोत्तमदासजी स्वामी एम् ए.

अध्यक्ष

हिन्दी-विभाग, महाराणा भूपाल कॉलेज, उदयपुर

★

प्रकाशन-कर्ता

संचालक, राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर

जयपुर (राजस्थान)

★

[प्रथमावृत्ति, प्रति स० ७५०]

विक्रमाब्द २०१३ } मूल्य ४) रु० ५० न० पै० { खिस्ताब्द १९५६

मुद्रक—राजस्थान टाइम्स प्रेस लि० अजमेर और जयपुर प्रिंटर्स, जयपुर।

विषय-सूचि



प्रधान सम्पादकीय वक्तव्य

चारण-कवियो का हमारे इतिहास में विशेष महत्त्वपूर्ण स्थान है। इन कवियो ने अपनी ओजमई वाणी से सदा ही हमारा मार्ग-प्रदर्शन किया है। चारणो में हजारो कुशल साहित्यकार हो गये है, जिन्होने भिन्न-भिन्न विषयो पर रचना की है। चारणो का प्रसार मुख्यत राजस्थान, मध्यभारत और गुजरात में हुआ है और इन्ही देशो में चारण-साहित्य भी विशेष उपलब्ध होता है।

अपनी काव्य-प्रतिभा और उज्ज्वल चरित्र से चारण हमारी जनता में आदरणीय रहे हैं और समय-समय पर देश-सेवा में भी अद्भुत् उदाहरण प्रस्तुत करते रहे है। महाकवि दुरसा आढा, ईसरदास बारहठ, वाकीदास, मुरारीदान, महाकवि सूर्यमल, कविराजा श्यामलदास और केसरीसिंह बारहठ आदि हमारे देश के प्रमुख चारण साहित्यकार माने जाते है।

वाकीदास हमारे देश के एक महान् कवि और इतिहासकार हो गये है। अपनी काव्य-प्रतिभा से ही उन्होने एक निर्धन चारण-कुल में जन्म लेकर जोधपुर के राज्य-दरबार में सर्वोच्च सम्माननीय आसन प्राप्त किया था। महाकवि वाकीदास की काव्यात्मक रचनाएँ वाकीदास-ग्रन्थावली के नाम से तीन भागो में काशी नागरी प्रचारिणी सभा से प्रकाशित हो चुकी हैं और इनके देखने पर कवि के काव्य-कौशल की सराहना करनी पडती है।

राजस्थान के निष्प्राण नरेशो ने ईस्ट इन्डिया कम्पनी की अधीनता बिना ही युद्ध के स्वीकार कर ली थी। वाकीदास एक राष्ट्रीय विचारो के कवि थे और इसलिये उन्होने अपनी रचनाओ में राजस्थानी नरेशो को अग्रेजी शासन स्वीकार करने के कारण प्रताडित किया था। "आयो अगरेज मुलकरे ऊपर" शीर्षक महाकवि का गीत राजस्थान में बहुत प्रसिद्ध हो गया है और हाल ही में हुई खोज द्वारा महाकवि वाकीदास की अन्य राष्ट्रीय रचनाओ की जानकारी भी मिली है।

कवि होने के साथ ही वाकीदास एक इतिहासकार भी थे। प्राचीन काल में काव्य-लेखन इतिहास-लेखन से भिन्न नही समझा जाता था। यही कारण है कि प्राचीन काल के कई कवि इतिहासकार भी माने जाते है और कई इतिहास-ग्रन्थ पद्य में ही मिलते है। महाकवि सूर्यमल रचित "वशभास्कर" नामक ऐतिहासिक काव्य-ग्रन्थ इस कथन का एक अच्छा उदाहरण है।

महाकवि वाकीदास की इतिहास-विषयक कृति "वाकीदासरी ख्यात" राजस्थानी गद्य में लिखी गई है। राजस्थान का पूर्ण क्रमिक इतिहास तैयार करने में यह रचना एक आधार-ग्रन्थ के रूप में सहायक हो सकती है। महाकवि वाकीदास को इतिहास का अच्छा ज्ञान था और समय-समय पर वे अपनी जानकारी को सक्षिप्त विवरण के रूप में लिपिबद्ध करते रहे थे।

राजस्थान के सुप्रसिद्ध विद्वान श्रीयुत् प० नरोत्तमदासजी स्वामी ने "वाकीदासरी

ख्यात" के विवरणो को क्रमवद्ध किया है। राजस्थान पुरातत्त्वान्वेपण मन्दिर (Rajasthan Oriental Research Institute) के उद्देश्यो में एक प्रधान उद्देश्य राजस्थान के प्राचीन साहित्य को प्रकाश में लाने का है। तदनुसार "राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला" के अन्तर्गत इस ग्रन्थ को प्रकाशित किया जा रहा है। विद्वद्ज्जनो के सम्मुख इस ग्रन्थरत्न को प्रस्तुत करते हुए हमें विशेप प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है।

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेपण मन्दिर, जयपुर,
दीपावली पर्व, २०१३ वि०

मुनि जिनविजय
समान्य सचालक



प्रस्तावना

राजस्थानी भाषा का ऐतिहासिक गद्य-साहित्य और ख्यात

राजस्थानी में प्राचीन गद्य प्रभूत मात्रा में पाया जाता है। ऐतिहासिक गद्य उसका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अग है। प्राचीन ऐतिहासिक गद्य की ऐसी प्रचुरता असमिया को छोड कर भारतवर्ष की किसी आर्य-भापा में नही मिलती। असमिया भारत की प्राच्यतम भापा है तो राजस्थानी पाश्चात्य-तम।

राजस्थानी के ऐतिहासिक गद्य के अनेक रूप है, जैसे ख्यात, वात, वसावळी, पीढिया-वळी, पट्टावळी, विगत, हकीगत, हाल, याद, वचनिका, दवावैत आदि। ख्यात इतिहास को कहते है। वात में किसी व्यक्ति या जाति या घटना या प्रसग का सक्षिप्त इतिहास होता है। ख्यात वडी होती है और वात छोटी। वसावळी और पीढियावळी में पीढिया दी जाती हैं, जिनके साथ में व्यक्तियो का सक्षिप्त या विस्तृत परिचय भी प्राय रहता है। पट्टावळी में जागीरदारो के पट्टे अर्थात् जागीरो का विवरण रहता है। जैनो की पट्टावलियो में विविध गच्छो के पट्टधर आचार्यों की पीढिया और उनका सक्षिप्त परिचय होता है। विगत का अर्थ विवरण है। हकीगत और हाल में किसी घटना या प्रसग का विस्तृत वर्णन होता है। याद याददाश्त को कहते हैं। वचनिका और दवावैत ऐतिहासिक काव्य होते हैं। इनमें गद्य-वाक्यो के युग्म होते हैं जिनकी तुकें मिलती जाती हैं। वचनिका में साथ में पद्य भी मिश्रित होता है। सवसे प्राचीन वचनिका चारण शिवदास की वनाई हुई 'अचळदास खीचींरी वचनिका' है, जिसकी रचना स० १४६० के लगभग हुई थी। दूसरी महत्त्वपूर्ण वचनिका खिडिया शाखा के चारण जग्गा की वनाई हुई 'राव रतन महेसदासौतरी वचनिका' है, जिसका रचनाकाल स० १७१५ के लगभग है।

विविध जातियो की वशावळिया भाट, मथेरण आदि लिखते रहे हैं। जैन वशावळियो के १०–१५ वडे-वडे पोथे श्री अगरचन्द नाहटा के सग्रह में हैं। वच्छावत वशावळी आदि कई वशावळिया तो इतिहास के लिये बड़ी महत्त्वपूर्ण है। जैन श्रीपूज्य लोगो के 'दफ्तर' अर्थात् पत्र-सग्रह (Records) भी महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक गद्य की कृतिया हैं।

विविध राज्यो की पीढियावळिया प्राचीनकाल से लिखी जाती रही है, परं उनमें से अधिकांश अव उपलव्ध नही। ऐसी कुछ कृतिया बीकानेर के अनूप सस्कृत पुस्तकालय जैसे कई-एक सग्रहो में विद्यमान हैं।

सत्रहवी शताब्दी में सम्राट् अकवर हुआ। उसे इतिहास से वडा प्रेम था। उसके शासन में इतिहास-लेखन को वहुत प्रोत्साहन प्राप्त हुआ। राजपूत राजाओ को भी उसने प्रेरित किया और तव से राज्यो की ओर से नियमित ख्यातें लिखी जाने लगी। इस समय उपलब्ध ख्यातें सत्रहवी शताब्दी से ही आरम्भ होती हैं।

राजकीय ख्यातो के लेखक राजकीय कर्मचारी, पचोळी आदि लोग थे। पर कई व्यक्तियो ने स्वतन्त्र रूप से भी ख्यातें लिखी। इनमें नैणसी, दयालदास और वाकीदास के नाम

विशेष महत्त्वपूर्ण हैं। इनकी ख्यातो का महत्त्व ऐतिहासिक ही नही, किन्तु साहित्यिक भी है। तीनो ही कृतिया प्राचीन राजस्थानी गद्य की अत्यन्त प्रौढ और उत्कृष्ट रचनाऐं कही जा सकती है।

'ख्यात' के दो प्रकार किये जा सकते हैं—

(१) जिसमे सळग या लगातार इतिहास हो, जैसे दयालदास की ख्यात।

(१) जिसमे अलग-अलग 'वातो' का सग्रह हो, जैसे नैणसी की ख्यात।

वाकीदास की ख्यात दूसरे प्रकार में अन्तर्भूत होती है, पर नैणसी की ख्यात से वह भिन्न प्रकार की है। नैणसी की ख्यात की 'वातें' वडी-वडी हैं जो कई पृष्ठो तक चलती हैं। उनको क्रम से लगा देने से सळग इतिहास वन जाता है। पर वाकीदास की 'वातें' - छोटे-छोटे फुटकर नोटो के रूप में हैं। लेखक को जव जो वात नोट करने योग्य मिली, उसने तभी उसे नोट कर लिया। उनमें कोई क्रम नही है। क्रम से लगाने पर भी उससे शृङ्खलाबद्ध और सळग इतिहास नही वनता। अधिकाश वातें दो-दो अथवा तीन-तीन पक्तियो की ही हैं। पूरे पृष्ठ तक चलने वाली वातें कोई विरली ही है।

वांकीदास

वाकीदास आसिया शाखा के चारण थे। चारणो के दो भेद काछेला (कच्छ के) और मारू (मारवाड के) हैं। आसिया मारू चारणो की एक शाखा है, जिसका आरम्भ आसा नामक व्यक्ति से हुआ। राजस्थान में वहुत पहले नाग जाति का राज्य था, जिसके स्मारक के रूप में नागौर, नागदा, नागादरी, नाग तालाव आदि नाम अभी तक चले आये हैं। आसिया चारण नागो के पोळ-पात (याचक) थे। नागो के वाद मारवाड में प्रतिहारो (पड़िहारो) का राज्य हुआ। आसिया पडिहारो के पोळपात भी रहे। पडिहारो के वाद राठोड मारवाड के स्वामी हुये। मारवाड के राव जोधा ने आसिया पूजा को खाटावास गाव सासण मे दिया। उसके कनिष्ठ पुत्र माला को सिवाणा के स्वामी राठोड देवीदास ने भाडियावास गाव दिया। माला की नवी पीढी में वाकीदास हुये।

१ पूजो, २. मालो, ३. वैरसल, ४. भीमो, ५. खेतमी, ६ नाथो, ७ सूजो, ८ सगतीदान, ९ फतैसिंघ, १० वांकीदास, ११ भारतदान, १२ मुरारिदान (जसवन्त जसोभूषण के कर्त्ता)।

कविराजा वाकीदास का जन्म भाडियावास गाव में स० १८३८ में हुआ। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा पिता की देखरेख में हुई। सोलह वर्ष की अवस्था होने पर आगे शिक्षा प्राप्त करने के उद्देश्य से वे रामपुर के ठाकुर ऊदावत अर्जुनसिंह के पास गये। अर्जुनसिंह ने जोधपुर में उनकी शिक्षा का प्रवन्ध कर दिया। वचपन में किये हुये अर्जुनसिंह के इस उपकार को वे कभी नही भूले। *

---

* एक दिन कविराजाजी महाराज मानसिंह के साथ हाथी पर चढे हुए जा रहे थे। मार्ग मे अर्जुनसिंहजी मिले और उन्होने पुरानी वातो की याद दिलाई। उस समय वांकीदास ने यह दोहा कहा —

माळी ग्रीष्म माय, पोख सुजळ द्रुम पाळियो।
जिण-रो जस किम जाय, अत घणा वठा ही, अजा ॥

संवत् १८६० में वाकीदास जोधपुर-नरेश महाराजा मानसिंह के गुरू नाथपथी आयस देवनाथ के सपर्क में आये। उन्होने वाकीदास को महाराजा के सामने उपस्थित किया। महाराजा उनकी विद्या और कवित्व-शक्ति को देखकर वहुत प्रसन्न हुए और उन्हे लाखपसाव पुरुस्कार दिया, जिसमें उन्हे दो गाव भी मिले। आगे चलकर महाराज ने उन्हे अपना 'भाषा-गुरु' बनाया। महाराज उनका वडा आदर करते थे। राजस्थान के अन्यान्य दरवारो में भी उनका अच्छा सम्मान था।

महाराजा के व्यवहार से प्रसन्न होकर वाकीदास ने 'अ-जाची' व्रत, अर्थात् महाराजा को छोडकर और किसी से न मागने का व्रत, ग्रहण कर लिया। एक वार उदयपुर के गुणग्राही महाराणा भीमसिंह ने उनको पुरुस्कृत करने के लिये अपने सरदारो को भेज कर वुलवाया पर उन्होने क्षमा-प्रार्थना करली।

सवत् १८७० में जयपुर नरेश जगतसिंह के साथ आये हुए कविवर पद्माकर का वाकीदास के साथ शास्त्रार्थ हुआ, जिसमे वाकीदास जयी हुए।

वाकीदास का देहान्त स० १८९० में सावण सुदी ३ को जोधपुर में हुआ। मातमपुर्सी के लिए महाराजा मानसिंह कविराजा के स्थान पर पधारे और उनके विपय मे ये मरसिये कहे—

मद्-विद्या वहु साज, वाकी थी वाका वसू।
कर सूधी कवराज, आज कठी गो, आसिया।
विद्या कुळ विख्यात, राज-काज हर रहस-री।
वाका! तो विण वात, किण आगळ मन-री कहा?

(अनेक साजो वाली सुन्दर विद्या वाकीदास के कारण 'वाकी' थी। हे आसिया! हे कविराज! उसे 'सीधी' (अपनी वकिमा से हीन) करके तू कहा चला गया?

कुल-विख्यात विद्या की, राजकार्य की, लालसा की और आनद की मन की वातें, हे वाकीदास! आज तेरे विना किसके आगे कहे?)

वाकीदास वडी स्वतन्त्र प्रकृति के और स्पष्ट वक्ता पुरुप थे। राजपूताने के राजाओ का विना युद्ध के अग्रेजो की अधीनता स्वीकार कर लेना उनको बहुत अखरा और इसके लिये उनको उन्होने वुरी तरह फटकारा। इस सवध में उनका यह गीत वहुत प्रसिद्ध है —

आयो अगरेज मुलक रै ऊपर, आहम लीवा खैंच उरा।
धणिया मरे न दीधी धरती, धणिया ऊभा गई धरा॥
फौजा देख न कीधी फौजा, दोयण किया न खळा-डळा।
खवा खाच चूडै खावद-रै उणहि-ज चूडै गयी यळा॥
छत्रपतिया लागी नहँ छाणत, गढपतिया धर परी गुमी।
वळ नहँ कियो वापडा वोता, जोता-जोता गई जमी॥
दुय चत्र मास वादियो दिखणी, भोम गई सो लिखत भवेस।
पूगो नही चाकरी पकडी, दीधो नही मडैठो देस॥
वजियो भलो भरतपुर-वाळो, गाजै गजर धजर नभ-गोम।
पैला सिर साहब-रो पडियो, भड ऊभै नह दीधी भोम॥

महि जाता, चीचाता महळाँ, श्रै दुय मरण-तणा श्रवसाण ।
राखो रे कीहिक रजपूती, मरद हिंदू की मुस्सळमान ॥
पुर जोधाण, उदैपुर, जैपुर, पहु थारा खूटा परियाण ।
श्राकै गयी श्रावसी श्रांकै, वाकै श्रासल किया वखाण ॥

[श्रग्रेज देश पर चढकर श्राया । उसने (सवके) पराक्रमो को खीच लिया । पृथ्वी के स्वामियो ने मरकर पृथ्वी को नही दिया । पृथ्वी तो उनके खडे-खडे ही, उनके जीते-जी ही (श्रग्रेज के श्रधिकार में) चली गई ।

श्रग्रेज की फौजो को देखकर किसी ने फौजें नही सजायी । शत्रुश्रो को टूक-टूक नही किया । विधवा स्त्री पूर्वपति के चूडे को फोडकर दूसरे के घर जाती है, पर यह पृथ्वी, पूर्व-पतियो के जो पूरे चूडे पहने हुए थी, उन्ही चूडो के साथ श्रग्रेज के घर गई ।

राजाश्रो को इसका दु ख नही लगा । गढपतियो की पृथ्वी गुम हो गई । सख्या में बहुत होते हुए भी ये बेचारे बने रहे, जरा भी बल नही दिखाया । उनके देखते-देखते पृथ्वी चली गई ।

मराठा दो-चार मास लडा तो सही । उसकी भूमि भी चली गई । पर यह तो भावी का लेख था । पर उसने दासता तो नही स्वीकार की श्रौर न श्रपने हाथो श्रपना मराठा देश श्रग्रेजो को सौंपा ।

भरतपुर का राजा भी श्रच्छा लडा । तोपो की गर्जना हुई जिसकी धूम श्राकाश श्रौर पृथ्वी में छा गई । पहले श्रग्रेज का सिर कटकर गिरा फिर उसका कटा । वीर ने खडे-खडे, जीते-जी, श्रपनी भूमि नही दी ।

भूमि जा रही हो या कोई स्त्री सकट में चिल्ला रही हो—मरने के लिये ये दो श्रवसर है । श्ररे हिन्दू श्रथवा मुसलमान कोई तो मर्द बनो श्रौर राजपूती की रक्षा करो ।

हे जोधपुर, उदयपुर श्रौर जयपुर के स्वामियो ! तुम्हारा वश समाप्त हुश्रा । भाग्य के श्रंको (लेख) से गई हुई यह भूमि श्रब भाग्य के श्रको से ही वापिस श्रावेगी (तुम्हारे बल पर नही) । श्रासिया बाकीदास ने यह ठीक बात कही है ।]

बाकीदास श्राशुकवि होने के साथ साथ श्रनेक भाषाश्रो के ज्ञाता भी थे । राजस्थानी, ब्रजभाषा, सस्कृत श्रौर फारसी के वे श्रच्छे विद्वान थे । इतिहास में उनको बडी रुचि थी । वे इतिहास-सम्बन्धी विषयो का निरन्तर सग्रह करते रहते थे । 'बाकीदास-री ख्यात' उनके इसी इतिहास-प्रेम का फल है ।

एक बार ईरान का एक शाही सरदार भारतवर्ष की सैर करता हुश्रा जोधपुर पहुँचा । उसके साथ भारत सरकार का एक मुशी भी था । उस सरदार ने जोधपुर नरेश से श्रर्ज करवाई कि श्रापके यहा इतिहास का श्रच्छा विद्वान हो तो मैं उससे मिलना चाहता हूँ । महाराजा ने बाकीदास को उनके पास भेजा । सरदार उनसे बातचीत करके बडा प्रसन्न हुश्रा । उसने महाराजा को कहलवाया कि इतिहास का ऐसा विद्वान मेरी दृष्टि में दूसरा नही श्राया; ईरान मेरी जन्मभूमि है, परन्तु ईरान के इतिहास का ज्ञान इनको मुझसे भी श्रधिक है ।

वाकीदास की जीवनी से सम्वन्व रखनेवाली अनेक कहानिया है, जिनमें से कई-एक का संग्रह नागरी-प्रचारिणी सभा, काशी, द्वारा प्रकाशित वाकीदास ग्रथावली, भाग १-३, की प्रस्तावनाओं में किया गया है।

वाकीदास की कृतियो के नाम इस प्रकार हैं—

१ सूर-छतीसी, २ सीह-छतीसी, ३ सुपह-छतीसी, ४ सुजस-छतीसी, ५ सिधराव-छतीसी, ६ हमरीट छतीसी, ७ कुकवि-वतीसी, ८ विदुर-वतीसी, ९ धवलपचीसी, १० वचन-विवेक-पचीसी, ११ कृपण-पचीसी, १२ दातार-बावनी, १३ सतोप-बावनी, १४ कायर-बावनी, १५ वीर-विनोद, १६ भुरजाळ-भूषण, १७ जेहळ-जस-जडाव, १८ मोह-मर्दन, १९ नीतिमजरी, २० चुगल-मुख-चपेटिका, २१ कृपण दर्पण, २२ वैसक-वार्ता, २३ वैस वार्ता २४ मावडिया-मिजाज, २५ झमाल-नखसिख और २६ गंगालहरी। ये २६ कृतिया वाकीदास ग्रथावली के तीन भागो में प्रकाशित हो चुकी है। इनके अतिरिक्त इनकी निम्नलिखित अप्रकाशित रचनाये वताई जाती हैं—

१ कृष्णचद्रिका, २ विरहचद्रिका, ३ चमत्कारचद्रिका, ४ चद्र-दूषण-दर्पण, ५ मान-यशो-मडन, ६ वैशाख-वार्ता-सग्रह, (ऋतु वर्णन), ७ महाभारत का अनुवाद, ८ प्रकीर्णक गीत, ९ रस और अलकार का एक ग्रथ, १० वृत्तरत्नाकर भाषा (छदग्रथ)।

पर इनका सवसे महत्त्वपूर्ण ग्रथ ख्यात है, जो अब प्रकाशित हो रहा है।

बांकीदास-री ख्यात

ख्यात में लगभग २००० वातो का सग्रह है। ये वातें छोटे-छोटे फुटकर नोटो के रूप में है। लेखक को जो कोई वात महत्त्वपूर्ण लगी, उसे उसने नोट कर लिया। अधिकाश वातें दो तीन अथवा चार पक्तियो की हैं। दो-तीन पृष्ठो तक जाने वाली वातें कोई विरली ही हैं। ख्यात के सम्वन्ध में स्वर्गीय श्री ओझाजी लिखते हैं—

> "पुस्तक वडे महत्व की है।...ग्रथ क्या है इतिहास का खजाना है। राजपूताना के तमाम राज्यो के इतिहास-सम्वन्धी अनेक रत्न उसमें भरे पडे हैं।....उसमें राजपूताना के वहुधा प्रत्येक राज्य के राजाओ, सरदारो, मुत्सद्दियो आदि के सम्वन्ध की अनेक ऐसी वातें लिखी हैं जिनका अन्यत्र मिलना कठिन है। उसमें मुसलमानो, जैनो आदि के सम्वन्ध की भी वहुत सी वातें है। अनेक राज्यो और सरदारो के ठिकानो की वशावलिया, सरदारो के वीरता के काम, राजाओ के ननिहाल, कुवरो के ननिहाल आदि का वहुत कुछ परिचय है। कौन-कौन से राजा कहा-कहा काम आये, यह भी विस्तार से लिखा है। अनेक राजाओ के जन्म और मृत्यु के सवत, मास, पक्ष, तिथि आदि दिये है।" [पुरोहित हरिनारायणजी के नाम ओझाजी का पत्र, वाकीदास-ग्रथावली, भाग ३, की प्रस्तावना में प्रकाशित, पृष्ठ, ६-७]

इस प्रकार ख्यात-साहित्य में वाकीदास की ख्यात का स्थान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। प्रामाणिकता की दृष्टि से वह राजस्थान की अन्यान्य सभी ख्यातो की अपेक्षा अधिक विश्वसनीय है।

प्रस्तुत संस्करण

नैणसी, दयालदास और वाकीदास की ख्याते राजस्थानी भाषा की प्रथम कोटि की गद्य-रचनायें है। इतिहास की दृष्टि से भी वे अन्यान्य ख्यातो की अपेक्षा अधिक महत्त्वपूर्ण है। मेरी वहुत दिनो मे इच्छा थी कि इन तीनो के सुसपादित सस्करण प्रकाशित किये जाय। इस सम्बन्ध में कार्य का आरम्भ भी मैंने कर दिया था, पर वह पूरा नही हो सका। अब वांकीदास की ख्यात का यह सस्करण मुनि श्री जिनविजयजी की कृपा से पाठको के सामने आ रहा है।

हर्ष की वात है कि वाकी दोनो ख्यातो का भी प्रकाशन-कार्य आरम्भ हो चुका है। नैणसी री ख्यात श्री वदरीप्रसाद साकरिया द्वारा सपादित होकर राजस्थान पुरातत्त्व मन्दिर के ही तत्त्वावधान में मुद्रित हो रही है। दयालदास की ख्यात का एक अश मेरे माननीय मित्र डा० दशरथ शर्मा तथा मेरे भूतपूर्व शिष्य श्री दीनानाथ खत्री द्वारा सपादित होकर प्रकाशित हो चुका है। श्री खत्री ने वाकी अश के वहुत वडे भाग को भी सपादित कर डाला है और आशा है कि सपूर्ण ग्रथ निकट भविष्य में ही प्रकाश में आ जायगा।

वाकीदास की ख्यात से मेरा परिचय डाक्टर तासीतोरी के सूचीपत्र से तथा श्री ओझाजी के उल्लेखो मे हुआ। जव मैंने ख्यात के सपादन का विचार ओझाजी पर प्रकट किया तो उन्होने तुरन्त उसकी एक हस्तप्रति, और उसकी अपनी प्रतिलिपि, दोनो मेरे हवाले कर दी।

ओझाजी की यह हस्तप्रति मारवाडी लिपि में पतले पीले कागज पर लिखी हुई है। उसे जोधपुर के सुप्रसिद्ध विद्वान स्वर्गीय मुशी देवीप्रसादजी ने उनको तय्यार करवाकर दी थी। उसी की प्रतिलिपि उन्होने अपने उपयोग के लिए देवनागरी लिपि मे करवाई थी। इस सस्करण का सपादन इसी प्रतिलिपि के आधार पर किया गया है। मूल हस्तप्रति से भी आवश्यकता-नुसार सहायता ली गई है।

वाकीदास ने ख्यात की इन वातो का सग्रह विना किसी क्रम के किया है। उनसे कोई शृखलावद्ध वृतान्त नही वनता। एक ही व्यक्ति के सम्वन्ध की वातें अनेक भिन्न-भिन्न स्थानो पर आई हैं। कई-एक वातें पुनरावृत्त भी हुई है, अर्थात् दुवारा-तिवारा भी आ गई हैं। श्री ओझाजी के शब्दो में—

> "परन्तु उसमें कोई क्रम नही है। एक वात मालवे की है तो दूसरी गुजरात की और तीसरी कच्छ की। इस प्रकार एक महासागर सा ग्रथ है। ' एक राज के ताल्लुक की वाते सौ पचास जगह आ जाती है। [पुरोहित हरिनारायणजी के नाम ओझाजी का पत्र।]

क्रम के इस अभाव के कारण ग्रथ की उपयोगिता वहुत कुछ नष्ट हो जाती है। किसी व्यक्ति के विषय में जानकारी प्राप्त करनी हो, उसे खोज निकालना सहज नही होता, इसके लिये सारा ग्रथ टटोलना पडता है। ओझाजी ने वातो को क्रमवद्ध करना चाहा पर यह कार्य हो नही पाया। वे लिखते है—

> "इनको क्रमवद्ध करना वडे परिश्रम का काम है और अनेक पुस्तकें पास रखने से क्रमवद्ध हो सकता है। [उक्त पत्र]"

वातो को क्रमवद्ध करने के लिए वस्तुत राजपूताने के समस्त राज्यो और ठिकानो के इतिहास की जानकारी अनिवार्य है। राजपूताना ही नही, मराठा, सिख, मुसलमान, जैन आचार्य, जैन श्रावक आदि के इतिहास का ज्ञान भी वैसा ही आवश्यक है।

ग्रथ वास्तव में उपयोगी हो सके इस उद्देश्य को ध्यान में रखकर सपादक ने ख्यात का संपादन करने के पूर्व वातो को क्रम से लगा देना अत्यन्त आवश्यक समझा। इतिहास का विद्वान न होने के कारण उसे पग-पग पर कठिनाइयो का सामना करना पडा, पर उन पर विजय पाने का भरसक प्रयत्न किया गया। फिर भी कई स्थानो में गलतिया हुई हो, यह सम्भव है। अन्त में कुछ वातें ऐसी भी रह गई जिनके ठीक स्थान का निर्णय नही हो पाया। उनको अन्त में फुटकर वातो में अस्पष्ट वातो का शीर्षक देकर रख दिया गया है।

ख्यात में अधिकाश वाते राजपूतो के इतिहास से सम्बन्ध रखती हैं। उनमें भी राठोड़ो से सवद्ध वातों की सख्या वहुत वडी है। क्रम लगाते समय सवसे पहले राजपूतो से सवद्ध सामान्य वातो को देकर फिर उनकी विविध शाखाओ के राज्यो को एक-एक करके लिया गया है। सबसे पहले राठोडो के जोवपुर राज्य को लिया गया है, फिर जोधपुर के ठिकानो को और फिर राठोडो के अन्यान्य राज्यो तथा ठिकानो को। राठोडो के पश्चात् गहलोतो, यादवो, कछवाहो, चौहाणो आदि राजपूतो की अन्यान्य शाखाओ को लिया गया है। राजपूतो के पश्चात् मराठो, सिखो, मुसलमानो और अग्रेजो की वातो को स्थान दिया गया है। इसके पश्चात् ब्राह्मण तथा ओसवाळ आदि जातियो और जैनो के गच्छो की वातें दी गई है। आगे धार्मिक, भौगोलिक, तथा प्रसिद्ध व्यक्ति और वस्तुओ की वातें देकर अन्त में फुटकर वातें-इस शीर्षक के नीचे नीति सम्वन्धी वातें, दूहा-गीत आदि कवितायें तथा अस्पष्ट और अधूरी वातो को रखा गया है।

ख्यात के साथ हिन्दी अनुवाद और अनुक्रमणिका Index देने का भी विचार था। अनुक्रमणिका वास्तव में वहुत आवश्यक थी। पर यह अनुक्रमणिका वहुत वडी होती, स्वय ग्रथ से भी वडी क्योकि ग्रथ में आदि से अन्त तक व्यक्तियो और स्थानो की भरमार है। यह काम समय-सापेक्ष था। पुस्तक वहुत दिनो से प्रेस में थी। ग्रथावली के सचालक मुनिजी महाराज ग्रथ को शीघ्र ही प्रकाशित कर देना चाहते थे अत वे अनुक्रमणिका के तय्यार होने तक ठहरने को राजी नही हुए।

इस सस्करण को तय्यार करने में मुझे अनेक दिशाओ से सहायता मिली। मेरे भूतपूर्व शिष्य, और अव डूगर कालेज (वीकानेर) के इतिहास-विभाग के अध्यक्ष, श्री नाथूराम खडगावत तथा मेरे दूसरे भूतपूर्व शिष्य, और अव फोर्ट हाईस्कूल (वीकानेर) के हिंदी और इतिहास के शिक्षक, श्री दीनानाथ खत्री ने ख्यात की सब वातो को अलग-अलग चिटो पर लिखा जिससे क्रम लगाने में सुविधा हुई। श्री अगरचद नाहटा ने आरम्भ से ही इस सस्करण की तय्यारी में अभिरुचि ली। पुरातत्त्व मन्दिर के उत्साही सहायक श्री पुरुषोत्तम मेनारिया ने इसके प्रूफो को देखा है। सभी वन्धुओ का हृदय से आभार मानता हूँ।

यहा पर गुरुवर स्वर्गीय श्री ओझाजी तथा मुनि श्री जिनविजयजी के पुण्य नामो का स्मरण भी मैं आवश्यक समझता हूँ, जिनसे अपने साहित्यक कार्य में, मैं निरन्तर प्रेरणा प्राप्त करता रहा हूँ, और जिनकी कृपा के फलस्वरूप ही यह सस्करण प्रस्तुत और प्रकाशित हो सका है।

राजस्थान भारती पीठ,
वीकानेर,
वसन्तपचमी, स० २००६

नरोत्तमदास स्वामी

वांकीदासरी ख्यात

[१] राजपूतांरी वातां

१. धारा, उजीण, आबू परमारारा उतन।
जायल खीचियारो उतन।
नाडूल, सांभर चहुवाणारा उतन।
परवतसर दहियारो उतन।
टूक-टोडो सोळखियारो उतन।
मडोवर पडिहारारो उतन।
पाटण चावडारो उतन।
ढाको गौडारो उतन।
करणाटक, कुकण, वगलाणो, कल्याणी अणकी-टणकी राठोडारा उतन।
आसेरगढ टाकारो उतन।
खेड गोयलारो उतन।
नरवर कछवाहारो उतन।
दिल्ली तुवरारो उतन।
भटनेर-तणोट वीजणोट, लोद्रवो, भाटियारो उतन।
वासगढ खखारो उतन।
वाभणवाहो वारडारो उतन।
दुरमाभ्क बूंदी हाडारो उतन।
जाळोर सोनिगरारो उतन।
चित्तौड मोरियारो उतन।
थोहरगढ नै खागीर काबारो उतन।
मडाहड वेरांरो उतन।
हळवद-पाटडी झालारा उतन।
साभ्कत पाटवो हुलारो उतन।
करणेचो गढ कालमारो उतन।
तारागढ गुडारो उतन।
जागळू-रूण साखलारो उतन।
बाधूगढ बाघेलारो उतन।

२. मागळिया मेहाजीनू पूजै। ईदा चामुडनू पूजै।
देवरा नागणेचिया पूजै। गोगादे गुसाईजीनू पूजै।

३ 'मलीनाथजीरा तेज-प्रतापसू' महेचा लिखै। 'महादेवजीरा प्रतापसू' सोढा लिखै 'लिखमीनाथजीरा प्रतापसू' भाटी लिखै।

[२] राठौड़ांरी वातां

राठौड़ांरी खांपां

४ राठौडारी खापा लिख्यते—

अयलाण १	अहण २	करनोत ३	करमसोत ४	कलावत ५
कूंपावत	कोटेचा	काधल	खापसा	खोखर १०

गूजड़	गूगक	गुडियाणा	गोगादे	चाचगदे	१५
चाहड़दे	चांपावत	चालू	चैंडी	छपनिया	२०
जांगी	जैतारणिया	जैतावत	डागी	डगी	२५
ढोसीग	दरकड़	देवराज	धवेचा	धाधक	३०
धूहड़	धूहडिया	नालू	पाता	पूनावत	३५
पीथड़	फीटक	बीडा	बूला	भादावत	४०
मंडळा	माडणोत	मुकट	मुहडा	मूडाळा	४५
मूळू	मेडतिया	मैया	मोडासिया	राजग	५०
राजपाल	रादा	रूपा	लोला	वाघेल	५५
वाजा	वानर	वीकानेरिया	वीजा	वेगड	६०
सतावत	समरद	सीमाळिया	सीध	सुपेहा	६५
सैहटा	सोनवारिया	हथूडिया	सूडर ६९*		

५ वाटडा १, दोटा २, कसूवलिया ३, खीया ४, फळसूडिया ५, धारविया ६, गांवाणेचा ७ अै खापां राठौडारैं मांहे छै।

६ राठौड़ांरी तेरह साखारा नाव— धनसूरा१, जळखरिया २, अभैपुरा ३, कपाळिया ४, वेरवदा ५, कुरहा ६, वरियोवस ७, जेवत ८, वगळाणा ९, देण १०, वीर ११, अहर १२, पारक अथवा पारकर १३।*

७. सीहाजीरैं फडैरा राठौड ज्यारी विगत— वूहडिया १, मोट २, धाधल ३, महण ४, रांदा ५, आसल ६, वोला ७, पेथड ८, फीटक ९, कोटवो १०, मूया ११, जमानाळू १२ जाजड़ा १३, सीधल १४, जोगल १५, वादर १६, हाथूंडिया १७, उखोवा १८, जोरा १९, सोहड २०, चाचक २१, ऊहड २२, वेगड २३, डांगी २४, महडीसिया २५, मोहण २६, खीवसा २७, गुडाळ २८, खोखर २९, मूळा ३०, वाढेल ३१, हाडा ३२, सीमाळिया ३३, कीतपाळ ३४, छटाणिया ३५, वालाड़ा ३६, वरसूवळिया ३७।*

८ राठौड़ारैं जगमोहण पितर थेटू. पछै सायर पितर हुवो।

९. आली १, मोहण २, उदैपुर ३, अै तीन ठिकाणा गुजरातमे राठौड़ारा वावागढ कनै है।

राठौड़ांरी पीढियां

१० विजेचदरो राजा जैचंद १, दळ-पागळो कहाणो। वरदायीसेन २, सेन ३,

* इनमें कई अेक नाम अशुद्ध है।

सेतराम ४, सीहो ५, आसथान ६, धूहड ७, रायपाळ ८, कान्हर ९, जालणसी १०, छाडो ११, तीडो १२, सलखो १३, वीरमदे १४, चूडो १५, रिडमल १६, जोधो १७, सूजो १८, बाघो १९, गागो २०, मालदे २१, उदैसिंघ २२, सूरसिंघ २३, गजसिंघ २४, जसवतसिंघ २५, अजीतसिंघ २६, वखतसिंह २७, विजैसिंह २८, गुमानसिंह २९, मानसिंघ ३० ।

सीहोजी

११. पालीसू सीहैजी कनवज जाय अन्हनू टीको दियो, आप गोयंददाणी गढ वसायो । चाळीस सासण दिया, वरस १७ राज कियो ।
पुरोहित साथ बेटा तीनू पालीमे मिलिया ।

आसथान

१२ सीहाजीरै टीकै आसथानजी, खेड गोहिलांरै परणिया पछै साला प्रतापसीनू कह्यो – डाभी थांहरै वडा ग्रासिया है, इणनू काढ देवो. पछै काढ दिया किताक दिना डाभी आसथानजीसू आय मिलिया डाभी डावा, गोहिल जीमणा. तळाई माथै मार खेड लिवी डाभी - गोहिल जिण तळाई माथै मराणा उणरो नांव पापेळाई दियो, हमै उणमे गेहू हुवै छै ।

१३ आसथान सीहावत पाळी काम आयो ।

१४ आसथानजी सीहावतरै गोयलाणी राज-लोक है ···साथ बेटी ईंदी उछरगदे, राणा वूढारी बेटी, दहिया जैमलनू परणायी हुती, उणसू अणवणत हुई, आसथानजीरा घरमे पैठी. जैमलरा बेटा - बेटी साथ लिया आयी ही. ऊ दहियो खेडहीज मोटो हुयो. उण राठौडरो वैर लियो जिणसू दहियो तेरै साखरो तिलक कहावै ।

१५ वहू ईंदी उछरगदे, गोहिल जैमलनू परणायी हुती, राणा वूढारी बेटी, जैमलसू वणियो नही, जद आसथानजीरा घरमें पैठी ।

धूहड़

१६ धूहड ईंदारो भाणेज आसथानजीरै टीकै वे घड़ी···· पड़ियारसू कियो. धूहडनू चहुवाणा मारियो ।

१७ आसथानजीरा धूहडजी धूहडजीरा वेटारी विगत – रायपाळ महिरेळण १. जोगाइत उडणो २ वेगड कटारमल ३ जाळू गजउछाळ ४. कीतपाळ अतैउरसिणगार ५ पेथड हाक-ववाळ ६ कहाणो ।

१८. सरगधरीरी कोळू पाबूजीरो उतन. फलोधीरी कोळू काम आया ।

१९ राठोड़ जोपसारै बेटारी विगत – सीधल १. ऊहड २. जोव्रू ३ जोगो ४. राजग ५. मूळू ६।

रायपाळ

२० रायपाळ धूहडरै टीकै. चहुवाणारो भाणेज।

२१ रायपाळ धूहड़ोतनू चहुवाणा मारियो।

२२. रायपाळ महिरेळणरा बेटारी विगत – कान्हराव पाटवी १ केल्हण २. रादो ३. सूडो ४ मूपो ५. वेहड ६ महणसी ७ थांथी ८।

२३ थांथीरै फिटक केल्हणरो कोटेचो।

कन्ह

२४ कन्ह रायपाळरै टीकै भाटियारो भाणेज।

२५ कन्हरै वहू देवडी सलखारी बेटी बेटा तीन – भीमकरण १ जालणसी २. विजपाल ३।

दूहो– आधी धरती भीम आधी लोदरवै धणी।
काकनदी छै सीम राठौडा नै भाटिया॥

जालणसी

२६ जालणसी देवड़ारो भाणेज कन्हरायरै टीकै।

२७ जालणसी धाटो मारियो, मुलतानरी चौथ लिवी।

छाडो

२८ छाडो जालणसीरै टीकै गोहिलारो भाणेजो।
सोढा कनासू डडमें घोड़ा लिया भाटियानू पजाया।

तीडो

२९ तीडो छाडावत सातलरी मदत अलाउद्दीनसू जँग कर काम आयो सिवाणै।

३०. तीडा छाडावतरै तीन बेटा हुवा – कान्हडदे १ त्रिभुअणसी २ सलखो ३।

३१. महेवा वगैरै देसारो मालक- कान्हड़देनै मार मलीनाथजी खेडरो राज लियो. कंवरपदै।

सलखो

३२. तीडा छाडावतरै टीकै. हुलारो भाणेज सलखो ।

३३ तीडारै टीकै चहुवाणारो भाणेज. वहू पडिहार रूपडिया राणारी बेटी ।

३४ मलीनाथजीरै तीन भाई, चौथा आप, वहन अेक विमलावाई, लोक वीवळीवाई कहै, घडसी रावळनू दीवी ।

३५. मालो, जैतमाल, पडिहारारा भाणेज . वीरम, सोभत, उमरकोटरो धणी सोढो जिणरा भाणेज ।

मलीनाथ

३६ रावळ मलीनाथ जसडारो भाणेज हो . नाम मालो हो . जोगी रतन रावळ मलीनाथ कहे वतळायो जदसू मलीनाथ कहाणो ।

३७. मालो नै महेवारो पीर, रूपादेरी मा सोढी चँद्रावळ, जगमालरी मावसी, इण री गोमती ।

३८. करडियो, कांवळी, हासली, घोडो जोड़ो – अै वसता वालै वदरै मलीनाथजीनू डायजै दीवी रूपादे परणाय ।

३९. हरखू सांखलो वगड़ी हुवो मलीनाथजीरै परणियो पोकरण गुढो डायजै दियो ।

४०. भाद्रेस माला रावळरी दियोडी है ।

मलीनाथोत राठौड़

४१. मलीनाथरो जगमाल, जिणरा पोहकरणा ।

४२ जगमाल मालावतरै बेटो लांको, जिणरा वाडमेरा राठौड ।

४३ महेवामें भाखर गायणो जठै कूपा मलीनाथोतरो रहणो हुवो . कूपारै मोलो हुवो ।

४४ कूपारै वंसरा गायणेचा राठौड है ।

४५. गांवणेचा राठौड कूपा मलीनाथोतरा है ।

जैतमाल सलखावत

४६. जैतमाल सलखावतरै वारा बेटा, ज्यामें १ खीमकरण प्रतापीक हुवो, जिण सोढानू मार अडताळीस गाव रा रा दबाया ।

४७. जैतमाल वाराही बेटानू कह्यो – जगमाल मोनू मारियो वो वैर विसार दीज्यो नै हाफानै सिवाणैरी घाटी सूपी इग्यारै जणा जुदा जुदा परदेसा जावज्यो जिणसू थारा जुदा जुदा ठिकाणा बधसी ।

४८. जैतमाल सलखावतरी बेटी ईंदो राणो उगमसी परणियो . मलीनाथजी तेरै

तुगा भाजिया जद उगमसी मलीनाथजीरी भीड़ आयो हुतो।

सोवत सलखावत

४९ सोवत सलखावत, जिणारै वसरा सोहड़।

वीरम सलखावत

५० वीरमजी जोइयासूं झगडो कर काम आया जोइयावाटीमें। घोडी आण समाध घर अममाध उपायी।

५१ वीरम सोढारो भाणेज. जोइयारै वीठड़ै गयो उठै मराणो।

५२. गोगादे १, देवराज २, जैसिंघ ३, वीजो ४, चुडाव ५, पाची ६, – वीरमरा।

चूंडो वीरमओत

५३ चूडो वीरमरै पाट, मागालियारो भाणेज, मडोवर ले नागोर लियो, नागोरमें चूडापोळ करायी लखीजगळरो धणी जलाल खोखरनै भाटी केलण केहररै .. आय नागोर राड़ कीवी चूडोजी काम आया।

५४ चूडोजी नागोर काम आया, भाटी केलण खोखरसू वेढ कर।

५५ चूडोजीरी वेटी हासीबाई, रिडमलजीरी सगी बहन, राणा लाखानै परणायी. भाणेज मोकल।

५६ चूडाजीनू मार तुरकां नागोर लियो. पछे तुरकांनू मार राणै लाखै नागोर रिडमलजीनू दीयो. जोधपुर सता चूडावतरी ठाकुराई. नागोररै गाव मूडवै राणै लाखै लाखासर तळाव नागोर करायो हो।

वीरमदेओत

५७. करमसी १, सहसमल २, केल्हो ३, – अै तीन गोगादे वीरमदेवोतरा वेटा।

सतो चूंडावत

५८. चूंडारै पाट सतो. दारू घणो पियै. राजरो काज भाई रणधीर चलावै। जठा पाछे टीको रिडामलजीनूं दियो छरावासू तेड़नै।

५९ गांव वारी महव दूदावतनू सतराव चूडावत दीवी।

रिड़मल चूंडावत

६०. राव रिडमल चूडारै टीकै, गहलोतांरो भाणेज. पीरोजखानसू युद्ध कर राव रिडमल मारिया।

६१. लोल्हा सोनगरारो वेटो सतो जिणनू जोधाजीरी वेटी सुंदरवाई परणाय राव

रिडमल सतानू पाली दीवी . नाडूलरा सोनगरा धणलासू चढ जाय मारिया, ओ वैर रिड़मलजी पोती परणाय वाढियो ।

६२. राव रिडमल ४१ वार जैंसळमेर मारियो जद भाटिया बेटी दिवी, रिडमलजी-नू राजा कहिया ।

६३ रावजी रिडमल धणलासू जाय नाडोळरा धणी सोनगरा सारा मार नाखिया. रावजी या सोनगरारै परणिया हुता सोनगरो लालो रणधीररो . जैसळमेर परणीजण पधारिया जद लालानू जोधपुर आण जोधाजीरी बाई परणायी . वैर भागियो पाली पटै दीवी ।

६४. सवत १५०० चैत वद ६ गढ चित्तौड ऊपर चूक कर राणै कूभै मारियो राव रिडमळनू ।

६५ रिडमलजीनू चित्तौड़ माथै चूककर मारिया सीसोदियै चूडै लाखावत ।

६६. चूडा लाखावत सामल होय नरवद सरावत चित्तौड माथै रिडमलजीनू चूक करायो ।

६७ भाटी सतो लूणकरणोत राव रिडमलजीनू चित्तौड चूक हुवो जद कास आयो ।

६८ भीवराज चूडारो जिणरै वसरा भीमोत कहीजै ।

जोधो रिड़मलोत

६९. राव रिडमलनूं चूक हुवै चित्तौड माथै कवर जोधोजी तळैटीसू निसरिया, चूडै लाखावत लारै लोक मेलियो, गजणरईरै घाटै वेढ हुई जठै प्रथीराज ईंदा वगेरै जोधाजीरा रजपूत काम आया ।

७०. राव जोधो रिडमलरै पाट, देवड़ारो भाणेज सवत १४७२ रा वैसाख वद ४ बुधवाररो जनम, सवत १५१० जोधैजी राणारा थाणा उठाय धरती लिवी ।

७१ सोमेसर रावत लूणा कनैसू घोड़ा लिया, गुसाईजीरा कहणासू हरभू साखलै जोधानू जीमण कियो. कह्यो म्हारी गोठरा मूंग थारा पेट-में इत्तै जित्ती जमी पै घोडो फेरसी उवा जमी थारी रैसी गूदोच ताई घोडा फेरिया ।

७२ चोकड़ी बिलाडासू राणारा थाणा फटाया सोजत लिवी ।

७३ रावजी जोधोजी कवर नरवद सतावतरी लडाईमे घेठ नाव उभा हुवा ।

७४ जोधपुर वसाया पछै जोधोजी गयारी जात्रानू चढिया मारग मे जहानापुररो मालक आय मिळियो रावजी उणरी मदत किवी वहलोलखांरो भाई सारगखा मारियो पछै गयारो कर दूर कियो ।

७५ संवत १५४५ जोधोजी देवलोक हुवा।

७६. रावजी जोधाजीरै तेरै बेटारी विगत - सातलजी १, सूजोजी २, नीवो ३, करमसी ४, वीदो ५, वीको ६, भारमल ७, जोगो ८, दूदो ९, जगमाल १०, सिवराज ११, गोपाल्दास १२, वरसिंघ १३।

७७ वैरसलपुरा भटियाणी राव जोधाजीरी राणी जिणरै पुत्र तीन हुवा—करमसी १, रामपाळ २, वणवीर ३।

७८ रावजी जोधाजीरै राजलोक वैरसलपूरां भटियाणी जिणरै बेटा तीन करमसी १, रामपाळ २, वणवीर ३।

७९. सातल १, सूजो २, नीवो ३, हाडारा भाणेज।

८०. वीदो १, वीको २, दोनू साखलारा भाणेज।

८१ राव जोधाजीरै राणी हाडी कोडमदे जिण राणीसर तळाव करायो. संवत १५१५ जेठ सुद ११ जोधपुर वसायो।

राव सातल जोधावत

८२ सातल जोधावत सातलमेर करायो।

८३. जोधाजीरै पाट सातल······

सीसोदियाँसू सुख कियो आवळै वावळै सीम किवी. रावजीरा वैरमें सोजत लिवी।

८४. सिरियाखानसूं कुसाणै सातल दूदे वेढ किवी ओ तीजणियां छुडाय लिवी. दूदैजी सिरियाखानरा हाथी घणा लूटिया।

८५ सातलजी तीन वरस राज कियो संवत १५४९ सातल काम आयो।

नींबो जोधावत

८६ सोजत नीवै जोधावत वसायी. राणारा देसरी से उचळी सात वीसी जान आयी हुती जिके सोजतमे राख्यां।

राव सूजो

८७ राव सूजो जोधारै पाट संवत १४९६ रा भादवा वद ८ रो जनम।

८८. संवत १५४८ मे सोजतसूं आय जोधपुर पाट वैठा।

८९. सूजाजीरो सवत १४९६ रा भादवा वद ८ जनम. संवत १५४८ पाट वैठा. संवत १५७२ रा काती वद ९ राम कह्यो।

९०. मांगळिया राणावतांनू हमीरोतरी बेटी सूजो जोधावत परणियो. सासरा-

रो नाम सरवगदेजी ज्यारा बेटारी विगत– ऊदोजी १, पिरागजी २, सागोजी ३ ।

९१. राव सूजारा बेटारी विगत– वाघो १, पाटवी कवर थका देवलोक हुवो, ऊदो २, सेखो ३, देईदास ४, पिरागदास ५, सागो ६, नरसो ७, तिलोकसी ८।

९२ सेखारै सहसमल ।

९३ देईदासरै अचलो १, हरराज २।

९४ नरारै गोइद १, हमीर २।

९५ कवर वाघो नरो भाटियारा भाणेज ।

९६ सेखो देईदास चहुवाणारा भाणेज ।

९७ मागळियाणी सरवदे राणा पातूरी बेटी जिणरा बेटा– ऊदो १, पिराग २, सागो ३ ।

कंवर वाघो

९८ सवत १५१४ रा वैसाख वद ७ वाघाजीरो जनम, सवत १५७१ सुरगवास कियो वाघैजी ।

९९ सवत १५१४ पोस वद ६ जनम वाघाजीरो, सवत १५७१ रा भादवा सुद १४ राम कह्यो।

१०० कवर वाघो सूजावत चितोड राणा रायमलरै परणियो हो ।

१०१ कवर वाघो सूजावत राणा रायमलरै परणियो हो ।

१०२ कवर वाघारा बेटारी विगत– गागो १, वीरमदे २, जेतसी ३, प्रतापसी ४, भीम ५ ।

राव गांगो

१०३ राव गागो वाघावत चहुवाणारो भाणेज, वीरमदे वाघावतनू सोजत दिवी गागैजी, सवत १५४० वैसाख सुद ११ जनम गागाजीरो, सवत १५८८ रा जेठ सुद ५ रामसरण जोधपुर हुवा ।

१०४ सवत १५८८ रा चैत सुद ११ राव गागोजी कवर मालदेजी फौज ले सोजत आया, वैद मुहता रायमल खेतावतनूं मार वीरमदे कनासू सोजत ली, वैसाख सुद ४ राव गागै ईडररी मदत किवी ।

दूहो–गागा त गवाळ, ऊगा हाई उर तणा ।
सोहै तो सुखपाळ, वडा प्रवाडा, वाघउत ॥

१०५ सोजत वैद मुहतो रायमल वीरमदेजीरै चाकर, रावजी गागैजी कवर मालदेजी सोजत माथै गया जद रायमल कवध हुवो, नेत्र भावसू तरवार चली, बेटारा वटका किया, लाखी लोवडी ओडाडी जद घोडासू जमी लोथ पडी, उण दिनरो ओखाणो–

मुहता माटी मारका, घरर गिणै न पारका ।

१०६. गुजरातरो पातसाह उदैपुर ईडर ले लियो जद राव गागो, राणो सागो, वीरमदे दूदावत तीनू ही मिल अहमदनगर जग कर पातसाहनू भाज ईडर ईडरिया राठोडानू दियो ।

१०७ रावजी गागोजी, वीरमदे दूदावत, राणो सागो ईडररा राजारी मदत ईडरनू जावै जद साढचारा राईका रावजीसू अरज किवी– आप ईडरनू पधारै है, कोटडिया दौडै है, सो रावळी साढचारा रँगारा जावता सारू सिरदारारी आसामिया अठै राख, पधारजै जद रावजी फुरमाया– थे कहो जिके ही अठै राखा आ कह्यो– तेनारा गोगादे नेतसी खेतसी महावतियानू साढांरा जावतानू राखजै जद आ गोगादेओतानू देसमे राख रावजी ईडररी मदत पधारिया किताईक दिना कोटडिया साढिया लिवी राईका तेनै गया, जद तेनै ढोल वाजियो सारा गोगादे घोडा चढनै आया घोडो जीण कराय नेतसी अमल ले सूतो जद अेक राईको बोलियो–

पीपारा पीधो मेहारै घूटलवाळी ।

अरथ– पीपा राईकारा बेटा-पोतरा साढारो दूध पीधो, मेहरो बेटो घूटलवाळै पग समेट सूतो पछै नेतसी भाया-भडा सहित साढारी वार चढियो कोटडिया रामाजी मारनै साढा पाछी आणी तेनारै तळै पाणी पाय दोड कराय राईकानू दूध पायो उण समैरा हीडोळा–

साढा लोप सोढ्नरो, जाघो साईरी साथ ।
चढि महीरा नेतसी, रातो तरगस वाथ ॥
नळी कटाडू नीली लप, घी अमापियो खाय ।
हाथ वेंतरै आतरै, अै कोटडिया जाय ॥
खेतो पूछै नेतसी, नीळो घोड़ो काय ?
गया ईडररी चाकरी, दियो ईडररै राव ॥

उरळी चारो राइका, म्हारा भालारी छाह् ।
जो जासी तो आणसू, बावा मेहारी बाह ॥

१०८ सेखोजी गागोजी एक दिन झरणामे भीर वाट जळछाटारो खेल कियो भाजणरी दोनानू परत बोले-वोले भारी हुवो जद सेखोजी धूसल करणो विचारियो आ खवर पाय रावजी गागोजी सेखाजीनू कह्यो–वरड ऊगी जिण जमीमे उवा थाहरी, भुरट जिणमे ऊगै उवा म्हारी सेखाजीरै परधान ऊहड़ हरदास आ वात मानी नही ।

दूहो–अेक वचन हरदास, ऊहड मन आणै नही ।
गाँगौ मगळो ग्रास, कै सेखै सौ सामठो ॥

१०९ सेखैजी नागोरी खान दोलतियो जिणनूँ मारवाड माथै आणियो गागोजी फौज ले सामा गया सेत्रकी वेढ हुई. दरिया जोरा हाथी फौजारै आगै हो रावजीरा हाथरो तीर लागो ऊ भागो दोलतियो ही भागो. सेखो काम आयो देईदास निसरियो सवत १५८६ रा मिगसर सुद १ आ वेढ हुई. पचास पठाण काम आया हाथी दोलतियारा घणा लूटाणा रावजीरो उमराव किसनो चापावत पूरै लोहै पडियो रजपूत पाच आपरा काम आया इणनू रावजी थुनाडो दियो घावा उपडियो दिना पनरा रामसरण हुवो ।

११० सेखा सूजावतरै वसरा राठोड मुसलमान हुवा हाडोतीमे नाहरगढरो धणी नबाब वाजै है ।

१११ चाँद-बावडीसू राव गागोजी तीर चलायो हो सू गोळमे जाय पडियो है ।

११२ सीकरी राणा सागारी हार हुई जद साराही कही– राव गागो सामल होतो तो राणारी फतै होती ।

११३ सवत १५८८ रा जेठ सुद ५ सुरगवास कियो रावजी श्री गागैजी ।

११४ सवत १५८८ रा जेठ वद ५ राव गागोजी देवलोक हुवा ।

११५ राव गागाजीरी राजलोक सीसोदणी उत्तमदे राणा उदैसिघरी बहन पीहररो नाव पदमावती ज्या पदमसर तळाव करायो जोधपुर ।

११६ राव गागोजी देवलोक हुवा जद सीसोदणीजी पीहर हुता पाच पोहर सत रहियो भाई उदैसिघ बळण न दिवी पछै चित्तोड जूहर हुवो जद जूहरमे बळिया ।

११७ देवडी माणकदेजी पीहररो नाव पदमावाई जिणरै वेटा तीन–मालदे १, वैरसल २, मानसिंघ ३ ।

११८ गागोजीरी वेटी राय कवरवाई चित्तोड विक्रमाईतनू परणायी ।

११९ गागाजीरी वेटी सोनवाई जेसळमेर रावळ लूणकरणनू परणायी ।

राव मालदे

१२० राव मालदेजी सवत १५६८ रा पोस वद १ रो जनम. सवत १५८८ रा सावण सुद १५ पाट वैठा राव मालदेजी सवत १५९२ रा माह वद २ नागोर खानू मारियो, नागोर लियो. सवत १५९४ रा असाढ वद ८ सिवाणो लियो, डूगरसी जैतमाल कनासू सवत १५९६ रावजी वीरा सीव्रलनू मार भाद्राजण लिवी ।

१२१ सवत १५९८ वीकानेर लियो कूंपोजी फौज ले गया हुता चैत वद ५ जैतसी मारियो. सवत १५९८ चैत वद १२ रावजी पधारिया वीकानेर. जूझणू फतैपुर कूंपाजीनूं वधारामे दिया ।

१२२ पचोळी अभो जाजावत मालदेजीरै कामेती ।

१२३ सवत १६०२ रावजी डूंगरसी हमीरोत कनासूं लिवी फळोधी ।

१२४ सवत १६०८ रावजी पोहकरण लिवी ।

१२५ जैतैजी कूंपैजी वीरमदे दूदावतनू मेडतै रियासू अजमैरसू डीडवाणा माहसू वाली माहसू काढियो ।

१२६ वोला वीरमदेजी कह्यो– कूपाजी! अठासू तो थाहरो काढियो नही जासूं, मरसू कूंपैजी कह्यो– तो मारसा जद जैतैजी कूपाजीनू कह्यो– वीरमदेनूं मारणो नही, वीरमदे वडो रजपूत है, जीवतो रयो तो कयाहिकनू आण आपणो मरण सुधारसी ।

१२७ उठानू वीरमदे माडवरा पातसाह कनै गयो उण खरची दिवी पछै पूरवमें जाय सूर पातसाहनू आणियो ।

१२८. सूर पातसाह आयो जद वसी मिरोही मेली असी हजार घोडासूं रावजी वावरै जाय डेरा किया ।

दूहो–साह आलम मावाहियो, मालो अमळीमाण ।
वै पतसाह क ईग्विया, पिड़ दाखवसी पाण ॥

कूंपै कह्यो-

दूहो-तू ठाकर दीवाण तू, तो ऊभै सह कज्ज ।
राज सिधारो मालदे, करण मरण छळ लज्ज ।।

१२९. चापो जैसो भैरूदासोत जलाल जलूकारो घोडो पातसाहरा मूडा आगै लायो. पछै राव मालदजी साथ पीपळोद गयो ।

१३० भाटी साकर सूरावत अजमेररो किलादार हुतो. अजमेररो गढ छूटो जद मरण माडियो हो पिण चाकरा मरण दियो नही असुर पातसाह जोधपुररो गढ लियो जद गढ माथै काम आयो, गढमे छतरी ।

१३१ राठोड रामसिघ ऊहड, राठोड सीकर जैतसिघोत ऊदावत इत्यादिक गढ ऊपर काम आया ।

१३२ सूर पातसाह वरस १ जोधपुररै गढ रह्यो सवत १६०१ पोस वद ५ देहरो पाड मसीत करायी ।

१३३ पछै गोकुळदास पाज वधावी, तळावरी राग भरायी ।

१३४. सूर पातसाह गयो मारवाडसू जद भीगैसर पाच हजार घोडा थाणो राख गयो, रावजी जोधपुर आया थाणानू वेढ करि उगमो इतरा रावजीरै काम आया-राठोड ऊभो वरसिघोत माणस ४०० सू खेत रहियो, रावळ हाफो वरसिघोत लोहै पर उपडियो, राठोड अभो हाफो माणस ८०० घोडारा असवार ओठी पाळा महेवासू साथ लाया हुता ।

१३५ जैसिघ भैरूदास चापावतरो लोहे पड उपडियो ।

१३६ सवत १६०० पातसाह सेरसाहसू हार राव मालदेजी सिवाणारी भाखरा गया ।

१३७ सवत १६०३ सलेमसाह मुवो जद तुरक जोधपुररो गढ छोड खवासपुरै नसेदलीखा खवासखा कनै गया मडोवररा माळी गढमे आया, रावजीनू खवर दिवी रावजी जोधपुर पधारिया पछै वरस सात रावजी मेडतानू लागा ।

१३८ सवत १६१० रा वैसाख वद २ मेडता ऊपर रावजी आया मेडतै कुडळ तळाव माथै जैमल रावजीसू राड किवी. जैमल वीरमदेवोत दैवजोगसू जीतो रावजीरा इत्ता ठावा मिनख काम आया-धनो भारमलोत वालो १, राठोड नगो भारमलोत वालो २, प्रथीराज जैतावत ३, राठोड जगमाल उदैकरण ४, राठोड सूजो जैतसिघोत ५, सीहड पीथो जसवत ६ ।

१३९ संवत १६१० रा असाढ वद १३ राठोड देईदास जैतावतनै कंवर चदरसेणजीनू मालदेजी मेडता माथै विदा किया जैमलजीनू काढि मेडतामे असल कियो।

१४० सवत १६१३ हाजीखानसू राजाजीरै अदावदी हुई जद राव मालदेजी आपरा उमराव हाजीखारी मदत मेलिया ज्यारी विगत–राठोड देवीदास जैतावत १, रावळ मेहराज हाफावत महेवारो धणी २, राठोड जगमाल वीरमदेवोत ३, राठोड जैतमाल जैसावत चापो ४, लखमण भादावत ५–इत्यादिक डोढ हजार घोडासू मेलिया।

१४१ सवत १६१३ फागण वद १२ हाजीखानसू राणा उदेसिंघजीरै अदावदी हुई हाजीखान पठाण हो हाजीखान राव मालदेजीसू साधी राव मालदेजी इनरा ठावा मिनख हाजीखानरी मदत मेलिया–राठोड देवीदास जैतावत १, राठोड रावळ मेघराज हाफावत २, राठोड जगमाल वीरमदेवोत ३, राठौड जैतमाल जैसावत ४, लखमण भादावत ५।

१४२ राणा उदैसिंघरा सायरी विगत–राठोड जैमल वीरमदेवोत, राव कल्याणमल वीकानेरियो, रावळ प्रताप वासवाळारो, रावळ आसकरण डूगरपुररो, रावळ तेजो देवळियारो, खैराडो राम जाजपुररो धणी, राव रामचद्र तोडरीरो धणी, सोलकी राव सुरजण हाडो वूदीरो धणी, राव दुरगो रामपुरारो धणी, राव नारायणदास।

१४३ राणाजीरा साथरी विगत–राठोड जैमल वीरमदेवोत १, राव कल्याणमल वीकानेरियो, २ रावळ प्रताप वासवाळारो ३, रावळ आसकरण डूगरपुररो ४, रावळ तेजो देवळियारो ५, खैराडो रामो जाजपुररो धणी ६, राव रामचद्र तोडरीरो धणी ७, राव सुरजण वूदीरो धणी ८, राव दुरगो रामपुरारो धणी ९, राव नारायणदास–इत्यादिक राणा कनै सिरदार अजमेरसू कोस १२ हरमाडो गांव जठै राड मडी सवत १६१३ फागण वद १२ राणाजीरो उमराव वालीसो सूजो जसवतोत राठोड देवीदास जैतावतरै हाथ रह्यो जैतारणियो तेजसी डूसरसी ऊदावतरो राणाजीरो उमराव आछी तरह काम आयो खेत हाजीखानरै हाथ रह्यो।

१४४. हाजीखान पठाणसू सवत १६१३ रा फागण वद ९ राणै उदैसिघ वेढ किवी जद ५०० सवारासू रावजीरा उमराव इता हाजीखा सामल हुवा– राठोड देईदास जैतावत १, राठोड जगमाल वीरमदेवोत २, राठोड जैतमाल जैतावत ३,

ऊहड जैमल जैतसिघोत४, राठोड प्रथीराज कूपावत५, रावळ मेघराज हाफावत६, राठोड महेमदास घडसिंघोत७, राठोड लेखमण भादावत ८ ।

१४५ हरमाडै राणा उदैसिघजीरो उमराव सूजो वाली हो जिणरै देईदास जैतावतरै हाथरी बरछी लागी सूजो खेत पडियो जैतारणियो तेजसी डूगरसिघोत राणाजीरै काम आयो राणाजीरी फौज भागी रावजीरो सीधल देदो रणधीर काम आयो ।

१४६. सवत १६१३ रा फागण वद १२ अजमेरसू कोस १२ हरमाडो जठै राड हुई । राणा उदैसिघजीरो उमराव नाडूळाईरो धणी वालीसो सूजो जसवतोत माराणो राठोड देईदास जैतावतरै हाथ रह्यो राठोड जैतारणियो तेजसी डूगरसिंघोत राणाजीरो उमराव काम आयो राणोजी जीता नही, खान जीतो।

१४७ रावजी साथै पहुचावण जैपुर आया हुता उठै जासूसा खबर दिवी खान जीतो रावजी मेडता माथै आवणरी त्यारी किवी जद जासूसाँ खबर दिवी—मेडतो खाली है, जैमलरो कोई नही है मेडतामे सवत १६१३रा फागण सुद १२ रावजी मेडतै पधारिया जैमलरा माणस वाबरै गिररी समाळ केई दिन रहिया रावजी हळ जोताय मेडतियारी जायगाँ पडाय नखायी ।

१४८ रावजी जैतारण हुता जैतारणसू डोढ हजार घोडो हाजीखारी मदत मेलियो हो हाजीखान जीतो. अै समाचार रावजीसू मालम कराया रावजी मेडतै पधारणरी त्यारी किवी जद जासूसाँ खबर दिवी—जैमलजीरो कोई आदमी मेडतामे नही है सवत १६१३ फागण सुद १३ मेडतै पधारिया ।

१४९ जैमळजीरा माणस गिररी वावरै समेळ केईक दिन रह्या।

१५० हळ जोताय रावजी मेडतियारी जायगाँ पडायी ।

१५१ सवत १६१४ मेडतै मालकोटरी नीव दिरायी सवत १६१६ मालकोट सपूरण वणियो जद राठोड देईदास जैतावतनू साथ घणासू मालकोट थाणै राखियो ।

१५२ सवत १६१८ रा आसोज वदमे राठोड देईदास जैतवात, राठोड पनो नगावत जाळोरगढ लियो मलिक वूढनखानू काढियो आसोज सुद ५ कवर चदरसेण जाळोरगढ चढियो।

१५३ पछै जेमलजी वधनोरसू जाय अकवर पातसाहरा उमराव मिरजा सरफुद्दीननू पातसाही लसकर समेत मेडतै मालदेजीरा साथ सामै आणियो संवत

१६१८ रा चैत सुद ५ रावजीरा साथसू लडाई किवी. फतै मिरजारी हुई, रावजीरा उमराव काम आया ज्यारी विगत-राठोड देईदास जैतावत१, राठोड महेस पचाइणोत करमसिंघोत २, मागळियो वीरमदेव ३, राठोड भाखरसी डूगरसिंघोत ४, '५, राठोड गोइंद राणावत ६, राठोड अमरो रायावत ७. राठोड जैमल तेजसिंघोत ८, राठोड भाण भोजराजोत रूपो ९, राठोड महेस घडसीहोत १०, राठोड पूरणमल प्रथीराजोत ११, राठोड भाखरसी जैतावत १२, राठोड ईसरदास राणा अखैराजोतरो १३, राठोड तेजसी सीहावत १४, राठोड पतो कूपो महराजोतरो १५, राठोड महमो रामावत १६, राठोड अमरो आसावत १७, राठोड़ अमरो रामावत १८, राठोड अचळो भाणोत १९, राठोड सागो रणधीरोत २०, राठोड ईसरदास घडसीहोत २१, राठोड रायसिंघ घडसीहोत २२, भाटी तिलोकसी परवत आणदोतरो २३, राठोड हमीर ऊदावतवालो २४, राठोड भीम दूदावत वालो २५, राठोड अखो जगमालोत २६, काक चादावतरो २७, राठोड जैतमाल पचायणोत मेडतियो २८, भाटी पीथो अणदोत २९, राठोड राणो जगनाथोत ३०, साखलो तेजसी भोजावत ३१, राठोड प्रिथी-राज ३२, सिवण अखैराजरो ३३, चहुवाण जैतसी ३४, वीरम दूदावतरो ३५, मागळियो देदो ३६, राठोड रणधीर रायमलोत ३७, जगमालजीरो चाकर आसामी ३८ आरा रजपूत छत्र काम आया मिरजारो साथ घणो काम आयो खेत मिरजारै हाथ रयो मेडतो लियो।

१५४ रावजी कवर चंद्रसेणजीनू मेडतै देवीदासजी कनै मेलियो राठोड प्रथीराज कूपावत १, सोनगरो मानसिंघ अखैराजोत २, राठोड सावळदास ३ और ही उमराव कुवरजीरै साथै मेलिया, दोय हजार घोडा साथै मेलिया।

१५५ रावजी कह्यो-वेढ करणरो ढव हुवै तो वेढ कीज्यो, नही तो देवीदासजीनू लेनै उरा आवज्यो अै मेडतै गया पातसाही फौज सबळी देखी आ डेरा पाछा किया, देवीदासजी मुरड मालकोटमे पैठा।

१५६ मुगला मालकोट घेरियो राठोड सावळदास उदैसिंघोत मुगला साथै पडियो. चाकर खाटमे घाल ले निसरिया मुगल लारै चढिया च्यार कोस माथै आय पडिया सावळदास भली भात काम आयो।

१५७ मालकोट घेरो मुगल नित ढोवा करै रावजी नित देईदासजीनू लिखै-थे तो थारो नाव करो हो पिण म्हारी ठाकुराई खोवो हो।

१५८ सवत १६१८ रा फागण वद घेरो लागो मालकोटरो वुरज अेक सुरगसू उडियो. मुगल हल्ला ऊपर हल्ला करै जद जैमलजीसू सरफुद्दीन वात

करी मालकोट बारै देवीदासजी निसरिया. जैमलजी सरफुद्दीन मालकोटरी पोल आगै ऊभा देख रावजी देवीदासजीनू दिवी हुती बारा खिजमतदाररै कनें हुती अेक मुगल बदूक लेण भूँबियो जद कडियाळी गेडी मुगलरै माथै जडी. गैडीरा लगणासू नाकमे भेजी निसरी मुगल मर गयो ।

१५९ ओ काम देख जैमल सरफुद्दीननू कह्यो– देवीदास जीवतो जोधपुर गयो तो रावजीनू आपाँ ऊपर जरूर ले आवसी, इणनू मार लेणो, आसल करो. सरफुद्दीन जैमल फौज ले चढिया गाव सातळिया वासै जाय पोहता आरी फौजरो नगारो आ गोइददासजी सुण, घोडा ठामिया सव्रत १६१८ रा चैत सुद १५ वेढ हुई रावजीरी फौजरा इतरा काम आया–

राठोड देईदास जैतावत १	राठोढ भाखरसी जैतावत २
राठोड पूरणमल प्रथीराजोत ३	राठोड जैतसी उरजणपचायणोत ४
राठोड सहसो उरजणोत ५	राठोड ईसरदास राणावत ६
राठोड पतो कूपा महराजोतरो ७	राठोड भाण भोजराजोत ८
राठोड नेतसी सोदावत ९	राठोड रामो भैरूदासोत १०
राठोड अचळो भाणोत ११	राठोड गोइददास राणावत १२
राठोड अमरो रामावत १३.	राठोड सहसो रामावत १४
जैमल तेजसिघोत १५.	राठोड भाखरसी डूगरोत १६
राठोड महेस पचायणोत १७	राठोड रणधीर रायसिघोत १८.
राठोड महेस घडसिघोत १९.	राठोड ईसरदास घडसिघोत २०.
मागळियो वीरम २१.	साखलो तेजसी २२
भाटी तिलोकसी २३	भाटी पीथो २४.
खाती भानीदान २५	वारट जालप २६.
राठोड सागो रणधीरोत २७	राठोड राजसी घडसिघोत २८
राठोड राणो जगनाथोत २९.	भाटी पिरागदास भारमलोत ३०
बारट जीवो ३१.	तुरक हमलो ३२ ।

१६० आ वेढ हुवा पछै रावजी मेडता माथै कटक कियो नही ।

१६१. सवत १६१८ रा चैत सुद १५ राठोड जैमल मिरजै सरफुद्दीन गाव सातळियावास रावजी मालदेजीरी फौजसू जग कियो राठोड देईदास जैतावत वगेरै रावजीरा घणा उमराव माराणा ।

१६२ देवीदास जैतावत कनै घोडा पाचसै हुता नै जैमल कनै मिरजा सरफुद्दीन कनै घणी फौज हुती देवीदास रुस्तम ज्यू जग कर काम आयो ।

१६३. आ वेढ हुवा पछै मेडता माथै रावजी कटक कियो नही ।

१६४. सवत १६१९ रा काती सुद १५ राव मालदेजी देवलोक हुवा. इण राड हुवा पछै आठवै महीनै राव मालदेजी देवलोक हुवा।

१६५ राव चदरसेणजीरै भाइयासू अणवणत रही जिणसू मेडतारो नांव न लियो ।

१६६ सरफुद्दीन दिली गयो जैमलरो वेटो वीठळदास मेडतारी जागीरी मुजाव घोडा रजपूत ले पातसाह अकवररी चाकरीमे गयो ।

१६७ साभर १ सोजत २ मेडता ३ खाटू ४ वधनोर ५
लाडणू ६ रायपुर ७ भाद्राजूण ८ नागोर ९ सिवाणो १०
लोहगढ ११ जेसळ १२ वीकानेर १३ भीनमाल १४ पोहकरण १५
वाढमेर १६ रैवासो १७ कासली १८ जोजावर १९ जोळी २०
लारणो २१ नाडोळ २२ फळोधी २३ साचोर २४ डीडवाणो २५
चाटसू २६ फतैपुर २७ अमरसर २८ समेईगाम २९ खावड ३०
वणवीरपुर ३१ टूकटोडो ३२ अजमेर ३३ जाजपुर ३४ उदैपुर ३५
भारादो ३६ —इत्ता ठिकाणा राव मालदेजी लिया ।

१६८ संवत १६१९ रा काती मुदी १२ जोधपुर राव मालदेजी देवलोक हुवा । जोधपुर, सोजत, पोहकरण राव चद्रसेनरै, फळोधी उदैसिघरै, सिवाणा रायमलरै रह्या ।

राणियां और संतान

१६९ उमादे भटियाणी रावळ लूणकरणरी वेटी जिणनै सवत १५९३ रा वैसाख वद ४ राव मालदेजी जेसळमेर जाय परणिया । सवत १५९५ अजमेर माहे रूसणो हुवो । सवत १६०४ रामकवरनै देसोटो हुवो जद साथे गया । सवत १६१५ रा काती सुद १५ रावजी लारै वळी । केळवै रायजीरी वसी माहे ।

१७० कछवाही लाछळदे, भटियाणी उमादे—आ दोना रावजी मालदेजी लारै सत कियो, मेवाडरै गांव केळवै । उमादेजी लाछळदेरो वेटो राम जिणनू स्राप दियो ।

१७१ सरूपदे झाली मोटा राजारी मा जिण तळाव करायो सवत १६१५ माह वद ५ प्रतिस्टा किवी नाव सरूपसागर लोक वहूजीरो तळाव कहै ।

१७२. सरूपदे झाली चंद्रसेणजीरी मा चंद्रसेणजीनै स्राप दियो– "तै मोनूं राजरा वंदोवस्त वासतै रावजीसू वळण न दिवी सो थारो राज मत रहे जो रावजी लारै सतमे न वळी ।"

१७३ पातररा पेटरा दोय–महेम १, डुगरसी २ ।

१७४ ओळगणैरा बेटा आठ–तिलोकसी १, जैमल २, लखमीदास ३, रूपसिंध ४, तेजसिंध ५, ठाकरसी ६, ईसरदास ७, नेतसी ८ ।

१७५ राठोड़ रायमल राव मालदेरो, सो बूंदीरा धणी हाडा राव सुरजनरी बेटी परणियो ।

१७६. देहरो राव सुरजण जिणरी बेटीं रतनकवर रायमल मालदेओत परणियो।

१७७, रायमल राव मालदेओतरा बेटारी विगत–कल्याणदास १, प्रतापसी २, कान्ह ३, बळभद्र ४, सावळदास ५ ।

१७८ सवत १६६४ सिवाणै कन्लो रायमलोत राणियारी जमर कर सात जणांसू काम आयो माधो पातसारी डोढी पूगो ।

१७९ कल्याणदास रायमलोत लाहोरमे अेकसदी पातसाही चाकरनू भार सिवाणै चढियो. पातसाह मोटा राजानू आग्या दिवी–'इणनू मारो' जद सिवाणा माथै गया कवर भोपत १, कवर जैतसिंघ २, ... ३, रावळ मेघराज ४, राठोड वैरसल प्रथीराजोत ५, महमदखा जावारी ६–इत्यादिक घणा साथै हा ।

१८० परवतसिंघ देवडो मेहाजळोत राव कलारो भाई कल्याणदासजी रातीवासो दियो जद माराणो ।

१८१ खीची गणेसदास कला रायमलोतरो माथो काटियो ।

उरळी चारो राइका, म्हारा भालारी छाहि ।
जो जासी तो आणसू, बाबा मेहारी बाहि ।।

१८२ कलाजीरा हिंडोळा–

काणाणै काढै नीपजै, सिवाणै भरीजै भोग ।
काकै भतीजै मारियो, काठा गहुवारै लोभ ।।
रातो वागो पहरिया, कवळी मूछारो माण ।
ज्या दीठो त्या सालसी, रायमलरो कल्याण ।।

१८३ रतनसी राव मालदेरो सवत १५८९ रा आसोज सुद ८ जनम. रतनसीरा बेटारी विगत–सादूल १, सुरताण २, सुदरदास ३, जैतसी ४, दळपर्त ५, नाथो ६, पचायण ७ ।

१८४ महेस राव मालदेरो, टीपू पातररो बेटो मानो गूगो रोहिलै रहतो जिणरी बेटी टीपू महेसदासरै बेटा तीन–रामदास १, दूदो २, कल्याणदास ३ ।

पुत्रियां

१८५ राजकवरी वाई बूदी हाडा सुरताणनू परणायी हुती. रावजी आपरी हाडीनू मारी हाडै वाईनू मारी. जदसू परणीजण परणावणरी अटक हुई ।

१८६. वाई पोहपावती डूगरपुर रावळ आसकरणनै परणायी हुती उवा रावळजी साथै वळी ।

१८७ हासवाई कछवाहा लूणकरणनै परणायी, वेटो जायो मनोहर राव सजनीवाई रावळ हरराजनू जेसळमेर परणायी. वेटो भीम रावळ. इद्रावतीवाई गवाळेर राजा कछवाहा आसकरणनू परणायी ।

१८८ वाई वाल्हवाई ऊमरकोटरा सोढा रायसलनू परणायी. पछै जोधपुर आयी, सावत कुवो पटै ।

१८९. वाई कनका गुजरातरा पातसाह सुरताण महमदनू परणायी. पातसाह मुवो जद जेसळमेर सजना वाई कनै आय रही ।

१९०. रतनावती वाई हाजीखाँनू परणायी हाजीखा मुवो जद चद्रसेणजीरा विखा माहे आयी थी पछै मोटा राजाजीरै जोधपुर ओज आयी. सवत १६४९ मुयी पछै नागोर मेली उठै गुमटी है ।

१९१ लालवाई सूर पातसाहनू परणायी ।

१९२ अमरसररा सेखावतारी भाणेजी, राव रामारी वहन जसोदावाई नागोरी खाननू परणायी ।

१९३ मानसिंह गागावतसू हमती दीठी जिणसू हाडी द्रोपदी महल वारै कढाय मारी।

१९४ पातररी वेटी रुखमावती पातसाह अकवरनू परणायी लखमी वाहरली ओळगण नगा भारमलोतरै घरमे पैठी नगा लारै बळी ।

राव चंद्रसेण

१९५. सवत १५८९ रा सावण सुद ८ चन्द्रसेणरो जनम सवत १६१८ रा पोस सुद ६ माल्देरै टीकै वैठा. सवत १६३७ रा माह सुद ७ सरियायरी गाळमे राज देवलोक हुवो ।

१९६ सवत १६१८ लोहावट चन्द्रसेणजीरै नै उदैसिहजीरै वेढ हुई रावळ मेघराज हा··वतरा हाथरी वरछी उदैसिहजीरै लागी जद कलोजीसू उदैसिघजी अकवर कनै गया गवाळेर कनै समखळी ठिकाणै पटो पायो ।

१९७. मोटा राजारै हाथरी वरछी चन्द्रसेणजीरै लागी. रावळ मेघराजरै हाथरी वरछी मोटा राजारै लागी लोहावटरै खेत ।

१९८. मोटा राजारै सामै खवै बरछी लागी. घोडो पडियो. जद खीची······रै घोडै साहणी नादै उपाडि चढाय काढिया ।

'जोगा ऊपन जूवटो ऊदो वेलै आल'

१९९. जोगो सादाउत माडणोत राजाजीरै काम आयो ।

२०० नागोर पातसाह अकबरै जद मोटाराजा नै राव चद्रसेणजी अेक हुवा, रसाभास मेटियो मोटो राजा नै कवर रामसिंघ अकबर कनै रह्या. चन्द्रसेणजी भादराजूण गया..कवर उगरसेण बूंदी गयो ।

२०१ सवत १६१८ रा पोस सुद ९ राव चन्दरसेणजी अकबररो उमराव खानजहाँ जिणनू जाळोर सूपियो ।

२०२. सवत १६२० रा जेठ सुद १२ राव राम पातसाह अकबर उमराव हसनकुलीखानू जोधपुर राव चदरसेणजी माथै लायो, रावजी कनासू सोजत इण राव रामनू दिरायी ।

२०३ संवत सौळासै बीस १६२० रा चैत वद ४ राव राम हुसेनकलीनूं आण पाली मारी सोनगरो मानसिघ अखैराजोत निकळियो सो उदैपुर गयो ।

२०४ संवत १६२२ रा मिगसर वद ४ राव चदरसेण हसनकुलीखानू गढ जोधपुर सूंपियो ।

सवत १६३२ राव चदरसेणरा रजपूता सहवाजखानै सिवाणारो गढ सूंपियो ।

२०५. राव चद्रसेणरी वहू सीसोदणी सुरजनदे राणा उदैसिघजीरी बेटी सोजतरै गाव सिवराड हुती पचोळी नेतो भडारी मनो कनै हुता मोटाराजारी वहू कछवाही मनरगदे कुवरजी सूरजसिघजीरी मा सिवराड सीसोदणीजीनै लेण आया सीसोदणीजी जोधपुर आया पछै मथुराजी पधारिया ।

२०६ राव चदरसेणरा बेटा दोय– आसकरण १, रामसिंघ २ निरवस गया उगरसेण चदरसेणोतरो वस रह्यो ।

२०७ उगरसेणरा बेटारी विगत–करमसेन १, कल्याणदास २, कान्ह ३, करमसेणरै पटो अेक बार सोजत ·· हो दिखणमे पठाण खानजहासू मामलो हुवो जठै करमसेण काम आयो ।

२०८ करमसेण ऊगरसेणोतरा बेटारी विगत–किसनसिघ १, स्यामसिंघ २, राजसिंघ ३, कुसळसिंघ ४, बळभद्र ५, मुकनदास ६, हरराम ७, रामसिंघ ८, मोहणदास ९, गिरधर १०, धरमसेन ११, जगनाथ १२ ।

२०९ सीसोदणी सुरजणदेरो वेटो आसकरण सवत १६३७ रा माह सुदमे राव चंदरसेणरै टीकै वैठो।

२१० सवत १६३९ रा चैत सुद २ सारण गावमे भाई उगरसेण कटारी चलायी. आसकरण माराणो · · ·सत कियो, उणहीज दिन आसकरण रावरै रजपूत सेखै साकरोत उगरसेणरा हाथमू कटारी जडकी उगरसेणरै चलायी आसकरण पहलां उगरसेण मुवो।

२११ कवर रामसिंघ नरूको· राजारो भाणेज।

२१२ पातसाह अकवर कावलमे जद रायसिंघ चंदरसेणोतनू सोजत दीवी।

२१३ रामसिंघ चंदरसेणोत काम आयो, तीन राणिया सती हुई सोजतरा तळाव वेपैलाव ऊपर संवत १६३७ रा मगसर वद ३ – कछवाही राजा आसकरणरी वेटी १, सोनगिरी भाण अखैराजोतरी वेटी २।

२१४ संवत १६३६ भादराजण आय राव चदरसेणजी विखा माहे देवड़ा विजा हरराजोतनू परणायी जोमैतीवाई।

२१५ चंदरसेणजीरी वेटी आसकवरीवाई कछवाहा माननू परणायी।

२१६ वेटी रुखमावती वाई पातसाह अकवरनू डोलो मेलियो।

२१७ संवत १६२६ रा पोस सुद ६ चदरसेणजी आपरी वेटी करमैतीवाई राणा उदैसिघनै परणायी।

२१८, करमैतीवाई राणा उदैसिंघजीनू परणायी।

२१९ · · · खां नागोरीनू परणाई धनवाई।

राजा उदैसिंघ

२२० सवत १५९४ रा माह सुद १३ रवि राजा उदैसिघरो जनम।

२२१ सवत १६२७ रा सावण सुद १५ उदैसिंघजी अकवररै चाकर रह्या।

२२२ मोटै राजाजी १६ आदमिया समेत मैणा हरराजियानु जोधपुर गढ माथै मारियो. सवत १६४२ रा जेठ माहे जद सुरजमल खीमाउतरै गोडै ठरड़ो लागो सोजत मोटाराजाजीनू हुई जद वगडी वाघ प्रथीराजोतनू पातसाहजीरी दियोडी हुती नै कटाळियो भोपत देईदासोतरै हुतो।

२२३. सवत १६४१ मोटै राजा राव सुरताण सिरोहीरो धणी जिण माथै पेसकसी पीरोजी लाख दोय नै घोड़ा १३ ठहराया।

२२४ नवा पेटै अैलमे बाई राठोड किसना देवडा सामंतसी नोगारिया नै देवड़ो सामदास सूजावत देवडा प्रिथीराजरो भाई ओळिया राठोड भोपत पातावत. ऊहड गोपालदास साथै जोधपुर मेलिया।

२२५. सवत १६४० नबाब खानखा मोटाराजा उदैसिघ राजपीपळा वेढ हुई गुजरातरो पातसाह मुदफरनू भाज गुजरात दिली कारे घाली सवत १६४१ राजपीपळा मुदफर पातसाह भागो खानखा आगै जद मोटा राजाजीरा चाकर भाटी सादूळ मानावत गोइददासजीना भाई सोरासू बळियो।

२२६ समाडली पटै भाई अमल किया जद गूजरासू वेढ हुई राजाजीरा दोय मनख माराणा समाडली सोभानू सीकदार कियो।

२२७ पलासळो १, गूजरावास २, धुणलो ३, जोगावास ४, भिटोरो खुरद ५, बुटैला ६, हाफत ७, कोटडो ८, जाइजो ९, रीसाणियो १० – अै गाव दस सोजतरा कला करणराजोतरा दियोडा चारणानू मोटै राजा उथापिया जद बारट अखै साकर आढै दुरसै धरणो कियो अखै दुरसै गळै घाली।

२२८. चाहडवा १, रहतडी २, बोरतडी ३, सुगालियो ४, गोधावस ५, भेवली ६, खारिया ७, गिरवरियो ८, आकडावस ९, वासणी १०, गोडाग ११, भिणावणो १२ – अै गाव बामणरा उथापिया।

२२९ सवत १६५१रा असाढ सुद १५ राजा उदैसिघजी लाहोर देवलोक हुवा। पातसाह अकबर नाव बैठ सतियाँनू देखवा आयो जिण पहला लापो दियो. पातसाह कवर सूरजसिंघजीनू बीजाहीनू दिलासा दिवी कर्यो, सरब काज कर पछै म्हा कनै आवो।

सौळैसै इक्काणवै, सुद पूनम आसाढ।
देवलोक ऊदो गयो, गगहरो अवगाढ॥

राणियां

२३० वडी बहू सोळकणीजी सावतसीजीरी बेटी, सोळकियानूँ वैर भागो जद परणियो मोटोराजाजी।

२३१ कछवाहा राजा आसकरणरी बेटी वजरगदेजी मोटोराजा परणियो ज्यारा पुत्र सुरजसिंघजी हुवा।

पुत्र

२३२ मोटाराजा उदैसिंघरै बेटा सूरसिंघ १, अखैराज २, भगवानदास ३, नरहरदास ४, सगतसिंघ ५, भोपत ६, दळपत ७, जैतसिंघ ८, किसनसिंघ ९, जसवतसिंघ १०,

केसोदास ११, रामसिघ १२ ,पूरणमल्ल १३. सोळै सिरदार।

२३३ भगवानदास भोपत सीसोदियारा भाणेज।

२३४ राजा उदैसिघजीरो कंवर भोपत जिणनू मसूदै परमार सादूळरै वेटै मारियो राजा मानरै ओ मामारो वेटो भाई जिणसू मान महाराज सूरजसिंघजीसू कही वैर भंजायो सादूळरी वेटी महाराज सूरजसिघजी परणिया. पवारजी महाराज साथै वळिया।

२३५ मोटाराजारो नरहरदास जिणरा वेटारी विगत – कल्याणदास १, जगनाथ २।

२३६ सवत १६१४ आसोज वदी ४ जनम भगवानदासरो सवत १६१५ रा कातो सुद १२ मुवो।

२३७ मोटाराजारो भगवानदास जिणरा वेटारी विगत – गोइददास १, गोपाळदास २, वळराम ३, अचळदास ४।

२३८ मोटाराजारो मोहणदास जिणरा वेटारी विगत – प्रतापसिंघ १, सवळसिघ २, सादूलसिघ ३. सवत १६२८ जनम सवत १६६७ कटारी खाय मुवो।

२३९ सेखावतारो भाणेज अखैराज समावळी थकी खीचीवाडामे काम आयो।

२४० सगतसिंघ भाटियारो भाणेज।

२४१ जैतसिंघ, माधोसिघ, मोवणदास, कीरतसिंघ – च्यारू अमरसररा सेखावतांरा भाणेज।

२४२ माधोसिंघ मोटाराजारो जिणरा वेटारी विगत – केसरीसिघ १, महासिघ २, विहारीदास ३, सवत १६३२ काती वद ५ जनम।

२४३ मोटाराजारो जैतसिंघ जिणरा वेटारी विगत – हरिसिंघ १, अमरो २, कनीराम ३. पेमसिघ ४, भावसिंघ ५, राजसिंघ ६, गोवरधन ७, विजैसिंघ ८।

२४४ दळपत मोटाराजारो जिणरा वेटारी विगत – महेसदास १, कनीराम २, राजसिघ ३, जसवत ४, प्रतापसिंघ ५, जुझारसिंघ ६।

२४५. सवत १६५४ राठोड दळपत मोटाराजारो लाहोर थो. कुरखेत सूधो दोडियो वुदेला रण धवळ वासै भाटी गोइददासजी भुलायो वुदेलो हाथ न आयो।

२४६ इत्ता राठोड़ साथ हुता राठोड भगवानदासजीरै राठोड दळपत राजावत १, किसनसिघ राजावत २, राव सगतसिंघरो साथ भाटी गोइददास मानावत।

२४७ सवत १६६७रा पोस सुद ११ राठोड भगवानदास मोटाराजारो वेटो जिणरा वैरमे वुदेलो दळमाह राजा हरववळरो वैटो इतरा मिल मारियो।

२४८ राठोड गोइददास भगवानदासोत, राठोड राघोदास नरहरदासोत, राठोड़ भोजराज नराणदासोत, राठोड जगनाथ कल्याणदासोत, राठोड भगवानदास वाघोत, हुल मेघराज भाडावत, राठोड केसवदास दिखणी।

२४९ मोटाराजारी बेटी कमळावतीवाई मऊरा खीची राव गोपाळदासनू परणायी।

२५०. प्राणमतीवाई डूगरपुररो रावळ सहसमल जिणरो बेटो करमसी जिणनू परणायी।

२५१ दळपतजीरी बहन किसनावतीवाई कछवाहा रुपसी वैरागररो बेटो तिलोकसी जिणनू परणायी।

२५२ चावडारी भाणेजी रुखमावतीवाई कछवाहा राजा महासिंघनू परणायी।

२५३ भाटी सूरजमल लूणकरणोतरी बेटी राणी सजनाँबाई जिणरी बेटी राजकवर भाण सगतावतनू परणायी।

२५४. सतोखदेजीरी दूजी बेटी सतभामाबाई हळवद झाला चदरसेणनू परणायी।

२५५ कछवाहा राजा रामसिंघनू परणायी सोळकणीजीरी बेटी तीन।

२५६ रभावतीवाई भाटी खेतसी मालदेओतनू परणायी। धनवाई नू।

२५७ रूपकवर वाई ग्वाळेर परणायी बेटो नरहरदास।

२५८ कछवाही राजावत ग्वाळेररा राजा आसकरणरी बेटी मनरगदेजी ज्याँरा बेटा सूरजसिंघजी, किसनसिंघजी, बेटी बाई माना पातसाह साहजहारी मा।

२५९ सवत १६४४ मानीबाई साहजादा जहाँगीरनू परणायी।

राजा सूरसिंघजी

२६० सवत १६२७ रा वैसाख वद ७ रो जनम सूरजसिघजीरो, सवत १६५७ रा असाढ वद ११ लाहोर पाट बैठा, सवत १६७६ रा भादवा सुद ८ राम कह्यो दिखणमें महकररै थाणै।

२६१ सवत १६२७ रा वैसाख वद ६ फळोधी सूरजसिघजीरो जनम सवत १६२६ सावण वद ७ राजा सूरजसिंघजीरो जनम सवत १६५१ असाढ सुद १५ सूरजसिंघजीनू लाहोर डेरा टीको दियो।

२६२ सवत १६६८ पातसाहरी फौज दिखण माथै जावै, सारा राजा, नवाब भेळा जद महाराज सूरजसिंघजीरो उमराव भाटी जोगणीदास गोइददासोत जिणनू कछवाहा राजा मानसिघजीरा उमरावरै हाथी सूडसू पकड घोडासू उतार मोरो कर दांतामे पोयोडी कटारी वाही हाथीरै कुभाथळ लागी, जोगणीदास मुवो।

२६३ ओ हाथी राजा मान महाराज सूरजसिंघजीरै मेलियो ओ हाथी पछै महाराज सूरजसिंघजी उदैपुरमे साहजादा खुरमनै दियो ।

२६४ ओ हाथी राजा मान राजा सूरजसिंघजीरी निजर कियो किनाईक वरसा पछै ओ हाथी उदैपुरमे साहजादा खुरमरी निजर सूरजसिंघजी कियो ।

२६५ चतुरभुज सेवा राणा प्रताप प्रतापीतरो जिणनू सवत १६६९ सिवाणारो गाव फरमावस गावा छवसूं वरस अेक रह्यो जोधाणनाथ दियो ।

२६६ सवत १६७१ उदैपुर राणाजीरी मुहिम महाराज सूरजसिंघजी साथै हुता राठोड प्रथीराज वलूओत वैर दहियो मोवणदास राव रतन हाडारो चाकर घरे जावतो मारियो इतरा सिरदारा मिल ज्यारी विगत–राठोड़ पिरागदास मानसिंघोत काम आयो प्रथीराजजीरी भीरा, नरहरदास भागोत, चापो वीठळदास गोपाळदासोत ।

२६७ घाघल पचायण सूरसिंघजीनू जहर न दियो, आप पियो ।

२६८ पचायणरै ईसरदास, ईसरदासरै मनोहरदास, मनोहरदासरै वैटा तीन–अेक गोवददास जिणरा फैरू, दूजो उदैकरण जिणरा साल, तीजो केसवदास जिणरा मोकळावस ।

२६९ संवत १६७६ रा सुकल पक्खमे दिखणमे महिकररा डेरां सूरजसिंघजी देवलोक हुवा ।

२७०. सवत १६७६ रा भादवा सुद दिखणमें महकररै थाणै सूरजसिंघजी देवलोक हुवा ।

राणियां और संतान

२७१ महाराज सूरजसिंघजी लाहोररा डेरा कछवाहा दुरजणसाळरी वेटी सोभागदेजी परणिया पीहररो नाम किसनावतीवाई ।

२७२ सवत १६८० रा फागण सुद ९ गोधूळीक सावै परवेजनू परणायी ।

२७३ सेखावत दुरजणसाळरी वेटी किसनावतीवाई सासरारो नाम सोभागदेजी ज्यारा वेटा महाराज गजसिंघजी सवत १६५३ रा काती सुद ८ जनम लाहोरमें हुवो ।

२७४ वेटी वाई मनभावती साहजादा परवेजनू परणायी, कछवाहा दुरजणसाळरा दोहिता महाराज गजसिंघजी ।

२७५. महाराज सूरजसिंघजीरो राजलोक डूगरपुररा रावळ सहसमलरी वेटी पीहररो नाव जसोदा, सासरारो नाव मुग्तागदे ज्यारो वेटो सवळसिंघजी । संवत १६६४ रो जनम सवत १७०३ रा फागण वद ३ राम कह्यो ।

२७६ बहूजी अहाडी सुरताणदेजी रावळ सहसमलरी बेटी ज्यारा बेटा सबळसिंघजी।

२७७ राजा सबळसिंघजी सूरसिंघोत महाराज गजसिंघजीरा छोटा भाई है, अेक हजारी मनसब, वरस ३९ री ऊमर हुई।

२७८ सांगा परमाररी दोहिती बाई आसीकवरी चतरगदेजीरी बेटी कछवाहा राजा भावसिंघ मानसिंघोतनू परणायी।

२७९ भाटी सहसमल मालदेवोतरी बेटी पारवतीबाई अमोलखदेजी ज्यारी बेटी म्रगावतीबाई कछवाहा राजा बडा जैसिंघजीनू परणायी।

२८०. भाटी केलण गोयददासरी बेटी जोगणीदासरी बहन सुजाणदेजी महाराज सूरजसिंघजी परणिया साळवळी।

राजा गजसिंघजी

२८१ महाराज गजसिंघजी सवत १६५२ रा काती सुद ८ व्रहसपति जनम. सवत १६७६ आसोज सुद १० पाट बैठा बुरहानपुरमे सवत १६९४ जेठ सुद ३ रवि राम कह्यो आगरै हवेली जमनारै उपकठ।

२८२ सवत १६५२ रा काती सुद ८ राजा गजसिंघजीरो जनम।

२८३ सवत १६७६ बिरहानपुर नबाव खानखा महाराज गजसिंघजीनू टीको दियो. आगरासू पातसाह जहागीर सपद माला साथै बिरहानपुर मेलियो हो।

२८४ सवत १६७६ पातसाह जहागीर आगराथी टीको बुरहानपुर मेलियो महाराज गजसिंघजीनै।

२८५. सवत १६७७ अबर चपू महकर घेरा दियो महाराजा गजसिंघजी आछा हुवा।

२८६ सवत १६७८ खुरम आयो जद अबर चपूसू वात ठहरी वरस दोय विग्रह रह्यो।

२८७ सवत १६८१ रा काती सुद १५ महाराज गजसिंघजी सीसोदिया भीम अमरसिंघोतनूं जगमे मारियो।

२८८. सवत १६८१ काती सुद १५ हाजीपुर पटणै गगा ऊपर साहजादा खुरमथी वेढ हुई महाराज गजसिंघजी सीसोदिया भीमनू मारियो भीमरा इत्ता काम आया–सीसोदियो मानसिंघ भाणावत, कूपावत कछरो, जसवत सादूळोतरो २ जैतारणियो हरिदासरीयोत ३ – राठोड राघोदास घावै पडियो वळूओत जैतारणियो भीम कल्याणदासोत सीसोदियो गोकळदास भाणावत अै घावै पडिया ज्यानू महाराज गजसिंघजी उपडाया जतन कर जिवाया।

२८९ सवत १६८४ रा असाढ वद ८ फतैपुर कनै सीसराधीरी गढी भेळी गजसिंघजीरै साथ जद इतरा राठोड काम आया नवान सिरदारखान पातलाही फौजरो

मालक हुतो राठोड भगवानदास वाघोत १, राठोड गोकळदास विसनदासोत २, जैतारणियो दयालदास कल्याणदासोत ३ वगेरै ।

२९० हाडा इण ठोड घणा काम आया नै सवत १६८४ रा असाढ वद ८ फतैपुर कनै सीसराळी गढी हुती ।

२९१ श्री महाराजाधिराजजी श्रीगजसिघजी महाराज कवर श्रीजसवतसिंघजी वचनातु आसोप कोटा पत राठोड गजसिंघजी दीसे सुप्रसाद वांचजो अठारा समाचार भला छै थारा ।

२९२. महाराजरी गुणपचास वरसरी ऊमर हुई, चौईस वरस राज कियो ।

राणियां

२९३ सवत १६६३ कछवाहा राजा जगरूपरी वेटी कलियाणदेजी टोडै जाय परणिया महाराजकवार गजसिघजी पैलो व्याव ।

२९४ टौडै पधार परणिया कलियाणदेजी नाम ।

२९५. सवत १६६३ असोपालवैरो विहु महाराज सूरसिंघजी भाटी गोइददास मानावतनू दिया. इणहीज वरस तोडै कछवाहा राजा जगनाथरै राजा गज-सिंघजी परणिया सीतळारी पीडा घणी हुई. गोइददास मानावतरो वेटो मोहणदास कवरजी माथै उवाराणो कवरजी वचिया, मोहणदास मुवो ।

२९६ महाराजकवर गजसिंघजी तोडै कछवाहारै परणियो उठै सीतळा निसरी सू सीळ सावण आपडिया जद गोइददास मानावतरो वेटो मोवणदास कुंवरजी माथै तोडै उवाराणो कवरजीरै सीतळा आछी तरैसू तूठी. मोवणदास मुवो ।

२९७ कछवाहा राजा मानसिंघ भावसिंघ मानसिंघोत वेटी सूरजदे महाराज गज-सिंघजी आवेर जाय परणिया जिका आगरै महाराज साथै बळी ।

२९८ संवत १६६९ माह वद ५ कवर गजसिंघजी जेसळमेर परणीजण पधारिया. भाटी गोइददास साथै हुवो ।

२९९ चहुवाण अमरतदे सिखरा महकरणोतरी वेटी सवत १६६४ गाव खेजडली पधार परणिया महाराजा गजसिंघजी ।

३०० चहुवाण सिखरा महकरणोतरी वेटी अमरतदे सवत १६६४ गाव खेजडली पधार परणिया महाराज गजसिंघजी ।

३०१ चहुवाण सिखरो महकरणोत महाराज गजसिंघजीरो सुसरो ।

३०२ वहू सीसोदणी परतापदेजी रुकमावतीबाई भाण सगतावतरी बेटी सवत १६६४ मथुराजी व्याव हुवो नानै झाबुआरै राजा केसौदास मारू परणायी गजसिंघजीनू स० १६७९ जोधपुर राणीपदो पायो मगसर ५ महाराज जसवतसिंघजी।

३०३ सवत १६७९ रा भादवामे सीसोदणी परतापदेजी कवर जसवतसिंघजीरी मा जिणनू राणीपदो दियो जोधपुर पधारनै महाराज गजसिंघजी।

३०४. वाघेलो बाधूगढरो धणी राजा अमरसिंघ महाराज गजसिंघजीरी चद्रकवर परणियो।

३०५ रीवा मुकदपुररा राजा वाघेला जिण राजा वीरासिंघदेव वाघेलो जिणरो राजा वीरभद्ररो राजा विक्रमादित्यरो अमरसिंघ महाराज गजसिंघजीरी बेटी परणियो जोधपुर।

३०६ अनारो१, देसो २ – अै दोनू बहना महाराज गजसिंघजीरी मरजीरी · लिवी।

जसवंतसिंघजी

३०७. महाराज जसवतसिंघजीरो जनम बुरहानपुर हवेली सवत् १६८३ रा माह वद ४ बुरहानपुररो जनम महाराज जसवतसिंघजीरो।

३०८. महाराजकवार जसवतसिंघजी बूदी राव चत्रसाळजीरी बेटी परणिया. दूजै दिन महाराज गजसिंघजी देवलोक हुवा कवरजी बूदीसू परबारा आगरै गया।

३०९. पातसाहनू खबर हुई– जसू आया. जद साहजादा मुरादबख्सनू डेरै मेलनै मातमपुरसी करायी फुरमाया साहजहा– आछी सायत जोय हजूर आवो सवत् १६९४ रा असाढ सुद ४ सोमवार पातसाह उमराव दोय डोढी ताई मेलिया उणा ले जाय पावा लगाया श्री पातसाहजी महाराजनू छातीसू लगाय दिलासा दिवी सिरपाव मोतियारी माळा दे सदामदरो मनसब दे देसरी सीख दिवी।

३१०. सवत् १६९५ रा असाढ वद ७ जोघपुररो टीको पायो जसवतसिंघजी।

३११ सवत् १६९४ रा असाढ वद ७ टीको पायो महाराज श्री जसवतसिंघजी।

३१२ आगरै साहजहा आपरै हाथसू महाराज जसवतसिंघजीनू टीको दियो।

३१३ आगरै साहजहा पातसाह महाराज जसवतसिंघजीनू टीको दियो जद उमरावानू सिरपाव दियो ज्यारी विगत–

३१४ राठोड राजसिंघ खीमावतनै १, राठोड रतन राजसिघोतनै २, राठोड भावसिंघ कान्होतनै ३, राठोड वीठळ गोपालदासोतनै ४, राठोड सुन्दरदास रायसिंघोतनै ५, रावळ भारमल जगमालोतनै ६, राठोड जगतसिघ रामदासोतनै ७, राठोड

वनमाळीदासनै ८, आढा किसना दुरसावतनै ९, राठोड गोवरधन चादावत कूपा १०—आ दस आदमियानै ।

३१५ सवत् १६९७ रा फागणमे चापो महेशदास सूरजमलोत प्रधान हुतो महाराज श्रीजसवर्तसिघजीरै ।

३१६ महाराज जसवर्तसिघजी लोहाईरा डेरा सवत् १६९८ रा आसोज सुद १० वाईस घोडा चारणानू नै सिरदारानू दिया, दोय लाख-पसाव दिया, अेक लालस खेतसीनू, दूजेरो आढा किसनानू ।

३१७ श्री महाराजाजीरो साथ ले मुहणोत सुदरदास, चापावत लखधीर विठळदासोत गाव सीधलारै . सीधल वाघ आदमी ४०० सू गाव . . . . . . ।

३१८ सवत् १७०१ रा पोस सुद ७ महाराजा श्रीजसवर्तसिघजीरै ज्वर निपट जोर कियो पातसाह साहजहा कूपावन राजसिघ खीमावतनू हाथी जै जीतवा दियो हो सो हाथी महाराजा दान दियो व्रिग रामदास दिखणी हमै चाटसू रहै जिणनू रुपिया १०००) ऊपर दिया पछै रातरै समै सीतळा देखायी दिवी ।

३१९ रावळ मनोहरदास मुवो सवत् १७०६ रा काती सुद १५ जद पातसाहजी ।

३२० सवत १७०६ रा फागण सुद २ जसवर्तसिघजी पहोकरणवासी महारावळ सवळसिघ महाराजाजीरी फौज माहे हुतो रोजीना पचास रुपिया पावतो सारा सवार डोढ हजार अढाई हजार फौजमे पाळा हुता ।

३२१ सवत् १७०६ रा असाढ वद ३ जोधपुरसू फौज पोहकरण माथै विदा किवी राठोड गोपाळदास सुदरदासोत मेडतियो १, राठोड वीठळदास सुदरदासोत मेडतियो २, वीठळदास गोपाळदासोत चापो ३, नारखान राजसिघोत कूपो ४, भँडारी जगनाथ ५, मुणोयत नैणसी ६, सिगवी प्रताप ।

३२२ रावळ सवळसिघ जेसळमेररा उमराव भाटी पोहकरण किला मांहे हुता ज्यानू वात कर काढ दिया दरवाररो अमल करायो भाटियारा जणा अढाईसै गढ माहे हुता ज्या माहसू तेरै जणा काम आया पडाव रहिया हुता जिके दूजा निसरिया ।

३२३ राठोड सुजाणसिघ केहरसिघोतरो रजपूत भाटी रुघ चापा अमरा सुरजनोतरा रजपूत काम आया सवत १७०६ रा आसोज सुद १५ पोहकरणमें अमल हुवो जसवर्तसिघ महाराजरो ।

३२४ सहर उजेण सवत् १७१४ रा वैसाख वद ९ सुक्र ओरगजेव मुरादबखससू महाराज जसवर्तसिघजी जग कियो ।

३२५ तोपखानारो मालक कासमखान औ‥ ‥महाराजा जसवतसिंघजी साथै विदा किया उजैण थाणै ।

३२६ हिंदुआरी विगत– हाडो मुकनदास, गोड अरजुण, भीम राठोड, रतन महेसदासोत, सूरजमलोत, सीसोदियो राजा अमरसिंघ, भीम अमरसिंघोतरो सीसोदियो, सुजाणसिंघ अमरसिंघोत–इत्यादिक बाईस आसामिया महाराजरै ताबै किवी पातसाह साहजहा ।

३२७. १२४२ आसामीदार काम आया ज्यारा राजपूत ७०१ काम आया. ३०० घोडा वढिया अेक हाथी माराणो राठोड़ सुजाणसिंघ केहरसिंघोत घावै पड उपडियो रजपूत १२ मुहता सूघा काम आया ।

३२८ ठाकुर च्यार तथा सात पैला उपाडिया भाटी रुघनाथ १, राठोड महासिंघ जगनाथोत २, राठोड रायसल केसरीसिंघोत ३ इत्यादिक ।

३२९. राठोड द्वारकादास बळूओत सीसोदिया रायसिंघरो चाकर काम आयो ।

३३०. जैतारणियो बळराम दयालदासोत, आसकरण बळरामोत, कुभकरण बळरामोत, वीरमदे मुकनदासोत, सुदरदास वेणीदासोत, करमसोत प्रथीराज, दळपतोत प्रमुख, धाधल किसनो नारणोत, भाटी रतन भीम प्रयागदासोतरो, सोनगरो जगतसिघ रायसिंघोत पडि उपडियो उजीण पिरोयत दळपत मनोहरदासोत, ऊहड मेवराज उरजगोत, मेडतियो गोपीनाथ गोकळदासोत, गरीबदास सुजाणसिंघोत मुरारीदास गोयददासोत प्रमुख खीची जोगीदास कलावत, पडियार सादो भीमावत, चारण जगमाल, जूजाणियो नारण वाघावत, भायल रामसिंघ कचरावत नै देदो सावळोत इत्यादिक उजैण काम आया १३० घायल हुवा तीर नै गोळीसू ।

३३१ चापावत वीठळदास गोपालदासोत, भीम वीठळदासोत, वीजो हरीदासोत, दयाळदास सूरजमलोत, किसनसिंघोत, खेतसिंघोत अै उजैण काम आया ।

३३२ राठोड रतन महेसदासोत साथै इतरा उजैण काम आया- राठोड साहबखा कुभकरण वाघोतरो जैतो, चहुवाण वीठळ किसनदासोत, चहुवाण कूभो ईसरदासोत, चहुवाण अमरदास नै भगवानदास सादूळ सावतसीहोतरा, भाटी कुभकरण सुरताण रामोतरो केलण, भाटी अजो केलण, राठोड गिरधरदास किसनदासोत गागो, गहलोत पचायण हरदासोत, राठोड नरहरदास वीकानेर, राठोड गोपीनाथ राव सगतसिघरो पोतो, राठोड वेणीदास राजसिंघ सूरजमलोतरो चापो, राठोड दुवारकादास बळू गोपाळदासोतरो चापो, राठोड भावसिंघ मेडतियो जैमलोत, माडल नाथारा वेटा तीन- साँगो १, रतनसी २,

रूपसी ३, बारट जसो वेणीदासोत, सोनगरो वीरमदे, कछवाहो स्यामसिंघ राजावत, राठोड हरीराम लखमावत, मुहतो सांवळदास रूपसीरो, पडिहार धनराज, थोरी भूरियो, दमामी गुणो।

३३३ औरगजेब साहसुजा सामो गयो महाराज जसवतसिंघजी साथ हुता छानै साहसुजासू मिलिया साहसुजा कह्यो म्हे भाई भाई काले साथै जोधपुर पधारो. औरगजेबरै नै साहसुजारै जग हुवो पातसाही लसकररा डेरा लूटनै महाराज मारवाडनू पधारिया मारगमे पातसाही सहर मालू लूटिया।

३३४ साहसुजानू जीत पातसाह दिली आय रायसिंघनू जोधपुर लिख दियो महाराजा सामी फौज मेली रायसिंघनू मारवाडमे आवण न दियो आ वात सुण औरगजेब मनमे कोप कियो।

३३५ हुरमखानो लूट इकवीस पालत वीज वाहणरा भरि महाराज डेरै आणी।

३३६. राठोड रणछोडदास गोइददासोत महाराजा श्रीजसवतसिंघजीरी तरफसू नेवोजी अवम और गोइन्दराय साहजादा मुहम्मद मुअज्जिमरी तरफसू राजगढ सिवा कनै गया सिवै सिवारी मा रणछोडदासजीरै हाथ सिवारो वेटो संभाजी वरस ११ में महाराजरो वोल ले सूपियो।

३३७ काती सुद ३ रा राजगढसू सिवै विदा किया तीनसै असवार संभाजी साथै राठोड़ रणछोडदासजीनूं घोडो सिरपाव दियो दुगदुगिया न लिवी. अेक घोड़ो, अेक सिरपाव, अेक दुगदुगी खोजा अवमनू दियो, इतरो ही समाधान गोइदरायरो कियो. मिगसर वद ५ रवि ओरगावाद आया संभानू महाराजरा पावा लगायो मिगसर वद ६ सोम महाराज साहजादासूं मुलाजमत करायी तरै पाच हजारियांमें सभानू ऊभो राखियो, सिरपाव दियो पाचहजारीरो मनसब दियो महाराजरी कचहडी नजदीक संभारो डेरो हुवो।

३३८. मिगसर वद १२ रवि साहजादै सभानू विदा कियो घोडा २, कपडो, दुगदुगी १, पुणचियारो जोडो १ सभाजीनू इत्ता दिया कटारी जड़ावरी १, दुगदुगी अेक ७२००) री, थान नव कपड़ो सेवानू भेजियो. राठोड रणछोडदास गोइन्दासोत संभाजी साथै भेजियो दिन आठ सभाजी औरगावादमे रह्यो

३३९. महाराज श्रीजसवतसिंघजी लाहोररा डेरा सवत् १७२३ रा पोस वद ८ राठोड श्रीआसकरणजीनू मया कर देस सूबो दियो इत्ती चीजा हजुर इनायत किवी—सोनारी साकत घोडो १, सिरपाव वागो १, तवारारो हुकम कियो पंचोळी केसरीसिंघजी आसकरणजी मिल मारवाडरो काम करै।

३४० सवत् १७३० महाराजनू काबुलनू विदा किया पठाण माथै सुजातखा नवाब महाराजरी तावीतमे ।

३४१ सवत् १७३० रा फागण सुद ५ मोमवार पठाणसू राड हुई सुजातखा काम आयो महाराजरो ही लोक काम आयो फतै महाराजरी हुई ।

३४२ औरगजेव खिताब दियो गस्त जसवतसिघ महाराजा दुवार मेडतिया गोपालदास सुन्दरदासोतनू जगनग नामा हाथी, चापा हाथी, कूपा गोवरधन चादावतनू रणजीत हाथी—जुमलै तीन हाथी सिरदारा तीननै जसवतसिघजी अेक दिन दिया ।

३४३. मुलतानरा डेरा वनारसीदास जैनीनै महाराज जसवतसिघजी आग्या किवी—अध्यातम ग्रथ वणाव ।

३४४ महाराज जसवतसिघजी लिखता सही श्री परब्रमजीरी छै ।

३४५ महाराज जसवतसिघजी राजा सवळसिघजी मूरजसिघोत ज्यांरी बेटी सवत १७०७ रा काती वद ५ देवळियै परणायी जद हथणी चवेली डायजै दिवी ।

३४६ सवत् १७३५ रा पोस वद १० महाराज जसवतसिघजी देवलोक हुवा बीस गायणिया नै राणी चन्द्रावतजी रामपुरारा राव अमरसिघरी बेटी मडोवर जाय सत कियो जोधपुरसू ।

३४७ सवत् १७३५ रा चैत वद ५ अजीतसिघजीरो जनम. दुरगदास आसकरणोत १, चापावत महासिघ २, मेडतियो मोहकमसिघ जगावत ३, रूपो ऊदावत ४, पिरागदास भोजराज वीदावत ५—अै दिलीसू मारवाडमे आया ।

३४८ सवत् १७३५ सैताळीस सरदार दिली काम आया सवत् १७३६रा भादवा वद ११ राजसिघ मेडतियो सेख सादूळनू मारियो मेडतो लियो ।

राणियाँ और संतान

३४९ महाराज जसवतसिघजीरै राजलोकारी विगत—बहूजी श्री भटियाणीजी नाव जसरुपदेजी रावळ मनोहरदासरी बेटी, पीहररो नाव पेमकवर. सवत् १६९३ रा वैसाख सुद १२ घडी आठ रात गया जेसळमेर पधार परणिया कवरपदे ।

३५०. महाराज जसवतसिघजीरै राजलोक भटियाणी जसरूपदेजी रावळ मनोहरदासरी बेटी ।

३५१. सवत् १६९८ रामपुरै परणिया राव चादारी बेटी कसमीरदेजी चद्रावत. गागैळाव फूटो हो सो आ फेर वधायो ।

३५२ वहूजी भटियाणीजी वाछळदेजी रावळ कलारी वेटी रामकवरबाई सवत् १६९८ जेसळमेर जाय परणिया रावळ भीम व्याव कियो गोइंददासजी साथै व्यावमे हुता ।

३५३ सोनगरा जसवतरी वेटी मनसुखदेजी भागवतीवाई सवत् १६९८ मणियारी पधार परणिया वेटी अमरसिंघजी ।

३५४ सवत् १६९१ रा चैत वद ७ गढसू उतर अमरसिंघजी पटो पायो वडैद जठै पधारिया ।

३५५ वाघेला सागारी वेटी वाघेली कसूवदेजी सोभा सीकदाररै घरै परणिया जोधपुर डोळो आयो थो ज्याका गढी तळाव नवो वधायो ।

३५६ नरूकी केसरदेजी चदरभाणजीरी वेटी संवत् १६७९ रै असाढ गांव पनवाड परणिया, परवेज साथ जाता सवत् १७३५ पोस वद १० जोधपुर सती हुवा ।

३५७. कछवाहा राजा भावसिंघजीरी वेटी सूरजदेजी राजा जैसिंघजी व्याव कियो आवेर जाय परणिया आगरै सहगवन कियो राजाजी साथ सवत १६९४ रा जेठ सुद ३ ।

३५८. सेखावतजी खडेलारा अतरगदे सासरारो नांव, जानकवर वाई पीहररो नाव, राजा वरसिंघ दुवारकादासोतरी वेटी महाराज जसवतसिंघजीरी राजलोक, कवर प्रथीसिंघजीरी मा ज्या तळाव खणायो, वधाय नाव जानसागर कोई लोग सेखावतजीरो तळाव कहै ।

३५९ वहूजी श्री हाडीजी नाम जसवतदेजी राव चत्रसाळरी वेटी सवत् १६९४ रा जेठ सुद २ सनी वूदी पधार परणिया जेठ सुद ३ महाराज गजसिंघजी देवलोक हुवा पीहररो नाव कोमकवरी ।

३६० वहूजी हाडी जसवतदे चत्रसाळ वूंदीरा रावरी वेटी सवत् १७२६ रा वैसाख सुद १३ राणीपदो पायो औरगावाद में ।

३६१. चहुवाण जगरूपदेजी दयालदास सिखरावतरी वेटी सवत् १६९७ रा फागण सुद ३ लाहोर जाता डोळो आयो, विलाडै परणिया ।

३६२. वहूजी चहुवाणजी चहुवाण दयालदास सिखरावतरी वेटी पातारी भाणेज नाम जगरूपदेजी पीहररो नाव रायकवरी सवत् १६९७ रा फागण सुद ३ लाहोर पधारता गाव विलाडै डोळो आयो परणिया ।

३६३. वहूजी गोड जसरदे मनोहरदासरी वेटी सवत् १७०६ रा फागण वद २ राजा वीठळदास व्याव कियो गढ रणथभोर ।

३६४. कछवाही अतिरगदे वीरसिहरी बेटी सवत् १७०६ रा. जेठ सुद ८ परणिया खंडेलै जाय मेडताथी।

३६५ कवर प्रथीसिंघ राजा जसवतसिंघ राजा गजसिघोतरो दिली देवलोक हुवो. राठोड जुझारसिघ दलपतोतरो जिणरी हवेली कनै दाग पडियो।

३६६ कवरजी प्रथीसिंघजी जसवतसिंघोत दिली देवलोक हुवा राठोड जुझारसिंघ दळपतोत जिणरी हवेली कनै दाग दिराणो गोडजी सत कियो सत करता फुरमाया—म्हाराजसू मालम कीजो आगरै महाराज गजसिंघजी माथै जायगां करायी · · म्हारै ही जायगा करावै।

३६७ कवरजीरै थडै सेवा करणनै व्यास सोभो रहियो।

३६८ गोडजी सत करता फुरमाया—महाराजसू मालम कीजो माहरै अठै जायगा करावै महाराज गजसिंघजी माथै आगरै जायगा करायी जिसी।

३६९. कवरजीरै थडै व्यास सोभो सेवा करणनू रह्यो।

३७० दळथभणजी नरूकारा भाणेज महाराज जसवतसिंघजीरा बेटा।

३७१ हिंगळाजजीसू रिधसिधपुरी सन्यासी हररामपुरीरो चेलो काबुल आयो. मालम करायी, पांच वरस मैं हिंगळाजरा चरणा तप कियो, माईरी अग्या हुई समाध लेनै जसवतसिंघरै कंवर होय, नवकोटीरो राज कर; जैसू मोनै समाध दिराडो. महाराज ठात्रा आदमी मेल समाध दिराडी, भडारो करायो इण कह्यो—राणी जादवके पेट आऊगा, महाराज हमारा मुख न देखै, म्हे महाराजका मुख न देखू सवत १७३५ रा भादवा वद ९ सन्यासी दुपहररी समाध कावलमें लिवी बभूतरो गोळो, माल १, पोथी १ सूपी कह्यो—हू माग लेसू।

अजीतसिंघ

३७२ दिली सरदार दुरगादासजी वगेरा पेसोरसू आया ज्या कनै तीन सौ च्यार सौ लोक हुतो ज्या माथै तीस हजार घोडो ले सीदी आयो।

३७३ दुरगादासजी दिलीसू आपरी वसी साथ ले विखारी त्यारी करी. सिरोही वीसलपुर गया।

दूहो – दुरगो लड़्यो दिली दळा, जद आयो जोधार।
वासै ले माणस वसी, विखो कियो तिण वार॥

३७४. असूदखा अजमेर जिणसू सोनग वीठळदासोत सिसोदियो भीवसिंघ राणा राजसिंघरो बेटो जिणारी मारफत वातचीत करी – म्हांरो गोर कीजै जद राजाजीरा बेटारै नै सोनगजीरै मुनमवरी वात ठहरती ही सवत १७३८

आसोज सुद ७ गात्र खुड़ळोतै सोनगजी राम कह्यो गोड सती हुई. वात यूहीज रही ।

३७५ सवत १७३८ मे डीडवाणारी पेसकसी ले चापावत अजवसिंघ वीठळदासोत मकराणो लूटियो काती वद १४ सहर मेडतो लूटियो. दिन दोय ईंदावड रिया ।

३७६ असदखारो वेटो इकतारखा नै सिरदारखां पातसाही फौज ले आया. लड़ाई किनाईक सिरदारा सहित अजवसिंघ वीठळदासोत काम आयो. काती सुद १ वार सोम ।

३७७ इण झगडामे तीन चारण काम आया मेड़तिया सिरदार तीन काम आया अजवसिंघजी सूधा पाच चापावत काम आया जुमलै राठोड इग्यारै काम आया ।

३७८ चापावत उदैसिंघ लखवीर वीठळदासोत नै करणोत खीवकरण आसकरणोत नै मेडतियो मोकमसिंघ कल्याणमलोत – आ सवत १७३८ रा कातीमें माडल मारिनै कासंमखा दिखण जातो हो जिणसू रोळो कियो ।

३७९ सवत १७४३ रा वैसाख वद ५ सिरोहीरै गाव पालडी महाराज अजीतसिंघजीनू पधराया सारा दरसण कियो चापो उदैसिघ लखधीरोत पावा लागो वीजो ही साथ पावां लागो ।

३८०. सवत १७४३ रा आसोजमे राठोड दुरगदास आसकरणोत दिखणसू मारवाडमें आयो नै भोमिया जमीदार थापा मिजमानी मेली नै घोडा नजर किया नै पातसाही मुलक लूटिया आगरासू वीस कोस आतरै हसाररो मुलक लूटियो ।

३८१ जेठ सुद ५ माल्पुरै सइयद कुतव थो सामो आय लडियो सइयदरा आदमी सारा काम आया पछै पगा लागो ।

३८२. सवत १७४३ रा आसोज सुद १ गाव रतनथळ सइयदासू लडाई हुई सो सइयद मारिया राठोडा ।

३८३ सवत १७४४ रा सावण सुद १० भीवरळाई आय वाडमेर अकवररा वेटा सुलतान साहजादारै पगा लागा घर वैठा रया ।

३८४ पछै महाराज श्रीअजीतसिघजी तलवड़ै मलीनाथजीरा दरसण पधारिया. पछै भीवरळाई काती वद १० पधारिया जद दुरगदास आसकरणोत सारा साथसू सामो आय पगा लागो सिरपाव दियो पछै सला ठहरायी श्रीमहाराज पीपळोदरा पहाड पवार विराजो नै म्हा कनै साथ सांवठो छै, धरतीमे घोडो फेर आवा छा ।

३८५ सवत १७४४ रा काती वद १३ हाडो दुरजणसिघजी, राठोड अखैराज, रतनो जोश्रो, राठोड दुरगदास आसकरणोत, चांगो मुकनदास – अै सोजत जोधा सुजाणसिंघ केहरीसिंघोत माथै गया. उण सहर गढ सवायो. मामलो कियो. केईक राजपूत काम आया ।

३८६ सवत १७४५ रा मिगसर वद ५ गूघरोटरा डेरा महाराजरा पगा दुरगदासजी लागा. दुरगदासनू नै उदेसिघनू सिरपाव देनै काम सूपिग्रो. या दोनांरा कामदार मेलिया काम करता ।

३८७. सवत १७४५ रा फागण वद ८ जाळोररी पेसकसी लैणनू राठोड तेजकरण दुरगदासोतनू नै राठोड रार्जासघ अखैराजोतनू मेलिया गाव सारणासू कूच करता दीवान कमालखारी फौजसू मामलो हुवो ।

३८८. चद्रावतासू राठोड अखैराज रतन महेसोतरो जिणरै वैर हुतो सूं महियारिया पूरणदासनू मेलनै चद्रावता कनासू दोय सगाई दिरायी नै केईक रुपिया दिराया अखैराजजी महाराज साहव सवत् १७४४ चैत सुद ५ ।

३८९ रानाडीरा सिरदाररो बेटो केहरसिघ तुरकाणीमे जोधपुर कनासू चौथ लिवी. सायद –

केहर चौथ जोधपुर कीवी ।

३९० जोधपुर व्यास हरकिसन हरवसरो तुरकाणी तुरकासू मिळियोडो हो साचोरा गिरधर रुघनाथरो चाकर दोय सपी मनसबरो ।

३९१ सवत् १७६५ सावण वदि ११ महरावखा जोधपुरनू अजमेरनू कूच करै ।

३९२ श्रीजी गढ पधार सवत् १७६५ रा सावण वद १२ सिंघासण विराजिया राजा सवाई जैसिघजी टीको कर मोतियारा आखा चेठिया, हाथी - घोडा नजर किया वीजा ही नजर किवी.

३९३ सूरसागररा महल सवाई जैसिघजीरा डेरा ब्रमकुड दुरगदासजी आसकरणोतरो डेरो ।

३९४ सवत् १७६५ रा काती सुद १ आठ हजार कडाजूझ सिपाही घोडा सवार हो सइयद गैरतखा हसनखा हुसेनखा सहे आया पहोर ताई राड हुई तोपखानो घणोई सइयदरी साथै हुतो पिण फतै श्रीजीरी हुई ठाकुर दुरगदासजी नरूको सगरामसिघजी ।

३९५. मेडतियै किल्याणसिघ राजसिघोत अरज किवी, राठोड हिंदूसिघ अरज किवी. ठाकुर दुरगदासजी ही सामल रह्या, जद महाराज अजीतसिघजी महरावखांनू जीवतो जावा दियो ।

३९६ भेळा हुआ मता धणी हाथ आयी च्यार कोस ताई तुरकांरी कतल किवी. कूपो भीव सवळसीहोत काम आयो।

३९७. महाराज अजीतसिंघजी जाळोर थका तेजसिंघ आईदानोतनू हरजी दिवी. जगनाथ आईदानोतनू आहोर दिवी।

३९८ दिली खीवसी भडारीनू महाराज अजीतसिंघजी लिखियो—गुजरातरा सोवारी खिलत पहलां तोनू हवै नै उजीणरा सोवारी खिलत दोय घडी पछै भगतणके तो माहारो आछो लागे भगतण जैसिंघजीरो नाव दियो हो।

३९९ धायभाई वखतराय १, नानगराय २, खेरड़ो दलेलसिंघ ३, कहाहनीराय ४, अै च्यार ही अजीतसिंघरा चाकर अड़सीजीरा धावनिया ढेरिया हा।

४०० वगड़ीरो धणी अरजुणसिंघ प्रतापसिंघोत अजीतसिंघजीसू वदळियो उदैसिंघ लखधीरोत वदळियो पालीरो धणी।

४०१ आ खवर सूराचदरा डेरा महाराज अजीतसिंघजी पाय चैत वद २ महाराज सूराचंदसू चढिया — चैत वद ५ सवा पहर दिन चढिया, जोधपुर पधारिया. सूराचंदसू जोधपुर कोस १२० ।

४०२ फर्रुखसियर महाराज अजीतसिंघजीनू गुजरातरो सूवो दियो जद भंडारी विजैराज सूवै रहियो पछै महमदसाह अजीतसिंघजीनू गुजरातरो सूवो दियो जद रुघनाथ आडो वैठो, अनोपसिंघ सूवै रहियो अभैसिंघजीनू गुजरात महमदसाह दिवी जद रतनसिंघ सूवै रहियो।

४०३ महाराज श्रीअजीतसिंघजी नागोर मथि पधारिया जद राव इदरसिंघजी, कंवर गोपाळसिंघजी हैदरावादको नवावनू जग मुलमुलक जिणरै सामल हुता। कूपावत प्रतापसिंघजी ककडावरा धणी भावसिंघजी रो पोतो तिण नागोर सभाळियो हजूर राजी हुवा. नजराणो ले वाला पधारिया।

४०४ महामाया हिंगळाज प्रसादात छत्रपति महाराजाधिराज महाराजा श्री अजीतसिंघ देव विजयते भानु तेज स्वरूपेण मही-मध्येषु राजते—अै आखर अजीतसिंघजीरी महोरमे।

४०५ देवळियारा धणीरी वेटी कल्याणकवर महाराज अजीतसिंघजीनू परणायी. आ मुई जद इणरी छोटी वहन अनोपकवर महाराज अजीतसिंघजी देवळियै पधार परणिया।

४०६ देवळियै सीसोदिया रावल हरीसिंघरा वेटा कुवर प्रिथीसिंघरी वेटी कल्याणकंवर महाराज अजीतसिंघजी देवलियै पधार परणिया।

४०७ अभैसिघजी १, बखतसिघजी २, रामसिंघजी ३, अणदसिघजी ४, सोभागसिंघजी ५, प्रतापसिंघजी ६, रतनसिघजी ७, रूपसिंघजी ८, सुरताणसिंघजी ९, उदोतसिंघजी १०, छत्रसिघजी ११, किसोरसिंघजी १२, गागोजी १३—इता महाराज अजीतसिंघजीरा कवर हुवा ।

४०८ किसोरसिंघजीरी अेक माई बहन उदैपुर परणायी रामसिंघजी बखतसिघजीरै जग हुवो जद रामसिंघजीरै सामल रह्या महाराज किसोरसिंघजी ।

४०९ महाराज बखतसिघजी राजाधिराज कहावै, किसोरसिंघजी तेगबहादुर कहावै ।

४१० महाराज अजीतसिघरी बेटी सूरजकवरबाई सवाई जैसिघजीनू परणायी, सोभागकवरबाई राणा जगतसिघजीरा कवर प्रतापसिंघजीनू परणायी इद्रकवर परणायी कुळकवरबाई जैसळमेर रावल अखैराजजीनू परणायी ।

अभैसिंघ

४११ नवाब सेर बुलदखा काळीरा कोट कनै डेरा किया ।

४१२ आठ हजार सवार, दस हजार सवार प्यादल नवाब कनै हुता छोटी-मोटी नवसै तोप नवाब कनै हुती ।

४१३. आसोज सुद ७ कोचर पालडी महाराज अभैसिंघजी बखतसिघजी डेरा कर मोरचा पाच सहरनू नै भदरनू लगाया च्यार मोरचा अभैसिंघजीरी फौजरा, अेक मोरचो महाराजा बखतसिघजीरी फौजरो ।

४१४ महाराज अभैसिघजीरी फौजरै अेक मोरचै ठाकुर अभैकरणजी महासिंघजी नै जीवणी मिसल भागीरथदासजी ।

४१५ दूजै मोरचै सेरसिंघ सिरदारसिघोत, प्रतापसिंघ भीमोत डावी मिसलनै पुरोहित केसरीसिघजी ।

४१६ तीजै मोरचै मारोठरो नै चौरासीरो साथ नै भडारी विजैराजजी ।

४१७ मोरचै चौथै गुजराती सिपाही नै भडारी रतनसिघ ।

४१८ राजाधिराजरी फौजरै मोरचै नागोररा सिरदार नै पचोळी लालो ।

४१९ भदरमे नवावरो कबीलो हुतो सो अेक बीबीरै गोळो लागो आसोज सुदी १० सनीवार वडो फजर हो नवाव सेरसिंघ सिरदारसिंघोतरा मोरचा माथै आयो जद अभैकरणजी नै चापावत करण राजसिंघोत दौडनै सेरसिंघजीरै मोरचै आया उठे वेढ हुई तीनसै आदमी मियारा काम आया ।

४२० चापावत करण राजसिघोत १, मेडतियो भोमसिघ कुमळसिघोत २, पुरोहित केसरीसिंघ ३, जोधो हरीसिंघ जोगीदासोत ४, धावल भगवानदास ५ ।

४२१ ठाकर अभैकरणजी पूरा लोहा पाडिया महाराज डेरा मोरचासू अळगा हुता. सो आ खबर आयी तिण सायत श्रीमहाराज अभैसिघजी वखतसिघजी असवार होय कटकरी अगाडी नाई पधारिया. इतै अरज मालम हुई, राड़ हो चूकी जद घोडा चलायासूं मिया मिया पूर उठै राखी आगै तो पाचल ऊभो रह्यो चौडै आयो नही जद दोनू साहिब ईसवररो नाम ले नै लूटता तोपखाना सामा घोडा उठाया सो तोपखाना लोप तरवारा भीळिया. अेक पहोर भीक वागो मियारै साथ मनसवदार हाथियारा सवार हुता जिके इता काम आया—आवद अलीखा १, जमलुदीखा २, सइयद कायम ३, पठाण तरीनखा ४, सेख अलैयार ५, थानसिघ ६, दुरजणसिघ ७, अेकहजारी ८. तीनसै सिपाही नवावरा और काम आया नवावरा इतरा घायल हुवा—सेख मुजायद १, सेख जमादी अलीखा २, आगा महमदरो वेटो ३. और सिपाही पनरै सै घायल हुवा. नवावरो तोपखानो खोस लियो नवाव भाज अेक मसीतरै ओलै ऊभो रह्यो महाराजरी असमानी फतै हुई ।

४२२. महाराज वखतसिघरै वीस तीर लागा ज्यामे तीन तीर तो च्यार आगळ वैठा वीजा सिलहमे रह्या गोळी अेक, गोळो अेक लागो श्रीरामजीरा प्रतापसू खैर हुई असवारीरा घोडारै दस तीर लागा अेक भाटकै लागो ।

४२३. नवाव नास सैर माय गयो दूजै दिन सेख मुजायदनू वात गरै महाराजा अभैसिघजी कनै मेलियो कह्यो—महाराजा फुरमावै सू करू दरवार फुरमाया—तोपखानो सारो छोड जा यूहीज हुवो सवत् १७८७ आसोज सुद १२ महाराजरो झडो रुपियो अहमदावादमे ।

४२४ राजाधिराज जग कियो पछै महाराज अभैसिघ जैसिघरै सुलह हुई. हरमाड़ासू कूच किया पछै जिता रुपिया जैसिघजीरै खरच पड़िया उता देणा किया महाराज अभैसिघजी उवा रुपयामे भडारी रतनसिघनू नै भंडारी मनरूपनू ओळमे सूपिया ।

४२५ हरमाडासू कूच हुवो पछै जिता रुपया जैसिघरै खरच पड़िया उवै देणा कर भडारी रतनचदनू अभैसिघजी ओळमे दियो ।

४२६ अभैसिघजी वखतसिघजी गुजरात पधारिया जद कुहोहणरै धणी उगरै अजवेस भाडीमे वोळावो कियो तमक वाणा कोळी ।

४२७ मोकळसररै धणी वाळै उदैराज अभेसरी आग्यासू कोटनादरा धणी भाटी फतैसिघ समरावतनू मारियो अभेसरी आग्यासू जद गुडारो राणो सूरजमल भाखरसिघोत उदैराजरी मदत आयो हो ।

४२८ उदैराज खीवराज अखैराजोतरो सूरजमल भाखरसी साहिबखान ठाकुरसी ईसरदास उदैराज राणो सूरजमल मासियाळ भाई हुतो ।

४२९ सेरसिघ मेडतिया अहमदावाद जावता मारगमे कोळियानू घोडा दिया उवै दारू पीवण आया हा दारू साथ नही जिणसू वात उवारणनूँ सेरसिघजी घोडा कोळियानू दिया. कुसळसिघजी महाराज अभैसिघजीसू मालम किवी- सेरसिघ' ' सिघोतरा घोडा मारगमे खोस लिया कूपै कनीराम वात हुई ज्यू मालम किवी दरवारसू घोडा सेरसिघ सामा मेलिया ७५० ।

४३० अहमदाबाद भदर मायै अभैसिघजीरी फोज हल्लो कियो जद सेरसिघ निराट आछो हुवो जीवरखो भदर वाजै गुजरातमे ।

४३१ मेडतिया सूरजमल सिरदारसिघोत वखतसिघजी कनासू महाराज अभैसिघजी माग लिया गुजरातमे ।

४३२ अजमेररै गाव नामसू महाराज अभैसिघ ईसरीसिंघजीरै मिळाप हुवो जद भडारी जैपुरसू उठ जोधपुर आयो ।

४३३ नागोरसू धाय पुसकरजी स्नान करणनू आयी जद महाराज अभैसिघजी फुरमाया—तू अजमेर आव, हू तो आगै छातीरो ढीब भराणो है सू हू फोडू राजाधिराजरा भयसू आ अजमेर न गयी ।

४३४ वीकानेरसू पधार अभेस पुरोहित जगूनू मदनरूपजीनू फरमाया कै माहो- माहरी ईरखा छोड अेकमत होय राजकाज करो, हमैं म्हारा सरीररी सगती घटी है ।

४३५ महाराज अभैसिघजी मिनख मारणरी सोगन पुसकरजीमे छानै लिवी थी ।

४३६ अभैसिघजीनू राजाधिराज कपटी कहता ।

४३७ जिण सराबसू मासरी बुध भिजोय साधा सरावरो वडो ही पियाक छक जावै उण सरावसू सीसी भर दिलीरै पातसाह महाराजा अभैसिघजीरी हजूरमे भेजी महाराज अेक घडी सारी सीसी पी लिवी ।

४३८ अभेसनू गलीच विजय हू जवरनू नागोरी राम न्रप कहता ।

४३९ अभेसनू गलीच फते हु ज घरनू नागोरी राघव सदूळ कहता ।

४४० अभैसरी आण काढता ।

४४१. महाराज अभैसिंघजीरै अजीत राज हाथी हुं तो सोरा माहेस मारियो सु इमां उठाय लेतो ।

४४२ संवत् १७८० रा भादवा वदी ८ महाराज अभैसिंघजी कछवाहा राजा जैसिंघरी बेटी विचित्रकंवर परणिया ।

४४३ कछवाईजीनूं पटो सनाडैर हुआम्हो दियो महाराज अभैसिंघजी ।

४४४ गुजरात पधारता सिरोहीरै राव मानसिंघरै सिरोहीरा रावरी बेटीरो डोळो आयो, महाराज अभैसिंघजी परणिया ।

४४५ लाठीरा धणीरी बेटी बडी भटियाणीजी महाराज अभैसिंघजी परणिया गुजरात पधारता ।

रामसिंघ

४४६ संवत १८०५ महाराज रामसिंघजी पाट बैठा.संवत १८२५ रामसिंघजी देवलोक हुवा ।

४४७ रुदाणीरो धणी नरूको केसरीसिंघ ज्यारा दोहिता कंवर रामसिंघजी संवत १७८७ रा भादवा वद १० जनम पहर जोधपुरमें ।

४४८. बखतसिंघजी रामसिंघजीरै छोटी-मोटी बाईने राड हुई ।

४४९ मेड़तै सेरसिंघजी काम आया पछै नवमै महीनै ल्होहावट जालमसिंघजी काम आया पछै छठै महीनै जोधपुर रामसिंघजी रनास बखतसिंघजी लियो.

४५० जीवण घसियारो १, बखतो माणी नेडतिया सेरसिंघजीरो चाकर २, बीजियो ३, अमीरिख ४ — अै रामसिंघजीरै मनीजता ।

४५१. जीवो घसियारो १, अमिओ डूब २, बखतो नाडणी ज्यारो चाकर ३, बीजियो ४ — अै महाराज रामसिंघजीरै मानीजता ।

४५२ उदैपुरसूं टीको आयो जद जोधपुररा कामेतियांनूं कह्यो - जीवण घसियारा कह्यासूं राणोजी अमको लडाईरो हाथी अठै मेलै तो टीको लियां कामेतिया नरूकीजीसूं मालम करि आपसूं मालम करी. माजी फुरमावे है टीको ले लेणो, हाथी पछै ही राणोजी मेल देसी आ वात मान टीको ले लियो. किताईक महीना माजीनूं कह्यो हाथी मगाय दियो या कह्यो—उवैही देसपती हैं, यूं हाथी क्यूंकर मेलै ? जद ।

४५३. राम निरप फुरमाया जीवण घसियारारी अरजसूं — राणो लडाईमे सेर अमको हाथी अठै मेलसी तो टीको म्हे राखसां राणाजीरो ।

४५४ जद नरूकीजी कहायो – ह्मै तो टीकारी सामगरी लिराय लेणी पछै ऊ हाथी उदैपुरसू नाठो जद नरूकीजीनू कहायो – अमको हाथी उदैपुरसू मंगाय दो जद नरूकीजी, . ।

४५५ उवैही राणा है, हाथी लडाईरो मेलसी नही जद राम फुरमाया – माटी मुवो तो पण राडरो मछर मिटियो नही ।

४५६ जोधमल भडारीरै गळै दोवडरो टेपो देनै गुजवर कटी ले लिवी उवा विजियानू दिवी राम न्रप ।

४५७ महाराज ईसरीसिंघजीरी बेटी कछवाहीजी १, झळायरा राजावतजी २, चावडजी ३, जाडेचीजी ४ – महाराज रार्मसिघजीरै अै च्यार राणी ।

४५८. चावडीजी, राजावतजी, जाडेचीजी, कछवाहीजी – अै च्यार राणिया महाराज रार्मसिघजीरै ।

४५९ झिलायरा राजावत ज्यारै मनीजता महाराज ईसरीसिंघजीरी बेटी कछवाही–वजीरो आघ कम हुतो ।

४६० झिलायरा राजावतजीरो मान हुतो. कछवाहीजीरो मान नही हुतो रामरै ।

४६१ माधवेसरा राजावतानू कहिनै राजावतजीनू जहर दिरायो ।

४६२ माधवेस झिलायवाळानू कह्यो – थारी बेटीनू जहर दे मारो तो म्हारी भतीजीरो मान करै महाराजा रामसिंघजी ।

बखतसिंघजी

४६३ राजाधिराज नागोर लियो जद चवदै हजार घरारी बसती हुती ।

४६४ राजाधिराज नागोर पधार पहला पचोळी लालानू दिवाण कियो पछै धायरा कह्यासू सिंघवी सायमलनू दिवाण कियो पछै इण मुवा इणरो बेटो अमरचद दिवाण कियो अमरचदनू मार सिंघवी फतैचदनू दिवाण कियो ।

४६५ महाराज अभैसिंघजीनू जळाजळी देण राजाधिराज नागोर समस तळाव पधारिया टेगण चढिया कितांईक कह्यो – राजाधिराज पाळा है, कितांईक कह्यो – राजाधिराज टेगण सवार है ।

४६६ महाराज अभैसिंघजीनू जळाजळी देण राजाधिराज नागोरमे समस तळाव है जठै पधारिया टेगण सवार हुया किताक कह्यो - आप पाळा मत पधारो किता लोगा कही–टेगण चढ समसराजाधिराज पधारिया ।

४६७. महाराज बखतसिंघजी जेसळमेर परणीजण पधारिया जद रावळ अखैसिंघनू कह्यो - सिंघरै मिया थाहनै मामलो दियो है क न दियो है ? रावळजी

कही - मिया म्हा कनै मामलो लै जिसा है महाराज फुरमाया अठै म्हारी फौज छव मास रहण दो तो मियानू अवजी मसका वाथ आणा ।

४६८ सेरसिंघ मेड़तियो काम आयो जद राजाधिराजरै साळो तुँवर सिरदार भाज गयो उणनू चाकरीमू राजाधिराज दूर कियो ।

४६९ सवत १८०८ महाराजा बखतसिघजी जोधपुर लियो मोकमसिंघ १, दोलतसिघ २, लालसिघ ३, दोनू चापावत सूरजमल दुरजणसिंघोत जोधो ४, महेचो सिरदारसिंघ कानसिंघोत ५, भाटी महेमदास ६, करनोत जैतकरण महकरणोत ७, धायभाई देवकरण ८, भाटी सुजाणसिंघ ९, इत्यादिक गढ जोधपुररो राजाधिराजरी निजर कियो ।

४७० जोधपुर पधार राजाधिराज फुरमायो — अभैकरणजी मसार नही जद निणगारचोकी म्हारो आवणो हुवो ।

४७१ सत्तावन गाव झाडोदरा फतेपुररा नवावरा महाराज बखतसिघजी दवाया ।

४७२. जासनु जास याची — राजाधिराज जोधपुर ले फुरमायो — महि राजवी है ज्यानू बाहर काढ आवो, रजपूतारै परणाय देसा मारै वंसरा अजीतसिंघोत जोधा वाजसी ।

४७३ राजाधिराज गुजरातसू पधारिया पछै धावड वडिदाम तुरत हीज चलियो ।

४७४ प्रथम सवत १७९२ दिली पधारिया राजाधिराज दूसरै फेरै सवत १८०४ दिली पधारिया ।

गगवाणारा गोरमे, सेल धमाधम खाय,
भोळी नणदळ है हाथ्यारै हौदै वखतो मारू जग करै ।

४७५ नाय जी महाराजसू राजाधिराज आपरै नै माधोसिंघजीरै विचै मसजत माथै वैसाधा ।

४७६ राजाधिराज दिखण माथै जावणरी कमर वाधी किवी जद उजीणरै मुकाम सिरदार उठ गया हा मु राजाधिराज देवलोक हुवा ।

४७७ सिंधरो मिया नूर महमद बोलियो—हिया माहलो नादरसा आज मुवो ।

४७८. राजाधिराजरी मृत्यु सुण लखनऊरो धणी, नवाव मसूरअलीखा कह्यो — दिलीरो जोर घटियो, दिखणरो जोर वधियो हमै ।

४७९. राजाधिराज दिखण माथै चढिया जद उजैण इदौररै मुकाम सिरदार उठ गया आतकसू ।

४८०. जैसिंघजीरी .. ..राजाधिराज पाच घोडासू निसरिया।

४८१ सिवसिंघ गॉव मेवाडरो भोमियो जिणनै पनरै हजाररा पटासू लोटोती दिवी राजाधिराज।

४८२. जैसिंघजीसू राय हुई जद सिवसिघ आछो हुवो इण चाकरीसू।

४८३ लोटोतीरो सिरदार जोधो सेरसिघ जिणरी नै कविया करणीदानरी अरज वादरसिघजी राजाधिराज पगे ··· लियो जद अरज किवी ऊ सेरसिंघजीरी मानै करणीदानरी न मानी।

४८४ मूडवै लाटा और ठौड कराया लाटारी ठौड खेत वागवानानू राजाधिराज इनायत किया।

४८५ गाव हेनाणे च्यार हजार बीघा जोड हुतो, राजाधिराज उनाम करायो।

४८६ जोधपुर पांचमै ताईका गरभणो – आ मरजाद राजाधिराज वाधी।

४८७ कागसू मुडा खासा हाथीरी सवारी होकसू राजाधिराजरी मरजी थी।

४८८ खास रुपियारो सिक्को पातसाह राजाधिराजनू इनायत कियो।

४८९ वीकानेररो राजा गजसिघजी जोधपुर रातानाडारा डेरासू जेसळमेर परणीजण गया जद महाराजकवार विजैसिघजीनू राजाधिराज साथै मेलिया।

४९० सवत १८१६ फागण सुद १ चापावत देवीसिघ महासिघोत १, ऊदावत केसरीसिंघ वखतसिघोत २, कूपावत छतरसिंघ रामसिघोत ३ – अै तीनू सरदार धायभाई जगनाथ जोधपुर गढ ऊपर पकडिया।

४९१. सोळोतरै फागण सुद १ देवीसिघ दिकानू पकडिया।

४९२ दूजा सिरदारा आतमारामजीनू काध दियो जद ससतर खोल दिया हुता देवीसिंघजी ससतर समेत काध दियो।

४९३. जनानो पधारै है यू कहनै सिरदारा वेली लोहापोळ आडी दिवी सिरदारानू पकडिया जद।

४९४ सिरदारानू गढ माथै पकडिया जद उमर भर गोवरधन पचेस्वर बोलियो।

४९५ सिरदारानू हाथ पडियो जद वै उचाकख थको डोढी पर गोइददास बोलियो– निगै राखो, रोळ काई करो हो दरबाररा आदमी होयनै।

४९६ सिरदारानू पकडण हाथ पडिया जद डोढी दावै उवाक थको बोलियो – रोळ काई करो हो ?

४९७ देवीसिंघजी वगरै पकडिया ज्यानू रस्सासू बाध भोजनमाळा हेटली ओरिया ज्यामे घालिया हाथा - पगामे वेडी तोखीर कडिया आयी नही जद कडिया मोटी घडाय आरा हाथ - पगा माह घाली ।

४९८ देवीसिंघरा हाथ धायभाई जगजी पकडिया कटार - तरवार खीची फनै खोस लिवी ।

४९९ देवीसिंघ प्रभुखारा हाथ - पग लोहरा त्रघणरी कडिया घडागी पहला आंनूं भोजनसाळा हेटली ओरिया माहे राखिया हुता । -

५०० देवीसिंघ महासिंघोत नै पकडाणो जद बोलियो - मै गढमे किवी जिसी गढ मोमे किवी ।

५०१ ऊदावत केहरसिंघरै गळामे भमरकडी रहती नित्य सेर पक्की खीचडी खातो हमै पालकीखानो है जठै कैदमे हुतो अढारोतरै देवलोक हुवो ।

५०२ ऊदावत केसरीसिंघजीरा गळामे भवरकडी रहती पालखीखानामे कैद रहता. सेर पक्कारी निन खीचडी खाता सवत १८१८रै रामसरण हुवा ।

५०३. ऊदावत केहरसिंघरा गळारा तोखरी कडीरी साकळ भुरसमे दिवी हुती ।

५०४ केहरसिंघ ऊदावतरै गळारी तोखरी कडी भुरसमे दिवी हुती ।

५०५ प्रथम तेईसै, पछै अठाईसै, तीजक फेर छतीसै, चौथा फेर तयाळीसै-जुमलै च्यार नाथजीदुवारै वडा महाराज पधारिया ।

५०६ अेक वार कोटारा महाराज गुमानसिंघजीसू श्रीजी दुवारै मिलवो हुवो ।

५०७ सवत् १८३७ रा मिगसरमे चौवारी राड हुई नै सवत् १८३८ रा मिगसरमे अमरकोट रसद पहुची सिंधियासू राड हुई ।

५०८ सवत् १८३० महाराज विजैसिघजी गयारी गास मारी छोडी ।

५०९ लखणेऊरै धणी मनसूरअलीखा विजैसिघजीनू लिखियो-गुलाबरो अतर लिखतो मेलो तिणरै लगावजै नही अखरैरा अतर लगावजै यूहीज कियो ।

५१० वडा महाराज सूरजमल सोभागसिंघोतनै फुरमाया-भीवसिंघजी महर अपणायो जद थारा वडेरा तो महाराज रामसिंघजी तो गेला रता ज्यारो ही परी लाग न कियो म्हे तो सयाणा हा इण अरज किवी - खानजादरा घड माथै माधोसिंघजी तो अै चरण खानाजाद छोडसी नही ।

५११ राजाधिराजरै सात पलारो वागो माहे रहतो, अठयारै पलारो ऊपर रहतो ।

५१२ महाराज विजैसिंघजीरै अठयारै पलांरो माहे रहतो, इकवीस पलारो ऊपर रहतो ।

५१३ अटळराज वखतसिंघजीनूं, अरजुण विजैसिंघजीनूं आतमाराम कहतो. श्री हजूर फरमावै—

अर्ध-दग्ध-भटास्याज्या राज्ये राज्ञा मनीषिणा।
यथा त्यजति विश्वेसो वैष्णवान् बहिरुज्ज्वलान् ॥

५१४ सेखावत किसनसिंघजीरी बेटी जैतकवरवाई बडा महाराज परणिया।

५१५ सवत् १८४९रा असाढ वद महाराज विजैसिंहजी देवलोक हुवा।

५१६ सवत् १८४९ रा असाढ सुद ८ महाराज भीमसिंघजी गढ दाखल हुआ।

५१७ विजैसिंघजी महाराजरी प्रथम गायण, पछै खवास, पछै पासवान हुई गुलाबराय गायणपणमे नाम सुणिया गोस्वामीजी दामोदरजी कनै गुलाबराय बावन ग्रन्थ महाप्रभु आचारज कृत सौ ग्रन्थ गोस्वामीजी कृत, सवत् १७२७ माह वद १३ श्रीजी चोखा कदमखडी पधारिया सकटस्थ कदमखडी अनकोट हुओ काती सुद १५ पाटोदीनूं पधारिया श्रीजी च्यार महीना पाटोदी पाट माथै विराजिया, पाटोदीसूं सिरोहीनूं पधारिया श्रीजी गाव सरणासूं पाछा पधारिया सो पुसकरजी होय मेवाड पधारिया, राणा राजसिंघरा भावसूं साठ वरस मुथरानाथजी वूंदी पधारिया श्रीजी पधारिया पहला सोळा वरसा द्वारकानाथजी मेवाडमे पधारिया इण कारणसूं काकरोळीरा गोस्वामीजी राणाजीरा गुर है. गोकुळनाथजी आवेर पधारिया।

५१८ महाराजा जालमसिंघ विजैसिंहोतरै वैजनाथजीरो इसट हुतो।

५१९ नवानगररा महाजामनूं, हळवदरा राणानूं, ईडरा रावनूं, डूंगरपुर बासवाहळारा रावळनूं जोधपुरसूं अेक सरीखी लिखावट।

५२० गाव जोधपुररा ७७ पोहकरणरा, २४६, सोजतरा ४४८, जाळोररा १४४, जेतारणरा ३८४, मेडतारा ६२, फळोदिरा १४९, सिवाणारा ८४, साचोररा महाराज सायवरै।

५२१ मोटाराजा उदैसिंघजी, सवाई राजा सूरजसिंघजी, दळथभण गजसिंघजी, धूखलसिंघजी अभैसिंघजी, राजाधिराज वखतसिंघ —आ पदवी थी।

५२२ चूडोजी मागळियारा भाणेज, रिडमलजी साखलारा भाणेज, जोधोजी भाटियारा भाणेज, सूजोजी हाडारा भाणेज, वाघोजी भाटियारा भाणेज, गांगोजी साचारो चहुवाणांरा भाणेज, राव मालदेजी देवडारा भाणेज, उदैसिंघजी झालारा भाणेज, सूरजसिंघजी कछवाहारा भाणेज, गजसिंघजी कछवाहारा भाणेज, जसवतसिंघजी सगतावतारा भाणेज, अजीतसिंघजी

जादवारा भाणेज, वखतसिंघजी साचोरा चहुवाणारा भाणेज, विजैसिंघजी रावळोतारा भाणेज, गुमानसिंघजी देवड़ारा भाणेज, मानसिंघजी साचोरा चहुवाणारा भाणेज।

राठोड़ांरी खांपांरो इतिहास

सींधल राठोड़

५२३ भाद्राजूणरो धणी भारमल सिंधल जिण सरवडी दीवी भारमलरो रामो, रामारो सतो, सतारो वीरो संवत १५८६ वीरा सतावतनू मार राव मालदेजी भाद्राजूण लियो।

५२४ वीरारै वीसळदे, वीसळदेरै तजो जिण जाळोरीमे गाव मेहेडो वसायो।

५२५ लाविया भाद्राजण सींधलारै हुती।

५२६. जैतारणरो धणी सींधल नरसिंघ वीदावत सुपियारदे साखळीरो धणी जिणरै वसरा मेवाडमे है, सोळै गावामे है।

५२७ गाव वालाणो डोडियाळ पारवती है जठै सींधाल वाघ गोपाळदासोत रहै छै वरतीरो विगाड घणो करायो।

५२८ सींधल रापावत कवळा वगेरै सोळा गाव जठै रहै जागीरदार थको. सींधल भाणावत वळाणा वगेरै बारह गाव ज्यामें रैवै, सींधल लांकावत कीड़ोमाल वगेरै गाव वधनोरा मदारिया विचै आडावळारी तळहटी ज्यामे रहै।

५२९ संवत १७१२ वैसाख माहे वाळो केसोदास जैतसिंघोत नै महेचो रावळ भारमल साथ करिनै सींधाला ऊपर आया रावळ भारमल जगमालोत साथै सोढो अमरो भोजराजोत १, अमरो सुरताणोत २, सिसोदियो कभो ३, मनोहरदास भाखरसीहोत ४, किसनो ऊदावत ५, दळपत ६, वीजो ही साथ घणो हुतो।

५३० सींधल वाघो वीदावत, वीदो सूजावत, सूजो सीहावत कवळा धणी।

५३१. सींधल वाघो वीदारो, वीदो सूजारो, सजो सीहारो, सीहो भाडारो गांव कवळा १,५००) रेख।

५३२ सींधल सावळदास मानसीहावतरो. गांव पावो, १०,०००) रेख।

५३३. सींधल जसवतसिंघ रायसिंघ मालावतरो. गांव कुहेळाव ४,०००) रेख।

५३४ सींधल केसरीसिंघ दूदा अमरावतरो गांव जाखोडो. रेख ४,०००)।

५३५. सायद– वाघरा घरा सिर आग वूठी १ ।
हुवो चितोडसू वियो हेलो २ ।
काटकी आभसू वीज कवळै ३ ।

५३६. वड़ना मोरावास ऊहड अरजुन आसिया नेतानू दियो ।

५३७. सलखो १, जैतमाल २, खीमकरण ३, रावत राणो ४, वैरसाल ५, राघोदास ६, भाखरसी ७, सूरजमल ८, पातो ९, रतनसिंघ १०, आसकरण ११, मनोहर १२, केसरसिंघ १३, बळू १४, खीमो १५, सवाई १६, देवसिघ १७ – नगररा रावतारी पीढिया ।

५३८ तेजमाल सलखावतरो बेटो हाफो जिणरै वसरा सिवणाचा कहावै. सिवणै राणो देवीदास वीजावत हाफारा वसमे हुवो ।

५३९ राठोड वरियैचा मलीनाथरा पोतरा है ।

महेचा

५४०. राव मडळक जगमालोतरै तीन बेटा हुवा–रावळ भोजराज १ जिणरा महेचा, खेतसी २ जिणरा कोटडै, वादियो ३ जिणरा जधोळिया ।

५४१ मेहवारो राव भोजराज मडळकोत रणखेत पडियो सन्यासिया उठायो ओ सन्यासी हुवो ।

५४२. वेगडो नरो खेतसी मंडळकोतरो जिण महेवो ले लियो नगर राज करै. रावळ भोजराजरी वेर सूरावदरी चहुवाण वेटानू ले सूराचद गयी ।

५४३ किताईक वरसा पछै रावळ भोजराज सन्यासी थको गुजरात सामासू जमात ले आयो नगरमे बेगडा नरानू मारियो. महेवारो मालक वीदानै कियो ।

५४४ रावळ भोजराज मडळकोत कठैईक सन्यासिया घावा उपाडियो साजो हुवो जद सन्यासी हुवो इणरी राणी सूराचद गयी. राठोड वेगडै नरै खेतसी मडळकोतरै महेवो खोस लियो इणरो छोटो भाई रणधीर सिववाडी राज करै रावळ भोजराज सन्यासी थकै जमात आण नगरमे वेगडा नरानू मारियो. वैदा वीदानू टीको दे महेवारो धणी कियो ।

५४५. सवत १६९१ माह माहे पहला जाळोररो गाव मोर सीम मारी पछै निवाई गाव सिवाणरो महेचा मारियो, माह वद ४ गाया १४०, भैसा ३०, बैल ६३०, घोडी ८ ले गया असवार ३०, पाळा ३० हुता ।

५४६. सवत १६९१ माहमें राठोड महेचै महेसदास जाळोररो गाव मोरसीम आयो. हजार माणस लेनै गाव मोरसीम बाळियो लूटियो. धान घणो ले गया पादरियै वेढ कीवी जणा दस पादरियै काम आया. थोरी १५ महेचारा मुवा कै घायल हुवा डेरो कर मोरसीम लूटियो ।

५४७ महेवो सूनो कियो जद राठोड देईदास पतारो सांवळदास सोढो अमरो भोजराजोत मनोहर सादूळ भाखरसी, रावळ महेसदास भारमल इत्यादिक राजाजीरा देसरो विगाड करता ।

५४८ सवत १६९१ रा जेठ माहे राठोड देईदास, महेसदासरो भाई सांवळदास, सोढो अमरो साडिया १२० वाळीसरथी ले गया ।

५४९ महेचो चद्रसेण वाघ कलावतरो राणा जगतसिंघरी चाकरीमें पटो हजार वारहरो पावै वसी गाव काकर ।

५५०. महेचो ईसरदास खेतसी जसवतोतरो सात हजाररो पटो पावै. वसी गोडवाररै गाव माडळ ।

५५१. साठ गाव महेचारै तीवडी लारै है हमै सिरदार जैतसिंघ उमेदसिंघोत है ।

५५२ इंदारो गांव भालू महेचै रायमल उदैसिंघोत मारियो फागण सुदमें इंदो भानो गोपावत जणा च्यारसू काम आयो रायमलरै साथ पाचसो आदमी हुता, भाटियारो पिण लोक साथ हुतो रावळै गया ऊंट ४, छाळियां १००० महेचा ले गया ।

कोटड़िया

५५३ वेगडो नरो १, रणधीर २, दूदो ३, वरसिंघ ४-अै च्यारू खेतसी मडळकोतरा वेटा ।

५५४ वेगडो नरो १, रणधीर २, दूदो ३, वरसिंघ ४-अै च्यारू राठोड़ खेतसी रावळ मडळक जगमालोतरो जिणरा वेटा ।

५५५ कोटडारा राणारी पीढी-रावळ मळीनाथ १, जगमाल २, राव मडळक ३, राव तखतजी ४, रावत दूदो ५, रावत चागो ६, राणो जैतसी ७, राणो वाघो ८, राणो रतनसिंघ ९, राणो भैरदास १०, राणो जोधो ११, राणो सूरो १२, राणो मळचंद १३, राणो उदैभाण १४ सिरदारसिंघ १५, मालदेव १६, धीरतसिंघ १७ ।

५५६. राठोड चापै दूदावत सिववाडीसू कोटडै राजसथान वाधियो राठोड़ चापो दूदो खेतसीहोतरो वेटो सू वेगडो नरो माराणो जद नगरसू भागो. इणरो काको रणवीर खेतसीहोत सिववाडी राज करतो हो उठै आयो रणधीर दूदारो पेटियो कर दियो ओ चापो सिववाडी रहै ।

५५७. कितायक वरसा चापै दूदावत रावळ वीदानू कह्यो-म्हारै साथ सातवीस घोडारा सवार रजपूत मेल जद इहुं कही-जे चापा साथै जावो, ओ कस है

कीजो उठासू गाव खरीग जेसळमेररा रावळरी घोडियां ही उठै पावै. सू रावळजी चांपै कही जूहीज कियो इण वाडी जाय रणधीरनू मार सिववाडी ले लिवी वीदै रजपूतांनू कही—म्हारै कह्या बिना रणधीरनू मारियो, मोनू मू दिखावजो मती बै सातवीसी घोडा ही चापारै वास वसिया ।

५५८ आगै पहाड माथै परमारारो करायोडो पक्को कोट हो अेक कोट मांहे बाधियोडो कुवो हो, अेक कोट नीचे पहाडरी जडा बाधियोडो कुवो हो पछै परमारा माथै भाटी सीध देवराज कटक मेलियो जद ओ कोट पड़ाय नाखियो वेरा बुराय दिया चापै ऊदावत सिववाडीसू जाय आगला कोटरी नीम ऊपर तीन पडकोटा कराया, तीन दरवाजा तीनू कुवा उघडिया नाव कोटडो दियो राज-ठोड कोटडो कियो ।

५५९ 'नवलखा-दुरग-नरेस' वाघा कोटडियानू कह्यो—जिणसू जाणीजै है नवलखो दुरग कोटडानू कहै है ।

५६० 'वाघ कुअरा-वीद' वाघा कोटडियारै कुअर सोढी ठकुराणी हती ।

५६१ पीपा राईकारा बेटा-पोतरा साढारो दूध पीधो मेहरो बेटो घूटलवाळै पग समेट सूतो पछै नेतसी भाया भडां सहित साढारी वार चढियो कोटडिया रामाजी मारनै साढा पाछी आणी ते नोर तळै पाणी पाय दोड़ कराय राईकानू दूध पायो उण समैरा हीडोळा—

साढो लोप सो इतरो, गाधी साइरी साध ।
चड्ढि महीरा नेतसी, रातो तरगस बाध ।।
नळी कटाड् नीळी, लप घी अमापियो खाय ।
हाथ-वेंतरै आतरै, अै कोटडिया जाय ।।
खेतो पूछै नेतसी, नीलो घोडो काय ।
ग्या ईडररी चाकरी, दियो ईडररै राव ।।

५६२ कितीक पीढिया कोटडै राणो दुरजणसाळ हुवो जिणकनैसू रावळ अखैसिंघ कोटडो ले लियो दुरजणसाळ सीवाणैरी नाळ जाय रहियो कोट नरेडो रावळ जेसलमेररै पडाव नाखियो ।

५६३. सवत् १८२१ रावळ मूलराजजी दुरजणसाळनू कोटड़ो दियो पेसकसीरा रुपिया ठैरायनै ।

५६४. फौज जोधपुररी कोटडा माथै आयी उठासू हाकम आण दुरजणसाळ कोटडा मांयसू जेसलमेररो हाकम काढ दियो उण दिनसू सीव जोधपुररा मुसद्दी हाकम रहियो ।

५६५ जैंसलमेररै रावळ भीव रतनू धरमदास उवण गाव दियो. नरो जिणनूं कोटडियारा राणा भैंरवदास कनै मेलियो वचन दे भैंरवदास भीव कनै आणियो भीव भैंरवदासनूं मारियो वडियाड़ारो ऊ नाम जेसलमेर हेटै घाळियो।

५६६ कोटडियो जैसो १, राजसी २, नरहर ३, मेघराज ४, भाखरसी ५. भाखरसीरी वेटी गोमावाई खीची गोवर्धनजीनूं परणायी।

५६७ खीमा १, वासाडा २, दोट ३, फळसूडिया ४, कसूवली ५, धारविया ६ – अै खापा राठोडी महेवामे है धारवियो गाव कोटडारो है।

५६८ वापडाऊरै ठिकाणे राठोड भीमै रतनावत वाढमेर वसायो।

जैतावत

५६९ राठोड अखैराज रणमलोत सीधल चरडानूं मार वगड़ी लीवी. चरडालीरो थान कोटडी माहे है. पहला सांझ समै चिराक चरडाजीरै थान ले जावै पछै वगड़ीरा सिरदार आगै चिराक आणै. अजै आ रीत है।

अकवररा दळ उळटिया, है घट आया हाल।
छोटी छोटी लातणी, मोटी कीधी माल॥

५७० पचायण अखैराजोतरै जैतावत वगेरै नव वेटा हुवा।

५७१. वगडीरा सिरदार उरजणसिंघजीनूं महाराज अजीतसिंघजी मरायो मेवाडमे सगतावतारा गांवामे उरजणसिंघजी मुवा पछै पहाडसिंघ जनमियो वीकमकोहर मामालमें दरवाररा डरसूं भटियाणीजी पहाड़सिंघजी बैठा वेटानूं लेने देवगढ गया पहाडसिंघजी देवगढ मोटा हुवा ठाकर राघोदास आगै मनाणा।

५७२. उरजणसिंघजीरो वडो वेटो सामसिंघ जगावतारै गांव वहमाली परणियो हुतो सो ऊ वहमाली जाय वसियो. वहमालीसूं वेगम गयो. उठै महाराज अजीतसिंघजी जहर देय मरायो।

५७३ रामसिंघ उरजणसिंघरो भाई जिणनूं चूक कराय घाटामें मरायो. अजीतसिंघजी जैतारण कनै फूलमाल जठारो दाहिमो सलेमावाद फरसरामदेवजीरो शिष्य नाम टीकमदास जिण आपरी वणायी साखां अेक दिन फरसरामदेवजीनूं सुणायी जद आ कही–तू तो तत्तवेत्ता हुवो जदसूं तत्तवेत्ता कहायो. टीकमदास

जैतारण आय भूतारै थानकमें वसिया लोका कह्यो अठै भूत रहै है, आप अठै मत रहो. या साखी सुणायी.—

गूदी गोयन्दरायकी, आंगण रही वणाय।
आये संत अनतके, भूत गये सब भाज॥

उण दिनसू जैतारण द्वारो बांधो।

५७४ वगडीमू विगडी सै वाता।

५७५. वगडी जैताजी जैतापोळ करायी।

कूंपावत

५७६. महाराज अखैराजोतरै पुत्र कूपो हुओ सिवराव चडूसू महाराजजीरै रेणरो नात्र कढा लियो. कूंजी वाईरो व्यात्र आछो कियो जद माडै ही नाव प्रसिद्ध हुवो।

५७७ कूपा महराजोतरै वेटारी विगत—प्रथीराज १, राम २, प्रतापसिघ ३, माडण ४, तिलोकसी ५, महेस ६, उदैसिघ ७, ईसरदास ८, तेजसी ९।

५७८. प्रथीराजोतारी भोम चापडामे माडणजीरा आसोप तिलोकजीरा घणलै महेसजीरा कटालियै सिरोपारी उदैसिघोत वसी, सीवा, चेळावस, ईसरदासोत माहडू चाडावळ. तेजसीहोत ईडररी घरतीमे है रामाठा चादेळाव रामावत।

५७९ सवत् १५५९ रा मगसर सुद १० कूपा महराजोतरो जनम सवत् १६०० काम आयो।

५८० तेजसी कूपावत अमुतियां सीधलां मारियो तेजसी कूपावतरा वैरमें माडण कूपावत सीधल सीहो मारियो संवत् १६२७ माडण कूपावत सीधल सीहो भाडावत मारियो।

५८१ कनीराम रामसिघोत माथै सूरज आवतो जद गामतरै जावतो।

५८२ आसोप दळपत कनीरामोत तळावरी पाळ ऊपर बगलो करायो जिराणा भूमसू नेडो ओ वगलो करायो पछै अेक वरस दलपत जीवियो।

५८३ आसोप रगसाळमे नाहरसिघ रार्जासघोत गळियोडा अमलसू बकडिया भराया दासियानू कहीनै ठकुराणियानू तेडी बेटा बेटिया सहित।

५८४ पत्तो कूपावत देईदास जैतावत भेळो मेडतै काम आयो।

५८५ पातारो हमीर रतन रतनरै वेटा तीन हुआ—मालो १, कलो २, जैमल ३. पातानू वारह गावसू चोटाळो हुतो चोटाळासू जाय करणू वसायी।

५८६ राठोड़ उदैसिंघ कूपावत जैमलजी पत्ताजी भेळो चित्तोड काम आयो ।

५८७ कटाळियारै धणी किसनसिंघ कूपावत आगानूर नवावनू मारियो ।

५८८. अमरसिंघ कूपावत वणवीर सोळकीनूं मार सिरियारी लीवी ।

५८९ कूपावत महेसदास दलपतोत कांदा विना जीमतो नही ।

५९०. राठोड कूपो किसनसिंघ जसवंत सादूळोतरो देवळ वणवीर माथै कटक कियो हुतो. सिरोहीरो राव अखैराज आयो हुतो पछै राठोड़ किसनसिंघ, जैसो देवडो भैरूरो सिकार गया हुता पूरणया कोस च्यार आगै पछै वणवीररै साथ आय आदमी तीस मारिया नै जणा वीस घायला किया. किसनसिंघ सादूळोत माराणो ।

वासणी

५९१ रामसिंघ १, सिरदारसिंघ २, जोवसिंघ ३, अगंदसिंघ ४, कूपो हरीसिंघ ।

चांपावत

५९२. पोहकरणरा सिरदारांरी पीढियां लिखँते–रिडमल १, चांपो २, भैरूदास ३, जैतो ४, माडण ५, गोपाळदास ६, वीठळदास ७, जोगीदास ८, भगवानदास ९, महासिंघ १०, देवीसिंघ ११, सवळसिंघ १२, सवाईसिंघ १३, सालमसिंघ १४ ।

५९३. चांपाजीरै वेटा दोय–भैरवदासजी १, सनतोजी २ करण रिडमलोतरै वेटा दोय–लूणो १, नै माणकराव २. मेड़तारो गाव वीदावत खेतसिंघोत चांपावतारो जठासू उठ गोकुळदास चांपावत ताळ भोपाळरा राव कनांसू भागली पई पानी ।

५९४. चांपो गोपाळदास माडणोत १, चांपो सूरजमळ जैतमाळोत २, राठोड ईसरदास ३ नींवावत–अै भाडवै काम आया ।

५९५. संवत् १६५८ चहुवाण वागड़िया मानवाद वालारो रावळ उग्रसेणजी ज्यारो उमराव वागडसू छाड गया. पातसाह अकवररो चाकर रह्यो पछै चांपावत सूरजमल जैतमालोत जिण वुरहानपुर अकवररा डेरा उठे ही मान हुतो आ माननू मारियो, रावळ उग्रसेण राजी हुवो वागडमे ब्राह्मणनू कर लागतो सो सूरजमल छुडायो ।

५९६. हरनार्यसिंघ १, अनोपसिंघ २, रूपसिंघ ३–अै तीन वेटा तेजसिंघ साईंदानोत चांपावतरा ।

५९७. चांपावत ठाकुर भगवानदासजी भीनमाल जमी माथै ऊभा थका श्रीवाराहजीरै माथै छत्र वांधता, इता प्रचड हुता. हमै सेवग वाराहजीरो तिलक करै है नीसरणीरै तीजै पगोतियै चढनै ।

५९८. चांपावत तेजसिंघजीरै तीन बेटा हुवा–बडो बेटो हरनाथसिंघजी ज्यांरा आउवै बीजो बेटो अनोपसिंघ ज्यांरा भीमाळियै तीजो बेटो रूपसिंघ ज्यारा जाणियाणै वामसीण ।

५९९. हरनाथसिंघरा आउवै, अनोपसिंघरा वांतै भीमाळियै, रूपसिंघरा जाणियाणै वामसीण ।

६०० आउवै वखतावरसिंघजी खीची गोत्ररधनजी जगनाथोतरो दोहितो, माधोसिंघजी खेजडलै किसनसिंघजी हठीसिंघोत जिणरो दोहितो, सिवसिंघ वहेडै राणावत उदैसिंघ सिरदारसिंघोत जिणरो दोहितो, जैतसिंघ सलारी चहुवाण प्रतापसिंघ चतुरभुजोत तिणरो दोहितो, कुसळसिंघ लवेरै भाटियारो भाणजो, हरनाथसिंघ दातै वारड़ारो भाणेज ।

६०१. राणावत उदैसिंघरी बेटी अवाबाई जोधारी भाणेजी जैतसिंघ परणियो ।

६०२ वागलीरो धणी चापावत जिणरी पीढिया– गोपाळदास १, खेमसिंघ २, नारखां ३, हरीसिंघ ४, कुसळदास ५, जालमसिंघ ६ ।

६०३ चापावत जैतमाल जैतावतरै बेटा च्यार–रूपसिंघ १, भाण २, सूरजमल ३, सुरजण ४ भालगढ जेठवरी भाणजीरा ।

६०४. चार–परिया वगेरै ठिकाणा सूरजमलोत वीजासणी नीबरै खारियै रूपसिंघोत. नीवली वातै सुरजणोत ।

६०५. हरसोळावरा सूरतसिंघ राम-उपासीक है उणरी लुगाया वणाया ज्यारा नांव सीतासर नै इण तळाव खिणाया जिणरो नाव रामसर ।

६०६ चापावत सामसिंघ देवीसिंघोत वाईरो व्याव जैपुरमे कियो बाई उणियारारा राव राजा भीमसिंघजीनू परणायी चारणानू त्याग दियो।

करनोत (समदड़ी)

६०७ समदडीरा सिरदारारी पीढिया लिखने–रणमल १, करन २, लूणकरण ३, वीदो ४, नीबो ५, आसकरण ६, दुरगदास ७, चैनकरण ८, मानकरण ९, इदरकरण १०, सालमसिंघ ११ ।

६०८. राठोड करनो रिडमलोत चवा देहरो करायो सवत् १५८५ माह वद ५–ईंडो चढायो, ब्रह्मभोज कियो, हजार गायां दिवी, धन घणो खरचियो ।

६०९ संवत् १७२१ महा दुर्भिख पडियो आसकरण नीबावत धान घणो वाटियो. राठोडा धणनू देसमें राखियो ।

६१०. सवत् १७२० गाव सालवे आसकरण नीबावत वेरो खणाय बधायो ।

६११. दुरगदासजीरी मा नै खीमकरणजीरी मा सगी भुवा–भतीजी केलण भटियाणी ।

६१२. दुरगदास आसकरणोत केलियारै घरै सरणै रह्यो।

६१३ दुरगदास आसकरणोतरी बेटी बिनैकवरबाई सलूंबररा धणी रावत केसरीसिंघनूं परणायी दूजी बेटी दुरगदासजीरो कुसळबाई।

६१४ दुरगदास १, तेजकरण २, अणदकरण ३, रतनकरण ४।

६१५ दुरगदास आसकरणोनरी बेटी बिनैकवर सलूंबर रावत केहरसिंघजीनूं ··· ····दोहितो रावतलालजी।

६१६ दूजी बेटी राजबाई साटोलै उमेदसिंघजीनूं परणायी।

६१७ करनोत रतनकरणरी बेटी धनबाई कुरावड कुवर जालमसिंघ उरजणसिंघोतनूं परणायी दोहितो रावत जवानसिंघ।

६१८ बहामीरो धणी करनोत रतनसिंघ जिणरी बेटी धनबाई कुरावड़ जालमसिंघ उरजणसिंघोतनूं परणायी. उण बाईरो बेटो रावत जवानसिंघ।

६१९ रतनसिंघजीरी बेटी दूजी राजबाई साटोलै उमेदसिंघनूं परणायी।

६२० तुरकाणीमे दुरगदासजी जूनै बाहड़मेड़ रहै जद झामररा जाट सारा बाहड़मेररै गाव कवास घान नीपज्यो जद जितो हासलरो घान बाहडमेररा घणीनै देता इतो ही ठाकरां दुरगदासजीनूं देता हा।

६२१ उदैपुर राणा जैसिंघजीरै नै कवर अमरसिंघजीरो अमेळ हुवो. कवर उदैपुर बैठो राणाजीनूं उदैपुरमूं काढ दिया. दस हजार रुपिया खरचीरा मेलिया सगा बिवरा समचार लिख मेलिया महाराज दुरगदासजी वगैरा उमरावांनूं मेलिया इकलिंगजीरै देवरै कवरनूं राणारा पगां लगायो कवर सागररी पैला गयो नै राणाजीनूं उदैपुर बैसाणिया।

६२२ बूंदीरा राव अनिरुधसिंघजीरै नै हाडा दुरजणसिघजीरै आपसमे अमेळ हुवो दुरजणसिघजी बाहर नीसर बूंदीरो बिगाड करता हुता. दिखणसूं इण हीज काम पातसाहमूं सीख किवी।

६२३ राव अनिरुधसिंघजी बूंदी आया नै दुरगदास आसकरणोत अनिरुधसिघजीरै पगा दुरजणसिंघजीनूं मेलिया मेळ कराय दियो।

६२४ राणाजी सादड़ी दुरगदास आसकरनोननूं पटै दिवी ही दुरगदासजी नव बहिन-बेटिदारा व्याह सादडी किया चारणानूं त्याग दे जस लियो।

६२५ उदैपुर अमरसिंघरा घोड़ा लारै दुरगदास आसकरणोतरो घोडो चित्र वीचमें।

६२६. अस्सी बरस तीन महीना अट्ठाईस दिन, इत्ती ऊमर दुरगदास आसायतरी हुई।

६२७. वालर वारीरी ठिकाणै खीवकरण आसकरणोत गांव वसायो ।

६२८. तेजकरण मेहकरणजी दोनू कानोडरा सारगदेओतरा भाणेज, अभैकरणजी राव चतुर्भुज चोहाणरा दोहिता. चैनकरणजी बीकमपुररै केलणारा भाणेज ।

६२९ तेजकरणजी महेसकरणजी दोय कुवर दुरगदासजी साथै मेवाडमे गया अभै-करणजी महाराज जैसिंघजी कनै गया. चैनकरणजी समदडी हीज रह्या ।

६३०. भाखरजी १, करनजी २, काधलजी ३, पातोजी ४–च्यारू अेक माया भाई रोडमलजीरा-बेटा ।

बालावत (मोकळसर)

६३१. रणमल १, भाखरजी २, वालोजी ३, भारमलजी ४, नगराजजी ५, जैतसी ६, केसोदासजी ७, माघोदासजी ८, अखैराजजी ९, खीमराजजी १०, उदैरांजजी ११, नाथजी १२, लालजी १३, जवानसिंहजी १४ हमै मोकळसर धणी है ।

६३२ भाखरजी १, करनजी २, कांधलजी ३, पातोजी ४–च्यारूं अेक माया रिड-मलजीरा बेटा ।

६३३. मोकळसररै धणी वालै उदैराज खीमकरण अखैराजोतरै महाराज अभैसिंघजीरी आग्यासू कीटनोदरो धणी भाटी फतैसिंघ अमरावत मारियो गुडारो राणो सूरजमल भाखरसी साहिबखानोतरी मदत लेनै ।

वरसिंघोत

६३४ सोनगिरा खीवा सतावतरी बेटी चपा जोधाजीरी राजलोक जिणरै बेटा दोय हुवा-दूदो १, वरसिंघ २ ।

६३५. रावजी जोधाजी आनू भेळो मेडतारो परगनो दियो आगै सहर मेडतो नही हुतो आं मेडतो वसायो ।

६३६ वरसिंघ कितायक वरसा दूदानू काढ दियो दूदो वीकानेरमे गयो पछै वरसिघ दुकाळमे पातसाही सहरमे सभर लूटियो अजमेर सूबै माडवरा पातसाहरो चाकर मलूखा हुतो उण बोल-कोल दे अजमेरमे वरसिंघनै पकड लियो हुल जैतो सह लोल अजो काम आया वीकानेरसू दूदै वीकै आय वरसिंघनू छुडायो ।

(झाबुओ)

६३७. जोधो १, वरसिंघ २, सीहो ३, जैसो ४, रामसिंघ ५, भीव ६, केसोदास ७, बडो रजपूत हुवो, केसोदास मारू कहायो ।

६३८ राठोड केसोदास भीवरो, भीव रामसिंघरो, रामसिंघ जैसारो, जैसो सीहारो, सीहो वरसिंघरो, वरसिंघ जोधारो, जोधो रिडमलरो।

६३९ केसोदास मारू कहाणो जावुवो नवो ठिकाणो खाटियो।

६४० जावुवारा राजारी पीढिया लिखते—केसोदास झब्बा नायकनू मार झावुवो लियो झब्बा नायकरो वसायोडो जिणसू झावुवो कहायो।

६४१ झावुवो नवो राज खाटियो केसोदासरो मोहणदास, मोहणदासरो राजसिंघ।

६४२ सीकरी राड हुई जिण पहलै दिनरै राठोड जैसो सीहा वरसिंघोतरो राणा साँगारी चाकरीमे हुतो सू पचसू मुवो।

६४३ सावळदास उदैसिंघरो, उदैसिंघ जैसारो, जैसो सीहारो, सीहो वरसिंघरो, सावळदास देईदासजी सामल सरफुद्दीनसू जग कर राव मालदेजीरै काम आयो।

६४४ कुसळगढरा धणी वरसिंघोत जोवा ज्यारी पीढिया— जोधो १, वरसिंघ २, तेजसी ३, आसकरण ४, माल ५, राम ६, जसवतसिंघ ७, अवरेला ८, अजवसिंघ ९, कीरतसिंघ १०, अचळसिंघ ११, भागोतसिंघ १२, जालमसिंघ १३, हमीरसिंघ १४ हमै कुसलगढ राज करै है।

६४५ राठोड तेजसी वरसिंघोतरै भाई बेटै वड़ी रिया आयी चाडसूं सरवण कछवाहासू वेढ हुई जद तेजसी काम आयो।

६४६ राव जोधारो वरसिघ, वरसिंघरो तेजसी, तेजसीरो सहसो. सहसानू राव माळदेजी वडी रिया दिवी, वीरमदे दूदावत कनासू मेडतो लियो जद।

६४७ केसोदास १, करण २, महासिघ ३, कुसळसिंघ ४, इदरसिंघ५, वहादुरसिंघ ६, भीवसिघ ७, कुवर प्रतापसिंघ ८—लखैसिंघोत जोधा है।

६४८ राठोड खेतसी वरसिघ जोधावतरो वडो रजपूत हुतो सीकरी सागा राणारै वावरसू वेढ हुई जद काम आयो वीरमदे दूदावत नीसरियो।

६४९ खेतसी वीरमदेरै साथ हुतो राठोड ठाकुरसी कलारो, कलो खेतसीरो, खेतसी वरसिंघरो, वरसिघ जोधारो ठाकुरसी कलावत वडो रजपूत हुवो सातळियावास सरफुद्दीनसू जग कर राठोड सावळदास उदैसिघोत राव माळदेजीरै काम आयो जद ठाकुरसी पूरै लोह पडियो जैमल वीरमदेओत इणनू उठायो पछै वासवाळै चाकर रह्यो वासवाळारै रावळ उग्रसेण चापावत सूरजमल जैतमलोत साथै ठाकुरसीनू मेलियो माना चहुवाणनू मारणनू सूरजमलजी मानानू मारियो जद चहुवाण मानारी लान लागी. ठाकुरसी कलावत काम आयो।

६५० राठोड ठाकुरसी कलारो, कलो खेतसीरो, खेतसी वरसिंघरो, वरसिंघ राव जोधारो. ठाकुरसी वडो राजपूत हुवो वासवाळारै रावळ उग्रसेणजी चापावत सूरजमल जैतमलोत साथ ठाकुरसीनू मेलियो चहुवाण मानानू मारण वुरहानपुर सूरजमल माना चहुवाणनू मारियो जद मानारी लात लागी ठाकुरसी कलावत मुवो ।

मेड़तिया (दूदावत)

दूदो जोधावत

६५१. वरसिंघ मुवो मेडता सायर माथै आदमी जोधपुरसू सातल जोधावतरा आय बैठा वरसिंघरै वेटो सीहो महाकपूत वरसिंघरी ठकुराणी साखली सयाणी जिण वीकानेरसू दूदानै तेडायो इण आय अजमेररा सूबेदार सिरियाखांरा आदमी मेलिया जिके मेडता मायसू काढ दिया मेडतो आधो दूदै अपणायो नै आधो सीहा वरसिंघोतरो मेडतो ।

६५२ अजमेरसू सिरियाखा दोडियो देस उजाडियो विगाडियो दूदै अजमेर कनै जग कर सिरियाखानै मारियो पहला जग कर सिरियाखारा हाथी खोसिया हा ।

वीभ नह भेटिया, नह मोल वणजिया ।
.. .. लाछ दूदै लिया ॥

६५३ दूदा जोधावतरै बेटा पाच हुवा– वीरमदे १, रतनसी २, रायमल ३, रायसल ४, पचायण ५. रतनसी रायसल दोनारै वस रह्यो नही पचायणोत पचास जणा है ।

वीरमदे दूदावत

६५४ वीरमदेव दूदावत कनासू राव मालदेजी मेडतो लियो उण सलेमसाहनू अरज लिखी पातसाह आग्या किवी–वीरमदेनू अठै भेज दे जद वीरमदेव सलेमसारी हजूर गयो वीकानेरियो किलाणमल ही उठै गयो रावजीरी जबरीरी वाता सुणायी पातसाह वानू साथै ले आगरै आयो रावजी अजमेर आया. पातसाह अजमेर नजदीक रामसर आयो रावजी अजमेरसू दोय कूच पाछा किया पछै सलेमसाह डेरा किया रावजी गररी डेरा किया जद पातसाहजी वीरमदेनू कयो–तू कहतो राव भाज जासी, सो तो राव जोरमें है इण अरज किवी–राव भाज जासी, आप परतीत राखजे. पछै वारैट पत्तानू रावजीरी हजूर वीरमदे मेलियो. उण अरज किवी–

पातसाहरी फोज घणी, फतै होण ज्यूं नही, कूपो जैतो झूठी अरज करै है. आ वात सुण कूपाजी-जैताजीनू विना पूछिया रावजी गुगरोटरा पहाडांनू रवाना हुवा।

६५५. पछै कूपाजी, जैताजी, पचायणजी, अखैराजजी, वीदाजी वगेरै रावजीरा उमरावा वीस हजार घोडांरी वाग उपाड सवत १६०० पातसाहसू जंग कियो प्रभातरै समै. लरी नदीरै पार वेढ हुई पाच हजार आदमी काम आया।

६५६ वीरमदे पातसाहनू ले जोधपुर गयो पछै हासम कासम खवास सइयद और ही उमराव मारवाड़में राख कूच कियो वीकानेर किलाणमलनू दियो, मेडतो वीरमनू दियो. सवत १५३४ रा मिगसर सुद १४ रो जनम सवत १६००रा काती वीरमदे मुवो।

६५७ मागळियो भादो वावड़ीरो वासी जिण राव मालदेजीरी निजर किया सिकारी कुत्ता जद भादारा वेटा देवो जिणनू चाकरीमे राखियो देवानू वधारियो सवत १५९४ रावजी जैतमलोत कनांसू सिवाणो लियो जद मांगळिया देवारै हवालै कियो।

६५८ देवो सिवाणै राम कहयो – वीरमदे देवावत वडो सपूत हुवो रावजी मेडतो ले वीरम देवावतरै हवालै कियो. रावजीरी चाकरी नही करै जिणसू वळूदा मायसू वीदा वीरमोतनू कढियो।

६५९ वीरमदे रिया सहसा माथै आयो जद रडोदर थाणासू कूपो मेहराजोत १, राणो अखैराजोत चापो, जैसो भैरूदासोत इत्यादीक रावजीरा उमराव सहसारी मदत आया. रियां परै कोस माथै जग हुवो रावजीरा चाकरांरी वारै वरछी वीरमदे खोस लीवी दस वार छुरी कार घोडो रावजीरी फोजमें नाखियो वडो पोरख परगट कियो पिण वीरमदेरी फतै हुई नही।

६६०. संवत १६२४ मे उतियो अरजुन रायमलोत जैमल्ल ईसरदासजी सामल चितोड काम आयो।

६६१. वीरमदे दूदावत जिणारै वेटारी विगत – जैमल १, सारंगदे २, ईसर ३, कान ४, चादो ५, माडण ६, प्रथीराज ७, खेमकरण ८, जगमाल ९, प्रतापसिंघ १०, सेखो ११।

जैमल वीरमदेओत

६६२. जैमल पातसाह अकवररै पगा लागो जद संवत १६१८ जैमलनू मेडतो दियो साठ हजार घोडासू मिरजा सरफुद्दीननुं मददकार जैमल साथै मेलियो।

६६३. हुळ रायसळ रामावत जैमलजीरो उमराव बारै गांवासू गाव फालको पटै पावै, प्रथीराज जैतावत मेडतै रणभोम पड़ियो जैमलजीरै हाथ रहियो।

६६४ हुळ रायसळरो भाणेज प्रिथीराजजी जिणसु आ भाणेज माथै छाया किवी. जैमलजी रिसाणा, हुल रावजीरै आय वसियो।

६६५ अकबररी मा मक्का वगेरै मका-सरीफ ज्यारी ज्यारत करण गयी पातसाह मिरजा सरफुद्दीननु साथै मेलियो. अेक पीर विलायतमें जिणरी ज्यारत सुहागवती करै, विधवा न करै. ज्यारत करण वासतै विधवा अन्य पुरखसू अवध करि निका पढ लै उण पीररी ज्यारत करणनू अकबररी मा मिरजा सरफुद्दीन साथ निका पढी. दिली अकबररी मा पाछी आयी. जद आ वात सुणी अकबर फुरमायो – आगै तो सरफुद्दीन हमारा चाकर रहा, अब हमारा बाबा है।

६६६ आ बात सरफुद्दीन किणीकै पास सुण लिवी. जठै हुतो जठासू वीठळदास जैमलोतनू साथ ले भागो सो मेडतै आयो जैमळजीनू कह्यो– म्हारा कबीला नागोरमे है सो मगाय लेणा जद जैमळ आपरै बेटै सादूळनै नागोर मेलियो. सादूळ नागोर गयो, उठासू मिरजारा कबीला ले मेडतानू रवानै हुवो दोय सौ घोडासू नागोररो आमल आ पडियो सादूळ झगडो कर काम आयो मिरजारा कबीला मेडतै आया सादूळ चाळीस आदमियासू खेत रह्यो।

६६७ जैमल विचारियो–पातसाहमू करी, हमै अठै रहणो नही जद भाई-बेटानू कह्यो–माणस लेनै थे वधनोरमे जावज्यो, हू सरफुद्दीननू पोछावणनै जाऊ छू जैमल सिरोही ताई मिरजारै साथै गयो पछै नागाणै आय मातारो दरसण कर मेवाडमें गयो।

६६८. राणाजीसू मिलियो. वधनोर, करैडो, कोठारियो-अै ठिकाणा राणाजी जैमलनू दिया सवत १६२४ रा चैत वद ११ अकबर चितोड़ लियो जद दोय सौ आदमियासू जैमल राणारै काम आयो।

वीरतणै घर वीर, दोय णोपी हुई वाण।
राव अहिरपुर राखियो, इक उदियापुर राण॥

६६९. मेडतियो सारगदे वीरमदेओत बोवली दिसा गयो हो तैसू मामलो हुवो जठै सोळकिया मारियो. छोटा भाई माडण समेत उण वैरमें जैमलजी सोळकियारै परणिया. चादै वीरमदेओत चितोड माथै नारायणदास सोळकीनू मारियो।

६७०. जैमल वीरमदेओतरा वेटांरी विगत–सादूळ १, वीठळदास २, माधोदास ३, सामदास ४, सुरताण ५, नरायणदास ६, केसोदास ७, रामदास ८, हरदास ९, कल्याणदास १०, द्वारकादास ११, गोइंददास १२, नरसिंघदास १३, मुकंददास १४ ।

६७१ वडी सोळखणीजीरो वेटो सुळताणजी. जैमळजी छोटी सोळखणीजीरा वेटा तीन–केसोदास १, माधोदास २, गोयददास ३ जैमलजी मांडवरै पातसाह राजा पदवी वीरमदे दूदावतनू दीवी ।

६७२. जगनाथ १, सावळदास २, सूरदास ३, नाथो ४, वलराम ५ पाच वेटा गोयंददास जैमलोतरा ।

६७३ जगनाथ १, सुंदरदास २, सावळदास ३–तीनू राठोड़ गोइददास जैमलोतरा वेटा ।

जगनाथोत मेड़तिया

६७४. मेड़तिया जगनाथ गोइंददासोतरै नव वेटा हुवा ।

६७५ गोपीनाथ जगनाथोत राव इंदरसिंघजीनू नागोर मायसू कवर मोहकमसिंघ काढ दियो हुतो इण पाछो रावनू नागोर वैसाणियो रावजी नागोररा गांव दिया ।

६७६ मेडतियो भावसिंघ प्रयागदास जगनाथोत जिण वळाघणारा पातावत वारटनू मातगयण हाथी दियो ।

६७७ नागोररा, मेडतारा परवतसररा गांव जगनाथोतारा है ।

६७८ मेडतियो गोपाळदास सुरताण जैमलोतरो, पातसाही चाकर, दिखणमे वीडमी वेढमें काम आयो ।

६७९. राठोड दुवारकादास जैमलोतमे राघा वडो मामलो कियो आज पहला किणही राठोड इसो न कियो सवत १६५५ पातसाहरै काम आयो ।

६८०. राठोड केसोदास जैमलोत गोपाळदास साथै वीड़री लडाईमें काम आयो आवो मेड़तो पटै हुतो ।

६८१ राठोड गिरधरदास केसोदासोत जैमलोतरानू पातसाह पदमावती पटै दिवी ही, परवतसर पटै हुवो सवत १६८६ खानजहांरी वेढमे काम आयो ।

६८२. किसनगुर मेडतिया सुरताणोत वैरागिया सुखे वैरागियांरै भेळा वहै जठै जावै पुण्यरो लेवै, पागमें मोरपख राखै. राजावत सिआंनै परणावै; उणरै परणीजै महंत सेवादासजी है गाव तावापत्र है ।

६८३. प्रथीसिंघ अखैसिंघ दोनू सार्मसिघरा प्रथीसिंघरा खालड वोरावड नै अखैसिंघरा बूढसू मानाणै ।

मेड़तिया (घाणेराव)

६८४ वीरमदे १, प्रतापसिंघ २, गोपाळदास ३, किसनदास ४, दुरजणसिंघ ५, गोपीनाथ ६, सूरतसिंघ ७, प्रतापसिंघ ८, पदमसिंघ ९, किसनसिंघ १०, वीरमदे ११, दुरजणसिंघ १२, अजीतसिंघ १३, घाणेरावरा धणी ।

६८५. प्रतापसिंघ वीरमदेवोत मेडतियानूं राणौजी पचास हजाररा पटासूं गाव जनोद मेवाडरो दियो ।

६८६ वीरमदे दूदावतरो बेटो प्रतापसिंघ जिणनूं राणोजी पचास हजाररा पटासू जनोद दीवी ।

६८७ प्रतापसिंघरै गोपाळदास, गोपाळदासरै किसनदास, किसनदासरै घाणेराव महल कराया ।

६८८. गाव घाणैरो बामणारो सासण हुतो अेक वास गूजरगोडारो, अेक राजकुरारो अेकै वास गुंदचारो-जुमलै घाणेरै तीन वास हुता ।

६८९ गूजरगोड, राजगुर, गूदेचा-आ तीन जातरा ब्रामणारो गाव घाणीरो जठै किसनदास गोपाळदासोत महल कराया घाणेराव गावरो नाव परगट हुवो ।

६९० किसनदास मेडतियो आय रहियो जदसूं घागेराव कहाणो ।

६९१. किसनदासरै दुरजनसिंघ, दुरजनसिंघरै गोपीनाथ, गोपीनाथरै सूरतसिंघ, सूरतसिंघरै प्रतापसिंघ, प्रतापसिंघरै पदमसिंघ, पदमसिंघरै किसनसिंघ, किसनसिंघरै वीरमदे, वीरमदेरै दुरजणसिंघ, दुरजणसिंघरै अजीतसिंघ ।

६९२ गोपीनाथजी रामपुरै चालिया राणा अमरसिंघरी वारमे ।

६९३ राणै अमरसिंघ फोज देनै गोपीनाथ मेडतियानू सिरोही माथै विदा कियो, इण वहार गाव सिरोहीरा गोडवाड हेटै घालिया, सिरोहीरी माडीरो दाण राणाजीरो ठैरायो गोपीनाथरी पोतीरो सबंध रावरा कुवरसू हुवो ।

६९४ राणै अमरसिंघ ····घोडै चढिया मेडतिया गोपीनाथ अरज किवी ।

६९५ राणो राजी हुवो ।

६९६ राठोड गोपीनाथरा वेटारी विगत—सुरताणसिंघ १, अनोपसिंघ २, अभैराम ३, हवतसिंघ ४ ।

६९७ सूरतसिंघ १, मोहणसिंघ २, अभैराम ३, अनोपसिंघ ४—अै च्यार वेटा गोपीनाथरा ।

६९८. राणो अमरसिंघ तळाव फोड़ावतो हो सुरताणसिंघ गोपीनाथोत अरज कर रखायो।

६९९ महाराज अजीतसिंघजी कनै दिली अभैराम गोपीनाथोतनू राणो अमरसिंघजी उकील भेजियो ओ राणारो काम सुधार पाछो आयो . नो ..। .

७०० राणो अभैरामसू उदास हुवो मनने जद सिसोदियो पूरावत कह्यो-अभैरामजी तो आपरी चाकरी पूगा है सू वासू राजी रह्यो जोग है जद राणोजी अभैरामजीसू राजी हुवा।

७०१ नारळाई सादडरारा धणी कोठारियो गाम अभैराम गोपीनाथनू राणै जैसिंघ दियो राम राव माळदेरो जिणरा वंसरा जोधा ज्यारै चाणोद हुई, तिका वा अनोपसिघ गोपीनायोतनू दिवी।

७०२ किसनसिंघ १, विसनसिंघ २, नाथूजी ३, खुमाणसिंघ ४, पहाडसिंघ ५—अै पाच बेटा पदमसिंघजीरै ।

मेड़तिया (रियां)

७०३ रियारा सिरदारारी पीढिया लिखते—जैमल १, माधोदास २, सुन्दरदास ३, गोपाळदास ४, प्रतापसिंघ ५, अचळसिंघ ६, कुसळसिंघ ७, सिरदारसिंघ ८, सेरसिंघ ९, जालमसिंघ १०, अमानसिंघ ११, सादूळसिंघ १२, हमै है, पहला रिया इणरा पडदादारै हुतो।

७०४ सिरदारसिंघ १, सूरजमल २, जवानसिंघ ३, वखतावरसिंघ ४, विरदसिंघ ५, सिवनाथसिंघ ६, हमै रियारा धणी है।

७०५ कुसळसिंघ १, सरदारसिंघ २, सूरजमल ३, जवानसिंघ ४, वखतावरसिंघ ५, विरदसिंघ ६, सिवनाथसिंघ ७—रियांरा सरदारारी पीढी।

मेड़तिया (आलणियावास)

७०६ सुदरदास १, गोपाळदास २, प्रतापसिंघ ३, राजसिंघ ४, कल्याणसिंघ ५, रामसिंघ ६, पदमसिंघ ७, लखधीर ८, फकीरदास ९, भारतसिंघ १०, हणवतसिंघ ११, अजीतसिंघ १२—आलणियावास।

७०७ आलणियावासरा सिरदारांरी पीढिया—प्रतापसिंघ १, राजसिंघ २, कल्याण-सिंघ ३, रामसिंघ ४, पदमसिंघ ५, लखधीर ६, फकीरदास ७, भारतसिंघ ८, हणवंतसिंघ ९, अजीतसिंघ १०—हमै आलणियावास भोगवै।

७०८. आलणियावाससू वारसरै दिन राजसिंघजी वगैरे माधोदासोत नै उदावत दोनू खापांरा सिरदार पुसकरजी तहव्वरखासू जग करण चालिया राजसिंघजी प्रतापसिंघोत रथ सवार हुवा रजपूता कही—घोडै असवार होयजे आ कही—

म्हारो पेट दूखै है पछै ऊदावत टळ परानू चालिया लोका आनू कह्यो. हू आईज वात वाछतो थो, ओ अवसाण तुरकानू मारि धर चाड धणीरी चाड गऊरी चाड पुसकरराज माथै मरणरो पुसकरराज मोनूं हीज दियो. सो पुसकरराज म्हारी अरज मानी, घोडो लावो राजसिंघजी घोडै सवार होय कह्यो— पुसकर! अेक म्हारी हमै आ अरज, आपरा पाणीरो दरसण करि म्हारी लोथ पडै पछै सरस्वतीरा नाळसू वेढ सरु हुई, ब्रह्मघाट माथै जाता लोथा माधोदासोतारी पडी।

७०९ माधोदासोत राजसिघजी वगेरै नव सिरदार पुसकरजीरा ब्रह्मघाट माथै काम आया तहवरखासू जग करीनै।

७१० आलणियावासरो धणी ईसरोत विजैसिघ छोटो भाई राजसिघ विजैसिघजी मुवा पछै विजैसिघजीरी ठकुराणी बजरगदेजी मरदानी पोसाक कर सस्त्र बाध घोडै चढती तुरकाणीमे वडो डको रह्यो।

७११. चमाळीस गाव आलणियावासरा नै चारसू ढूढाडरी अजारै दोनू ठिकाणा लिया. सारो राज-काज बजरगदेजी हाथा करता।

७१२ आलणियावासरो चमाळीसो वानै हो बजरगदेजीरै सात बरस छोड रह्यो, पछै बेटो हुवो।

७१३. दुरगदासजीरै पटै मेडतो जद आलणियावासरा चमाळीसारा रुपिया भरो अै नटिया पछै मेडतासू बजरगदेजी चढिया रियारी नदीमे वेढ हुई दुरगदासजी भागा बजरगदेजी जीता—

दोय कोस दोरी दुरगेस।

७१४ देवराजसिंघ आनू कळक दे मारिया नै बजरगदेजीरो बेटो ही मारियो. बजरगदेजी कह्यो—मोनू थे झूठो कळक दे मारी हू तो राजसिंघ! थारो नास होय, जो तै साचो कळक दे मोनू मारी है तो थारो तार ही बिगडजो मती।

७१५. गाव माजी नागोररो तारकीनजीरा मुजावरारै पातसाहरो दियो हुतो उठै विखामे माधोदासोत मेडतिया सरणै हुता।

मेड़तिया (कुड़की)

७१६ वीरमदे १, जैमल २, माधोदास ३, सुंदरदास ४, गोपाळदास ५, प्रतापसिघ ६, अचळसिंघ ७, कुसळसिघ ८, सिरदारसिंघ ९, सेरसिंघ १०, अमानसिंघ ११, सादूळसिंघ १२, मेडतिया कुडकीरा धणियारी पीढिया।

मेड़तिया (कुचामण)

७१७ कुचामणरा सिरदारारी पीढिया लिखते–रिडमल १, जोधो २, दूदो ३, वीरमदे ४, जैमल ५, गोईददास ६, सावळदास ७, रुघनाथसिघ ८, किसोरसिंघ ९, जालमसिंघ १०, सोभागसिंघ ११, सूरजमल १२, सिवनाथसिंघ १३ ।

७१८ गीत कुचामणरा सिरदारानू वांकीदास कहै–

किसू गणावे पीढिया ख्यात सारी कहे, दुनी प्रव प्रव प्रगट सुजस दीधो ।
कदीही कियो नह रूमणो कुचामण, कुचामण साम–ध्रम सदा कीधो ॥ १ ॥
मृजडै काळ न्रप विजपती सेवियो, सुख भण गयो विया कमधजा साथ ।
लोह वळ मुरधरा-तणा केवळिया, सूह ढूढाड धर हूत सिवनाथ ॥ २ ॥
काकिया जनमिया जिका चाळा किया, टूट रज-वट तिका हूंत दाखी ।
अवरकै रचे रणजीत फोजा अणी, रज करी सरी गत धणी राखी ॥ ३ ॥
दुआ रुघनाथ दूदाणरा दिवाकर, वार थारी भली थाळ वागो ।
पहलही मान यह तणा लागो पगा, लगा ध्रम चक अभग आभ लागो ॥ ४ ॥

७१९. सवत १७१५ रा मेडतिया रुघनार्थसिघ सावळदासोत . कनासू मारोठ लिवी ।

७२० सवत १७१५ रुघनार्थसिघ सावळदासोत गोडा कनासू मारोठ लिवी ।

७२१ सवळसिंघ रुघनाथसिघजीरो, सवळसिघरो इदरसिघ, इदरसिंघोत विजैसिंघोत मारोठमे हैं ।

७२२. वीरमदेवोत भाटिया कनैसू सराणो रुघनाथसिघजी लियो. जाणियाणो रूपसिघजी लियो ।

७२३ मेडतिया रुघनार्थसिघोत हजूररी . . न चढै, ऊटारै जावतै न चढै घोडो चढ नै फरावै हाथी चढ खवासी न करै . . ।

७२४ रूपसी रुघावत रिमां-राह, आसाम कीध मारत अथाह ।

७२५ रूपसिघ १, केहरसिंघ २, अगदसिंघ ३, अमरसिंघ ४–अै रुघनार्थसिंघ सावळदासोतरा वेटा च्यार नरूकारा भाणेज सवळसिंघ १, विजैसिंघ २–अै दोय सेखावतांरा भाणेज ।

७२६. मेड़तिया वनैसिघोत महासिघोत सगतसिघोत मीठडीमे है ।

७२७. मेड़तिया विमनदासोत ज्यारै पहलां जाजपुर पटै रहियो पछै खेरवो पटै रहियो पछै खोड़ पटै पायी राणो जैसिघ भाणेज ।

७२८ पुसकरजी कनै चापावतारो ठिकाणो वसी कडैल जठारो भाणेज सीकररो धणी देवसिंघ।

७२९ मेडतियारै नागणेची ब्रह्माणी है, मीठी कोळी भोग लागै।

करमसोत

७३० करमसी आपरी बहन भागाबाई नागोररा खाननू परणायी साळा कटारीमे आसोप खीवसर दियो।

७३१ राठोड करमसी आपरी बहन भागाबाई नागोरी खानू परणायी जद खान साळ कटारीमें आसोप खीवसर दिया।

७३२ करमसी जोधावत लूणकरण वीकावतरी चाकरीमे रहतो नारनोळरै गाव ढुसियै वेढ हुई सू करमसी लूणकरण साथै काम आयो।

७३३ करमसी भलो राजपूत हुवो लूणकरण वीकानेरियारो चाकर हो. लूणकरण वीकावत नारनोळ ऊपर गयो जद भोमियासू वेढ हुई लूणकरण, कवर प्रतापसिंघ, राठोड करमसी जोधावत गाव ढुसियै काम आया।

७३४ मागळियो भोज हमीरोत जिणरी बेटी दूलदे करमसी जोधावत परणियो पचायण १, धनराज २, नारायण ३, पीथूराव ४–अै च्यार बेटा करमसीरै हुवा मागळियारा भाणेज।

७३५ उदैकरण १, नारायण २, पचायण ३, पीथूराव ४, धनराज ५–अै पाच बेटा। करमसी जोधावतरा।

७३६ करमसीरै टीको उदैकरणनू हुवो वरस ४० आसोप यारै रही सेवकी राव गागाजीरै नागोरी खानसू वेढ हुई उदैकरण रावजीरै सामल नै हुवो जद रावजी आसोप जवत कीवी।

७३७ उदैकरण करमसीरो जिणरै आसोप च्यार वरस रही पछै रावजी गागाजीरै नै नागोरी खानरै सेवकी वेढ हुई उदैकरण रावरी चाकरीमे न गयो रावजी आसोप ले लिवी।

७३८ उदैकरण करमसोतरो बेटो भानीदास मागळिया वीरमरी चाकरीमे हो वीरमदे साथै काम आयो।

७३९ उदैकरणरो भवानीदास मागळिया वीरमरो चाकर हुतो सो वीरम साथै काम आयो।

७४० भवानीदासरै राम, रामरै केसोदास, केसोदासरै प्रागदास।

७४१ रामरै दयालदास, दयालदासरै बेटा तीन हुवा–लखमीदास १, कुभो २, हरदास ३ ।

७४२. करमसोत कान्ह खीमावत सोयळा वाळारै वडेरै पीपाड पटै पायी ही ।

७४३ हमीर नरा सूजावतरो फळोधीरो धणी गोपाळ नरा सूजावतरो पोकरणरो धणी ।

७४४. पोहकरणा दोडनै विगाड करनै गाव वयाळीस नरावता कनासू लिया ।

७४५ गोइद नरावत भाखर माथै पोहकरण कनै गढ करायो नाव सातलमेर दियो हो राव मालदेजी नरावता कनासू पोहकरण लिवी जद सातलमेर पाड सातलमेररा कवाडासू पोहकरणरो कोट करायो ।

७४६ नरावतारी वहन-वेटी सासरामे सातलमेरी कहीजै ।

ऊदावत

७४७ राव ऊदो सूजावत गाव लोटोती तळाव करायो नाव सूजैळाव दियो ।

७४८ सवत १६१४ रा चैत वद ९ अजमेरसू कासमखा फोज ले जैतारण माथै चढियो रतनसी खीवा ऊदावतरो जणा ३५ पैतीससू काम आयो ।

७४९ कल्याणदास रतनसिघ खीमावतरो जिणरा बेटारी विगत–दयालदास १, भीव २, मुकनदास ३, वेणीदास ४ ।

७५० दयालदासरा राव सुर भीव राड वगेरै भीवदासरा माराही वोळीमे मुकनदासरा रास नीवाज ।

७५१ मुकनदासरै वेटा दोय–मनीराम १, छोटो विजैराम २ जिण रास पटै पायी. पहला रास जो धोळी ।

७५२ पीपाड लाव माथै जगराम विजैरामोत पीपाड पटै पायी ।

७५३ ऊदावत जगरामसिंघ पीपाड़, कुअर कुसळ जगमालोत कोकलै, अमरसिघ कुसळसिघोत दहिया वडी, माधोसिंघ अमरसिंघोत देवगाव वघेरे, कल्याणसिघ अमरसिघोत ताल, दौलतसिघ सभूसिघ नीवाज मुवा, सुरताणसिंघ जोधपुर काम आयो ।

७५४. सुभराम जगरामोत सीरो लियो, पीपाडनै लिवी नही ।

७५५ अमरसिंघ कुसळसिघ जगरामोतरै सीरो छोड पीपाड़ लिवी जगरामजी देवलोक हुवा पछै ।

७५६ ऊदावत अमरसिंघजीरा वडो वेटो माधोसिंघजी वडो अडपदार हो . ऊचळिया पछै कल्याणसिघजी अमरसिंघोत नीवाजरो धणी हुवो ।

७५७ अमरसिघनूं हडोर तकियो जिणसू माधोसिघ अमरसिघोत तकियो ले लियो विना दियाँ ही ।

७५८ ऊदावत अमरसिघरी बेटी देऊबाई राजा उमेदसिघजीनू परणायी उमेदसिंघजी जीवता राम कही ।

७५९ अमरसिघरी छोटी बेटी गुमानाबाई सायपुरै उदोतसिघ उमेदसिघोतनू परणायी उण नीबाज सत कियो ।

७६० नीबाज मदन परमार विसनू-अरथ मदिर करायो जद खेजडलासू भेसादरी मूरत आय विराजी ।

७६१. ऊदावत सुखसिघ वखतसिघोत केहरसिंघरै छोटे भाई राजा किशोरजीनू मारिया ।

७६२ रास ऊदावत वखतसिंघोत महाराज किसोरसिंघजीनू मारिया अजमेर मे ।

रतनोत जोधा (भाद्राजण)

७६३ राव मालदे १, रतनसी २, सादूळ ३, मुकनदास ४, उदैभाण ५, बिहारीदास ६, वाघ ७, उदैराज ८, उमेदसिघ ९, जालमसिघ १०, वख्तावरसिंघ ११–अै भाद्राजणरा सिरदारारी पीढिया ।

७६४. जोधा रतनसिंहोत गाव गोधणसू उठ मडला कनासु भाद्राजण, सोनिगरा कनाँसू वालो, डूगरोता कनासू गाव भीवरी लीवी ।

महेसदासोत जोधा (पाटोदी)

७६५ जोधा पाटोदीरा ज्यारी पीढियां–राव मालदे १, महेसदास २, रामदास ३, गोइददास ४, सबळसिघ ५, दुरजणसिघ ६, सूरजमल ७, जालमसिध ८, जवानसिंघ ९, भारतसिंघ १० ।

७६६ महेस मालदेवोतरो बेटो रामदास, रामदासरो गोइददास, गोइन्ददासरो सबळसिंघ, सबळसिघरो दुरजणसिघ, दुरजणसिघरो सूरजमल, सूरजमलरो जालमसिंघ, जालमसिघरो जवानसिंघ, जवानसिंघरो भारतसिंघ–पाटोदीरा ।

७६७ राठोड जोगीदास रामदासोत महाराज गजसिंघजीरी आग्यासू बूदेलानू दिल्लीमें मारियो, रामसिंघ जोधारो वैर लियो पाटोदीरा जोधारो वडेरो जोगीदास ।

७६८ पाटोदी नथूसिंघ सूरजमलोत बागडिया देवडारो भाणेज जालिमसिघ सूरजमलोत चावडारो भाणेज ।

७६९ नथूसिघरी बेटी लाडूबाई जेसळमेर परणायी मूळराजजीनू बेटो मानसिंघ पाटोदी घोडासू पड मुवो कवरपदै पाटोदी इणरी छत्री है ।

७७०. रावळ जैतमाल आगे दुरजणसिंघ जोधो भाज भाद्राजण गयो पाटोदी छोडनै।

७७१. जोधा सवळसिंघरै सात वेटा हुवा पात्र पाटोदी रहिया दोय फळसूड वसिया।

७७२ महेसरो दूदो दूदारा पोता घडसीरै वाडै रहै. महेसरो कल्याणदासरा पोतरा गाव सरवडी रहै।

रतनोत जोधा (दुगोली)

७७३ मोटो राजा उदैसिंघ १, जैतसिंघ २, हरिसिंघ ३, रतनसिंघ ४, किसनसिंघ ५, सावतसिंघ ६, सिरदारसिंघ ७, राघोदास ८, ग्यानसिंघ ९, सिवनाथसिंघ १०, कवर वखतावरसिंघ ११—जोधा दुगोली ज्यारी पीढिया।

गोयंददासोत जोधा (खैरवा)

७७४. खैरवारा धणियारी पीढिया लिखते—राव मालदे १, राजा उदैसिंघ २, भगवानदास ३, गोइददास ४, रणछोडदास ५, भीम ६, प्रतापसिंघ ७, इदरसिंघ ८, सवाईसिंघ ९, मानसिंघ १०।

७७५. खैरवै प्रतापसिंघ भीमोतरी वेटी, इदरसिंघरी वहन, देलवाडारो धणी राजा राघोदेव परणियो।

७७६ जोधा केहरसिंघ नरसिंघदासोतरा वेटारी विगत—इन्दरभाण १, चंदरभाण २, गोपीनाथ ३, किसनदास ४, उरजण ५।

७७७. खाटू किसनदासोत सामै उरजणोत उमरकोटमे रसत घाली जद जोधा केहरसिंघोत छव सिरदार काम आया इकतीस रजपूत काम आया. वयासी घावा उपडिया।

पातावत

७७८ पातो जोगीदास चाखू पड़ियाळरो धणी मुकुनदास रामचंदोतरो वेटो महाराज वखतसिंघजीरी फोज फळोधी लागी जद महीना कोटमे लडियो पछै प्रोळा खोल महाराज रामसिंघजीरै काम आयो।

७७९ जोगीदास छोटो भाई तिलोकसी काम आयो रूपावत पाळीरो धणी जोधसिंघ महाराज रामसिंघजीरै काम आयो जोगीदासरै साथ।

७८०. जोगीदास काम आयो जोगीदास पातारा भाई-वेटा पूगळ गया अमरकोट टाळपुर घेरो दियो जद रसद पहुचावणनै जोगीदासरानू विदा किया. केहरसिंघोत रूपावता पाता रसद उमरकोटमे घाली जग कर महाराजरी फते किवी जद जोगीदासरानै सामै आया।

७८१ जोधसिंघरो करनसिंघ, करनसिंघरो सिरदारसिंघ, पाळीरो धणी, भामट भीमसिंघजी महाराजरै काम आयो ।

७८२ कळावत जैतमळोत दोय बडा धडा पातावतामे नै आ पछै तीन धडा—गागावत, पातावत, पीथावत ।

७८३ गागावतारो गाव नागोररी पट्टीमे ही है ।

पाळी

७८४ जगतसिंघ १, पेमसिंघ २, राजसिंघ ३, अखैराज ४, लखधीर ५, वीठळदास ६, गोपाळदास ७—पाळीरा सिरदारारी पीढी ।

रोयट

७८५. रोयटरो धणी भगोतसिंघजी जिणरी बेटी अेक धुलै मेघसिंघ रुघनाथसिंघोतनू परणायी दूजी माहर परणायी. तीजी सामोद नाथावत अजीतसिंघ सुरताणसिंघोतनू परणायी दोहितो रावळ बैरीसाल ।

७८६. महाराज विजैसिंघजी बूदी परणिया जद रोयटरै धणी भगोतसिंघजी अस्सी घोडा भाटा—चारणानू दिया ।

७८७ राठोड रोयट दळपत गोपाळदासोतनू महाराज गजसिंघजी दिवी पछै कल्याणदास दळपतोतरै रोयट रही सगतसिंघ आइदानोत थोभ छोडी, रोयट लिवी ।

नागोर

राठोड़ अमरसिंघ गजसिंघोत

७८८ सवत १६९१ रा पोस वद ९ साहजहा पातसाहरै पाय लागो—कुवर अमरसिंघ गजसिंघोत ।

७८९ अढाई हजार मनसब अमरसिंघजीनू दीनो पाच परगना पातसाहजी दीना वडोदर रूणनू १, आतरोदी २, सागोद ३, झोलाव ४, वाळपो ५ ।

१,५०,०००)	मे	वडोद
७०,०००)		सागोद
३,७५ ०००)	में	झोळाव
१,६०,०००)	मे	आतरोदी
२०,०००)		वाळूपो
जुमलै ७,७५,०००)		

जुमलै ७,७५,०००) रूपियारी जागीर अमरसिंघजीनै इनायत हुई ।

७९० राव अमरसिंघ गजसिंघोत पातसाहरो वखमी सालावतखा सादिक वारो बेटो मारियो ।

७९१ खलीलखां रावजीरै झटको कियो हाथ ऊपर रावजीरै लागी पछै गौड वीठळदासरै बेटै गौड अरजुण झटको कियो राव पड़ियो ।

७९२ सवत १७०१ रा सावण सुद ३ सैद खानजहा पातसाहरो मेलियो आगरै अरमसिंघरी हवेली माथै आयो राठोड वळू भावसिंघ वगेरा काम आया ।

७९३ चांपो वळू गोपाळदासोत रजपूता पाचासू काम आयो आगरै ठाकुराणी टाकणी सती हुई ।

७९४ कूपो भावसिंघ कान्होत काम आयो राजपूता नवसू ।

७९५ चांपो भीनोकरण भोपतोतरो च्यार रजपूतासू काम आयो ।

७९६ वळूजी सामल राठोड सामसिंघ कान्होत कूपो पातसाही दरवारमे अमरसिंघजीरै साथै काम आयो भावसिंघरो भाई ।

७९७. सोनगरो भोजराज जगनाथोत राव चत्रसालरो चाकर हुतो सो रावजी अमरसिंघजीरै काम आयो ।

७९८ सोगनरो नाथो मानावत काम आयो ।

७९९ भाटी गोइददासजी नजदीक था पिण भेळा न होय सकिया चहुवाण तिळोकसी मेहकरणोत अमरसिंघजीरै काम आयो ।

८०० मुहतो जोधो वछावत अमरसिंघजीरै काम आयो ।

८०१ सोनगरो जगनाथ जसवत भागसिंघोतरो काम आयो ।

८०२. जोधो केसरीसिंघ नरसिंघदास कलावतरो, वारट चावो- कूपो गोयन्ददास खीवो मांडगोतरो काम आयो ।

रायसिंघ

८०३ सवत १६८० असाढ सुद १० जनम स० १७०१ साहजहा पातसाह रायसिंघ अमरसिंघोतनू टीको दियो ।

८०४. इद्रसिंघजी ईसरीसिंघजी रायसिंघजीरै कुंवर दोय ।

इन्द्रसिंघ

८०५ महाराज जसवन्तसिंघजी देवलोक हुवा पछै पातसाह औरगजेव नागोररा राव इद्रसिंघ रायसिंघोतनू जोधपुर इनायत कियो इणरी अवाई सुण सिरदारा

जोधपुर गढ सजियो–चापावत सोनगजी, उदैसिंघजी जैतावत परताप-सिंघजी, सूरजमल ऊदावत, जोधो मुकददास, कूपावत हरिसिंघ, बालो प्रयाग-दास, ऊहड भगवानदास, किळैदार ईदो रुघनाथ, पुरोहित अखैराज–इत्यादीक घणी आसामिया मिलनै गढ सजियो ।

८०६ इद्रसिंघजी जोधपुर आया विसटाळा फेर ललपत करी साच-झूठ करी पट्टांरो लालच दिखाय पातसाहरो जोर दिखाय गढसू सोनगजी वगेरा सिरदारांनू उतार आप गढ चढिया पछै सोनगजीरै डेरै कुँवरनै मेलियो ।

८०७ इदरसिघ रामसिंघोत पातसाह ओरगजेबसू कोल कियो हो–मोनू जोधपुर दीजै, जोधपुर जाय राठोड सतरै कुबधी है ज्यारा माथा काट अठै मेलस्यू ।

दूहो– इद्रसिघ सोनग कनै, दीनो कवर पठाय ।
पख भाद्रव सुद पचमी, बरस छतीसै ताय ।।

८०८ इदरसिघजी गढ ऊपर गया जद डोढी ताई इदरसिंघजी सामा आया ।

८०९ सवत १७३६ रा भाद्रवा सुद ७ मगळवार राव इदरसिंघजी जोधपुररै गढ टीको लियो पछै राम भाटीनू चूक कर मरायो ।

८१० रावजी अजमेर पातसाहरा पावा गया राठोडारी जोरावरीरा समाचार मालम किया ।

औरगसा अजमेर गढ, आयो दूजी वार ।
जससुणिया जसराजरा, जुडिया सौ जोधार ।।

८११. नाथावत व्यास देवदत्त सोजतरै गाव हुतो जठै रावजी आदमी मेलिया उवा जाय देवदत्तनू कह्यो–रावजीरो हुकम है, बेडी पहर लै, व्यास बेडी पहरी नही ,वाजनै काम आयो जगतमें रावजीरो अपजस हुवो ।

८१२ नागोररा राव रामसिघजी इदरसिघजीरै खास परवाना ऊपर लक्ष्मी दामो-दररो नाम लिखीजतो ।

८१३ इदरसिंघ नागोररो कोटवाल रूघो मोहिळ कियो विणजारी छती रूघारी खवास जिणरा घाघरारा नाडा मोहर वाधी रहती ।

८१४ पातसाह उदैपुर माथै गयो दहवारी भेळी कूपावत उग्रसिघ काम आयो. राणो राजसिघ नास पहाडा गयो ।

८१५ राव इदरसिंघजीनू वधनोर थाणै पातसाह मेलिया ।

८१६ सत्यानद सन्यासीरा दुखसू रैत नागोररी दिळी जाय पुकारी इदरसिंघजीरो मनसब जबत कियो औरगजेब जद कूपावत प्रतापसिघ भावसिंघजीरो पोतो कवर मोहकमसिंघनू ले दिल्ली गयो नागोररी साहिबी पगा राखी ।

८१७ आगैं हुती जिका सिणगार चोकी ढवायनै नवी करायी. डोढीरो वारणो दिखण दिसामें करायो जोधपुररी रय्यतनू घणो दुख दियो रावजी अनीत वरतायी सोनगजी वगेरैरो क्यूही वटैं नहीं सिरदार छाड दुरगादासजी कनै गया आ कह्यो–नागोरी तरद्दार है, हू तो पहलांसू ही जाण गयो, हमैं सारा थोक भला करसा ।

वीकानेर

वीको जोधावत

८१८ वीको जोधावत जागळूरा साखळारो भाणेज ।

८१९. राठोड वीका जोधावतरा वेटारी विगत–लूणकरण १, घड़सी २, वीसो ३, नरो ४ ।

लूणकरण वीकावत

८२० ढुसियो गाव नारनोळ कनै है जठै लूणकरण वीकावत काम आयो ।

८२१. उरजण सतावत वीका जोधावतरै काम आयो मोहिळ मारियो ।

८२२. सावत उरजणरो वीकानेररा लूणकरणरै काम आयो ।

जैतसी

८२३ वीकानेरसू सात कोस ऊपर सोहुवो गांव है जठै वीकानेररो धणी राव जैतसी लूणकरणोत कूपा महराजोतरै हाथ रह्यो ।

८२४ ठाकुरसी जैतसिंघोत गयी भोमरो वाळणहार हुवो वीकानेर ।

८२५ राठोड ठाकुरसी जैतसीहोत लूणकरणोत जैतपुरसू जाय तेलीसू मिल निसरणियां लगाय राठा कनैसू भटनेर लियो ।

८२६ ठाकुरसी भटनेरचा तेलीरो दिल हाथ लेनै सूतरा रस्सारी नीसरणीसू तेरह सौ जणांसू भटनेररै किळै चढियो भाटियांनू मार काढिया भटनेर अपणाय लियो ।

८२७ ठाकुरसीजी जैसलळमेर परणिया हुता ।

८२८ वीकानेरियै कल्याणमल जैतसिंघोत आपरा छोटा भाई ठाकुरसी जैतसिंघोतनू जैतपुर ठिकाणो दियो ।

८२९ ठाकुरसीरो वाघ अकवर आगैं कुत्ता ज्यू वाघनू पकड़ आणियो ।

८३०. ठाकुरसीजीरै वेटो वाघजी हुवो. अकवररी आग्यासू वाघसू वाथिया पडण कमर वांधी वाघ कुत्ता ज्यू हुय गयो. पातसाह घणो राजी हुवो ।

८३१ मेडतियो केसोदास सुरताणोत नवावनै मार आगरै रायसिघ कल्याणमलोतरै डेरै आयो इण वाघ ठाकुरसिघोतरै डेरै मेल दियो वाघ केसोदास भेळा काम आय यवनासू जग करियो ।

८३२ आ दोनारा माथा कटाय आगरारै दरवाजै वधाय पातसाह जावतानू चौकीदार राखिया. पछै नारणोत वळभद्र राजा रायसिघजीरा कह्यासू दोनारा माथानू जमनारै तट दाग दियो ।

८३३ पछै मेडतियो केसोदास सुरताणोत आगरामे नवावनू मार वाघरै सरणै आयो. वाघ केसोदास पातसाहरा सीखासु जग कर काम आया आरा माथा आगरारै दरवाजै टाकिया पातसाहरा हुकमसू माथा ऊपर चौकी बैठी पछै नारणोत वळभद्र माथानू दाग दियो जमनारै तट प्रिथीराजजी कह्यो–

भाई जिके कहीजै वलभद्र जो···· · ।

राव कल्याणमल जैतसीहोत

८३४ राव कल्याणमल जैतसिघोतरा वेटारी विगत – रायसिघ १, प्रथीराज २, सुरताण ३, रामसिघ ४, गोपाळदास ५, भाण ६, राघवदास ७, अमरो ८ ।

८३५. वीकानेर राव कल्याणमलरै वेटारी विगत – रायसिघ १, प्रथीराज २, सुरताण ३, रामसिघ ४, गोपाळदास ५, भाण ६, राघवदास ७, अमरो ८ ।

८३६ राठोड प्रथीराज कल्याणमलोतरै हसाररी वावनी पटै हुती हमै प्रथीराजोत उठै हीज रैवै है ।

८३७ स० १६३८ रा वैसाख सुद ३ सोमवार प्रथीराज कल्याणमलोत रूपक वेल नामे वणायो ।

राजा रायसिंघ कल्याणमलोत

८३८.······विक्रमाख्यनृपस्य पुत्र श्री लूणकर्णोऽपि न लूणकर्ण ।
श्रीजैत्रसिंहोऽहिन नागसिंह कल्याण मल्लोऽखिलशत्रुशल्य ।
श्रीराजसिंहस् तनुजोऽस्य राजा, विराजते धर्म-पथस्य गोप्ता ॥

८३९ राजा रायसिंघजी वारट सकरनू सवा कोड दीवी जद पाडसर साजनसर दोय गाव तावापतर दिया वीकानेररा ।

८४०. दूहो राजा रायसिंघ कहै–

करमचद करसो किसू, अन धन जोड अपार ।
नवी जग खाटो नही, ले जासी की लार ॥

८४१ वीकानेर गढ कोट राजा रायसिघ करायो अधकोस सहर छै जूनो वीकानेर वीकानेर सूरजपोळ वंधा ऊपरै हाथी वे हैं जैमल पत्तो है वड अेक मोटो वारणो छै वावन वुरज छै उगवणनू पोळसू पडकोटासू तीन पोळ है. पोळ अेक पश्चिम दिसा छै वारी अेक उत्तरनू छै छत्तीस गज कोट ऊचो वरतीथी हाथ पैंताळीम कोट नै गज १४ आडो छै गज नव कोट दोळी खाई ऊडी भीन आगणो मगळा छत्र गज छै कुवा तीन पुरस साठ पाणी मीठो पहला वारै हुता त्या दोळो कोट कराय माय लिया. तळाव घड़सीसर सहरथी कोस दोय पाणी सात मास रहै आठ कुवा सहरकी गिरद साठ पुरस. पाणी मीठो वीस नाडिया पाणी मास दोय तथा तीन रहै सूरसागर पाणी मास छव रहै ।

८४२. ळाहोर मम्मन वुरज राजा रार्यासघजी भुरटियारी करायोडी आछी है ।

८४३ वीजा हरराजोतनू रार्यासघ वीकानेरियै सिरोही मायसू काढियो जद आठ हजार पीरोजिया दीवी राव सुरताण पेसकसीरी राजा रार्यासघनू ।

८४४ रार्यासघ कल्याणमलोतरा वेटारी विगत– दळपत १, सूरसिघ २, भोपत ३, किसनसिंघ ४ ।

८४५. रार्यासघ किलाणमलोतरै वेटारी विगत – दळपत १, सूरसिंघ २, भोपत ३, किसनसिंघ ४ ।

दळपतसिंघ रायसिंघोत

८४६ सवत १६५९ रा सावण वद १ कुवर दळपत रार्यासघोत रार्यासघरा रजपूतां कनासू नागोर लियो ।

८४७. दळपत रार्यासघोत पकडाणो जद वीदासररो धणी दळपतरी चाड जंग कर मुवो ।

८४८. काजी गडगडी चढा'र अजमेररा डेरां दळपत रार्यासघोतनू मारियो जहांगीररी आग्यासू ।

८४९ राठ वैराडी साथ ले दळपतरी मदत आया हुता ज्यानू वीकानेररा उमरावा वमक दे काढ दिया ।

सूरसिंघ रायसिंघोत

८५०. सूरसिघ भुरटियारी चाकरीमें गाडण चोलो, मीसण चाचो, अेक सीवड जुमलै अै तीन जण चाकरीमें रह्या ।

करणसिंघ सूरसिंघोत

८५१ सवत १६९९ रा काती वद ११ रवीवार वीकानेररो राजा करण नागोररो राजा अमरसिघजी आरी फौजारै जग हुवो गाव सीळवै जद भोपत गोपाळदासोतरा बेटा तीन काम आया अखैराज १, करण २, साहबखान ३ ।

८५२ करण सूरसिघोतरा बेटारी विगत – अनोपसिघ चन्द्रावतारो भाणेज १, पदमसिघ हाडारो भाणेज २, केसरीसिंघ सेखावतारो भाणेज ३, अजबसिघ अहाडारो भाणेज ४ ।

९५३. करण सूरसिघोतरा बेटा – अनोपसिंघ चन्द्रावतारो भाणेज १, पदमसिघ २, मोहणसिंघ हाडारा भाणेज ३, केसरीसिंघ सेखावतारो भाणेज ४, अजबसिंघ अहाडारो भाणेज ५ ।

अनोपसिंघ करणसिंघोत

८५४. राजा अनोपसिघ करणसिघोतरा बेटारी विगत – सरूपसिघ कवरपदै देवलोक हुवो १, सुजाणसिघ २, अणदसिघ ३, सुदरसिघ ४ ।

सरूपसिंघ अनोपसिंघोत

८५५ वीकानेर अनोपसिघजीरी गादी देवळियारो भाणेज सरूपसिघजी बैठा छव महीना राज कियो. सीतळासू मुवा ।

सुजाणसिंघ अनोपसिंघोत

८५६ पछै अनोपसिघजीरी गादी सुजाणसिघजी बैठा सुजाणसिघजी अणदसिघजी दोनू कछवाहा नरवदरा भाणेज राजा गजसिघजीरा दोहिता ।

८५७ अणदसिघजी रिणी काका केहरसिघजीरै खोळै गया ।

जोरावरसिंघ सुजाणसिंघोत

८५८ जैमलसररो रावत खीवो भाटी, नापासर वेळासररा साखळा प्रोहित सीवड नागोर महाराज वखतसिघजीसू मिलिया आ कनै वीकानेर आयो आ कयो-वीकानेररा किळामें राजाधिराजरो अमळ कराय देसा, जोरावरसिघजी वीकानेररो राजा ज्यानू सुपनामे अै समाचार श्री करनीजी फुरमाया जोरावरसिघजी आठा साखळानू मारिया प्रोहित भाज गया खीची सुदरो खालो पड भागो वीकानेरसू चीधड़ारो लोक ताकीदसू किळामे आय गयो राजाधिराज देसणोक परासू पाछा पधारिया नागोरनू वीकानेररो गढ हाथ आयो नही ।

८५९ राजा जैसिंघजी जैपुरमे राजा जोरावरसिंघ वीकानेररो धणी जिणनू फुरमायो-थारै देसमे मुख है या कही लालसिघ दोडै है सेखावतारो लोकनै वीकानेररो लोक भादरा माथै गयो लालसिंघनू पकड जैपुर आणियो चीलरै टोळै चढायो ईसरीसिंघजी पाट वैठा जद महाराज अभैसिंघजीरा फुरमावणसू लालसिंघ छूटो।

८६० राजा जैसिंघजीसू वीकानेर-पति जोरावरसिंघ सुजाणसिघोत मिळियो जद भूकरकारो सिरदार कुसळसिंघ जिणसू मिळ जैसिंघजी फुरमायो–इणारी जिती वहादुरी सुणी ही उती · · · जद हरनार्थसिंघ नरूकै दीपसिंघ कुभाणी अरज किवी–रजपूतरै मूडै थोडी मूछ हुवै जिकोही काम पड़ियां माठी जणावै आरै मुहडै तो वाथ भरी मूछा है। अै जणावै जिणरो काइ इचरज है ?

८६१. वीकानेररो राजा जोरावरसिंघजी वणाड़रा डेरा महाराज जैसिंघजीसू मिळिया जद कुसळसिंघजी भूकरकारा धणी, सांडवारो धणी इद्रसिंघ, महाजनरा धणीरो भाई छोटो भीमसिंघ – अै सिरदार साथै हुता।

गजसिंघ अणंदसिंघोत

८६२ वीकानेर राजा गजसिंघ अणदसिंघोत खडेळारा भाणेज कवर राजसिंघ गजसिंघोतरी बेटी सिरदारकवर जैपुर राजा प्रथीसिंघजीनू परणायी महाराज गजसिंघजी ओ व्याव आछो कियो।

८६३ गजसिंघजीरी वेटी पनैकवर वूदीरा रावराजा विसनसिंघजीनू परणायी।

८६४ राजा गजसिंघजीरी वहन इदरकुवर रावराजा उमेदसिंघजीरा वेटा सिर-दारसिंघजीनू परणायी।

८६५ वीकानेर प्रिथीसिंघजी परणिया जद वरवाडारै राव माचेडीरै धणी प्रतापसिंघजी सेखावत डेरा लुटाया।

८६६ चित्रकवर, विचित्रकवर, सुखकवर–अै तीन वेटी वीकानेररा राजारी राणा राजसिंघजीरा कुवर सिरदारसिंघजी, सुरताणसिंघजी, जैसिंघजीनू परणाया।

८६७ महाराज गजसिंघजीरै भाई तारासिंघजी अणदसिंघजीरी जायगा रिणी दाव वैठा जद मुहतो वखतावरसिंघ फोज ले रिणी गयो काधळोत ळाळसिंघरै हाथ तारासिंघजी रह्या।

८६८. तारासिंघजी महाराज गजसिंघजीरा छोटा भाई रिणी दाव वैठा मुहतो वखतावरसिंघ महाराजरी विना मरजी रिणी माथै गयो तारासिंघजी फोज

सामा आया कह्यो–मोनू कुण मारसी ? जद काधळोत लालसिघ तारसिघनू मारिया ।

८६९. तारासिघजीरी बेटी गर्जासिघजी परणायी . उमेदसिंघ रावराजारा बेटा सरदारसिघजीनू परणायी ।

सूरतसिंघोत गजसिंघोत

८७०. नव दुर्गारा नव मदिर महाराज सूरतसिघजी कराया वीकानेर।

८७१ सवत १८८५रा चैत सुद ८ वीकानेर सूरतसिघजी देवलोक हुवा सवत १८८५ रा चैत सुद १४ उदैपुरमे राणो भीमसिघजी देवलोक हुवा ।

८७२ वीकानेररी हृदमें गाव परमारसररो धणी परमार माधोसिंघ तिणरा भाणेज तीन महाराज सूरतसिंघजीरा कुवर तीन – रतनसिंघ १, मोतीसिघ २, लिखमीसिंघ ३ ।

वीकानेररा राजा काम आया

८७३ लूणकरण वीकावत ढुसियै गाम काम आयो जैतसी लुणकरणोत काम आयो रायसिंघ कल्याणमलोत बुरहानपुर देवलोक हुवो. छतरी तापी उपर है वर्ष तिहत्तररी ऊमर हुई सूरसिंघ रायसिंघोत दिखणमें सहर आभीरी जठै देवलोक हुवो राजा करण सूरसिंघोत औरगाबाद देवलोक हुवो राजा अनोपसिंघ करनसिंघोत आदूणी देवलोक हुवो . दिखणमें आदूणी अनोपगावमे छतरी है पदमसिंघ करणसिंघोत कोकणमे काम आयो ।

फुटकर

८७४ वीकानेररो राजा मूनरो नाम ले सोझवळीरा नाम कहावै ।

८७५ वीकानेर लक्ष्मीनारायणजी धूहडजी अै सेव्य साळिग्राम है ।

८७६ वीकानेर राजाजीरै सेवामे करडमे करनीजीरी मूरती रहै करनमहलमे सेवा हुवै पाछो करड निजसेवामे थापित हुवै ।

८७७ वीकानेर पुस्तकसाळामें अेक देवी विराजै है ।

कांधलोत राठोड़

८७८ खाटी काधळजीके बाधी वीका ।

८७९ वीका वीकानेर दमोडी काधळा राठानू मार कांधळजी जमी दाबी . वीकानेरसू अस्सी कोस उतराधनू धमोरो गाव जठै काधळजी ठाकुराई बाधी ।

८८० काधळ रणमलोत हसार काम आयो ।

८८१ चूरूरा काधळ वणवीरोत है ।

वीदावत

८८२ जोधायणमे साख वहै –

अजीनजी स वरदायी, वसुधा जोधै भली वसायी।

८८३ अजीत मोहलनू मार रावजी जोधैजी जमी लिवी जिका वीदाजीनू दिवी गाँव १७० वीदाहदरा छै, वीदावत द्रोणपुरा कहावै द्रोणपुरो हमै सूनो छै।

८८४ राठोड वीदा जोधावतरा बेटारी विगत – उदैकरण १, हरीचद २, सहसारचद ३, भीमराज ४, भोजराज ५, वैरसल ६, डूगरसी ७।

८८५ वीदा जोधावतरै बेटारी विगत–उदैकरण १, हरचद २, भोजराज ३, भीवराज ४, ससारचद ५, वैरसल ६, डूगरसी ७।

८८६ वीदावत द्रोणपुरा कहावै।

जींजणियाळी

८८७ जीजणियाळीरो सिरदार भाटी उदैसिह रामसिघोत जिण वोगनी आईरा मिसणारो भाणेज रतनू राजो मारियो राजै सगा मायानू बोगनी आईमे मारियो इण खूनसू।

(जाट)

८८८ जाखाणपट्टीरा गाव वीदावतारै पटै जाखड जातरा जाट रय्यत।

८८९. सीहाकोटीरा गाव १४० महाजनका सिरदारकै सीहाक जाट रय्यत।

७९० गोदारा जाटारा गाव १४४ भडाणरा वीकानेररा राजारै खाळसारा।

किसनगढ

क्रिसनसिंघ उदैसिंघोत

८९१ किसनसिघ राजा उदैसिघोत जोधपुर हुता जद आरै पटै गाव दुधण्ड हुतो।

८९२ राठोड घडमी वीत मेवासी हुता ज्यानू मार किसनसिघ उदैसिघोत धरती ले किसनगढ वसायो।

८९३ किसनसिघजी किसनगढ वसायो जद गुदैळाव कनै गाव वसी १, जिर २, मीरारा मालक मेर किसनसिघजी इण जमीरा मालक हुवा जद उवा मेरासू मत्रब मेट मारवाडमे मुसळमानाँसू सवध करणा सरू किया जात माजवी उवारी है।

८९४. अजमेर राजा किसनसिघ उदैसिघोत काम आयो जद करनसिघ उदैसिघोतरो यो राठोड करमसेन उग्रसेनोत नागैपीठ सौ घाव लागा।

रातै पूछ कमो वड रावत,
कल्लै मुख धोळै केवाण ॥

८९५ सवत १६७१ जेठ सुद ८ राजा किसनसिंघजी काम आया ।

८९६. किसननू छोड नह जाय किरतो ।

८९७ किसनसिंघजी उदैसिंघोत ज्यानू सोनगिरै उदै रतनसिंघोत राजसिंघ कूपावतरै प्रधान मारिया वळूदरि धणी जगनसिंघजी वै सूरसिंघजीसू मालम किवी ।

८९८ राजा किसनसिंघोत उदैसिंघोतरै बेटा च्यार हुवा—सहसमल १, भारमल २, हरिसिंघ ३, जगमाल ४ भारमलजीरो वस रह्यो तीन निरवस गया ।

८९९ सहसमल १, भारमल २, हरिसिंघ ३, जगनाथ ४—अै च्यार बेटा राजा किसनसिंघरै, सहसमल सात वरस राज कियो ।

९०० हरिसिंघ, सहसमल, जगमाल—आरो वस रह्यो नही ।

रूपसिंघ भारमलोत

९०१ राठोड रूपसिंघ भारमल किसनसिंघोतरो सवत १७१४ धोळपुर राड हुई दारासिकोहरै नै औरगजेब मुरादवगसरै जठै काम आयो साहजहारी तरफ. वडो डील हो ।

९०२. रूपसिंघ भारमलोत पातसाहजी······· ··सू जागीर पावै जिणरी विगत—

५०,०००)	परगनो किसनगढ
८२,५००)	परगनै अराई
३५,०००)	सलेमावाद
२५,०००)	बाधल सीदरी.
१८,८४६॥)	परगनै अजमेररा गाव
६८,७५०)	परगनै हमनपुर खोहरी
५७,५००)	पटी इदाणारी परगनै नागोररी
१,८७,५००)	परगनो नैणवाय
५४,४०३॥)	परगनो जीडोतो पलळास
२०,१४७=)	परगनै पीपळाज.
२,००,०००)	परगनै माडळगढ.
२,००,०००)	परगनै अकबरावाद
९,९९,६४७=)	री कुल जागीर ।

९०३ सूरसिंवजी हाथा चीरो लियो वँदोवस्तमें हीज रह्या वीरसिंघजी ज्यांरै वेटा अमरसिंघजी कीरकेर्डो छोटा वेटा सूरतसिंघजी ...... वहादुरसिंघजी किसनगढ राज वाधियो भाटियांरी साखलारी, जोइयांरी, मोहेलारी, राठारी जमी वीकानेर हेठे दीवी ।

वहादुरसिंघ

९०४ किसनगढरा राजा वहादुरसिंघजी लवाणरा वीकावतारा भाणेज हुता ।

९०५. हिन्दुस्थानी मुसळमान और मरहठा मुजरो सलाम करता जद वहादुरसिंघजी माथै हाथ लगावता ।

९०६. वहादुरसिंघजीरै नागोरी धमाको खवामे रहतो लोहरी मूठ लोह रातै नाळरी तरवार गलडवै रहती अधोडीरो गलडवो रहतो. नव पलारो मीथो रहतो दस पलारो लवायचो रहतो जाडी पीडिया ताई काछ रहती ।

९०७ महाराज वखतसिंघजी जोधपुर ले सिणगारचौकी विराजिया जद धाधळ कनैसू चवर ले वहादुरसिंघजी चवर करण लागा देवीसिहजी चापै अरज कीवी—वहादुरसिंघजीरी निगाह कीजै जद राजाधिराज वहादुरसिंघजीरो हाथ पकड वहादुरसिंघजीनै वैठाया ।

९०८ गाजूदीनखा नवावरै सामा कोस महाराज वहादुरसिंघजी पधारिया किसनगढ दीवाणखानामे गादी माथै गाजूदीनखा वैठो, विछायत माथै वहादुरसिंघजी वैठा महाराज चवरी हाथमे लीवी जद गाजूदीनखा पाल दिया।

९०९ महाराज वहादुरसिंघजी फुरमावता— गाजूदीनखा सरीखो सहूरदार जावनी भासामे प्रवीण दीठो नही।

९१० सवत १८३८ वहादुरसिंघजी देवलोक हुवा जद विरदसिंघजी चाळीस वरसमे हुता, प्रतापसिंघजी २१ वरसरी वयमें हुता ।

९११. किसनगढ राजा वहादुरसिंघजीरै पाच वेटी—गुलावकवर नरवररा राजानूं परणायी १, अखैकुवर वूदी अजीतसिंघजीनू परणायी २, रूपकवरवाई जेसळमेर रावळ मूळराजजीनू परणायी ३, वाई अेक उदैपुर राणा अड़सीजीनू परणायी ४, वाई अेक देवळियै दिवाण सावतसिंघजीनूं परणायी ५।

विड़दसिंघ

९१२ किसनगढ विरदसिंघजीरै च्यार वेटी हुई—अेक उदैपुर राणा अडसीजीरै कुंवर हमीरसिंघनू परणायी १, अेक जेसळमेर रावळ मूळराजजीरा कुवर रायसिंघजीनू परणायी २, अेक वणहडै राजा हमीरसिंघजीनूं परणायी ३।

९१३. किसनगढ विरदसिंघ मद पीतो पण मास खातो नही ।

९१४ चमाळीसै विरदसिंघजी विरदावतामें देवलोक हुवो किसनगढरो राजा ।

सामंतसिंघ (नागरीदास)

९१५. महाराज राजसिंघजी ज्यारा वडा बेटा सामतसिंघजी नागरीदासजी कहाणा ।

९१६ फतैसिंघजी उण ठिकाणै फतैगढ बांधियो डूंगरपुरसू परणीज महीरै तट आय डेरो कियो उठै देवलोक हुवा हाडीजी सत कियो ।

किसनगढरा राजावांरा मोसाळ

९१७ किसनगढ मानसिंघजी चूंडावतारा भाणेज राजसिंघजी देहचियारा सीसोदियारा भाणेज बहादुरसिंघजी राणावतारा भाणेज विडदसिंघजी गोडारा भाणेज प्रतापसिंघजी सायपुरारा राणावतारा भाणेज. कल्याणसिंघजी नरवररा धणीरा भाणेज ।

ईडर

९१८ सवत १७८६ रायसिंघजीरो आणदसिंघजीरो अमल ईडरमे हुयो ।

९१९ सरकोटैरो धणी परमार उदैसिंघ वेरा जिणरा हाथरी बरछी महाराज अणदसिंघजीरै लागी खेत रहिया ।

९२० महाराज अणदसिंघजीरी बेटी उदैकुवरबाई रावराजा उमेदसिंघजीनै परणायी रायसिंघजीरी बेटी भानकुवरबाई रावराजारा छोटा भाई दीपसिंघ जिणनू परणायी ।

आंबझरा

९२१ आबझरा राठोडारी पीढिया लिखँते—राव गागो १, राव मालदे २, राम ३, कलो ४, राव जसवतसिंघ ५, राव जगन्नाथ ६, राव केसरीसिंघ ७ ।

९२२ जुजारसिंघ ११, राव सवाईसिंघ १२, राव अजीतसिंघ १३, हमैं आबझरै राज करैं हैं ।

९२३ केहरीसिंघ जगनाथोत आबझरारो धणी जैतगर लियो ।

रतलाम

९२४ रतलाम राजारी पीढिया लिखँते—उदैसिंघ १, दळपत २, महेसदास ३, रतन ४, छत्रसाल ५, केहरसिंघ ६, मानसिंघ ७, पदमसिंघ ८, परबतसिंघ ९ ।

९२५. राजा दळपतसाहरो भोपतसाह भोजपुर जिणरो नाम पातसाह जहागीर मुकट-मणि दियो पच सही हुवो मुकटमणिरो दुरजणसिंघ साहजादा सूजारै चाकर।

९२६ मेडतै राड हुई जद महेसदास दळपतोत आपरी छाती आगै जगरामजीनू राख दिखणिया माथै चलाया आ कही–आज काकाजी जगरामजीनू सारां सिरे करसू महेसदासरा घोडा वाग उपड़ी जद ओ निसर गजसिंघपुरै आयो।

९२७ महेसदास दळपतोतरै गढ गाढो करणरी, गढमे लड मरणरी सदा मनमें रहती।

दूहो–मधकरका जूझारमल, राजड जिसा निगेम।
अै पाचू दळ साहरा, पांचू पाडव जेम॥

९२८ दळपत उदैसिघोतरै अै पाच बेटा–महेसदास १, कनीराम २, जुझारसिंघ ३, गजसिंघ ४, जसवतसिंघ ५।

९२९. चहुवाण वळू सामतसी मेहकरणोतरो महेसदास दळपतोतरो चाकर सवत १६८५ महेसदास मोहनखारै वसियो जद वळू अदो मोहवतखारो चाकर रहियो. दिखण मेल्यो हाथ ... पछै महोवतखां मुवो तद वळू महेसदास दोनू पातसाहरै चाकर रहिया महेसदासनू जाळोर, वळूनू साचोर दिराणी।

९३०. रतन महेसदासोतरा बेटा दस – रामसिघ१, रायसिंघ२, नाहरसिंघ३, करणसिंघ ४, सत्रसाळ५, उखैसिंघ६, प्रिथीसिंघ७, केहरसिंघ८, सगतसिंघ९, जैतसिंघ १०।

९३१ रतलामरो राजा प्रिथीसिंघजी ज्यारी वेटी सुखकवर राणा राजसिंघनू परणायी।

९३२ भणायरा धणियारी पीढी – राव मालदे १, चद्रसेण २, उग्रसेण ३, कर्मसेण ४, स्यामसिंघ ५, उदैभाण ६, केसरीसिंघ ७, तखतसिंघ ८, कवर वखतसिंघ ९, सालमसिंघ १०, दलेलसिंघ ११, उदैभाण १२, सूरजभाण १३।

भिणाय, देवळिया, वघेरा

९३३ देवळियारी जोधारी पीढी लिखते – राव माल १, चंद्रसेण २, उग्रसेण ३, कर्मसेण ४, स्यामसिंघ ५, उदैभाण ६, नाहरसिंघ ७, रघुनाथसिंघ ८, मोहवतसिंघ ९, दुरजणसिंघ १०, सिवदानसिंघ ११, अजीतसिंघ १२, अखैराज १३, कवर सादूळसिंघ १४।

९३४. वघेरारा सिरदारारी पीढी–उदैभाण १, नाहरसिंघ २, देवकरण ३, कंवर मालमसिंघ ४, उदैसिंघ ५, कंवर जोरावरसिंघ ६, कुमेरसिंघ ७, रणजीतसिंघ ८।

९३५ मोहब्बतखान कर्मसेण उग्रसेणोतनू सोजत दीवी छव महीना अमल कर्मसेणरो सोजतमे रह्यो ।

९३६ विना वैर राठोड धर्मसेण कर्मसेण उग्रसेणोतरो, बूंदीरात्र सत्रसालरो चाकर, जिणनू हाडै विहारीदास मारियो ।

९३७ रामसिघ कर्मसेणोत वडो दातार, वडो भुजाइयो हुतो राणा जगतसिघरै वास घणा वरस रह्यो गाव जोजावर घणा गावासू पटै हुवो देवळियैरो धणी रावत जसवतसिघनू मारियो राणाजीरा कहणासू ।

९३८ राठोड रामसिघ कर्मसेण उग्रसेणोतरो वडो दातार वडी भूजाइया हुती राणा जगतसिघरो चाकर गाव जोजावर पटै हुतो ।

९३९ इण जगतसिघ राणारा हुकमसू देवळियारो धणी रावत जसवत मारियो पछै पातसाहजीरै चाकर रह्यो पछै वरवाडो पायो पछै सवत १७१३ काती माहे जगनाथ ईडरियो मूवो जद पटै ईडर पायी सवत १७१४ रा जेठमे धोळपुर काम आयो ।

९४० रामसिह कर्मसेणोत दोय हजारी जात दोय हजार सवार ।

९४१ राठोड सेरसिघ रामसिघ करमसेणोतरो जिण सवत १७१६ ईडर पायो सवत १७१९ ईडरियो गोपीनाथ आयो भीलानू ले नै ईडर घेरो दियो बुरै हवाल सेरसिह धर्मद्वार नीसरियो ।

९४२ सामसिघ करमसेणोतरै पटै रेण भिणाय पातसाह अेक वर सालेर मालेर पटै दियो थो ।

९४३ किसनसिघरै विसनदास, इद्रसिघ अै दोनू बेटा हुवा इद्रसिघ दारासाहरै काम आयो ।

पीसांगण

९४४ उदैकरणरो सगतो, सगतारो मनोहरदास स० १६७२ महाराज सूरजसिघजी मनोहरदासनू पटै पीसागण दीवी ।

९४५ पछै वीकानेरिया राजा सूरसिघ मनोहरदासनू मरायो इण ठाय जोधपुर वीकानेर धण वध वधियो हो ।

९४६ पीसागण सुजाणसिघ केहरसिघोतरो कुवर किसनसिघ वीजैपुररै धणी गौड गरीबदास मारियो वधेरै पछै सुजाणसिघ गरीबदासनू मार वैर लियो किसनसिघरो सुसरो गरीबदास गौड ।

९४७ तीनू गावासू पीसागण सुजाणसिंघरै पिता केसरीसिंघ अपणायी. केकड़ीरी चमाळीसी सुजाणसिंघ अपणायी ।

९४८ सुजाणसिंघरो पोतो राजसिंघ जिण सपोनरारा ठिकाणा जूनिया महरु वगैरा केकडीरी चमाळीसीमे सुजाणसिंघोत जोधा ज्यारा मुहडा आगै आद खांपरा राठोड है—पुनावत, वाळावत, पातावत सतावत ।

९४९ जोधो राजसिंघ किसनसिंघ सुजाणसिंघोत जिणनू पातसाह-पुर माडळरो परगणो दियो जगावतारो ठिकाणो पीथावसपुर माडळरो है जगावता जमने दिवी राजसिंघ पीथावस आय झगडो करता ललुहाणी कोसीथळरा धणिया सहित पीथावसरा धणीनू मारियो ।

९५० किसनसिंघ सुजाणसिंघोतरा जूनिया जुझारसिंघ सुजाणसिंघोतरा पीसागण अरै करणसिंघ सुजाणसिंघोतरा वडी खिहरु ।

९५१ राजा उदैसिंघ १, माधोसिंघ २, केहरसिंघ ३, सुजाणसिंघ ४, किसनसिंघ ५, राजसिंघ ६, सिवसिंघ ७, वखतसिंघ ८, रूपसिंघ ९, हरनाथसिंघ १०, वैरीसाल ११— अै जूनियारा सिरदारारी पीढिया ।

मसूदो

९५२ मसूदै परमाल सादूळरै वेटै कुवर भोपत मोटा राजा उदैसिंघजीरो जिणरो ठावो आदमो हुल माडो वीकाउत जिणनू बोली-चाली में वाद वध मारियो ।

प्रकीर्ण

९५३ आली १, मोहण २, उदैपुर ३— अै तीन ठिकाणा गुजरातमे राठोड़ारा पावागढ कनै है ।



[३] गहलोतांरी वातां

९५४ गुजरातमे तिलगापुर पाटण अठै राजा ग्रहादित्य हुवौ तिणसू गहलोत कहाणा ।

९५५ गहलोतारै वायण चुडाय दीप देवी तिलगापुर पाटणसू उठिया ।

९५६ चौईस साख गहलोतारी लिखते– गहलोत १, मागळिया २, डाहलिया ३, टीबागा ४, चद्रावत ५, सीसोदिया ६, आसावत ७, मोटसीरा ८, मोहल ९, वला १०, आहडा ११, केलवा १२, गोदारा १३, तिवडकिया १४, बुटिया १५, पीपाडा १६, मगरोपा १७, भावला १८, धीरणिया १९, गोतम २०, हुल २१, मेर २२, बूटा २३, गुहिल २४ ।

९५७ मोरी वस इद्रसू प्रगट हुवौ चित्राग मोरी चित्तोड किलो करायो सीसोदियै रावळ बापै मोरिया कनैसू चित्तोड लियो जद मोरी भाज सोरठ देसनू गया ।

९५८ राणारी वसावळी– राणो महप १, राणो महिपाळ २, राणो गुरवी ३, राणो रूपदेव ४, राणो हरसूर ५, राणो नरसूर ६, राणो नगपाळ ७, राणो तेजपाळ ८, राणो भुवनसिघ ९, राणो भीमसिघ १०, राणो अजैसी ११, राणो लखमसी १२, राणो अरसी १३, राणो हमीर १४, राणो खेतो १५, राणो लाखो १६, राणो मोकल १७, राणो कुभो १८, राणो रायमल १९, राणो सागो २०, राणो उदैसिघ २१, राणो प्रताप २२, राणो अमरसिघ २३, राणो करण २४, राणो जगतसिघ २५, राणो राजसिघ २६, राणो जैसिंघ २७, राणो अमरसिंघ २८, राणो सग्रामसिघ २९, राणो जगतसिघ ३०, राणो अरसी ३१, राणो भीमसिघ ३२ ।

९५९ गुहादित्य १, विजयादित्य २, केशवादित्य ३, भोगादित्य ४, आसाभरादित्य ५, श्रीदेवादित्य ६, महादेवादित्य ७, गुरुदेवादित्य ८, रावळ बापो ९, रावळ काळभोज १०, रावळ खुमाण ११, रावळ श्रीगोविंद २२, रावळ आळू १३, रावळ सिंघ १४, रावळ सगतकुमार १५, रावळ शालिवाहण १६, रावळ नरवाहण १७, रावळ अबप्रसाद १८, रावळ श्रीकीरत १९, रावळ करणादित्य २०, रावळ भादो २१, रावळ गोतम २२, रावळ प्रियहस २३, रावळ जोगराज २४, रावळ भैराडू २५, रावळ वरसिघ २६, रावळ तेजसी २७, रावळ समरसी २८, रावळ रतनसी २९, पछै राणो हुवो थो ।

९६० चापो चाहडदेरो करण रावळरो देव राणो १, नरू राणो २, राहप राणो ३, हरसूर राणो ४, जसकरण राणो ५, नागपाळ राणो ६, पुण्यपाळ राणो ७,

पीथड राणो ८, भुवणसी राणो ९, भीमसी राणो १०, अजैसी राणो ११, लखमसी राणो १२।

९६१ स० ४२० रावळ वापो हुवो स० ७३१ राजा भोज हुवो स० १२१२ रा सावण वद १२ अदीतवार रावळ जैसै जैसळमेर वसायो सं० १४८६ राणा- पुर प्रसाद मडायो कोट वावडी कराया स० १४११ रा आसोज वद १३ राव चूडै गाव चामड वा चामडरो देहरो करायो।

९६२ हारीत रिख वापा रावळनै वर दियो. इकलगजीरो लिंग प्रगट हुवो पैंतीस गज वापारो सरीर वधियो।

९६३ भोगादित्यरो वापो रावळ वापारो खुमाण रावळ।

९६४ आणददे वापा रावळरो वेटो जिणरा मागळिया।

९६५ चित्तोडरो धणी रतनसेन प्रथम पश्चिमरा समुद्रमे जहाजा वैस दक्षिणरा समुद्रमे सिंघळदीप जठै कष्टसू पुहतो महाकष्टसू पदमावती लायो।

९६६ सवत १३५५ राणा रतनसेनरा उमराव गोरो वादळ अलाउद्दीनसू जग कर चित्तोड काम आया।

राणा साखा

९६७ चित्तोड भुवणसी राणो कहाणो पैला चित्तोड रावळ कहीजता. भुवणसीरो राणो भीमसी।

९६८ चित्तोड सीसोदियो कहायो जठैसू चित्तोड़-पति राणा कहीजै भुवणसीरो भीवसी, भीवसीरो तेजसी, तेजसीरो भड लखमणसी।

हमीर अड़सीहोत

९६९ चित्तोड राणो हमीर चदाणा भोज वणवीरोतरो दोहितो चंदरावरा चंद्रावत कहावै।

९७० सवा पहोर दिन चढतो जितै राणा हमीररा माथारा जूडा माहसू गगाजळ नीसरतो।

९७१ हमीररो भाई चद्रराव सिरोहीरा रावत वीजड पातावतरो दोहितो. चंदरावरा चद्रावत कहावै।

९७२ राणा अडसीरो दोहितो चाद राव अडसी हेम सिरोही रावत वीजड पातावत जिणरो दोहितो चद्रराव राव चद्रावत।

खेतो हमीरोत

९७३. राणो खेतो हमीरोत जाळोर माल्दे मूछाळा सावतसीहोतरो दोहितो।

९७४ राणो खेतो जाळोररा धणी चहुवाण मालदे मूछाळो सावतसीहोत जिणरो दोहितो ।

९७५. राणा खेतारै करमा खातण खवास. जिणरै बेटा तीन हुता – चाचो १, मेरो २, अखैराज ३ ।

९७६. राणा खेतारै मेदनीमल खातीरी बेटी करमा खातण खवास हुती जिणरा बेटा चाचो मेरो ।

लाखो खेतावत

९७७. राणो लाखो खेतावत खीची जायळरा धणी धारु आनलोतरो दोहितो राणो लाखो जायळरा धणी खीची धारु आंदलोतरो दोहितो ।

मोकळ लाखावत

९७८ राणो मोकळ लाखावत मंडोवर चूडा वीरमदेवोतरो दोहितो. राणो मोकळ राठोड़ मडोवररो धणी चूडो वीरमदेओत जिणरो दोहितो ।

९७९ नागोरी खानरी सिरकारमें देसमें जिता ही वछेरा हुता उवै राणा मोकळरी नजर हुता, चित्तोड़रै तवेलै बंधीजता नागोरी खान राणा मोकळरी तावैदारी करतो ।

९८० मोकळरो भाई चूडो सिरोही सलखा लूंभावतरो दोहितो ।

९८१. चूडो लाखावत सिरोही रावत सलखो लूभावत जिणरो दोहितो ।

कुंभो मोकळोत

९८२ राणो कुभो मोकळोत रुण सांखळा राणा राजा घड़सीहोतरो दोहितो राणो कुभो रूणरो धणी साखळो राणो राजो घडसीहोत जिणरो दोहितो ।

९८३ पेडूरा डूगर माथै राव रिडमलजी चाचा मेरानू मार कुभानू चित्तोड माथै राणारो टीको दियो ।

९८४ राणै कुभै समसखा ददानी नागोररो धणी जिणरी मदत किवी पनरै लाख रुपया लेनै नागोरसू हणुमानजीरी मूरत उठाय कुभळमेर पधरायी ।

९८५ जोगी नरहर रावळ जिणरी दवासूं राणो कुभो मुवो ।

९८६ खीमो मोकळोत वागडियो चहुवाण पाता वीसलोतरो दोहितो ।

९८७ महाराज खीमो मोकळोत वागडियो चहुवाण पातो वीसलोत जिणरो दोहितो ।

रायमल कुंभावत

९८८ राणो रायमल कुंभावत अजमेर गौड मोटमराव नरसिंहोतरो दोहितो।

९८९. राणो रायमल अजमेररो धणी गौड मोटमराव नरसीहोत जिणरो दोहितो।

९९० ऊदो कुंभारो वूदीरो हाडो राव वैरो वरसिंहोत जिणरो दोहितो।

९९१. ऊदो कुंभारो वूदीरा राव वैरा नरसिंहोतरो दोहितो।

९९२ राणा रायमलरै वेटा—प्रथीराज १, सांगो २, जैमळ ३, किसनो ४।

९९३ राणो सांगो, प्रथीराज, जैमल्ल तीनू हळवदरा झाळा जोधा वाघीतरा दोहिता।

९९४. राणा रायमलरो वेटो प्रथीराज उडणो कहाणो इणरी खवासरै वेटै वणवीर चित्तोड राज कियो. उण कनैसू चित्तोड़ उदैसिंघजी लियो।

९९५ जैमल रायमलोतनू मार सांगा रायमलोतनूं उवार वीदो जैतमालोत सेवंत्री काम आयो।

९९६ प्रथीराज, जैमळ, सांगो अै तीनू राणा रायमलरा कंवर नै साळो काम आया. पछै काठलैरो प्रगनो दवायो कार्क सूरजमल खेमावत उगमसी भाटी राणी रूपादेरो गुर।

सांगो रायमलोत

९९७. राणो सागो हळवदरो धणी झालो राणो जोधो वाघीत जिणरो दोहितो।

९९८. स० १५६६ रा जेठ सुद ५ वुध राणो सांगो पाट वैठो।

९९९. सलूवररो धणी रतनसी, सादड़ीरो राणो अजोजी, डूगरपुररो रावळ उदैकरणजी, मेड़तिया रतनसीजी, रायमलजी दूदावत इत्यादिक सीकरी काम आया।

१०००. राणो सागो दस करोड़ी वाजतो लाख घोडो चाकरीमे रहतो।

१००१ स० १५३८ रा वैसाख वद ८ जनम राणा सांगारो. सं० १५८८ भाद्रवा सुद ११ जनम राणा उदैसिंघरो. सं० १६२८ राम कह्यो।

१००२ राणा सांगानू कुवर वाघा सूजावतरी वेटी तीन परणायी. धनवाईरो वेटो रतनसिंघ सं० १५३८ रा वैसाख वद ८ रो जनम सागारो सांगारी गादी वैठो।

१००३. वाघ सूजावतरी वेटी धनवाई चित्तोड़ राणा सांगानू परणायी. वाईरै वेटो हुवो रतनसी सं० १५३८ रा वैसाख वद ८ जनम सांगारो।

१००४. हाडो राव सुरजण नरवदोत बूदीरो धणी जिणरी बेटी सांगो राणो परणियो. हाडांरा भाणेज सांगारै बेटा तीन– विक्रमादित्य १, उदैसिंघ २, भोज ३ ।

१००५. राणो उदैसिंघ, विक्रमादित्य, राणो भोज तीनू भाई बूदीरा नरवद भांडावतरा दोहिता ।

विक्रमाजीत सांगावत

१००६. सं० १५७७ जेठ सुद १२ मांडवगढरै पातसाह चित्तोड बादरसाहजी विक्रमपाळ राणा कनांसू लीवी जद राठोड़ उदैदास मूजावत सीसोदियो वाघो सूरजमलोत काम आया ।

१००७ सं० १५८९ राणा विक्रमादित्य कनांसू चित्तोड लियो पातसाह बहादुरसाह मांडवरै धणी ।

उदैसिंघ सांगावत

१००८. राणो उदैसिंघ बूदीरो धणी राव नरवद भाडावत जिणरो दोहितो ।

१००९. सं० १६२४ पातसाह अकबर चित्तोड लियो जद राठोड जैमल वीरमदेवोत नै पत्तो सामल काम आया ।

१०१०. चित्तोड़ माथै पदमणीरो तळाव, जैमल पत्तैरो तळाव है ।

१०११. चित्तोड़ माथै कूकडेसररो कुड अति ऊडो है. जैमल पत्तै साको कियो जद तोपा सिलहखाना खजाना वगैरै इणमें नाखी ।

१०१२ अकबर चित्तोड़ लागो जद चित्तोडरा किलानू सुरग लगाडी सुरग पाछी फूटी अकबररो घणो लोक उणसू जान हुवो ।

१०१३. चित्तोड ऊपर अकबररै झिलमरै गोळारी फेट लागी ।

१०१४. हजार मैखी दसतो हाथमें पहरियां जैमळजी रातरा तीनू पहरारी चोकीमें चित्तोड़में आप फिरता. सग्राम नामा बदूक अकबररा हाथरी छूटी. गोळी जैमलरै लागी ।

१०१५ अकबर चित्तोड भेळियो जद पहलां बावन हाथी मधकर दळसिंगार वगेरै गढरा दरवाजानू चलाया. पहाडखा वगेरै महावत हाथियां चढिया हाथिया माथै जगी हौदा. जंगी हौदामें तमचा, कडाबीणा, तीर, कबाण, जाळिया सिपाह बैठा हाथियासू झगडचा राठोड ईसरदास वीरमलोत कीनो निराट आछो झगड़ो कियो ।

१०१६ चित्तोड मिळियो जद साढै तीन सै लुगायारो जवर हुवो ।

१०१७. चित्तोड़ भिळियो जद्द चाळीस हजार सिपाह अकबर पातसाहरो काम आयो, अठारै हजार लोक राणाजीरो काम आयो जिणमे आठ हजार सिरकाररा तावेदार नै दस हजार रअय्यत।

१०१८ दोय हजार लोक गढमाहलो गढ भिळता चोजकर निसर गयो. अेक मेवाड़नू मुसळमानरै भेख दूजै मेवाड़ै पकड लियो. इण तरह दूजासू निसरिया।

१०१९. राणे उदैसिंघरै कंवरारा मामलांरी विगत – प्रताप माली सोनगरा अखैराज रणधीरोतरो दोहितो।

१०२० उदैसिंघरा बेटारी विगत– परताप सोनगरीरो. पाच बेटा भटियाणीरा– जगमाळ १, साह २, सगर ३, अगर ४, पंचायण ५. बीजा कंवर– सगतसिंह १, रामजी २, कान्ह ३, सादूळ ४, रायसिंह ५, कल्याण ६, रुद्रसिंह ७, नगो ८, जैतसिंघ ९।

१०२१. जगमाल १, सगर २, अगर ३, साहजी ४, पचायण ५, राणा उदैसिंघरा बेटा जैसळमेररा रावळ लूणकरण जिणरा दोहिता।

१०२२ जगमाल १, सगर २, अगर ३, साहजी ४, पचायण ५, अै पाचू जैसळमेर रावळ लूणकरण जैतसिंहोतरा दोहिता।

१०२३. राणो प्रताप १, सगतो २, सगर ३, अगर ४, जगमाल ५, साहजी ६, पचायण ७, रुद्रसेण ८, नगो ९, कानो १०, जैतसिंह ११, सुरताण १२, नेतसी १३, वीरमदे १४ इत्यादीक राणा उदैसिंघरै बेटा।

प्रताप उदैसिंघोत

१०२४ राणो प्रताप सोनगरा अखैराज रणधीरोतरो दोहितो।

१०२५. राणो प्रताप स० १५९६ रा जेठ सुद ३ जनम. राणा प्रतापरै बेटा– अमरसिंह १, सेखो २, सहसो ३, पूरो ४, मानसिंघ ५, कल्याण ६।

१०२६. संवत १६६२ सावण वद ७ कछवाहो मान भगवंतदासोत अकबररी फौज ले आयो हळदीघाटै राणै प्रताप वेढ कीवी पातसाहरा उमराव तीन काम आया. राजा रामसाह ग्वालेररो धणी १, रामसाहरो बेटो साळवाहण २, राजा वीठळदास ३।

१०२७ हळदीघाटी राणा प्रतापरा चाकर काम आया ज्यांरी विगत– कान्ह १, कलो २. दोय भाई प्रतापरा काम आया।

१०२८. मेड़तियो रामदास जैमलोत जणा ९ सू काम आयो।

१०२९. सोनगरो मानसिह अखैराजोत जणा ११ सू काम आयो।

१०३० राठोड साईंदास पचायणोत जैतमल जणा १३ सू काम आयो. सीधल वागो १, नै जैमल २, चहुवाण दुरगो ३, वागडियो ४, मेघो खावडियो ५।

१०३१ सं० १६३२ पातसाह अकबररै उमराव सहबाजखा गढ कुभळमेर लियो जद सीधल सूजो सीहावत, सीधल कूपो भाडावत, सोनगरो भाण अखैराजोत, मुहतो नरवद गढरो सिलैदार, मागळियो जैतो जैमळ काको नै भतीजो इत्यादीक काम आया।

१०३२. सं० १६१३ पातसाह अकबररी फौज कुभळमेर लियो. सीधल कूपो भांडावत, सीधल सूजो सीहावत, सोनगिरो भाण अखैराजोत काम आया।

उदैसिंघरा दूजा बेटा

१०३३. सगतो तोडो सोळकी प्रथीराज सुन्द्रसेनोतरो दोहितो।

१०३४. भाण सगतावत मोटा राजारी बेटी राजकवरबाई परणियो भाणजीरी बेटी महाराज गजसिंघजी परणिया जसवतसिंघजीरै सगो मामो सामसिंह भाणावत।

१०३५ गोकुळदासरा बेटारी विगत– सुंदरदास १, जुझारसिंघ २, दूदो ३, अजबसिंघ ४, फतैसिंघ ५, रुघनाथ ६, जगनाथ ७, वीरमदे ८, कल्याणसिंघ ९, हाथीसिंघ १०, हिम्मतसिंघ ११।

१०३६. सूदरदास जुझारसिंघ दोनू पातसाहरा चाकर।

१०३७ रुघनाथसिंघ काम आयो रामसिंघ भीम अमरसिंघोतरै आगै।

१०३८. केसोदास भाणावत मोटा राजारो दोहितो. भाटियाणी सजना नानी हुती. अै केसोदासजी घणा वरस नानी कनै रह्या गाव सेरेचो मोटा राजारो दियो पटै हुतो।

१०३९ अचळदास सकतावत रावत कहावै, वेगमरो धणी हुतो इणनू राणै अमरसिंघ कह्यो–तू ही मोनू दुखदायक सगर ज्यू ही है।

१०४० अचळदासरा बेटारी विगत–नरहरदास १, नारायण २, राणो सगर नारायणदासनू रावताई दीवी।

१०४१ वळू सगतावत ऊटाळै काम आयो, राणा अमरसिंघजीरो उमराव।

१०४२ भगवानदास सगतावत राणाजी वूढ पटै दीवी।

१०४३. जोधो सगतावत।

१०४४ माडण सगतावत मऊ खीचियारो चाकर ।

१०४५. सवत १६१६ रा भाद्रवा वद ३ सीसोदिया सगर उदैसिंघोतरो जनम. पातसाह जहांगीर मया कर अजमेर नागोर चित्तोड दे राणाई दीवी. वाराहजीरो मंदिर पुष्कर इण करायो ।

१०४६ सगर उदैसिंघोतनूं पातसाह रावताई दे पूरबमें जागीर दीवी, राणै अमरसिंघजी चाकरी कबूल कीवी जद ।

१०४७ सगररा बेटारी विगत– इद्रसिंघ १, मानसिंघ २, आसकरण ३, मोहणसिंघ ४, हरीराम ५ इंद्रसिंघ सेखावतारो भाणेज कुंवरपदै मुवो. मानसिंघ सेखावतांरो भाणेज ।

१०४८ सं० १६३८ माह सुद १४ रो जनम सगरजीरै पाट रावताई पायी, पूरबमें जागीर पायी ।

१०४९. महोकम मानसिंघोत मानसिंघरै पाट कावुल उरै पेसोर जठै वारयो छै।

१०५० मोहणसिंह कवरपदै देवलोक हुवो इणरो बेटो मदनसिंह जिणनूं महोवतखां कह्यो – मैं तोकूं जागीर दूं पिण तेरा काका मानसिंघ वरजै है आ वात सुण मानसिंघ पेट कटारी खाय मुवो ।

१०५१ खीचीवाड़ै परै उमरी भोदारो अै ठिकाणा सीसोदिया सगर उदैसिंघोतरा छोरूआरा है ।

१०५२ अगर राणो उदैसिंघजीरो, जिणरो जसवत पहला राणा सगररै चाकर हुतो पछै रावळै चाकर रह्यो स० १६७२ सोजतरो सिणलो गांव पटै हुतो. सं० १६७३ वुरहानपुर छाडियो महोवतखारै वसियो स० १६७२ रावळ वेसियो सोजतरो धवळहरो गाव ११ सू दियो पछै महोवतखा कहायो इण कुमत राखी जद सं १६८० सीख दीवी ।

१०५३ साहजी राणा उदैसिंघरो, जिणरै दुरजणसिंघ कछवाहा राजा वडा जैसिंघजीरो मामो ।

१०५४ साहजीरा वेटारी विगत–दुरजणसिंघ १, माधोसिंघ २, मथुरादास ३ ।

१०५५ नगो वीकानेरिया कल्याणमल जैतसिंहोतरो दोहितो ।

१०५६ कानो राणा उदैसिंघरो परमार करमचदरो भाणेज ।

१०५७ कान्ह मेदडेचा चहुवाण नैंवण अमरावतरो दोहितो ।

१०५८ रुद्रसिंघ १, जैतसिंघ २, हळवद झाला सजा राजधरोतरो दोहितो ।

१०५९ कानो राणा उदैसिंघरो परमार करमचंदरो भाणेज ।

१०६० रुद्रसिंघ राणा उदैसिंघरो जिणनू सुरजण वालीसै मारियो जद नाणवे डावा ले सास छूटो ।

१०६१ सुरताण १, सादूळ २, चद मेहराजोत खीचीरा दोहिता ।

राणा प्रताप

१०६२. राणा प्रतापरा कंवरारा मामला विगत – अमरसिंघ १ पूरबिया परमार मयारखखा असोकमलोतरो दोहितो ।

अमरसिंघ प्रतापसिंघोत

१०६३. राणो अमरसिंघ पूरवरो परमार मयारखखा असोकमलोत तिणरो दोहितो ।

१०६४ राणो अमरसिंघ पवारारो भाणेज पातसाह जहागीर अजमेर आयो जद साहजादा खुरमनू अजमेर मेलियो साहजादै गोगूदै तखत करायो राणो अमरसिंघ गोगूदै खुरमसू मिलियो ।

१०६५. राणो अमरसिंघ सं० १६१६ रा चैत सुद ७ जनम स० १६६६ उदैपुर पाट बैठो ।

१०६६ सं० १६६६ रा फागण सुद ११ वेढ हुई नवाब अबदुल्लाखारै नै राणा अमरसिंघरै जद इणारा इता उमराव काम आया – मेडतियो मुकददास जैमलोत १, जैतारणियो हरिदास वळू तेजसिंघोतरो २, सीसोदियो दूदो सांगावत ३, झालो भोपत ४ ।

१०६७ स० १६७१ राणा अमरसिंघजी गोगूदे राजा सूरसिंघजी नबाब अफजलखारी वाहसू खुरमसू मिलिया चाकरी कबूल कीवी जद सगरनू रावताई दे पूरबमे जागीर पातसाहजी दीवी ।

१०६८. स० १६७४ रा फागुण सुद २ राणौ अमरसिंघ साहजादासू मिलियो जद साहजादारा दरबारमें मिलिया नै तीन बैठा–राणाजी, राजा सूरजसिघजी, नबाब अफजलखाजी ।

१०६९. राणारा कवर करणनू ले खुरम अजमेर आयो सवत १६७१ रा फागणमे करण जहागीररै पगा लागो ।

१०७०. सं० १६१६ रा चैत सुद ७ अमरसिंघरो जनम सवत १६७६ राम कह्यो ।

राणा प्रतापरा दूजा कंवरांरो

१०७१. सीहो राणा प्रतापरो भोपतसीहोत राणा जगतसिंघरो मेलियो पातसाहजीरी

हजूर रहतो वडो दातार वडो ठाळवरो सिरदार हुवो. उणरै वेटा केसरीसिंघ।

१०७२ कचरो वेदळै पुरविया चहुवाण परवतसिंघ रूपसिंघोतरो दोहितो।

१०७३ सहसो गोपाळदास तोडै सोळकी रामचद प्रथीराजोतरा दोहिता।

१०७४ पूरो होथी जोधपुर भोजराज राव माल मालदेवोतरा दोहिता।

१०७५ पूरणमल राणा प्रतापरो जिणनू हजूरसू सवत १६६४ मेडतारो गाव डोभड़े पाचांसू दीवी स० १६६६ गाव ढाही मेडतारो गांवा पाचासू हजूर वगसियो।

१०७६ कल्याणदास मालपुरै परमार पत्रायण करमचदोतरो दोहितो।

राणा अमरसिंघरा कंवर

१०७७ राणो अमरसिंघ स० १६१६ रा चैत सुद ७ जनम कंवरांरी विगत— करण १, भीम २, सूरजमल ३, वाघ ४, उरजण अपतियो ५।

१०७८ राणा अमरसिंघरा कंवरारा माळरी विगत— करण तुवर साळवाहण रामसिंहोतरो दोहितो।

राणो करण तूवर साळवाहण रामसिंघोत जिणरो दोहितो।

भीम वीरपुरा अखैराज कान्हावतरो दोहितो वाघ १, सूरजमल २, हळवदरा झाला मानसिंघ जैतावतरा दोहिता।

सीसोदियो वाघ राणा अमरसिंघरो सवत १६६५ आगरै रावळासू सर गांव दूघोड गाव २०सू पटै देता हा पिण इण वात न मानी. वाघरो सवळसिंघ।

सूरजमल सुजाणसिंघ राणा अमरसिंघरो वेटो डीलायती पटै फूलियो।

राणा अमरसिंघरो सूरजमल. सूरजमलरो सुजाणसिंघ वडो डील, पटै फूलियो।

उरजण देवडा भानीदास हरराजोतरो दोहितो सीसोदियो अरजणजी राणा करणरी तरफसू पातसाहरी चाकरी रहतो राणाजीरो साथ लिया।

करण अमरसिंघोत

१०७९. सवत १६४० रा सावण सुद १२ जनम राणा करणरो सवत १६७६ उदैपुर पाट वैठो सवत १६८४ फागुणमें देवलोक हुवो।

राणा करणरा कंवर

१०८०. राणो करण सवत १६४० रा सावण सुद १२ जनम वेटारी विगत— जगतसिंघ १, गरीवदास २, छत्रसिंघ ३।

१०८१ राणा करणरा कवरारी विगत–जगतसिघ महेचा जसवत कलावतरो दोहितो ।

१०८२. महेची जमना कला मेघराजोतरी राणो करण परणियो जिणरो बेटो राणो जगतसिघ ।

१०८३ राणो जगतसिंघ महेचा जसवंत कलावतरो दोहितो ।

जगतसिंघ करणसिंघोत

१०८४ स० १६९० मे राणो जगनसिंघजी देवळियारो धणी रावत जसवतसिंघ जिणनू चूक कराय मरायो राठोड रामसिघ करमसिंघोत मुडासै राणारो भाणेज उमराव दूजा ही राणाजीरै साथै हुता रावत जसवतसिंघ राठोड सुजाणसिंघ भगवानदासोतरै हाथ रह्यो ।

१०८५ राणो जगतसिघ करणसिघोत सं० १६६४ रा भाद्रवा सुद १२ रो जनम सवत १७०९ काती वदी ४ वार रवि घडी ५ पाछलै दिन थका राम कह्यो ।

१०८६ राणिया सत कियो ज्यारी विगत – छपनीजी राठोडी १, राणी वालोतणीजी चहुवाण २, छोटी मेडतणीजी ३, राणी परमारजी ४, राणी ईडरेची ईडर सत कियो ५, राणी झाली हरदासरी वेटी झालावाडमे सत कियो ६ ।

१०८७ लालजी वागड़िया चहुवाण जसवतरो दोहितो ।

१०८८ गरीवदास हलवद झाला भोपत जंसावतरो भाणेज ।

१०८९ राणो जगतसिघ सवत १६६४ रा भाद्रवा सुद २ जनम कवर – राजसिंघ १, अरसी २ ।

१०९० राणा जगतसिघरा कवरारी विगत – राजसिघ अमरसिंघोत मेड़तिया राजसिंह विसनदासोतरो दोहितो ।

राजसिंघ जगतसिंघोत

१०९१ राणो राजसिंघ स० १६८६ रा काती वदी १ जनम ।

१०९२ सवत १६८६ रा काती वद १ राणा राजसिंघ जगतसिंघोतरो जनम सवत १७०९ रा माहमें टीकै बैठा ।

१०९३ मानजी जती राजविळास नाव रूपक राजसिंघरो वणायो ।

१७९४ सवत १७३२ रा माह सुद १५ राणै राजसिंघ राजसागररी प्रतिष्ठा किवी ।

१०९५ अेक हजार गाय, छियासी हजार रुपया, च्यार गाव सासण ब्राह्मणानू कृष्णार्पण दिया प्रतिष्ठारै दिन ।

१०९६. तुळा रूपारी पाच हुई जिणरी विगत – रूपारी तुळा १, राणाजीरी राणी परमारजी किवी रूपारी तुला १ ऊदावतजी टूक ताडारो राजा रामसिघ भीमरो जिणरी मा नूतै आया उवा कीवी रूपारी तुळा १ सौदै वारट केहरीसिघ खीमराजोत कीवी रूपारी तुळा १ पुरोहित गरीबदासरै वेटै किवी।

१०९७ सोनारी तुळा दोय – अेक पुरोहित गरीवदास किवी अेक राणै राजसिघजी कीवी, आवधा सूधा तुळा वैठा।

१०९८ वूदीरो रावराजा भावसिघजी ज्यारो प्रधान सावतसी सौनू तो लै आयो च्यार घोडा, २०००) रुपया हाथीरा, ३५००) रुपया रोकड़ टीकारा।

१०९९ राजा रायसिघ भीम अमरसिघोतरो जिणरी मा नूतै आयी छै घोड़ा निजर किया, २०००) हाथीरा निजर किया।

११०० रामपुरसू नूतो आयो घोड़ा च्यार, हाथी अेक सैदरूप, रुपया १५०००) रोकड़ नूतो।

११०१ हीरै टोकडियै राणा राजसिघजीनू वहकाय राजसिघजीरा कुवर सुरताण-सिघजी सिरदारसिघजी राणाजीरा हाथसू मराया।

११०२ पछै कुवर भीमसिघजीनू राज देणो तेवडयो नै राणाजीनू कुवर जैसिघजी-नू चूक तेवडायो साह दयाल नूरपुरीमें हीरारो चाकर राणाजीसू मालम कीवी राजसिघजी कुपित कर व हीरानू मरायो हीरो मामवीहो कहीजै है।

११०३ उदैपुरसू आय राणा राजसिघरो कवर औरंगजेवरा पगा लागो दरगाह आया. जद पातसाह भारी सरपाव मोती दिया. राणानू सिरपेच जडाऊ भेज्यो।

जैसिंघ राजसिंघोत

११०४. राणा जैसिघजी घाणेराव पधारिया जद आडावळामे कोठारिया वड़ जठै डेरा किया रावत केहरसिघजी केळवाड़ारी स्याहजी साथ हुतो।

संग्रामसिंघ अमरसिंघोत

११०५ राणो सग्रामसिघ अमरसिघोत कोठारियारो राव वखतसिघजी ज्यारो भाणेज।

११०६ राघो हरी पागियो दिखणी अड़सीजी फौज सामल हुतो पटैलसू राड़ हुई जद।

११०७ राणै अडसीजी कोठारियै डेरा किया अमरचद वडवानू फुरमाया – विना हासल चुकाया श्रीजीरै द्वारै रसत मोल नयी उदैपुरसू सो श्रीजीद्वारासू

खेचल करणी, जद पीरोजखा, चदर, मलंग वगैरै सिंधी विदा किया – उवै श्रीजीद्वारै रोडिया सिघवी भीवराजजी दरबारसू श्रीद्वारै हुता अै चढिया भगडो हुवो. सिंधी मलंग देवडा सवाई नोसरा वाळारी गोळी लागी. मुवो फतै जोधाणनाथरी हुई।

११०८ राणारी सवारीरो घोडो वेराड दलेळसिघ लियो नै छत्र चवर ही इण लियो।

११०९ राणारा घोडा कनै वहण वाळा चोपदार दोनू हाथानू जोर करी अजीतसिंघ-जीरै माथै सोनारी छडीरा टुकडा किया अजीतसिंघजीरै माथो ऊपरसू जोजरो हुवो।

१११० रूपोजी १, जीधोजी २, कीकोजी ३ अै तीन सगा भाई गूजर राणा अडसी-जीरा धायभाई।

११११ रूपै धायभाई रूपनारायणरो मदिर करायो उदैपुर उरै नदी वहै जिणरी पुळ वंधायी।

१११२ राणा भीवसिंघरी बेटी देवकुवर कल्याणसिंघजी परणियो सिवदानसिंघ महाराजारी वेटी सिणगारकुवर मोतीसिंघजी परणियो।

१११३. कूभारी मोती राणा भीमसिंघरै मरजीरी खवास है।

१११४ मखदूम गुलाम मुहम्मद भीमसिंघजीरै वखत आयो हो उवलारी हो।

१११५ स० १८८५ चैत सुद १४ उदैपुरमे राणो भीमसिंघजी देवलोक हुवा।

१११६ पूनारो उकील राणाजीरी तरफसू पीपलियारो धणी सगतावत राणोजी दूसरा वारो सिरपाव देता सो पेसुआनू कनै जाय देता, पेसवो सामो आय लेतो।

१११७ राणाजीरै मेवाडरा परगनारा गावारी विगत –

चित्तोड गाव ३०१, गोढवाड ३६०, जसावरा गाव ५२, गरवारा गाव १४०, मदारीरा गाव २००, कुभळमेररा गाव ७००, देवळियारा गाव १२०, भैसरोडगढरा गाव ५००, छपनरा पाच परगनारा गाव १६०, पटारा गाव ३६०।

मेछल भीलवाडारा गाव परगना दोय उदैसिघ राणै गमिया अकबर पातसाह चित्तोड लियो जद – बूदी १, रामपुरो २, गाव १५०० रामपुरारा, गाव १००१ बूदीरा, गाव १३५१ डूगरपुरा, गाव १३५० वासवाळारा, गाव ३६० वधनोररा, गाव ८४ वेगमरा, गाव २४० माडळरा, गाव ३६० भीमचरा, गाव परगना रै पाच पातसाह जहागीर राणा अमरसिंघनू

दिया, कुवर करण अजमेर पातसाहरा पगां लागो, राणो अमरसिंघ गोगूदै साहजादा खुरमसू मिलियो जद चाकरी वदळ ' ''।

१११८ दसरावारा दिनामे कोठारियारो राव, सादडीरो राजा, वेदळैरो राव, सलूवररो रावत थै च्यार सिरदार ज्यारै डेरै श्रीदीवाण पधारै।

१११९ उदैपुर चाकरारी लुगायां राणियारै पगा लागै नही, ओढणारो पल्लो हाथमें लेनै तीन वार हाथ जमी लगाय सलाम करै।

११२० उदैपुर राणाजी ही चाकरानू विदा करै जद वीडा दै राणियां रणवासां चाकरारी त्रियानू वीडा दै।

११२१. राणाजी देवलोक हुवै जद पाटवी कुवर पछेवडा ओढ लै राणाजीनूं दाग दे पाछा आवै तरै उमराव दरवारमे जद कोठारियैरो राव कुंवर माथासू पछेवडो दूर करै।

११२२. उदैपुर नगर सोमवार चहुवाणारी चोकी वेदळारो राव नांवै नै पारसोली कोठारियारो राव चौकी आवै मगल राणावत चोकी आवै वुधरै दिन प्रधान कानोड़रो रावत वीजोळियांरो राव और अरग जो चोकी आवै. गुरुवाररै झाला चोकी आवै सादडीरो राजा जीम डेरै जावै देलवाडो गोगूंदो चौकी रहै शुक्रै दिन राठोड चोकी आवै शनीचररै दिन सगता चौकी आवै।

११२३ उदैपुर उमराव राणैजीरै चोकी आवै जिणरी विगत – रवी चूडावतारी चोकी, सलूवररो वणी पातियै जीम डेरै जावै. वेगम, आवेट, देवगढ चोकी रहै।

११२४. उदैपुर सोळै उमरावानू सात सीकरो वीडो दिरीजै देसनिकाळो दै जिणनू तीन सीकरो वीड़ो दै।

११२५. उदैपुर आवदारखानो पाणैडो कहावै कपड़ारो कोठार निकारी ओडी कहावै. दवाखाना ओखधरी ओरी कहावै तवोळ खानारी ओरी वीडा वणै सिघळखानारी ओरी ससतर रहै।

मेवाड़रा सरदार

वनेड़ो

११२६ वणहडारी राजारी पीढी लिखते – राणो राजसिंह १, भीमसिंघ २, सूरजमल ३, सुरताणसिंघ ४, सिरदारसिंघ ५, रामसिंघ ६, हमीरसिंघ ७, भीमसिंघ ८।

११२७ वीकानेररा राजारी बेटी रायसिंघजी वणहडारो राजा परणियो।

११२८ रायसिंघजी वणहडा कनै राजपुर वसायो वणहडारो राजा रायसिंघ उजैण घावा पडियो, मारगमे मुवो।

११२९. जगमालोत राणावत रतनसोत जोधा अै आठ उमराव वणहड़ासू अढाई कोस गाव वामणियो जठारा जोधारी भोम पैला वणहडामे हुती।

११३० ओसवाळ डागळिया खीवसरा वणहडै कामेती है।

११३१ ओसवाळ वरढिया वणहडै कामेती है, भडारी कहावै।

झाला

११३२ सादडीरो राजा झाला जिणसू राणोजी राणो लिखै दूजारा नगारा देब्रारीमे न वजै छै इणरो नगारो ईकरको दहवारीसू जगन्नाथरायजीरा मदिर ताई वजतो जाय, छत्र चमर ही उडता जावै।

वेदळो

११३३ वेदळा धणी राव रामचदजी जिणनू राणैजी वीडो छै सीकरो दियो इण वेदळारो पट्टो निजर कियो राणैजी फुरमायो तबोळीनू लावो, सजा कर करो छव सीकारो बीड़ो क्यो वणायो आ खबर पाय तबोळीरा राव रामचदजीरा घोडारै सरणै गयो रावजी तबोलीरो गुनो माफ करायो।

११३४ वेदळै आबा औ पहाड सजळ है सिकार राजनू उढै घणा है आरासरी अवाय कहावै।

कोठारियो

११३५ चूडावत जगै सीधावत चहुवाण ठाकुरनू बहिन परणाय कोठारियो आपरै पटै हो सो परो दियो, मदारियो आपरै राखियो।

११३६ चूडावत जगो सीधावत वागडमे चहुवाण मारियो।

११३७ सहर सूरतमें राणो प्रताप गोसरे हियो विखामे उमरावा कुवरा समेत सूरतरा सूबैदारनू मार घोडा चलाया राणारा हाथरी बरछीसू सूबेदाररा अग रही कोठारियारै राव जायनै आणी ऊ दिन दसरावारो गाहणा समेत सिरपाव राणोजी कोठारियारा धणीनू दियो। जिणसू हर दसरावै राणोजी दसरावारो सिरपाव गहणा समेत कोठारियारा रावनू वगसै।

११३८ कोठारियारो धणी कुरब वेदळारा धणीनो दिराणो है राणाजीरा दरवारसू।

सलूंबर

११३९ सलूंबररा रावतारी पीढी लिखँते–राणो लाखो १, चूडो २, काधळ ३, रतनसी ४, सांईदास ५, खगार ६, किसनो ७, जैतो ८, मानसिंघ ९, रघुनाथसिंघ १०, रतनसी ११, काधळ १२, केहरसिंघ १३, कुबेरसिंघ १४, भानसिंघ १५, भवानीसिंघ १६, पदमसिंघ १७।

११४० सिसोदिया सिंघ काधळ चूडावतरा बेटा तीन हुवा– जगो १, सुरताण २ महाराजकुवार गजसिंघजी तोडै कछवाहा जगन्नाथरी बेटी परणिया तोडा थका सीतळा नीसरी वण स्या पडिया कवरजीरै वडो खेद जद भाटी गोइददास मानावतरो बेटो मोहणदास मर गयो।

११४१ चूडावत मानसिंघ जैतावतरा रजपूत मानसिंघ मूजावत तेजो बोलियो. राणाजी कनैसू पटो लिखाय वभौरी सारगदेओता कनासू ले लियो. रावत मानसिंघरो अमल वभोरीमे कियो ईडररा धणीरा उमराव छपनियो राठोड मार छपनडी प्रगनो राणाजीरै घरै आणियो।

११४२ गुढोच सेरसिंघरी वहन अभैकवरबाई सलूवर रावत भीमसिंघजीनूं परणायी।

बींजोळियो

११४३ हमैं बीझोळिया राय केसोदास सुभकरणोत है. इणरी बेटी राणा भीमसिंघजीरा कवर अमरसिंघनू परणायी उणनै सत कियो।

देवगढ

११४४ देवगढरा रावतारी पीढियां लिखते – राणो लाखो १, चूडो २, काधळ ३, सिंघ ४, मागो ५, दूदो ६, ईसर ७, गोकळदास ८, द्वारकादास ९, सग्रामसिंघ १०, जसवर्तसिंघ ११, राघोदास १२, अनोपसिंघ १३, गोकळदास १४।

११४५. देवगढरा रावतारो वडेरो ईसरदास जिणनूं मेर मोटै कीट मारियो हो–

कीट कटारी चालवी, खटकी खूमाणाह।
मोटै ईसर मारियो, डाकी भरडाणाह॥

११४६ सागो सीघोत नळावूबाम्नरा पीर कनै गयो जद पीर लखमीनाथ बावाजी घोडी दीवी, कटारी दीवी, कह्यो–थारो नांव वधसी देवगढ लखमीनाथरी सामती रहै घोड़ी पायगामें।

११४७ राणोजी घटावळीजीरै मगरै वाघ मारण गया जद सागै वाघनू मारियो. अेक हाथ सागारो जख्मी हुवो राणाजी केळवो दियो।

११४८ पुर माडळरै पीर जानै सागानू नगारो दियो कही – थारा वसरो माझी काम आसी तरै फतै हुसी ।

११४९ सिरै द्रूह सग्रामरा जसवत नै जैसिंघ जसवत देवगढ, जैसिंघ सग्रामगढ ।

वेगूं

११५० वेगमरा रावतारी पीढी लिखते–राणो लाखो १, चूडो २, काधल ३, रतनसी ४, साईदास ५, खगार ६, गोइद ७, मेघ ८, राजसिघ ९, महासिंघ १०, अनोपसिघ ११, हरिसिंघ १२, देवसिघ १३, मेघसिघ १४, प्रतापसिघ १५ ।

११५१ वेगम वाळो चूडावत वल्लभकुळ-सेवक है द्वारकानाथजीरा मदिररो ।

देलवाड़ो

११५२ गुदोच सेरसिंघरी बेटी उदैकवरबाई देलवाडै राजा कल्याणसिघजीनू परणायी ।

आमेट

११५३ आंबेटरा रावतारी पीढिया लिखते – लाखो १, चूडो २, काधल ३, सिघ ४, जगो ५, ६, करण ७, मानसिंघ ८, माधोसिंघ ९, गोवरधनसिघ १०, दूलैसिघ ११, प्रथीसिंघ १२, मानसिंघ १३, फतैसिंघ १४, प्रतापसिंघ १५ ।

कानोड़

११५४ कानोडरा रावतारी पीढी लिखते – राणो लाखो १, अजो २, सारगदे ३, जगो ४, नरवद ५, नेतो ६, भाण ७, जगनाथ ८, मानसिंघ ९, महासिंघ १०, सारगदे ११, प्रथीसिंघ १२, जगतसिघ १३, जालमसिघ १४, अजीतसिंघ १५ ।

भींडर

११५५ भीडररा महाराजारी पीढिया लिखते – राणो उदैसिघ १, सगतो २, भाण ३, पूरो ४, सबळसिंघ ५, मुहकमसिघ ६, अमरसिंघ ७, जैतसिंघ ८, उमेदसिंघ ९, कुसाळसिंघ १०, मुहकमसिघ ११, जोरावरसिंघ १२ ।

११५६. भीडररा महाराजरी मा वाई राजबाई जे मोटा पली तीनै लीकी पातसाहरी दीवी है दसरावारो डूगलो, गणगोरीरो सिपराव, त्रलाणो घोडो सलूवरसू भीडर-महाराज पावै ।

११५७ पानसलरो सगतावत भीडर खोळै आयो है ।

११५८ सावररो धगी सगतावत इद्रसिंघ जिणरो दोहितो वधनोर अखैसिंघ ।

५११५९ मेडतिया पदमसिंघ प्रतापसिंघोतनू उदैपुर हवेली ऊपर राणाजी साथे मेल मरायो नवेगडीरो सिरदार राणाजीरो उमराव जिण उदैपुरसू आय काहणारा तळाव माथै डेरा किया गोठरै मिस कवर किसनसिंघनू घाणेरावसू तेड़ अेकत ले डेरामे मारियो. चीणो चाकर किसनसिंघरो कूजा वरदार काम आयो जातरो डागळियो जिणरी सोराणजीरी मुतसद्दी कुंभळमेरसू घाणेराव आयो राणाजीरो अमल कियो ।

११६० पदमसिंघजीरा कबीला वसी धण ले कूपावतारै गया उणा आछी तरहसू राखिया ।

११६१ मेडतियो उरजण रायमलोत चित्तोड काम आयो जैमलजी ईसरदासजी साथ ।

११६२. जैमलरै टीकै सुरताण जिणनू सवत १६४२ पातसाह अकबर मेड़तो दियो ।

११६३ सुरताणरै कईक दिन परगणो मलहारणो पिण रह्यो ।

११६४ सीळ भाखरी स्वेत पाखाणरो स्वरूप मेड़तियै दाणीदास गोपाळदास सुरताणरै काविलरी हदसू आणी पधरायो ।

११६५ जगन्नाथ गोइंददासरो १, सावळदास गोइददासरो २, सुदरदास गोइंददासरो ३, गोइददास जैमलोत ।

११६६. वानसीरा सगतावता माहला सगतावत दोय कलावत दोय वला ।

११६७ पारसोली माहेला चहुवाण ।

११६८ वीदा जैतमालरो वेटो नैतसी राड़धारासू मवाड़ आयो . राणोजी पटो दियो . उणरा हमै केळवै है ।

११६९ किसनदास जैतमालोतरै पटै वणेल थी, पछै देसूरी पटै पायी पछै केळवो पटै पायो ।

११७० सवळसिंघ रामसिंघोत वेदळै राव . केहरीसिंघ रामसिघोत पारसोली राव ।

११७१. अदळ लियो वदळो नकू राखिज्यो वुधारी ।
ओ गीत आसिया हरराम उदैभाणोतरो कह्यो है ।

११७२ कोटा सुरसा भास्कर सोळखी_ प्रतापसिंघ वेटी वीरमदे समेत उदैपुर आयो जद टीकड़ियो तुळछीदास जात सोळखी राणाजीरै मनीजै . इणरी हवेली जाय प्रतापसिंघ उणारो होको पियो इण देसूरी दिरायी ।

गहलोतांरा दूजा राज

देवलियो-प्रतापगढ़

११७३. नव लाख रुपयारी पैदास देवळियारा धणीरै हुती ही डूगरपुररा धणीरै इती ही वांसवाळारा धणीरै।

११७४. साहपुरो देवळियो दोय पाख उदैपुररी अै।

साहपुरो

११७५. साहपुरारा राजारी पीढिया लिखते- राणो अमरसिघ १, सूरजमळ २, सुजाणसिघ ३, दोलतसिघ ४, भारतसिघ ५, उमेदसिघ ६, हमीरसिघ ७, भीमसिघ ८।

११७६. सायपुरै राजाई भारतसिघजी पायी।

११७७. गेरसिघजी १, सिरदारसिघजी २, कुसळसिघजी ३, उमेदसिघजी ४, जसकरणसिघजी ५ अै पाच बेटा सहापुरारा राजा भारतसिघजीरै।

११७८. साहपुरै उमेदसिघजी पिता भारतसिघजीनू कैद किया हा साहपुरा राजा उमेदसिघ पिता भारतसिघनू कैद कियो हो सो छोडियो नही।

११७९. पाटवी कवर उदोतसिघनू जहर दे मारियो उदोतसिघरा बेटा रणसिघनू मारण सिपाही मेलियो उणरा हाथरो घाव रणसिघरा मूडा माथै लागो जद चवदै वरसरो भीमसिघ रणसिघरो कवर जिणरी तरवार चली ऊ सिपाही मार राखियो बेटा जालमसिघनू साहपुरै मालक करणरी उमेदसिघ विचारी ही।

११८० जगमाल उदैसिघोतरै वसरा राणावत १, कानावत २, कछवाहा सुरताणोत राजावत ३, राठोड चादावत ४, अै च्यार उमराव साहपुरै।

११८१ कोठिया धनोप अै चादावतारा ठिकाणा साहपुरा हेटै पडिया।

११८२ देवळियारा रावतारी पीढी लिखते राणो मोकळ १, खेमो महाराज २, सूरजमल ३, वाघ ४, रायसिघ ५, वीको ६, तीजो ७, साखो ८, जसवतसिघ ९, हरीसिंघ १०, प्रतापसिघ ११, प्रथीसिंह १२, गोपाळसिघ १३, सालमसिघ १४, सावतसिघ १५।

११८३ देवळियारो धणी रावत कहीजै गाव सात सौ है हजार घोडांरी साहवी।

११८४ देवळियारा धणी सीसोदिया ज्यारै नानाणारी विगत लिखते-सूरजमल खेमावत सोनगरा रणवीर वणवीरोतरो दोहितो।

११८५ सूरजमलरा कवरारी मामलरी विगत वाघ १, संसारचद २, सहसमल ३, रणमल ४, कलो ५, पाचू ६, वीकानेर लूणकरण वीकावतरा दोहिता।

११८६. रावत सूरजमल खेमावतरै वेटा – वाघ १, किसन २, वीको ३, रावत वाघरै तेजो. तेजारै मानो रावत वरस दोय राज कियो पछै सैद उमरावसू लडाई हुई मानो रावत काम आयो. इणरै वेटी अेक ही जिका सिरोही राव अखै-राजनू परणायी मानारो टीको भाई सीयानै आयो रावत सीयारो जसवंत।

११८७. रावत वाघरा कवरारा मामलरी विगत – रायसिंघ वागडियो चहुवाण वीरसलदे वरसिंघोतरो दोहितो।

११८८ रावत रायसिंघरा कवरारा मामलरी विगत–वीको वेगम हाडा जीतमल देवावतरो दोहितो।

११८९ रावत वीकारा कवरारी मामालरी विगत–तेजमाल छपनिया राठोड़ जैमले जैचदोतरो दोहितो।

११९०. किसनसिंघ मेडतै रायमल दूदावतरो दोहितो।

११९१. रावत जसवतसिंघनूं स०१६९० राणै जगतसिंघ चूक कराय मरायो।

११९२ राठोड रामसिंघ करमसेणोत वीजो ही साथ विदा कियो हो रावत जसवतसिंघरै साथ वडो वेटो महासिंघ काम आयो।

११९३. रावत जसवतसिंघ राठोड़ सुजाणसिंघ भगवानदासोतरै हाथ रह्यो।

११९४. संवत १६९० मे राणै जगतसिंघ देवळियारा रावत जसवतसिंघनू चूक कराय मरायो जद मुदै चूकमे राठोड रामसिंघ करमसेणोत और ही उमराव राणाजीरा साथै हुता रावत जसवतसिंघ राठोड सुजाणसिंघ भगवानदासोतरै हाथ रह्यो।

११९५. सवत १६९० मे राणै जगतसिंघजी देवळियारो धणी रावत जसवंतसिंघ जिणनू चूक कराय मरायो राठोड रामसिंघ करमसिंघोत मुडासै राणारो भाणेज उमराव दूजा ही राणाजीरै साथै हुता रावत जसवंतसिंघ राठोड़ सुजाणसिंघ भगवानदासोतरै हाथ रह्यो।

११९६. रावत जसवतसिंघरो पाटवी कुवर महासिंघ रावत साथै काम आयो।

११९७. जसवतसिंघरो वेटो हरसिंघ जसवंतसिंघरै पाट वैठो।

११९८. जसवंतसिंघरी गादी रावत केसरसिंघ।

११९९. देवळियारा दीवाण सावंतसिंघजीरो कुवर दीपसिंघजी पहला भिणाय परणियो हुतो पछै फतैगढ परणियो।

१२०० देवळियै दीपसिघ सावंतसिघोतरो वडो बेटो केसरीसिंघ भिणायरो भाणेज।

१२०१. दीपसिंघरो दूजो बेटो दळपतसिघ फतैगढरो भाणेज डूगरपुर-रावळ जसवत-सिंघरै खोळै।

१२०२ देवळियै च्यार सिरायत—रायपुर १, साकधजी २, झातळा ३, धमोतर ४।

डूंगरपुर

१२०३. डूगरपुररा रावळारी पीढी लिखते—समरसी १, कालीकान्ह २, पातो ३, गोपीनाथ ४, सोमदास ५, गगेव ६, उदैकरण ७, प्रथीराज ८, आसकरण ९, सहसमल १०, करमसी ११, पूजो १२, गिरधर १३, जसवंतसिघ १४, खुमाणसिंघ १५, रामसिघ १६, सिवसिंघ १७, बैरीसाळ १८, फतैसिंघ १९।

१२०४ डूगरपुररा रावळारी वसावळी—करमसीरो रावळ कानडदे श्रीमन्नारायणसू १२९ पीढियां छै।

१२०५. कानडदेरो परतापसी, परतापसीरो गेपो जिण डूगरपुर गैबसागर तळाव करायो, गेपारो स्यामदास, स्यामदासरो गागो, गागारो उदैसिंघ, उदैसिघरो प्रथीराज, प्रथीराजरा आसकरण, आसकरणरो सहसमल।

१२०६. रावळ आसकरण प्रथीराजोत राव मालदेजीरी बेटी पुहपावती बाई परणियो हुतो. विखामे चद्रसेण मालदेवोत डूगरपुर गयो. रावळ आसकरण वडा हीड़ा किया।

१२०७. डूगरपुररो धणी रावळ उदैकरणजी सागा राणारी मदत सीकरी काम आयो कुवर जगमाल घावा उपडियो उणरै वसरा वाँसवाळारा रावळ।

१२०८ चावडा गोपाळदासनू मारियो पछे प्रतापसी रायमलोत डूगरपुररा रावळरी सभामे बैठा चावडानू मारियो पछे राव चद्रसेणजी विखामे डूगरपुर गया जद कुवर आसकरणजीनू चावडा परणाया।

१२०९. रावळ सहसकरण आसकरणोत डूगरपुररो धणी जिणरी बेटी महाराज सूर-सिंघजी परणिया कुवर सवळसिंघजी सहसमलरा दोहिता।

१२१०. साढी सतरैसौ गाव सेवाय सगवाडी सहरवटमे आयो डूगरपुररा रावळरै सगवाडा वदळै आडाईरो तळाव वासवाळारै रावळरै आयो।

वांसवाड़ो

१२११ वांसवाळारा रावळारी पीढी लिखते—समरसी १, काळीकान्ह २, पातो ३, गोपीनाथ ४, सोमनाथ ५, गगेव ६, उदैकरण ७, जगमाल ८, जैसिंघ ९,

कल्याणमल १०, अग्रमेग ११, उदैभाण १२, समरसी १३, कुसळसिंघ १४, अजवसिंघ १५, भीमसिंघ १६, विसनसिंघ १७, प्रथीराज १८, विजयसिंघ १९।

१२१२ वासवाळै रावत प्रथीसिंघरो रावळ विजैसिंघ, विजैसिंघरो उमेदसिंघ, उमेदसिंघरो भवानीसिंघ हमैं है।

१२१३ वासवाळै रावळ कुसळसिंघजीरा मोता चाकर राखिया पूणा दो सौ गाव पटै दिया वागडिया चहुवाण छाड गया था जद रामोतारो मुदै ठिकाणो कुसळगढरो धणी महीपडरो राज कहावै है।

१२१४. वांसवाळारो रावळ सिंघ वाहण देवी जिणरी आण काढै।

गोहिल

१२१५ साळवाहण गोहिलरो वेटो सुद वुद सावलिगारै सासरै पारानगर जोगीरो भेख आयो हुतो।

१२१६ राजपीपळीरो धणी गोहिल भीम जिणरा वेटा अरजुण-हमीर सोमहिया महादेवरी वाहर खूनी अलाउद्दीनसू जग करि जाळोर काम आया।

१२१७. यारो छोटो भाई कलो जिणरै वसरा रामोत वरसिंहोत मेडतिया है। ओळी १४ रा राजपीपळा है।

१२१८. हमीर-अर्जुणरै साथ दातीवाळरो धणी कोळी वेगरो रात काम आयो आटियो वाणियो, रुद्रवो वामण, धूडियो भील।

रामपुरारा चंद्रावत

१२१९ श्रीराम-उपासक चद्रावत राव महोहकसिंघ अमरसिंघ सुत-अै आखर रामपुरारा रावरी महोरमे।

१२२० आवड़सू उठ चद्रावत रामपुरो जीवदानोजी भदाणो १, भाट २, खेड़ी ३, मुळेरी ४, पाहेडी ५, करडावावण ६, अजैपुरो वगेरा रामपुरारा राव उमराव जारा ठिकाणा।

फुटकर

१२२१ गाव दोय सौ गहलोतारा दिली-मडळ मे है राणो नरपतसिंघ उठै हुवो, हमैं अेक राणो वाजै दूजा गहलोत चौधरी वाजै।

---

[४] यादवांरी वातां

भाटी

१२२२. भाटियांरी खाप लिखते—जेचद १, जेतुग २, बुध ३, केलण ४, सरूपमी ५, सीहड ६, लेना ७, छीकण ८, पोहडे ९, पाहू १०, नहु ११, वारुसी १२, जेंतसी १३, हमीर १४, ऊनड १५, धुवड १६, रायधर १७, राय १८, सामतसी १९, अणगा, २०, अडकमल २१, वरसिंघ २२, खीया २३, जेहर २४, अरसुरमोत २५, वारणरासोत २६, तेजमालोत २७, विहारीदासोत २८, उदैसिघोत २९ मालदेओत ३०, सगतसिघोत ३१, पचायणोत ३२, देरावरिया ३३, पूगळिया ३४, गुगजी ३५, सोम ३६, मूल ३७, सिधराव ३८, वानर ३९, जेड ४०, गोपाळदेओत ४१, हडवा ४२, लूणराव ४३, सभा ४४, सागेजा ४५, कदल ४६ ।

१२२३. मेहामल, देवत्त, सीधत, अै भाटियारी खापा है ।

१२२४. करनोत, धनराजोत अै दोय धडा आय वसियो ।

१२२५ नानग छाबहडो वरदायी हुवो पोकरण आय वसियो ।

१२२६ जैसळमेर पाट बैठा ज्यारी विगत अनुक्रमसू-वछू १, म· ·२, दुसाभ्‍फ ३, वीजो ४, जैसळ ५, साळवाहन ६, केल्हण ७, चाचग ८, करण ९, लखणसेन १०, पूनपाळ ११, जैतसी १२, मूलराज १३, दूदो १४, घडसी १५, केहर १६, लखमण १७, वेरसी १८, चाचगसी १९, देवीदास २०, जेतसी २१, लूणकरण २२, मालदे २३, हरराज २४, भीम २५, कल्याणदास २६, मनोहरदास २७, सबळसिंह २८, अमरसिंघ २९, जसवतसिघ ३०, जेतसी ३१, अखैसी ३२, मूळराज ३३, गजसिघ ३४ ।

१२२७. रावळ जैसल १, वेल्हण २, लूणकरण ३, चाचिग ४, तेजराव ५, रावळ जैतसी ६, मूळराज ७, देवराज ८, रावळ केहर ९, लखमण १०, वैरसी ११, चाचो १२, देईदास १३, जैतसी १४, लूणकरण १५, मालदे १६, हरराज १७, कल्याणमल १८, मनोहरदास १९, रावळ मनोहरदास निरवस गयो ।

१२२८. धरणीधर वराहरी बेटी नाम होरड सिंघ देवराजनू परणायी. धरणीधर वराहरी राणी नाम रवाब टावरी १, वोडाणा २, सिधराव ३, सोळकी अै च्यारू खापा बीकमपुर राजपूता माहे मुख्य है ।

१२२९ पहला भाटियारी राजधानी लुद्रवै हुती भाटी साळवाहणरै टीकै भोजदेव वैठो भारी जैसळ दिल्ली फोजा आणी भोजदेवनू मार लुद्रवै धणी हुवो. जैसळ लुद्रवै कोट करावण लागो जद ब्राह्मण नाव इसो अेक सौ वीस वरसरी ऊमरमे तिण जैसळनू कह्यो-म्हारा खेत कनै रडो है, जठै श्रीकृष्ण गदासू पाणी प्रगट कर पाडवानू पायो नै कह्यो कलूमे म्हारो वस इण ठोड रहसी, सो तू उठै कोट कराय जेसळ वात मानी गदासू कूप कृष्ण कीनो जिण कूप ऊपर सिला हुती सो दूर कीवी और वधायो. नाव दियो जैसळो कूवो गढ अठै करायो गढरो नाव दियो जैसळमेर।

१२३० जैसळ १, काल्हण २, लूणकरण ३, चाचिग ४, तेजराव ५, वडो रावल जैतसी ६।

१२३१ भाटी जैसळरो कालण भाटी काल्हणरै वेटा दोय हुवा – लूणकरण १ सीहड २. लूणकरणरो चाचिग, चाचिगरो तेजराव, तेजरावरो वडो रावल जैतसी।

१२३२ जैतसी ऊपर दिल्लीरी फौज आयी वारह वरस विग्रह रह्यो जैतसी रावळ विग्रहमे मुवो पछै मूळराज जैतसिघोत रावळ हुवो।

१२३३. मूळराज रावळरै आगै राणो रतनसी हुवो आगै जैसळमेर आ मरजाद हुती रावळरा मूडा आगै अेक राणो रहै।

१२३४ रावळ मूळराज ऊपर तुरकांरी फोज आयी घेरो गढरै लागो घेरासूं जैसळमेररा गढरो सामान खूटो जद रावळ मूळराजरो कंवर देवराज और राणा रतनसीरो कवर घडसी दोय जणा तो अै नै जणा तीन दूजा जुमलै पांच तुरकानू अमान सूपी जैसळमेररा गढरा दरवाजा खोल मूळराज रतनसी काम आया।

१२३५ मूळराज रतनसीनू मार तुरक परा गया. जैसळमेररो गढ सूनो पडियो जद रावळ मालो जैसळमेर आपणावण आपरी फोज मैली फोज उठे गयी सामान भार जिनसा खजानो प्रभातरो गढ माथै चढाय दियो नै राव मालारा भडां कह्यो – कपडा धोय आपै साझरा गढ माथे जासा मोमत्तो मन वोवणरै घवै लागा।

१२३६ वडा रावळ जैतसीरै वारह वरस घेरो रयो जद भाटी जसहडरा वेटा पाच दूदो १, तिलोक २, आसकरण ३, सीधण ४, वागण ५, ज्यांनूं जुगतसू घेरा मायसू काढिया हुता अेक जणो दम खीच मड़ो वणियो हो नै चार जणा

साचिया के उणरा माचासू उपाड गढसू बाहर नीसर वचिया हुता उठै पाचू ही साठा जणासू गढ माथै चढिया अै तोला पाहू कनै हुता. तोला पाहू ही आं साथै आयो. गढ रावळ मालारा साथरै हाथ न आयो।

१२३७. गढ या पाचा अपणाय लियो तोला पाहूनू अै वदै नही, तोलो हियासू खराई करै. अेक दिन तोलारै तिलोकसी झटकारी दीवी तोलारो माथो कटीज दर पडियो काटियै माथै तोलै पाछो झटको वाह्यो सो थाभो कटाणो, थांभो अजैस है।

१२३८ जसहडरा बेटा वरस २१ राज कियो पछै पातसाही फोज आ माथै जैसळमेर आयी आसकरण तुरकानू भेद दियो गढ भिळियो दूदै तिलोकसी साको कियो पाचू भाई काम आया. गढमे तुरकारो थाणो बैठो।

१२३९ देवराज रावळ मूळराजरो बेटो नै घडसी राणा रतनसीरो बेटो अै दोनू मूळराज रतनसी काम आवणरै तुरकानू सूपिया सू अै मोटा होय पातसाहरा ····सू नाठा घडसी महेवै रावळ माला कनै गयो रावळ मालारी वहन विवली घडसी घरमे घाली, रावळ मालै आपरो साथ मेल वीकमपुरमे घड़सीरो अमल करायो।

१२४० घडसी आपरी वसी वीकमपुर राखी, सिंधरा पातसाहरी चाकरी लागो सिंधरा पातसाहसू जग हुवो जद घडसी पहला पातसाहरी असवारीरो सफेद हाथी जिणरी सूड काटी, सिंधरै पातसाह राजी हुय घडसीनू जैसळमेर दियो।

१२४१ देवराज पातसाहरा · सू भाज घाट थर पारकरमे गयो, उठै परणियो, इणारै बेटा दोय हुवा केहर नै हमीर।

१२४२ देवराजनू घाटरै दहइयै मारियो, पछै जैसळमेरसू रावळ घडसी केहर-हमीरनू तेडणनू थाट मिनख मेलिया, आप तळैरी हुतो, जसहड भाटिया आसकरणरा बेटा घोडै सवार घडसीनू झटको कियो, घडसीरो माथो दूर पडियो, घोडो घडनू ले गढ माथै गयो, घडसीरै बेटो नहो हुवो, रावळ मालारी वहन विवली केहरनै टीको दे घडसीनू चूक हुवा पछै नवमै दिन सत कियो।

१२४३ केहररो रावळ लखमण, लखमणरो वैरसी, वैरसीरो चाचो, चाचारो रावळ देईदास, देईदासरो भीम पछै भीमरो छोटो भाई कल्याणमल रावळ हुवो, कल्याणमलरो रावळ मनहरदास निरवस गयो।

१२४४ रावळ चाचानू परणाय सोढां मारियो हुतो सो देईदास चाचारो चाचारै पाट वैठो सोढानू मार वापरो वैर लियो ।

१२४५ रावळ जैतसी देवीदासोतरै राणी भावकदे राठोड हाफा वरसिघोतरी वेटी मेहवै १ ।

१२४६ जैमळमेर रावल जैतसीरै वेटारी विगत—लूणकरण १, भीवराज २, जगमल ३, प्रथीराज ४ ।

१२४७ भाटी रावळ लूणकरण भाटी रावळ जैतसी देवीदासोतरो वेटो वाडमेरारो भाणेज ।

१२४८ रावळ लूणकरणरै वेटारी विगत—मालदे १, सिवदास २ ।

१२४९. रावळ मालदे लूणकरणोत सीसोदिया अखैराज कुंभकरणोतरो दोहितो ।

१२५० रावळ मालदे लूणकरणोत राणी महेची महमादे मेघराज हाफावतरी ।

१२५१ रावळ मालदेरै वेटारी विगत—हरराज १, खेतसी २, नेतसी ३, सहसमल ४ ।

१२५२ रावळ हरराज जोधपुर राठोड नाथो राव सूजारो बेटो जिणरो ओ दोहितो ।

१२५३ खेतसी रावळ मालदेरो वेटो कोटड़ियारो भाणेज ।

१२५४ खेतसी मालदेवोत राव जैतसी वीकानेरियारो दोहितो मोटा राजाजीरी वेटी रभावती परणियो हुतो ।

१२५५. मालदेरो खेतसी वीकानेरिया राव जैतसीरो दोहितो. खेतसीरो दयालदास, दयालदासरो सवळसिंघ, सवळसिंघरो अमरसिंघ, अमरसिंघरो जसवतसिंघ, जसवतसिंघरो जगतसिंघ, जगतसिंघरो अखैसिंघ, अखैसिंघरो मूळराज, मूळराजरो गजसिंघ ।

१२५६. रावळ हरराजरै वेटारी विगत—भीव १, कलो २, सुरताण ३ ।

१२५७ रावळ भीम हरराजरो वेटो जोत्रपुररा राव मालदेजीरो दोहितो ।

१२५८ सवत १६१८ रा मिगसर वद ११ भाटी भीम हरराजोतरो जनम. संवत १६७० जैसळमेर देवलोक हुवो ।

१२५९. सवत १६५४ पोस वद ६ जहड गोपाळदास जैमलोत नै जैसळमररै भाटियां वेढ हुई भाटियारो घोडो डोढ हजार हुतो. गोपाळदास रजपूता पैंतीससू खेत कर पडियो कोटणसू अधकोस ।

१२६० रावळ मेघराजरी वेटी महेची वाला रावळ भीमरै राजलोक ।

१२६१ वाला महेची वना मेघराजोतरी रावळ भीमरै राणी ।

१२६२ भीम ऊत गयो भीम पछै कल्याणमल हरराजोत जैसळमेर रावळ हुवो ।

१२६३ रावळ कल्याणदास हरराजरो बेटो कोटडियारो भाणेज ।

१२६४ सवत १६७२ रावळ कल्याणमल अजमेर पातसाह जहागीररी हजूर आयो हो ।

१२६५ रावळ भीमरै भाई कल्याणमलरी बेटी महाराजकुवर गजसिघजीनू परणायी सवत १६६८ जैसळमेर ।

१२६६ रावळ भीवरै बेटा हुवा नही रावळ कलो हरराजरो जिणरो बेटो मनोहरदास पाट बैठो ।

१२६७ भाखरमी हरराजोत आछो राजपूत हुवो ।

१२६८ रावळ मनोहरदास कल्याणदासरो कोटडियारो भाणेज ।

१२६९ जैसळमेर रावळ मनोहरदास महेवे रावळ दूदा मेघराजोतरो दोहितो ।

१२७० इणरै मामा महेचो तेजसी दूदावत. जैसळमेर भेळी गोठ कीवी तेजसी तेजसीरै पुत्र हुवो नही ।

१२७१ रावळ मनोहरदास जैसळमेररो धणी जसोळ माथै आयो जसोळ भिळी जद जसोळियो वीरम काम आयो ।

१२७२ सवत १६९३ रावळ मनोहरदासरी बेटी महाराजकवर जसवतसिघजी परणिया ।

१२७३ रावळ मनोहरदासरै बेटी महाराज जसवतसिघजी गजसिघोत परणिया पुत्र मनोहरदासरै हुवो नही ।

१२७४ सवत १७०७ रावळ मनोहरदास जैमलमेर देवलोक हुवो भाटी रामचद टीकै बैठो ।

१२७५ जैसळमेर रावळ मनोहरदास कल्याणदासोत मुवो अपुत्र जयसिघरो बेटो रामचन्द गादी बैठो जैसळमेर पछै महाराज श्री जसवतसिघजी जेसळमेर सबळसिघनू ले दिया जद सबळसिघ रामचन्दनू डेरो दियो । डरिया भाटी रामचन्दोत है ।

१२७६ रावळ सबळसिघ दयालदासोत राठोड कला रायमलोतरो दोहितो ।

१२७७ रावळ मालदे १, खेतसी २, दयालदास ३, सबळसिघ ४, अमरसिघ ५, जसवतसिघ ६, जगतसिह ७, अखैसिह ८, मूलराज ९, गजसिघ १० ।

१२७८ रावळ मालदेरो खेतसी जिणरै बेटा च्यार ईसरदास १, दयालदास २, सगतो ३, सामदास ४।

१२७९. भाटी दयालदास खेतसीरो बेटो राठोडा वीदावतांरो भाणेज ।

१२८० रावळ दयालदासरो बेटो सबळसिंघ ।

१२८१ सवत १७१० रा भाद्रवामे रावळ सबळसिंघ जैसळमेररै धणी सोढा ईसरदास राणानू उमरकोट माहेसू काढियो सोढा जोगिदासनू राणो कर उमरकोट बैसाणियो ।

१२८२. जैसळमेर रावळ अखैसिंघ खावडियारो भाणेज इकमायो इणरै भाई जोरावरसिंघ ।

१२८३ रावळ जसवतसिंघ जैसलमेररो धणी जिणनू परणायी नगर रावळ भारमल जिणरी बेटी रूपाबाई जिणरै बेटा च्यार हुवा - जगतसिंघ १, सरदारसिंघ २, तेजसिंघ ३, ईसरीसिंघ ४।

१२८४ रावळ जसवतसिंघरो तेजसिंघ, जिण जगतसिंघरी गादी जगतसिंघरो बेटो बुधसिंघ रावळ सगो भतीजो उणनू गर लातु मारी। आय रावळ होय गादी बैठो निर्जळा इग्यारसरै दिन घडसीसररी लासमे तेजसिंघरो काको हरीसिंघ अमरसिंघोत जिण पिला लाला नामो परधान जिणनू मारी तेजसिंघनू मारियो - अखैराज जगतसिंहोत जैसळमेररा किलानू न गयो, ठाणनू भागो ।

१२८५ जैसळमेर रावळ जगतसिंघरो बेटो अखैसिंघरो वडो भाई बुधसिंघ रावळ हुतो उणनू मार तेजसी जसवतसिंघोत मारियो घडसीसररी पाळ माथै ।

१२८६ सवत १७५१ रा मिगसर वद १४ अखैसिंघजीरो जनम सवत १७८१ रा सा० सुद ८ दिल्ली राजतिलक हुवो ।

१२८७ मम्हे जाणतै मेलियो, विसहे ऊपर पात्र ।
होवो माया कारमी, भवै साची थाव ॥

इण दूहारी पैली झड जैसळमेररै रावळ कही तीन झडा तेमडा रावरी कृपासू साठियारै वीठू वोहाड कही रावळजी सावेरै गया ठकुराणियां माह तेडिया महलरी देहली अतंन नाग सोभित कियो लवायमान रावळ इणरै माथै पग दियो उण वेळा झड वणायी – मै जाणतै मेलियो ।

१२८८ सीसोदियो जगमाल राणा उदैसिंघरो दत्ताणी काम आयो जणा १६ सू लुगाया छव सती हुई ।

१२८९ जैसळमेर अनपूरणारो कोठार रावळ भीम करायो. जनाना महल, गोख हरराज कराया सूरजपोळ, वाडीरा महल रावळ लूणकरण कराया ।

१२९० मकराणारा पाहणरी मूरत नवी देवी चडेस्वरी घळाव मूळराजजी जैसळमेर मंदिर नवै पधरायी ।

१२९१. पची धाय नाथीरी जिण जैसळमेर वडा कमठाणा कराया लखमीनाथजीरी दोनू आखमे माणक जडाया ।

१२९२ रतननाथजीरा कानारा दरसण जैसळमेर है. रावळजी नित दरसण करै ।

१२९३ चौरासी गाव जैसळमेररा रावळरै पालीवाळारा है ज्यारो हासल आवै ।

१२९४ सालमसिंघ मुहतो जैसळमेर जिणरी मा बीकानेररी हुती उवा बीकीजी कहीजती ।

१२९५ जैसळमेररा कामदारारा बापरी महेसराणी त्रिया बायेची कहावै, पोहकरणरी त्रिया पौरणजी कहावै घाटमै परणीज जैसळमेररा मुहता त्रिया घरा आणै उवा घाटणजी कहावै ।

जैसळमेररा सिरदार

वरसलपुर

१२९६. वरसळपुररो भाटी राव मान जिणरी भाणेजी महाराज सूरजसिंघजीरी बेटी गुलाबकवरबाई ।

१२९७ भाटी केलणरा राजमे तुरक जैसळमेररो गढ घेरियो जद भाटी चरढो कोट कूद माह आयो जद केलण कह्यो – स्याबास ! म्हारा वानर, भलो आयो जदसू चरढो वानर कहाणो ।

१२९८ वानर साळब्राहणरो बेटो ।

१२९९ भाटी केलणरै तेरै बेटा जारी विगत – रणमल १, चाचो २, अको ३, दीपो ४, हरभय ५, भोज ६, वीकम ७, सोहड ८, लूणो ९, करन १०, नादो ११, खुमाण १२, धीरो १३ ।

१३०० भाटी केलण केहररो. केहर देहरो देह मूळराजरो मूळराज जैतसीरो ।

१३०१. केलण भाटीरा बेटा दोय धीरो १, खुमाण २, मुसळमान हुवा ज्यारा वसरा राठ ।

१३०२ गाव बारह माडमे केलणारा है आधा गावामे रणमल केलणोतरा पोतरा है नै आधा गावामे अक्का केलणोतरा पोता है ।

१३०३ सोमसी भाटी गायारी वाहर काम आयो गाय खोसी जद लोक कहै – सोम भाई सोम ।

१३०४ सोम भाटी राठोड जैसिंघ जारा गाव फळोदीरी पट्टीमें आगै घणा हुवा ।

१३०५. भाटी मुलवाणी बीकानेररो गाव खानूसर जठारी मगरो भाटी रावत भदो परणियो इणमे देवनपणो हुतो ।

१३०६ गाव लाठी जसोडारा पैंतीस गाव ज्या मांहलो है पछै रावळजी ले लियो ।

१३०७ सायबखान वाहडमेरासू वचन लेय बीकमपुररो राव हरनाथसिंघ मरायो. टुटिया हाथरो किसोईकी ।

१३०८ सं० १६९० भाटी गोपाळराम आसावतरी माडिया नीवरा खारिया कनै चरती चाणरा मैणा ले गया ।

१३०९ माडमे बारह गांव जडा भाटियारा जडे कहावै माडमे अडकमला भाटियारा गाव बारह भभारो कहावै ।

१३१० गाव पैंतीस माडमे जसोडा भाटियारा, ठरडासू आथमणा खाडाळमें गाव हवूर भाटी ऊनड ज्यारा ।

१३११ चाहड ग्राव छपाळो अै गाव दोय माडमे हमीरा भाटी धीरा सीहडा भाटियारो गाम अेक ब्रह्मसर जठै ब्रह्मकुड है ।

१३१२ माडमे गाव दोय पाहू भाटी ज्यारा है ।

१३१३ गाव अेक काछो रूपसिया भाटियारो है ।

१३१४ मावल सीहा भाटियारो गाव अेक कोटडी माडमे है ।

१३१५ सोमगाव वगेरै आठ गाव गोगली भाटी ज्यारा माडमें है ।

१३१६ अेक गांव साहको अणगा भाटियारो है ।

१३१७ घाणेली १, सूजियो २, दहो ३, अै तीन गाव रायधरा भाटियारा है ।

१३१८ भीरमदेवोत भाटी ज्यारै पटे जाणियाणो सराणो हुता जाणियाणो तेजसिंघ आईदानोत ले लियो सराणो रुघनाथसिंघ मुजाणसिंघोत ले लियो ।

१३१९ बीकमपुर कनै गाव ढावरियाळो टावरिया रजपूतारो है ।

१३२०. देवराज समरोटू अै ठिकाणा रावल खानखानैमें खारखवा भाटिया कनांसू लिया ।

जादू

१३२१ जादू राजपूत केईक मुसळमान है . जाटवारो वडेरो पीर हुवो है जिणरो नाव लोड ।

करोली

१३२२ करोलीरो राजा मानपाळजी जादव महराज प्रतापसिंघजीरो सुसरो जैपुर आयो जिण कही अभैकुवरवाई म्हारी भाणेज है ।

खेजड़लारा भाटी

१३२३ खेजडलारा सिरदारारी पीढिया लिखते - जेसळमेर देवराजरै बेटा दोय हुवा - वडो केहर सो तो रावळ, दूजो हमीर।

१३२४ केहररै बेटा तीन– लखमण १, कलकरण २, केल्हण ३ रावळ केहरर भाई देवराजरो बेटो हमीर, हमीररो लूणकरण, लूणकरणरो सतो ।

१३२५ हमीर १, लूणकरण २, सतो ३, अरजुण ४, सावळ ५, सीहो ६, रायपाल७, आसो ८, गोपाळदास ९, दयालदास १०, केहरसिंघ ११, सूरसिह १२, हठीसिंघ १३, किसनसिंघ १४, .देईदास १५, जसवतसिंघ १६, सादूळसिंघ १७ ।

१३२६ भटी रायपाळ सीहावत राव मालदेजीरै चाकर रहतो पटै खीवसर, अटवडो, खेजडलो नागोररा गाव इतरा हुता रावजी चद्रसेणजीरी चाकरीमे रह्यो रायपाळ ।

१३२७ भाटीरायपाळोत राजा भगवानदास कछवाहेरो चाकर ।

१३२८ भाटी गोपाळदास आसावत पातसाही चाकर हो सो सवत १६७१ रावळै वसियो किताईक गावासू दुधोड पटै पायी ।

१३२९ दयालदास गोपाळदासोन सवत १६७७ रावळै वसियो डलैवीरो पटो दियो पछै मवत १६७८ भाद्राजग गावा २४सू परै दिवी पछै जाळोररी हाकमी दिवी ।

१३३० जाळोर हाकम जद दयालदास महेचा रायमल उदैसिंघोतनू पकड रोकियो थो पछै छोडियो दुधोडसू वाहर गुडो दियो हो उण गुडामे दयालदास हो रायमल मेवाडसू महेचा चादा वाघावतनू ले दुधोड दयालदास माथै आयो दयालदास माराणो दयालदासरो वडो डील हो ।

१३३१ भाटी दयालदासरा बेटारी विगत – केसरीसिंघ १, राजसिंघ २, छीतरदास ३ तेजसी ४, भगवानदास ५।

१३३२ भगवानदास दयालदास भेळो काम आयो।

१३३३ छीतरदास पहला गोपाळदासजीरै बदळे चाकरी करतो संवत १६९२ छाडाणो कर अमरसिंघजीरै गयो पछै जोधपुर आयो भाद्राजण राजसिंघ भेळी पटै पायी. पछै राजसिंघ छीतरदासनै मारियो।

१३३४ केसरीसिंघ दयालदासोत खेजडलो पटै पायो।

१३३५ केसरीसिंघरा बेटारी विगत - हरीसिंघ १ सूरसिंघ २, उदैभाण ३, चतुरभुज ४, बोडारो भाणेज ५, सुजाणसिंघ ६, हरिसिंघ ७।

१३३६ केसरीसिंघ राव रायसिंघोत समरसिंघोतरै चाकर रह्यो।

१३३७ हरिसिंघरै बेटारी विगत – वीरमदे १, लाखो २, दुरजणसिंघ ३।

१३३८ भाटी आसा रायमलोतरा बेटारी विगत – नारायणदास १, रूपसी २, डूंगसी ३, ठाकुरसी ४, सुरजण ५।

१३३९ नराणदास रायमलोतरो कछवाहा राजा मानरै आंवेर चाकर रह्यो।

१३४० भाटी रायमल सीहावतरा बेटारी विगत – जैसो १, राणो २, अखैराज ३, भाखरसी ४, किसनदास ५।

१३४१ जैतमाल सीहावतरै काम आयो छोरू न हुवो।

१३४२ मावत उरजणोतरै बेटो आपमल, आपमलरै आल्हण, कूंपो महाराजोतरै चाकर हुवो सो कूंपै माथै काम आयो।

१३४३ आपमलरो वीरम मोहलासू झगडो कर काम आयो लाडणू सीहाजीरै वैर।

१३४४ भारमल मावतरो।

लवेरारा सिरदारांरी पीढियां

१३४५ कलकरण १, जैसो २, आणद ३, नीबो ४, मान ५, सुरताण ६, रघुनाथ ७, भीम ८, इंद्रभाण ९, साहबखान १०, सुजाणसिंघ ११, अणदसिंघ १२, दोलतसिंघ १३, जैसिंघ १४, केसरीसिंघ १५, उमेदसिंघ १६।

१३४६ भाटी केहररो कलकरण, कलकरणरो जैसो जैसारै चार बेटा हुवा – अणद १ जोधो २, भैरूदास ३, वणवीर ४।

१३४७. पहला लद्रवो भाटियारो वास हुतो पछै गोइददास मानावत आबादान कियो नाम लवेरो प्रसिद्ध हुवो।

१३४८ भाटी जेहो हडबू साखलारो दोहितो ।

१३४९ जैसाजीरी बेटी लखमीबाई रावजी सूजाजीरी राणी कवर वाघाजीरी मा ।

१३५० अणदरै नीवो, नीबारै मानो, मानारै गोइददास ।

१३५१ लवेरारा सिरदाररो वडेरो भाटी नीबो जैताजी कूपाजी साथ समेळ काम आयो ।

१३५२ महाराज सूरजसिघजीरै कवरपदै ही गोइददास प्रधान हुता ।

१३५३ सवत १६६३ लवेरो आसोप दोनू महाराज सूरजसिघजी गोइददासजीनू पटै दिया ।

१३५४ सवन १६७१रा जेठ सुद ८ अजमेर काम आया ।

१३५५ पतो भादावत वडो डील हो गोइददासजी साथ अजमेर काम आयो ।

१३५६ गोइददासरै बेटो जोगणीदास पटै गावा च्यारासू गाव वीजवाडियो महाराजा सूरजसिंघजीरो उमराव जिणानू राजा मान कछवाहारा चाकररो हाथी मस्त जिणा घोडासू उठाय सूडसू दातासू सालियो जोगणीदास दातामे पोयोडै तीन कटारी हाथीरै कुभाथल वाही राम कह्यो सवन १६६८ पातसाहरी फौज दिखणमे आवै जद ।

१३५७ रामसिंघ १, प्रथीराज २ गोइंददास मानावतरा वेटा महेची पूरावाईरी कूख उपन्या पाचवो बेटो वेणीदास गोइददास मानावतरै ।

१३५८ भाटी नरहरदास गोइददास मानावतरो साता गावासू डाव्र पटै ।

१३५९ ओ हाथी राजा मान राजा सूरजसिंघजीरी निजर कियो. किताईक वरमा पछै ऊ हाथी उदैपुरमे साह्ज.दा खुरमरी निजर सूरजसिघजी कियो ।

१३६० भाटी सुरताण मानावतरो मुहतो केसो जिणनू गोइददास मानावत रावळरै वापो सवत १६६८ महाराज सूरजसिघजी दिखणमे हुता उठासू वीख सुरताणजी घरै आय केसो मुहतानू मारियो गोयंददासजी सुरताणजीनू घरती माहेसू कढाया ।

१३६१ सुरताणजी नागोर राणा सगररो चाकर रह्यो. सगरजी भीवडा दिवी राठोड नरसिंघदास कला रायमलोतरो सूरसिंघ सुदरदास रामसिघोत आसू भावका खानाजगी हुई नरसिघदास सूरदास सुदरदासनू मार मुवो सुरताणजी सवत १६६८ रा जेठ सुद ८ ।

१३६२ भाटी रुघनाथ उजैण धावो पाडियो जद बुदेलै भावसिंघ सुखपाळमे घाल उठायो जतन किया. किसनो पातो रुघनाथरै साथ घावा पडियो हो ।

१३६३ भाटी प्रथीराज गोइददासोतरी सोढा मोहै भगवानदास स्त्रिवी सोढांरी वार झगडो कर भाटी सुंदरदास काम आयो ।

१३६४ नरहरदास गोयददासोत जिणरै पटै डावर गावा मातसू ।

१३६५ वेणीदास गोयददासोतरै पुरामे है निणसू बेटा दोय हुआ – मामसिंघ १, प्रथीराज २ ।

१३६६ भाटी सुदरदास सुरताणोत काम आया तिणरो उवाको सवत १७०४ वरसे माह वद ५ हुवो ।

१३६७ नागोररो गाव डेह भाटी सवळदास सुदरदास सुरताणोतरो मत्ताईस जणांसू काम आयो गाव डेह लाडणूसू जोधो इदरभाण केहरसिघोत माथै आयो जद ।

१३६८ उण हीज दिन सवळसिंघरा रजपूता जोधा इद्रभाणनू मारियो ।

वीकमकोररा भाटी

१३६९ भाटी सुरताण १, अचळदास २, महेसदास ३, किसोरसिघ ४, जैतसिघ ५, गुमानसिघ ६, हिंदूसिघ ७, पहाडसिघ ८, जुझारसिघ ९ – अै वीकमकोररा सिरदारारी पीढिया ।

वालरवारा भाटी

१३७० भाटी जैसो १, जोधो २, गमो ३, किसनो ४, कान्ह ५, हरिदास ६, मुकददास ७, रामसिघ ८, रणछोडदास ९, उदैभाण १०, जैतसिघ ११, रतनसिघ १२, वुधसिघ १३, कवर सादूळसिघ १४– वालरवारा सिरदारारी पीढियां ।

माणकलावरा भाटी

१३७१ भाटी जैसो १, भैरूदास २, सूरो ३, साकर ४, डूगरसी ५, हरदास ६, ईसरदास ७, कूभो ८, राम ९, जैसिघ १०, सूरतसिघ ११, सगतसिघ १२, रतनसिघ १३ – अै माणकळावरा भाटी भाया भैरूदासोतरी पीढिया ।

१३७२ राम कूभावत भाटी गाव रामपुरो वसायो ।

वालरवो

१३७३. रुघै मुहते पातारा विसर वणाया हुता जिणसू पाता रुघानू मारियो. वालरवारै सिरदार रुघनाथसिंघ भाटी रुघारा वैरमे पातानू मारिया ।

सरढ

१३७४. रावजी जोधाजीरी वारमे सरढरो धणी जसाभाई भाटी रावत भादो हो. हमै सरढ वरसिंघा भाटियारै है ।

सेत्रावो

१३७५ रावत लूणो सेत्रावारो धणी रावजी जोधाजीरो माहृडो जिण सारण घोडी जोधाजीनू दिवी ।

गुडो

१३७६ ईसररो ठाकुरसी जिण दुरगदासरी मदतसू चवरी पोतरारा किंवाड गुडै आणिया, राणाई पायी ।

१३७७ ठाकुरसी १, सायवखान २, भाखरसी ३, मालदे ४, जीयो ५, जैसिंघ ६, ठाकुरसिंघ ७ ।

१३७८ सवत १७४० रो जनम कनीराम रामसिंघोतरो संवत १८३२ रा जोधपुरमे रामसरण हुवा बरस तयाणूरी ऊमर हुई सवत १८२५ कानीरामजी मनीवज बीकानेरसू जोधपुर आया ।

१३७९ राठोड प्रथीराज प्रभुओत, राठोड महेसदास दळपतोत, ऊदावत भीम कल्याणदासोत - या तीनानू अेक सरीखी लिखावट महाराज शिवजीरा खास रुकामे पछै महेसदासजी जाळोर पायी, गढपती हुवा जिणसू लिखावट आगै न रह्री प्रथीराजरै मनसव घणो हो जिणसू वचनात् नही नै लिखावतू लिखीजतो ।

जसोल

१३८० रावळ तेजमाळ भारमलोत फाटा तळाव माथै सातवीसू जसोळ ठाकुराई कीधी।

समा यादव

१३८१ वेळावल समो सिंधमे वडो दातार हुवो ।

१३८२. समारै जिसी सखावत किणमे ही न हुयी ।

१३८३ वगो वलार भेळा वतळायीजै ।

जाड़ेचा यादव

१३८४ माहोरमे · ··

१३८५ सिकदर फीरोज फतैखा वगेरा प्रतापीक जाम हुवा जामा कनासू भाटी ऊनड सिंधा सात ही लिवी ऊनड जाम कहाणा ।

१३८६ जाम ऊनड साढा तीन करोड़ रुपियारो सिंघासण छत्र दे सात ही सिंध सूधा कवी सावळनू दिवी ।

१३८७ जाम ऊनडरा बेटा चावडा कनासू कछ लिवी ।

१३८८. जाडेचा हमीररा बेटा तीन — खगार १, राहिब २, साहिब ३ ।

१३८९. रावळ जामरै नै राव खगाररै बडो जग हुवो है।

१३९० झारो मिरहर डूगरा, कारो वेकाणाह ।
माभी खेगो वकडो, नमै न सुरताणांह ॥

१३९१. समहर छूटो सिंघ ज्यू, बूटो बडी बलाय।
चोखी करि-करि चाकरी, खाग-तणै वळ खाय ॥

१३९२. मुसळमान बूटो चचर राव खगाररी चाकरीमे रह्यो पबो, मोकळसी — अै ही राव खगाररी चाकरीमे रह्या ।

१३९३ राव खगार हालानू कछ माहेसू काढिया उवै जाय हालाहर वसिया ।
खाटी राव खगार, भारमल भुगती धरा ।

१३९४ भारमल दिलीरा पातसाह आगै वाघ मारियो. पातसाह राजी होय मोरवीरो परगणो दियो ।

१३९५ जाडेचामें साहव थाटरो धणी, खगार पाटरो धणी ।

१३९६ भुज सहर राव खंगार वसायो ।

१३९७. भुजरा रावांरी पीढी लिखते — फूलो १, लाखो २, हमीर ३, सूमल ४, लाखो ५, ऊनड ६, सिधराज ७, जाम ८, लाखण ९, भीम १०, अमर ११, जेहो १२, हमीर १३, नगराज १४, खगार १५, भारो १६, मेघ १७, तमायची १८, रायधण १९ पराग २०, गहडर २१, देसल २२, लाखो २३, गहडर २४, रायधण २५ ।

१३९८ पावर कछरो परगनो है ।

१३९९. चवदै चाळा कछ चवदै पडगना है पडगनानू चाळ कहै कछ धरा खावै परा जीतै नगो कोम. आसापुरारो वर हो कछनू कोई जीतसी नही ।

सरवहिया यादव

१४०० सरवहियो नवघण गिरनार-पती जिणरी धाय वहन नाम जायल, अहीरण जात, अति रूपवती, देवीरो अवतार, घणो वित्त ले सिंधमे गयी सोरठ त्रिण-काळ पडियां सिंधरो पातसाह सूमरो जिण जायलनू घरमे घालणी

विचारी अै समाचार जायल नवघणनै लिखिया. नव लाख घोडासू नवघण सिंधमे आयो नव लाख लोवडियाळरी क्रामू सूमरानू मार सिंध लिवी ।

१४०१. आघो अरब सरवहियै राव खगार लूणपाळ मिहडनै दियो ।

१४०२. गिरनार राव खगार सरवहियो हुवो जिण पचास कोड नै नवमी सोरठा महडू लूणपाळनू दिवी दूजो राव खगार जाडेचो हुवो जिण भुज वसायो ।

१४०३. जूनागढरो धणी राव खगार जिणनू वावळरी डाळ माथै बैठै छुमण चारण दया पाळण तयार कियो–

हूं जाणू द्रह वञ्ज्रडी, जिण भाखे जिण लग्ग ।

ओ दूहो सुणाय नै ।

१४०४. राव खगार गिरनाररो धणी सरवहियो हुवो. कछरो धणी जाडेचो हुवो।

कछवाहां

१४०५. कछवाहांरो राज थेटू पूरबमे रोहितासगढ जठै उठासू नरवर वसिया नरवरसू दोसै ठकुराई बाधी दोसासू आबेर आबेरसू जैपुर ।

१४०६ आबेरसा राजारी पीढिया लिखते–राजा दूलैराय १, राजा काकिल २, राजा हणुमतसी ३, राजा महड ४, राजा पजून ५, राजा मलैसी ६, राजा वीजळसी ७, राजा राजळ ८, राजा कल्याणसी ९, कुतल १०, जूणसी ११, उदैकरण १२, वीरसिंघ १३, वणवीर १४, चद्रसेन १५, प्रिथीराज १६, भारमल १७, भगवतसिंघ १८, मानसिंघ १९, जगतसिंघ २०, महासिंघ २१, जैसिंघ २२, रामसिंघ २३, किसनसिंघ २४, विसनसिंघ २५, सवाई जैसिंघ २६, माधोसिंघ २७, प्रतापसिंघ २८, जगतसिंघ २९, सवाई जैसिंघ ३० ।

१४०७ राजा उदैकरण कछवाहो आबेर-पत जिणरै तीन बेटा हुवा – वरसिंघ १, नरसिंघ २, वालो ३. वरसिंघ आबेररी गादी बैठो जिणरा राजावत. नरसिंघरा नरूका. वालारो मोकळ, मोकळरै सेखो सेखारा सेखावत ।

१४०८ कछवाहारी वसावळी–कुतल १, जीवणसी २, उधरण ३, चादणो ४, प्रिथिराज ५ राजा प्रिथीराजरा राजावत कहाणा

१४०९ राजा प्रिथीराजरै बेटा तेरह–भारमल १, रतनसी २, भीव ३, सागो ४, बळभद्र ५, सुरताण ६, परताप ७, जगमाल ८, रूपसी वैरागर ९, डूगरसी १० कल्याणमल ११, गोपाळ १२, चत्रभुज १३ ।

१४१०. नाथो गोपाळरो जिणरा नाथावत कहीजै जगमालरो खगार तिणरा खगारोत कहावै ।

१४११. कछवाहा राजा प्रिथीराजरो भीव, भीवरो राजा आसकरण ।

१४१२. प्रिथीराजरो राजा भारमल संवत् १६३० सीकर मुवो, सती हुई ।

१४१३ राजा भारमलरा वेटा – भगवतदास १, भगवानदास २, राजा जगनाथ ३, सिलहदी ४, सुदरदास ५, सादूळ ६ ।

१४१४ राजा भारमलरा वेटा – छत्रसिंघ १, हिंदूसिंघ २ ।

१४१५ सूरसिंघ १, माधोसिंघ २, प्रतापसिंघ ३, राजा मान ४, अै राजा भगवंतसिंघरा वेटा ।

१४१६ भारमलरो राजा भगवतदास भगवतदासरो राजा मान राजा मानरै वेटा– जगतसिघ १, भावसिंघ २, सगतसिघ ३, दुरजणसिंघ ४, सवळसिह ५, कल्याणसिंघ ६, हिम्मतसिंघ ७, स्यामसिघ ८ ।

१४१७ मानसिंघ भगवतसिंघोत परमार पचायण करमचंदरो दोहितो ।

१४१८ कछवाहो राजा मान राव मालदेजीरो रायमल जिणरी वेटी सतभामावाई परणियो ।

१४१९. महाराजा रायसिंघजीरी वेटी अहजनकवर जैपुररो राजा मानसिंघ जिणनूं परणायी ।

१४२० कछवाहै राजा मान वाधूगढरा राजा रामसिंघ कनासू पेसकसी लीवी नहीं ।

१४२१ अटकरो किलो कछवाहै राजा मान करायो अकवररै नवाव ।

१४२२. कंवर जगतसिंघ मानसिंघोत कछवाहै खुरासाणियांरै तरवारारै लोहरी मूठ दूर करायी, काठरी मूठ दिरायी ।

१४२३ मान राजा कछवाहो जिणरो वेटो जगतसिंहजी जैतारणरो धणी रतनसिंघ खीवा ऊदावतरो दोहितो कुवर पदै देवलोक हुवो ।

१४२४ मानसिंघ भगवतसिंघोत महासिंघ जग(त)सिंघोत ।

१४२५ सवत १६७३ महासिंघजी देवलोक हुवा जद द्योसारो टीको जैसिंघजी पायो, छव वरसरै द्योसो पायो ।

१४२६. संवत १६७८ भावसिंघ मानसिंघोत राम कह्यो जद इग्यारै वरसरै वडै जैसिंघ आंवेर पायो ।

१४२७. सवत १६७८ राजा भावसिंघ राम कह्यो जद आंवेर जैसिंघ पायो ।

१४२८. राजा जैसिंघ महासिंघोत सवत १६६८ जनमियो आसाढ वद १ वार सुक्र सवत १६७३ राजा महासिंघ राम कह्यो जद द्योसारो टीको राजा जैसिंघ पायो, आंवेर राजा भावसिंघ मानसिंघोतरै हुवो ।

१४२९. संवत १६६८रा प्रथम आषाढ वद १रो जनम कछवाहा राजा वडा जैसिंघरो।

१४३०. मानसिंघ भगवतसिघोत महासिंघ जगतसिघोत मेडतिया मधोदासोत जैमलोतरो दोहितो जैसिघ महासिंघोत सीसोदिया साहजी उदैसिहोतरो दोहितो जैसिंघ विसनसिंघोत खेरवै जोधो कासीदास जिणरो दोहितो।

१४३१ कछवाहे राजा वडै जैसिंघजी दिलीमें जैसिंघपुरो वसायो।

१४३२ आबेररो राजा जयसिंघ महासिंघोत राजा सूरजसिंघजी उदैसिंघोतरी बेटी मरगावतीबाई परणियो जोधपुरमे।

१४३३ बुरहानपुर हाडा राव रतनरी हवेली कनै डेरा हुवा वडा जैसिंघजीरै मास दोय असमाध रही, पक्षाघात हुवो।

१४३४ संवत १७२४रा आसोज वद ५ बुधवार रात घडी ६ पाछली हुती जद सहर बुरहानपुरमे राजा जैसिंघजी राम कह्यो पक्षाघात हुवो हो, दोय महीना खेद रही।

१४३५ सवत १७२४रा आसोज वद ५ बुधवार रात घडी ६ पाछली रही जद राजा कछवाहे वडै जैसिंघ राम कह्यो बुरहानपुरमे।

१४३६ तपती नदीरै माथै मोहणी-सगमरै घाट दाग दिराणो।

१४३७. राजाजीनै दाग पडियो तपती नदी ऊपर मोहणी-सगम जठै।

१४३८ हाडा राव रतनरी हवेली कनै डेरो हुतो राणी अेक राठोड वीकावतजी सत कियो वडारण पातर खवास अै ११ बळी।

१४३९ राणी अेक राठोड वीकावत साथ बळी इग्यारै पातर खवास साथ बळी।

१४४०. राजा जैसिंघ सात हजारी जात सात हजारी अरदुअस्पा सह अस्पा मनसब हो।

१४४१ जैसिंघजी देवलोक हुवा जद आपरै सात हजारी मनसब हो च्यार हजारी मनसब कुवर रामसिंघरै हुतो दोय-हजारी मनसब कुवर कीरतसिघरै हुतो।

१४४२ कवर रामसिंघ जैसिंघोत मनसब च्यार-हजारी जात च्यार हजार असवार।

१४४३ कवर कीरतसिंघ जैसिंघोत मनसब दोय-हजारी जात अठारह सौ सवार।

१४४४ कुल मनसबरा दाम वीस करोड इकताळीस लाख ज्यांरा रुपिया इकावन लाख अठाईस हजार।

१४४५ जैसिंघ विसनसिंघोत खैरवै जोधो कासीदास जिणरो दोहितो।

१४४६ सवत १७८८ सवाई जैसिंघ जैपुर वसायो आवेर राज करता कछवाहांनू हजार वर्ष हुआ जठा पछै जैपुर राजधानी ठहरायो।

१४४७. राजा सवाई जैसिंघजी वैरागणियानू परणाय मथुरामें, वृदावनमें वैरागपुरो वसायो ।

१४४८ विवाह करम जान करमादी करता देख हित राधा वर लेलियानू व्रंदावन माहेसू सवाई जैसिंघजी काढ दिया हा ।

१४४९ सवाई जैसिंघ हाडा महाराव भीमसिंघजीनू भीमडो कहतो ।

१४५०. पछै गोपाळसिंघ भदावररो जिणरो वेटो भदोरियो राजा जिण कनै अठारै लाख रुपया ले सतारै गयो ।

१४५१. पछै सवाई जैसिंघजीरा लिखणमूं वाजेराव उजीण आयो. उजीणरा सोवेदार नागर ब्राह्मण छवीला वहादुर, दया वहादुर ज्यां दोनानू मार मालवा सतारा. लारै घालियो ।

१४५२. दीपसिंघ कुभाणी पुसकरजीमें महाराज जैसिंघजीरै हाथरो संकळपरो जल ले रतनवारो सासण नागल जवत हुवोडो वहाल करायो ।

१४५३ गगवाणै राजाविराजरै नै सवाई जैसिंघरै राड हुई जद सेरसिंघजी कुसळ-सिंघजी राजा जैसिंघजीरै काम आया ।

१४५४. जैपुररो राजा माधोसिंघजी हाथरी दसही आगळियामे वीटियां राखता, आ राणाजीरी चाल ।

१४५५ जिलायरा राजावतजी राम-सरण हुवा माधोसिंघजी काण करावण आया. राघवसिंघ सभामें नाला मारिया ।

१४५६ तुवरावाटीरो गांव मांवड़ो मडोली जठै जाटरै जग हुवो कछवाहांसूं ।

१४५७. धुलारो धणी दलेलसिंघ रथसूं उतरतो हो गोळारी लाग रज-रज हो गयो ।

१४५८ वारै हजार घोड़ो जाटरै कनै हुतो कछवाहासू जग हुवो जद ।

१४५९. सवत १८२४ जाटसू कछवाहां राड कीवी ।

१४६०. मालपुरारो गाँव इंदोळी झगड़ो हुवो लखुआ आगै राजा प्रतापसिंह भागो जैपुररो धणी ।

१४६१ हकीम पैंदरुसजीनू आगरासू महाराज जैसिंघजी आणिया जैपर. वां फिरंगीरो दारू काढियो ।

१४६२. जैपुररो राजा पाट वैसै जद मैणो तिलक करै

१४६३. आवेरमें मुदे मानका केकान केकानरा पोता पारीक पुरोहित कछवाहांरा गुरु है ।

१४६४ जैपुररो राजा सदा रामानुजरो तिलक करै गोविंद-देवजीरै मदिर जावै जद माधव सप्रदायरो तिलक करै गोकुळचद्रजी १, मदनमोहनजी २, गोकळनाथजी ३, आंरै मदिर जावै जद वल्लभकुलरो तिलक करै. सिव सकती, गणेसरै दरसण जावै जद छव तिलक करै ।

१४६५. वेस्यारी, भाडांरी चौथाई जैपुर राज्यमें लिरीजै आ रीत जैसिंघजीसू बंधी. उण चौथाईरो पईसो वार-तिहुवार वेस्यावानूं दिरीजतो. राजरै हराम हुतो ।

१४६६. आंबेर थाप-उथापरा धणी खगारोत नाथावत है सेखावत नरूका नगारारा चाकर है ।

१४६७ आबेर सात उमराव जिके साता किलेदार है किलेदारी उतरै नही ।

१४६८. ढूढाड़में बारहे कोटडिया है जिके लिखीजै है नाथावत १, खगारोत २, सुरताणोत ३, कल्याणोत ४, कुभाणी ५, पूरणमलोत ६, बळभद्रोत ७, सिव ब्रह्म-पोता ८, पचारसोत ९, वाकावत १०, भारमलरा ११ ।

१४६९. वांडी नदीरो उगवणो तट तो राजावतारो, आथमणो सेखावतरांरो ।

१४७० जैपुररा सारा उमराव जैपुर राजारी खिदमतमे रहै, उणियारै राव राजा रहै ।

१४७१. नगरसू उठ रावत ईसर गोडोन वसायो ।

१४७२. राजावत सग्रामसिंघरै पाच बेटा हुवा – गजसिंह १, विजैसिंघ २, अणदसिंघ ३, रूपसिंघ ४, हिम्मतसिंघ ५ ।

१४७३ कछवाहो राजावत फतैसिंघ मूळी कहीजतो मूल नक्षत्रमे जनमियो हो तिणसूं वरवाडा वगेरै ठिकाणा राजावत फतैसिंघोत है ।

१४७४. वरवाडै राजावत मोहनसिंघोत विक्रमादितजी हुलकर मल्हारावसू आछो लड़ियो जद महाराज माधोसिंघजी राव पदवी दीवी ।

१४७५. विक्रमादीतरो जवाहिरसिंघ, जवाहरसिंघरो रामसिंघ, रामसिंघरो सलामतसिंघ हमें वरवाडै भलो दातार है ।

१४७६. धुलारा राजावत दुरजसिंघोत ।

१४७७. नराणारो धणी खगारोत भोजराज पातसाही चाकर दिखणमे गढ नळदुर्ग जठै काम आयो ।

१४७८ गीजगढ़ ठिकणो ढूढाडमे चापा सामसिंघ देवीसिंघोतरो ।

१४७९. खाचरियावासरा सिरदाररै पहला रामगढ हो, खाचरियावास ढूढाडरो है ।

१४८० मनोरपुररो धणी सेखावत लूणकरणजी ज्यांरो छोटो भाई रायसलजीनूं अेक गाँव दियो. रायसलजी पातसाहरी चाकरी लागा दिलीरै पातसाह बारह-हजारी मनसब दियो रायसलजीनै ।

१४८१ सेखावत रायसलजीरै बारा बेटा जिणमे पांच निरवस गया, सातारो वंस रह्यो ।

१४८२ गिरधरजी १ भोजराजजी २, लाडखानजी ३, ताजखानजी ४, हमीरमल्जी ५, परसरामजी ६, हररामजी ७ – आ सातारो वस रह्यो ।

१४८३ निरमलजीरा सेखावत रावजीका बाजै निरमलजी रावजी कहाणा सीकर रावजीरा है ।

१४८४ लाडखानजी, ताजखानजी अै पातसाहरा दिया नाम है ।

१४८५. खडेलारो राव सेखावत केहरसिंघजी नवाब अवदुल्लाखासू जग कर काम आयो–जद साथ नव चारण काम आया ज्यामे दोय बारट, दोय नगरीरा काम आया ।

१४८६ खडेलै राजा केहरसिंघ अवदुल्लाखा नवावसू जग कर काम आयो. इण साथ नव चारण काम आया

१४८७ सीकररा धणीरी पीढिया – रायमल १, निरमलराव २, गंगाराम ३, सामराम ४, जसवतसिंघ ५, दौलतसिंघ ६, सिवसिंघ ७, चांदसिंघ ८, देवीसिंह ९, लिछमणसिंघ १० ।

१४८८ सेखावत सिवसिंघ सीकररो धणी जिण नवाब कनासू फतैपुर लियो वीकारो भाणेज सेखावत सादोजी जिणनू मासीरै धणी जूजणूरै धणी दिवाणजी पुत्र कर राखियो दिवाणजीरै पुत्र नही जिणसू जूजणू सादाजी अपणायी ।

१४८९ सेखावत सिवसिंघ फतैपुर लियो जिण ठाय फतैपुररो नवाब कयामखानी जानी साहब तीन महीना सीकर लडियो, सीकर छूटी नही

१४९० सेखावत सादा महाराज बखतसिंघजीरी तावीतमें रामसिंघजीसू झगड़ो हुवो जद गाव रिया डेरा सेखावातांनू खबर आयी– क्यामखानी गुड पाखर फतैपुर आया, मदन करण वेगा आवज्यो, हाल तो म्हे गंतिया छै. जद कुवर चांदसिंघ सिवसिंघोत नै किसनसिंघ सादावत दोनू पांच हजार लोक ले चढिया क्यामखानी भागा सेखावता वटका कर वगाय दिया ।

१४९१ तीस हजार सिपाही ले पठाण मोडै चढ मुरतजाखां दिलीसू खिलत ले ढूंढाड़ माथै आयो. सीकररै धणी सेखावत देवीसिंघ भायानू साथ ले खाटू

कजियो कियो रिख-पूनमरै दिन. तीन हजार दादूपथी काम आया. वलारारो धणी खेतावत काम आयो देवीसिहरा भुजरै तीर लागो मुरतजाखा भागो. पठाण घणा माराणा फौज लूटी गयी फतै सेखावत कीवी ।

१४९२ इण चाकरीसू पचास रूपिया देवीसिंघरी थाळीरा रोजीना जैपुरसू कर दीना ।

१४९३ सीकर सेखावत सिवसिंघरो वडो बेटो समरथसिंघनै अेक बाई जोधारी भाणेज बाईनू साहपुरै उमेदसिंघजीनू परणायी

१४९४. कीरतसिंघ १, उमेदसिंघ २, पालीरा चापावतारा भाणेज सेखावत सिवसिंघरा कवर वडा जोरवान ज्यानू सिवसिंघ मराया समरथसिंघरै हाथ ।

नरूका

१४९५. पाघरा पातसाह–ओ नरूकारो विरद ।

१४९६ राजगढ १, प्रतापगढ २, रामगढ ३, लिछमणगढ ४, गोवदगढ ५, किसनगढ ६, वळदेवगढ ७, पिरोजपुरो ८, गाजीरो थाणो ९, माला खेडो १०, अलवर ११– इत्यादिक वावन गढ माचेडीरा रावराजारै है ।

१४९७ माचेडीरो रावराजा प्रतापसिंघ जैतावतरो भाणेज वारणा वालारो ।

१४९८. रावराजा वखतावरसिंघ माचेडीरो पहला कुचामण परणीज पछै त्रिसिंगिया वडगूजरांरै परणियो ।

१४९९ कछी सिंधरी गाया, कछरी साढा, पटियाळ ह्यरफरी भैंसिया, घोड़िया काठियावाडरी, हजारा रावराजा वखतावरसिंघ मगायी ।

१५०० पथ हर देव ओजो १, माणक मेथीलनी २, सवळनाथ जोगी ३, पालावत बारट उमेदजी ४–आ च्यारानू रावराजा वखतावरसिंघ मानिया ।

१५०१ समरथसिंघ मर गयो सीकररो धणी नाहरसिंघ समरथसिंघोत जैपुर हुतो जद चादसिंघ वुधसिंघ वैरीसू आया पठाण मसतेखानू मार मैसरी चितलागियो जात नाव दीपचद नाहरसिंघरो कामेती जिणनू मार सीकर लीवी ।

१५०२. मेडतियो सेरसिंघ लुळवारो धणी जिणरी बेटी साहिवकवर सिवसिंघजी परणियो चादसिंघ, बुधसिंघ दोय वेटा हुवा ।

१५०३. भडैचसू कजियो हुवो जद परमरामजीको उमेदसिंघ और चादावत भाई जालमसिंघ दोनू आछा हुवा सीकर देवीसिंघजी आनू वधाया ।

१५०४ जूंजणूंरा भोजराजोत ज्या हेटै नव सौ गाव है ।

१५०५. खलारै सलार ठिकाणो. गुवाररै जैसिंघ, जैसिंघरो वाको, वाकारो वीरम, वीरमरो रतनो, रतनारो भुजवळ, भुजवळरो साकर. ठिकाणो मांडो ।

१५०६ साकररो साडल, साडलरो सावळ, सावळरो देईदास पटै मोडी ।

१५०७. सेखावाटीमे करनोतानू नीवावत कहै ।

१५०८ झटकैरो मारियोडो साकररो जानवर सेखावत न खावै सूर न खावै. नगारारै झालरी नीळी राखै ऊटारी जुन नीळी राखै नीलां निसाण राखै. सेख बुरह्मानरी दवासू मोकळजीरै सेखो हुवो जिणसू ।

१५०९ सौ गाव कासलीरा तीन सौ गांव फतैपुररा, दोय सौ गांव खडेलारा, छव सौ गाव सीकर हेटै छै ।

टोडा

१५१०. रामसिंघ तोडारो राजा भीव अमरसिंघोतरो, राठोड जेतारणिया नराणदास पता डूगरसिंघोतरो दोहितो –

तोडा-वाळा रसिया ! म्हारै अमल किया घर आव ।

पड़िहार

१५११. पडिहारारै गोत्रजण देवी ।

१५१२ पडियार नाहडराय मडोवर गढ करायो, पुसकरजी बधायो ।

१५१३. पड़ियारा कनैसू रायपाळ धूहड़ोत मडोवर लियो, छूट गयो ।

१५१४ अेह न मदची रूपडा,
वुध घर पडियार ।

१५१५ पडियार रूपडियै राणै अग्यारमी वेटी वुधा भाटीनू परणायी ।

१५१६ पडियार राणो रूपडियो जिणरै वारै वेटी हुई गयाजीमे इण कही – वारै ही कन्या वारै रावानू परणावसू इग्यारै कन्या तो इग्यारै रावानू परणायी. वारमी कन्यानू राव न मिळियो जद भाटी राव केल्हणनू वारमी वेटी परणायी उण दिनसू पडिहारा भाटियारै सनमध हुवो ।

१५१७ पडियार वेळो वीकाजी साथै गयो बीकानेर उठे वेळासर गाव वसायो ।

१५१८ पडियार अेक भाई तवेलारो, दूजो भाई तोपारो दरोगो जोधपुर ।

१५१९. पडियार नाहडराय पूरवसू आय नजणरो वर पाय मारानू मारि मारवाड लिवी ।

ईंदा पड़िहार

१५२०. ईंदारी वसावळी—नाहड़राय १, रूपदे २, मालदे ३, दूलहराव ४, जीवराज ५, भीमो ६, काकू ७, सूर ८, ईंदो ९—ईंदादा ईंदा कहाणा ।

१५२१. ईंदो सूररो बेटो नाहडरावजी उरै आठ पीढिया हुवो जिणरै वसरा ईंदा कहावै ।

१५२२. सूअै पडियार ईंदारा बेटा गोपाळनै मारियो गोपाळसर गाव जठै—गोपाळ ईंदारो देवळ है जाझैरीरो जुहार कहावै ।

१५२३ जाझैरी झगडो हुवो, चित्तो वाग ग्रहेह ।
सूजो मागै झोडकी, भट गोपाळ न देह ॥

१५२४ ईंदो १, वीजळ २, महासिंघ ३, बूटो ४, राणो ५, भीमाळियो ६, टोहो ७ तुरका कनैसू मंडोवर रोहै ले दीधो चूडाजीनू ।

१५२५ गोगूदे उगूणावत जैतमाल सलखावतरो दोहितो नै रावजी चूडाजीरो सुसरो ।

१५२६ भीमलियारै बेटै ईंदै टोहै रावजी चूडाजीनू मडोवर ले दियो ।

१५२७ टोहो रावत कहाणो टोहारो लाखणसी राणो कहाणो ।

१५२८ राणो १, बूटो २, भूमळिग्रो ३, रावत ४, सगरामसी ५, अभूणो ६ जिण उगूणरै सगरामसीहोतनू रावळ माल टीको दियो—लाखणसी टोहावनरै आठ ही बेटा कपूत हुआ जिणसू ।

१५२९ राणा बूटावतरो बेटो हरभू, हरभूरो लाखो वीका जोधावत साथै ईंदावाटीसू वीकानेर गयो लाखो १, राजधर २, रूपसी ३, गोगादे ४, दूवो ५—वीकानेर रिया रामसिंघरै जोधपुर हुतो जद ईंदो दूदो गोगादेओत सीकदार हुतो ।

१५३० दूदारै बेटो हरदास वीकानेरसू छाड जोधपुर चाकर रह्यो पछै नबाब खानखानै माग लियो वडो डील, वडो धरमातमा, वडो पाटावध ठाकर हुतो सवत १६७७ बुरहानपुर राम कह्यो ।

१५३१. कानो राणो उदैसिंघरो परमार करमचदरो भाणेज ।

१५३२. ईंदा जैतसिंघरै बेटै विजैसिंघ भगू सोढानू मारियो चारण वणि पछै वडलूरा ऊहडारै परणियो हुतो सासरै गयो ऊहडा मार नाखियो जदसू ईंदारै ऊहडारै वैर छै ।

१५३३. कलो हरराजोत सायजादारै चाकर रह्यो ।

१५३४ कुंभो हरराजोत करीमखांरै चाकर रह्यो सू इणरै सायै काम आयो।

१५३५ दयालदास हरदासोत अमरसिंघजीरै चाकर रह्यो ।

१५३६ कूकड़ १, केचवाळ २, देवळ ३ अै रजपूत पड़ियारिया रजपूतां माहेसूं निसरिया ।

१५३७ रामचंद देवळां तणो राजा ।

१५३८ लोहियाणै राणो प्रतापसिंघ देवळ, जिणरो रामचंद, रामचंदरो सेरसिंघ, सेरसिंघरो पन्नो छोटी-मोटी बावन कोटड़िया सुधामें देवळारी है ।

सोळंकी

१५३९. सोळंकियारै भारदवाज गोत्र, खेत्रज चामुंडा दोय देवी, महिपाळ पितर, परवर तीन, खिड़ियो चारण, वागड़ियो भाट, कंडारियो ढोली ।

१५४० सोळंकियारै कुळदेवी कटेस्वरी ।

१५४१ वहीचरा देवी अरथ कुक्कटब्रहणी लोक वहचरा कहै ।

१५४२. सोळंकियारी साखरी विगत – दारिया १, भाणगोती २, वाघेला ३, लराहा ४, वालणोत ५, वीरपुरा ६, नाथावत ७, वाराह ८, खाजीय ९ – इत्यादिक है ।

१५४३. सोळंकियारी पीढिया लिखते – सोळंकियारी राजधानी अैलणपुर पाटण– गुजरातमे. वागला १, सुकर २, अरजण ३, अर्जसिंघ ४, दैपाळ ५, मूळराज गुजरातरो राजा चावडो सामतसी मामो नगो जिणनूं मार भाणेज सोळंकी मूळराज अैलणपुर पाटण लिवी, गुजरातरो राज लियो ।

१५४४ मूळराज १, दोणगिर २, राव व्ळ ३, भीम ४, करणसिंघ ५, राव जैसिंघ ६, ईनपाळ ७, कीरतपाळ ८, वाळपसाव ९, वहोडो १०, गोइदराज ११, कान्हडदे १२, मिहला १३ ।

१५४५ आगै गुजरात चावडारै हुती सावतसिंह चावडो गुजरातरो धणी जिणनूं मार सोळंकी मूळराज गुजरात लिवी सावतसिंघरो भाणेज मूळराज ।

१५४६ मूळराज १, चामुंडराव २, वलभराज ३, दुर्लभराज ४, भीमराज ५, कर्णसिंघ ६, राव जैसिंघ ७।

१५४७. भीमदेवरो खेमराज, खेमराजरो देवप्रसाद, देवप्रसादरो त्रिभुअणपाळ, त्रिभुअणपाळरो कुमारपाळ ।

१५४८. सिधराव जैसिंघ भीमदेवरो पोतो करणरो बेटो. इणरै मरजीरो हाथी सिकळस नामै. धजाआमे कूकड़ारो चिह्न ।

१५४९. आडावळामे लखमीनाथ जोगी तापतो हो उणरी कृपासू सोळकी राजा करणरी राणी कवळावतीरै पुत्र सिधराव जनमियो ।

१५५०. सिधराव जैसिंघरी मा कजीजर तळाव खणायो, सहर बाबर वसायो, आडावळा नजीक ।

१५५१ जैसिंघरै पुत्र हुवो नही जद कुमारपाळ राज पायो ।

१५५२ सो सवत ११९९रा मगसर वद ४ पुख नखत्र सूरजवार जद अलहणपुर पाटण सोळकी कुमारपाळ सिधराव जैसिघरी गादी पायी ।

१५५३ सवत ११९२ कुमारपाळ जनमियो सवत १२१५ कुमारपाळ राज पायो. संवत १२२९ कुमारपाळ रामसरण हुवो ।

१५५४ दही थळी वारै गावासू त्रिभुअणपाळरै हृती इणरो बेटो कुमारपाळ अठारै देसांरो राज कियो ।

१५५५. सोळंकी कुमारपाळ- सात वसनरा परतला करा चढाय अठारै दिसा बाहर काढिया ।

१५५६. कुमारपाळ राज-रखी चवदै चमाळीस जिन मदिर कराया ।

वाघेला

१५५७. वाघेला भीलउरा उठियोडा है ।

१५५८ पांच पीढी वाघेला अणहलपूर पाटण राज कियो ।

१५५९ वसतुपाळ तेसठ जग जीतो मोजूदीन पातसारी फौज आवूरी घाटीमें कतल कीनी जद आबूरो वणी परमार धारावरस हुतो ।

१५६० वसतुपाळ घोळकारा राजा वीरधमळ वाघेलारो मत्री हुवो ।

१५६१. वाघेला भास-नरेस कहीजै ज्यारा ठिकाणा पाच - कोठ १, पीथापुर २, गामर ३, साणर ४, गाघारी ५ ।

१५६२ वाधूगढ राजा रामचद वीरभाणरो वाघेलो वडो दातार हुवो. च्यार कोड़पसाव एक दिन किया - नरहर महापात्रनू अेक, भइया मधुसूदन नरहररो पुत्र जिणनू ' , कलावत मिया तानसेननू ' ' ' ।

१५६३. बाघूगढरो वाघेलो राजा जैसिंघदेव जिणरी बेटी विजैकवरबाई राणा भीवसिंघरा कवर जवानसिंघजी परणिया ।

१५६४. विस्वनाथसिंघ, बलदेवसिंघ, लछमणसिंघ अै तीनू कवर जैसिंघदेवरै ।

१५६५ खानजी मोरवाड़ियो वाघेलो ।

वालणोत

१५६६ माडळगढ आगै वालणोतां सोळकियारै हुतो ।

वीरपुरा

१५६७ सोळकी अणहलपुर पाटणसू लूणावाड़ा कनै वीरपुर है जठै वसिया जिणसू वीरपुरा कहाणा ।

१५६८. लवणेस्वररी ऋपासू पाच सै गावामें अमल कियो पावागढरा सुतरामपुररा, रावणपुररा गांव वीरपुरा दबाया ।

१५६९. वीरपुरारी वेटी अवस्य पतिसहगवन करै, वर है ।

नाथावत

१५७०. हाडोतीमे नाथावतां सोळंकियारो ठावो ठिकाणो पतारां ।

१५७१. हाडोतीमे नाथावतां सोळकियारो ठावो ठिकाणो पतारा है. राव राजा वडो मुलायजो राखै है ।

१५७२. तोडै मिहलू वास कियो. मिहलू १, दुरजणसाल २, हरराज ३, सुरताण ४, ऊदो ५, वैरो ६, ईसरदास ७, दळपतिराव ८, आणदराव ९, राव साम १०, वनन तोडडीजी ।

१५७३ वहूजी गोडजी कवरजी श्रीपिरथीसिंघजीरो राजलोक ज्यारो नानो राव स्याम ।

१५७४ राव स्यामरो राव महासिंघ जिणरा वेटारी विगत—जसवत १, भीव २, अरजण ३, हरराज ४ ।

१५७५. सोळकियारी ख्यात लिखते सगरो १, सगरारो देवो २, देवारो त्रिभुवण ३, त्रिभुवणरो भोजो ४, भोजारो पतो ५, पतारो रायमल ६, रायमलरो सावतसी ७, सावतसीरो देवराज ८, देवराजरो वीरमदे ९, वीरमदेरो जसवत १० ।

१५७६ जसवत वीरमदेओतरै वेटा च्यार—दळपत १, दयालदास २, अचळदास ३, चतरभुज ४ ।

१५७७ सोळखी रायमल पतारो पाटणथी राणा रायमल कनै आयो मेवाड माहे जद पहला भोज गांव दियो थो पछै मादड़े सोथा आल्हण अमरानू मार देसूरी लिवी ।

१५७८. सोळकी सावतसी रायमलोतरी वेटी मोटो राजा उदैसिंघजी परणिया. सावंतसीरो दोहितो कुवर नरहरदास ।

१५७९ सोळंकी वीरमदे देवराजोत राणाजीरो चाकर पटै देसूरी हुती अेक वार रावळै चाकर रहतो जद पटै धणालो दियो हो पछै राणोजी मनाय लियो।

१५८०. वीरमदे सोळकीरै बेटा आठ हुवा – जसवत १, आसकरण २, सादूल ३, अखैराज ४, किसनसिंघ ५, भावसिंघ ६, हिंगोळदास ७, वीजो ८।

१५८१. जसवत बीरमदेवोतरै पटै देसूरी हुती सवत १७०२ विस हुवै मुवो।

१५८२. जसवत वीरमदेवोतरै बेटा च्यार – दळपत १, दयालदास २, अचळदास ३, चतरभुज ४।

१५८३ सोळकी सादूल वीरमदेवोतनू मेरा मारियो।

१५८४ सोळंकी किसनसिंघ वीरमदेवोत रावळै चाकर रहतो जद पटै मोसरो दियो हो।

१५८५ किसनसिंघरै बेटा ७ – राजसी १, उरजण २, बळ ३, पीथो ४, राघोदास ५, सूजो ६, सबळसिंघ ७।

१५८६. राघोदास काम आयो सबळसिघ काम आयो।

१५८७. सोळकी गोपाळदास देवराजोतरै कचरो १, कचरारो रतनो २ जसवतरै वास।

१५८८ सोळकी सावळदासोत देवराजोतरै बेटा दोय – धरमराज १, पचाइण २, पचाइणरै मोहणदास।

१५८९. सोळंकी खेतसी सावतसिघोतरै राजा सूरसिघजी परणिया कवर गजसिघजी भाटी गोइददासजी फौज लें गया जद खेतसी सावतसिघोत राणा अमरसिघरै काम आयो।

१५९० सोळकी सागो खेतसीरो नै सोळकी भोपत खेतसीरो राठोड रामसिंघ करमसेणोत बालीसा माथै फौज ले गयो जद भोपत राजा जगतसिघरै काम आयो।

१५९१ सोळकी पूरणमल खेतसिघोत रावळै रहतो पछै सिरियारी दिवी हुती।

१५९२ सोळकी वैरसी खेतसिघोत रावळै चाकर।

१५९३. पूरणमलरै बेटा – हरीदास १, केसोदास २।

१५९४ सोळकी वैरसीरै बेटा – सूरजमल १, उरजन २।

१५९५. सोळकी कचरो खेतसीरो प्रथीराज कचरारो, भलो रजपूत, राणाजीरै चाकर।

१५९६ सोळकी खान सावतसिंघोत सो खभणोर राणा प्रतापरै नै पातसाह अकबररै वेढ हुई जद राणाजीरै काम आयो।

१५९७ हमीर सावतसिंघोत सोमेसररो धणी ।

१५९८. हमीररो राणो काधल राणारो, भोपत राणारो, मोहणदास राणारो, सहसमल राणारो, महेसदास राणारो, लाखो राणारो, कान्ह राणारो।

१५९९ दुरजणसाल हमीररो दुरजणसालरा बेटा – अमरो १, सुंदरदास २, भाण ३ रतनो ४।

१६०० सोळकी साकर रायमलोत जैसिंघजी साकररो. नारायणदास जैसिंघरो।

१६०१ नारायणदासरा बेटारी विगत – जगमाल १ मैरा मारियो, जोधो २, भावसिंघ ३, कान्ह ४ पटै जवडिया।

पंवार

१६०२ परमारारै यजुरवेद माध्यदिनी साखा, वसिस्ट गोत्र, धारायसचियाय दीप देवी, मालाहेत पितर, पीपळरी पूजा।

१६०३ वाकळ १, सचियाय २, सालण ३, कल्याण कुवर ४, कपादे ५, जोग ६– अै छव देवी परमारांरा वसमे हुई।

१६०४ परमारारी पैंतीस साख लिखते – परमार १, पाणीस २, बलसी लोदा ३, घरिया ४, सुर ५, गोहलडा ६, सोढा ७, वहिया ८, जेपाळ ९, भाथी १०, ढल ११, कलोळिया १२, साखला १३, वाला १४, फागुआ १५, कछोटिया १६, टेवल १७, कूकणा १८, भाभा १९, छाहड २०, काला २१, जागार २२, पीथळिया २३, भायल २४, मोटसी २५, ऊमर २६, कालमुहा २७, दूठा २८, सूवड २९, धंध ३०, खेर ३१, डोड ३२, पेल ३३, गूगा ३४, फार्वा ३५।

१६०५ परमार राजा श्रीहरस जिणरो वडो वेटो मुज छोटो वेटो सिंधुराजरो भोज।

१६०६ करनाटकरो राजा तेलपदेव जिणा म्रणालवती वहनरा कहासु घर घर भीख मंगाय मुजनू सूली दियो।

१६०७ परमार राजा मुज मत्रिया वरजता गोदावरी उलाघि करणाटकरा राजा तेलपदेव माथे गयो जगमे तेलपदेव इणनु पकड लियो भाखसीमें दियो. किताईक वरसा वहन म्रणालवतीरा कह्यासु आपरा सहरमे घर-घर भीख मगाय मुजनु सूळी दियो।

१६०८ रिख कपाट जडि गुफामे वैठो हुतो राजा जाय कह्यो – किवाड खोलो. जद रिखि कह्यो – कुण है ? राजा कह्यो – हू राजा छू जद रिखि कह्यो –

राजा तो इन्द्र है. जद भोज कह्यो – किंवाड खोलो, हू दाता छू . जद रिखि कह्यो – दाता तो करण हुवो. भोज कह्यो – किंवाड़ खोलो, हू क्षत्रिय छू . जद रिखि कह्यो – क्षत्रिय तो अर्जुन हुवो. जद भोज कह्यो – खोलो किंवाड़. रिख कह्यो – कुण छै ? भोज कह्यो मिनख छू . जद रिखि कह्यो – मिनख तो धारापति भोज है. तो हाथ लागा विना खोलिया किंवाड़ खुल जासी यूं हीज हुवो ।

१६०९ सालवीनू धारारै कोटवाल कहायो – अमुको कवि भोजराज पास आयो सो पावसमें थारै घरे उण कविरो डेरो हुसी. तू कवि नही जिणसू थारो घर कविनू दिरीजै सालवी राजा कनै जाय काव्य सुणाया –

कवयामि वयामि यामि च ।

१६१०. आबूरै धणी पाल्हण परमार सरब धातू माहे भरतरो भरियो थीतकररो वीख हुतो सू मलाय अचळेसर है. नादियो भरायो जिण विख घालणरा पापसू पाल्हणरै कोढ उघड़ियो जीददेवरो नावो लिख भराय थापित कियो जद कोढ मिटियो.

१६११. राव जगमलरो बेटो मेहाजळ जिणरा बेटारी विगत– रायमल १, पचायण २, जैतमाल ३, कान्ह ४, करण ५, परबतसिंघ ६, परबतसिंघरो सूजो ७, सूजारो लूणो ८. घीगाणै रहे ।

१६१२. रायमलरो बेटो केसौदास राणाजीरै चाकर ।

१६१३. पचायणरो लिखमण जाळोर रहै ।

१६१४. कन्हरै केसरीसिंघ ।

१६१५. परमार मालदेरो सादूळ जिण सादूलरै बेटो रायसलरा बेटारी विगत – जुझारसिंघ १, गजसिंघ २, अजबसिंघ ३, बखतसिंघ ४, आणदसिंघ ५, केसरीसिंघ ६ ।

१६१६. परमार आणदसिंघनू राठोड गिरधरसिंघ करमसिंघोत मारियो राणाजीरी धरतीमें ।

१६१७. परमार सत्रसाल सादूळरो ।

१६१८ परमार कलो मालदेओत जिणरा बेटारी विगत – रामचद १, भानीदास २, गोइददास ३, किसनदास ४, भगवानदास ५, वीठलदास ६, सामदास ७ ।

१६१९. मालदेरै वडो बेटो कलो ।

१६२०. भानीदास कलावतरा वेटारी विगत – नारायणदास १, नरवद २, अखैसिंघ ३, मेवाड माहे छै, सूरसिघ घोड़ारो चाकर देईदास जगरूप मेवाड़ मांहे छै ।

१६२१ परमार आसकरण मालदेरो अऊत गयो ।

१६२२ परमार सुजाणसिंघ मालदेरो काम आयो कछवाहा मानसू वेढ हुई जठै ।

१६२३ परमार रावत जैसो पचायणरो जिणरै ठाकुराई जैतरै हुती. पुत्र किणरै ई हुवो नही ।

१६२४ परमार रावत उदैसिंघ पचायणोत जैसा पछै पाट पायो संवत १६५२ रा सावण सुद १ ।

१६२५ रणथभोर चहुवाण हमीरदेव साको कियो ।

१६२६ परमारांरी ख्यात – रावत सागो १, उणरो रावत महपो २, उणरो रावत राघो ३, उणरो रावत करमचद ४, उणरो पचायण ५, राजा कछवाहा मानरो नानो ।

१६२७ सवत १५८९ विक्रमादीतजीसूं चितोड़ पळटियो जद जैठ सुदी २ पचायण काम आयो ।

१६२८ पचायणरो रावत मालदे पातसाहसू छाड राणा उदैसिघरै वसियो, जाजपुर राणाजी पटै दियो ।

१६२९ सादूळ माळदेरो सागो ही माळदेरो जिणरी वेटी सूरजसिंघजी अराई जाय परणिया इणरी दोहिती आसकवरवाई ।

१६३० परमार सादूळ मालदेरो जिण श्रीनगर वसायो पातसाह जहांगीर अजमेररो सोवो इणनू दियो. सीसोदियो भीम अमरसिंघोतरा कहणासू साहजादा खुरमरी आण मे वापराअजमेरय खुरम सामल हुवो ।

१६३१ सादूळरै रायसल. रायसलरै जुझारसिंह श्रीनगररो धणी १, रायसल २ ।

१६३२ श्रीनगररो राजा परवतराज कहावै आगै लाख पायदळरी ठकुराई हुती– पहाडमे राजा उमराव सरव झपानमे वैसै वासरी करड़ी झपान कहावै. च्यार जणा उपाडै ।

१६३३. परमार राजा कलसाह धारा नगरीसू उठ कमाऊंरो राजा लखमीचंद जिणरी चाकरीमें रह्यो लिखमीचद लोहवोगढ इणनूं पटै दियो पछै कलसाहवे फरमावरदार होय कमाऊरी आधी धरती दवायी, लोहयोगढ अपणायो. गढ़वार कहीजै ।

१६३४. कलसाहरा वंसमे महीपतसाह हुवो जिणरी राणी चहुवाण करणावती जिण पातसाहांरा उमरावा नीजाबतखा पहाडा माथै आयो, तुरकांरा नाक काटिया जिणसू नकटी राणी कहाणी. करणावती महीपतसाह मर गयो हो, बेटो छोटो हो, जद करणावती फतैसिंघ · · ।

१६३५. कलसाहसू चोथी पीढी सहजसाह हुवो जिण श्रीनगर वसायो।

१६३६. कमाऊरो राजा गुसाई कहावै।

१६३७. परमार राजा दूलहराव उजीणसू उठ भोजपुर वसियो. भोजपुर पटणा उरै कोस पचीस।

सांखला

१६३८ परमार चाहडरावरै घरवासै अपछरा हुती जिणसूं बेटा दोय इणरै हुवा सो दोने बाघवां सख वजायो जिणासू वाघरे वसरा साखला कहाणा।

१६३९ परमार चाहडदेरा बेटा दोय—अेक सोढो, दूजो साखलो. बेटी मायदे सगत हुई।

१६४० तीजी बेटी देवी कल्याणकुवर अपछरासू हुई।

१६४१ रासीसर साखलो खीमसी रायसलरो बेटो रहै. दहिया जागळू राज करै. दहियारो ब्रामण गूजरगोड केसो है जिण दहियानै कहियो—थे कहो तो हू जांगळू अमकै ठिकाणै तळाई खिणाऊ दहिया कह्यो—अमको ठिकाणो तो घोड़ा दौडाबारो सराडो है, अठै तळाई मत खिणाव जद खीमसी साखलासू केसो मिलियो खीमसी कनैसू दहिया मराय जांगळू खीमसीरो अमल करायो. पछै केसो केसोतळाई जागळू खिणायी रायसलरो खीमसी चरूसू गाळ गाळ जिण वीठूनू दोयड पसाव दिया, पोळपात थापियो इणरी बेटी ऊमा गढ गागुरण खीची अचळदासनू परणायी।

१६४२. खीमसीरो कवरसी, कवरसीरो जैसो, जैसारो मूजो, मूजारो ऊदो, ऊदासू साखला पतळा पड़िया।

सोढा

१६४३. परमार धरापसावरो बेटो आसराव जिणरै वसरा सोढा पारकरा दूजो वेटो धरापसावरो दूजणसल जिणरै वसरा सोढा घाटेचा।

१६४४. पारकरा सोढा ज्यारै प्रोळपात मिहडू।

१६४५. सुवेरामे पुरलांरै गांव ७०० है धणी परमार राणो पदवी राणा रतनसिंघनू वागडियै चहुवाण उदेसिंघ मारियो गंभीरसिंघरा वैरमे परमार मदनसिंघनूं राणो कियो।

१६४६. पारकर राणो चंदण गोईंदरावरो वाघेलारो भाणेज।

१६४७. दूहो –

पड़े छवाहड़ पाच सौ,
सोढा वीसा सात।
अेकण तीतर वासतै,
इण राखी अखियात॥

१६४८ छवाहडांनूं मार पारकरा सोढा मूळी· · ·लीधी।

१६४९ मूळीरै धणी रतन सोढै उवा साथ विया विचै परवत मीसणनै दीनो, पचास लाख नगद, पचास लाख भरणो।

१६५०. ऊमरकोटरा सोढा पदवी राणा ज्यारी परियावळी - राणो गागो चांपारो, पातो गागारो, चंद्रसेण पातारो, महाराजा सूरजसिंघजी राणा चंद्रसेणरै परणिया हुता, भोजराज चद्रसेणरो, ईसरदास भोजराजरो सवत १७१० रा भादवामे भाटी रावळ सवळसिंघ ईसरदासने ऊमरकोट मांहेसूं काढियो. सोढा जैसिंघदेनै ऊमरकोट राणो कियो।

१६५१ गागो १, मानसिंघ २, जोधो ३, जैसिंघदे ४, राणा गांगारो पड़पोतो जैसिंघदै।

१६५२. सोढो रतनसी राणा गागारो जिणरी वेटी भाटी रावळ मनोहरदास परणियो।

१६५३ सोढो करण राणा चांपारो तिणरो खीवो, खीवारो भाणो, भाणारो मनोहरदास – पातसाही चाकर, ऊमरकोट परसोरण जठै रहै।

१६५४ गोडै चापारै गळै सोढा तणी सरम।

१६५५ ऊमरकोट सोढा सुरताण ज्यांरो ठिकाणो छाछरो १, फागलियो २।

१६५६. सोढा भोजराज ज्यारा ठिकाणा तीन – छोळ १, खुहडा २, ठिगारी ३– अै।

१६५७ सोढा गागदास ज्यारा ठिकाणा च्यार – राडरातो कोटू खीपरो मुथूण २, अवरसिया ३।

१६५८ सोढारा ठिकाणा पाच – सुरताण उवुल वार सोढा राम ज्यारा छै।

१६५९ अेक दिन घोड़ा सातवीस ऊमरकोट राणै खीमरा चोपडा मइयानू दिया विणसू रीजी।

१६६०. वीरवावरा सोढारी पीढी – कांधल १, कांधलरो राम २, रामरो मनहर ३, मनहररो नोतो ४, नोतारो सतो ५, संतारो वीजो ६, वीजारो मोडो ७, मोडारो पजो ८ – ओ हमै वीरवावरो सिरदार है।

१६६१. मनहररो पांचो, पांचारो अजो, अजारो जेहो जिण सताजी कनांसू गोडीजी लिया, विरावाव लिवी।

१६६२. पछै मोडाजी, सताजीरै पोतै जेहाजीनूं जेहाजीरा बेटा दुरगजी हाथीजीनू मारियो वीरावाव. गोडिया रस माथनू लिया जगतसिंघ चहुवाणनू मदत आने।

१६६३. प्रछै सोढो तेजमालजी हारो भतीज सहेत यह राणै सोढा व्राकीजीरै सरणै गयो वीरवावसू निसरतै।

१६६४. गोड़ीजी इष्ट सोढारै जिणसू वीरवाव कोटमे मद-मांस वापरै नही. जेहा सोढारो बेटो हाथी गुडै सूरजमल राणारी बेटी परणियो हो अेक दिन सूरजमलरी बेटी बोली मोनू म्हारै बाप वाणियानू परणायी उण दिनसूं हाथी मद-मांस छानै आपरै महलमे वपरायो जेहाजी माथै गोड़ीजी कोपिया नै मोडजी खानपुर हुता उठैसू पत्र दियो पछै जेहाजीनू मार मोडजी वीरवाव लियो।

भायला पंवार

१६६५. भायल पदमसीरो सजन वडो रजपूत हुवो सीवल चापारी वहू देवडी इणरा घर माहे पैठी पछै किताहीक वरसां माहोमाह लड़ चापारे हाथ सजन रह्यो, सजनरै हाथ चापो रह्यो. देवडी सती हुई हाथ वाढ नै चापारै घड़मे नाखियो नै वळी सजनरै साथै।

१६६६. सिवाणै सजनरा गिर छै सजनरै रावळ, चहुवाण सिवाणारो राव सातल जिणरो दोहितो इण अलाउद्दीनसू मिल सिवाणो मिळायो पातसाह सिवाणो इणनू दियो पछै रावळनू पातसाह मरायो।

चौहाण

१६६७. चहुवाणारी चोईस साख लिखते – हाडो १, खीची २, सोनगरो ३, बाली ४, सोभादर ५, चोमालहण ६, गोरवाळ ७, भदोरिया ८, मीरवाण ९, वाकुर १०, चील ११, थेथा १२, दूदळोत १३, सेपटा १४, गरावा १५, पबइया १६, पावचो १७, सतवाळ १८, चाभुलेया १९, खेवर २०, चाहिल २१, मोहिल २२, भडारी २३ वाणियामें, चीतामेर २४ राठोडारा भाट रामचद कनै लिखी।

१६६८. सोनगरा माहेसू देवडा निसरिया देवडां माहेसू वोड़ा निसरिया. वालोत २, चीवा ३, अबीह ४–अै खापा निसरी।

१६६९. चहुवाणांरै कुळदेवी अवाय है,माणकदे चहुवाणनू साख भरी. तूठी लाखणसीनू. आसापूरी तूठी जदसू लाखणसीरा आसापूरानू पूजै है।

१६७०. सवत १६०८ सांभर चहुवाण माणक हुवो।

१६७१. संवत ८२२ वीसळदे चहुवाण अजमेर पाट वैठो।

१६७२. वीरपाळ साहरी वेटी गौरज्या विधवा वरस तेरहरी पुसकरजी ऊपर तप करती. नवे वरस च्यार हुवा जद जवरीसुं वीसळदे इणसू रत कियो. गोरज्या वाणियाणीरै पुत्र वीसळदेसू हुवो नाव आनो. गोरज्यारा सरापसूं वीसळदे राकस हुवो।

१६७३. प्रथीराजरा सामत ज्यामें दोय सावत खीची – पीळपीजर १, प्रसंगराव २।

१६७४. हम्मीरदेव रणयभोररा किलामे लड़ै जद हमीरदेवरा उमराव रणमल १, प्रतापसी २, पातल ३, चाहड़दे ४, इत्यादिक अलाउद्दीनसूं मिल गढसू निसर अलाउद्दीन कनै आया हमीरदेव काम आया. पछै अलाउद्दीन आनू मराय नाखिया।

१६७५. चोहाण गोगाजीरी मा वाछ्ळदे, पिता जीवराज, घोड़ो नीलो, हरद देवरो।

१६७६. खीचियारै वारठ नाथू, मोठियो ढोली, प्रोहित काथड़ियो, भाट तिलवाडियो, आसापूरा देवी।

१६७७ राघोगढ १, वजरंगगढ २, खिलचीपुरो ३ – अै खीचियारा ठिकाणा।

१६७८. खिलचीपुररो खीची दिवाण कहीजतो।
राघोगढरो खीची राजा कहीजतो।

१६७९. खीचिया ' ' ' पको कोट करायो हो, पछै उवा पथररो पको कोट करायो हो. पाछै उवा पथररो पको कोट फळोधी हमीर नरावत करायो।

१६८०. खीची थारू जायलसूमे तीन कोट कराया. खीची गोपाळदास।

१६८१. मोटा राजारी वेटी जैतसिंघरी वहन परणियो।

१६८२. खीची सारगदेरो जीदराव वारूरां वुधांरो भाणेज।

१६८३ जायल खीची गोरधन वायारो व्याव कियो जद चारणानूं कह्यो – क्रपा कर गीत कहो ज्यामें जायल ठिकाणो वरस गुणचाळीसो डायजै हाथी दियो इतो वरणन जरूर करसी।

१६८४ गांगुरणरो धणी खीची भोज जिणरै राणी सकळादे जिणसूं अचळदास पुत्र प्रगट हुवो।

१६८५. खीची अचळदासरी मा सलहदे ।

१६८६. राणा मोकळरी बेटी पोहपावती अचळदास खीचीरो राजलोक ।

१६८७. मांडवरो पातसाह महमूद बेगडो माथै आयो जद संवत १४८२ खीची अचळदास गढ गागूरण साको कियो ।

१६८८. खीची अचळदास राणी पोहपावती चितोडरा राणा मोकल लाखावतरी बेटी।

१६८९. चापो १, माधो २, सादो ३— अै चारण अचळदास कनै घेरामें ।

१६९० गागो १, तिलोकसी २— दोय वाणिया अचळदास कनै राऊ १, सेऊ २ — अै डूब घेरामे ।

१६९१. पीपाजूके वंसमें, पीपा सम नृप लाल ।
भरम भजावै कै प्रगट, केहरि वुद्धि विसाळ ॥

१६९२. खीची राजा केहरिसिंघ भाखा ग्रंथ सीतारामचरित्र नामा अठारै प्रबंध करि बणायो. रामायणरी कथा है ।

हाडा चौहाण

१६९३ हाडारी पीढिया लिखते—सोमेसर १, प्रथीराज २, जोधो ३, हाडो ४, ब्रह्मपाळ ५, माणकराव ६, अणखपाळ ७, साधारण ८, विजैपाळ ९, वाघो १०, बूदी वाघै लिवी वाघारो देवो ११, केलण १२, केलणनू तूठो केदार समरसी १३, पटो १४, हामो १५, वरसिंघ १६, वैरो १७, भाडो १८, नरवद १९, अरजुण २०, सुरजण २१, भोज २२, रतन २३, गोपीनाथ २४, चत्रसाळ २५, भावसिंघ २६, अनिरूधसिंघ २७, बुद्धसिंघ २८, उमेदसिंघ २९, अजीतसिंघ ३०, विसनसिंघ ३१, रामसिंघ ३२ ।

१६९४. हाडारी वसावळी लिखते – चहुवाण राजा सोमेसर १, प्रथीराज २, जोधो ३, हाडो ४, हाडाथी हाडा कहाया. हाडारो ब्रह्मपाल ५, माणकराव ६, अणखपाळ ७, साधारण ८, विजैपाळ ९, वाघो १०, बूदी वाघो वसियो. वाघारो देवो ११, केलण १२, समरसी १३, पटो १४, हामो १५, वरसिंघ १६, वैरो भाडो १८, नरवद १९, अरजुण २०, सुरजण २१, भोज २२, रतन २३, गोपीनाथ २४, चत्रसाळ २५, भावसिंघ २६, अनरूधसिंघ २७, बुधसिंघ २८, उमेदसिंघ २९, अजीतसिंघ ३०, विसनसिंघ ३१, रामसिंघ ३२ ।

१६९५. राव भाडारा बेटारी विगत – नरवद १, नराणदास २, साडो ३, नरसिंघ ४— अै च्यारूं भाई अेक माया ।

१६९६ बूंदी राव भाडारो १, नारायणदास २, सूरजमळ ३, प्रथीराज ४. भांडानूं दुख दियो जिणसू हाडा प्रथीराजनू गादीसू दूर कियो।

१६९७ हाडो राव नरवद भांडावत गोड़ मोटमरावरो दोहितो।

१६९८ वूदीराव नरवद भाडवतरा वेटारी विगत – उरजण १, भीम २, अखैराज ३, पूरो ४, हरराज ५, मोकळ ६– अै छव वेटा नरवदरै वेटी करमावती चितोड़ सागा राणानू परणायी।

१६९९ अै सातू सूरजमल खेमावतरा दोहिता।

१७०० वूदीराव नारायणदासरो वडो भाई नरवद, नरवदरो उरजण।

१७०१ राव हाडा नाराणदास भाडावत जोधपुर सावतसी जोधावतरी वेटी खेतूवाई परणियो खेतूवाईरो वेटो सूरजमल राणा रतनसीनू मार मुवो।

१७०२. सूर १, मलो २ – अै दोय सोलंकी, असोकमल परमार चहुवाण पूरवियो पूरणमल अेक पग माहेसूं सांकळारो काढणहार राणो रतनसी ४–इतानूं मार हाडो सूरजमल मुवो।

भळको लीधो भूखियो,
चाव करै चहुवाण।
सूजै धनस सभाळियो,
अत समै अवसाण॥

१७०३ भूखियो भळको ओ ही त्रियाबियो कहीजतो।

१७०४ सूरजमल नाराणदासोतरो वेटो प्रथीराज वूदी राव जिणनूं उथप हाडां अरजण नरवदोतनूं वूदी राव कियो।

१७०५ हाडो राव उरजण नरवदोत देवळियो सीसोदियो सूरजमल खीमावत जिणरो दोहितो।

१७०६. हाडा राव उरजणजीरै वेटारी विगत – सुरजण १, रामजी २, काधल ३, अखैराज ४।

१७०७ हाडै सांवत सेरसाहरी असवारीरो घोड़ो मैणा कनै चुराय मगायो. पातसाह खवर पाय हाडोती माथै आयो सावत मरण माडियो. पछै धूंधळीमलजी वर दियो – तूं जाय नै सेरसाहरी फौजमें तरवार चलाय, फौज विगड़ जासी यूं हीज हुवो जद सेरसाहरै समररा जैतवार – ओ विरद हुवो सावतरानू।

१७०८. राव सुरजण उरजणोत गहलोतांरो भाणेज।

१७०९. संवत १६२५ पातसाह अकबरनू सुरजण रणथभोर सूपवी ।

१७१०. राव सुरजणरा वेटारी विगत – दूदो १, भोज २, रायमल ३ ।

१७११. दूदो सुरजणोत चापावत जैसिंघ भैइदासोतरो दोहितो राव सुरजनरै कवर दूदो वडै डील वडो रजपूत हुतो उणनू उणरा झारीवरदार बिरामण जिणरै हाथ कवर भोज सुरजणोत जहर दिरायो दूदारै बेटो नरहरदास ।

१७१२ बूदी राव सुरजण जिणरो वडो कवर दूदो जिणनू विख दे कंवर भोज मरायो राव सुरजण उदास रूप कासी गयो मणकरणकामें सिनान करता देह तजियो ।

१७१३ हाडा कवर दूदा सुरजणोतनू पातसाह अकवर सिरपाव दियो ।

१७१४. राव भोज सुरजणोत अहाडा राव जगमाल उदैसिघोतरो दोहितो ।

१७१५. संवत १६६० पातसाह अकवररी मा मुयी आगरा माहे जद सारा राजा-राव भद्र हुवा. राव भोज हाडौ नै राव दुरगो चद्रावत अै भदर हुवा नही ।

१७१६ बूदी राव भोज वडो अडपदार सिरदार हुवो हाथीरो वडो असवार हुतो. पातसाहरा मसत हाथी किणीसू ही पकडीजता नही उवां हाथी राव भोज चढतो अकवर ज्यू ।

१७१७. राव भोज सुरजणोतरा बेटारी विगत – रतन १, रिदैनारायण २, केसोदास ३, मनोहरदास ४–अै च्यार वेटा भोज सुरजणोतरा ।

१७१८. राव रतन भोजरो बालोत सोळंकी ज्यारो भाणेज ।

१७१९. रावराजा रतन राव भोजरो बेटो बूदी वडो ठाकुर हुतो साहजादो खुरम पातसाह जहागीरसू वागी हुवो जद संवत १६८० साहजादो परवेज नै नबाब महोबतखां बुरहानपुरसू पूरवनू रवाना हुवा खुरमनू हरावण तद बुरहानपुररो सूबो राव रतननू भोळायो पचहजारी मनसव दियो तदसू ठाकुराई बूदीरी वधी. पछे वादसाहजी दिखणमें खानजहा लारै बुरहानपुर गया सवत १६८७ बालासुर माहे राव रतन रामसरण हुवो ।

१७२०. कवर गोपीनाथ राव रतनरो कछवाहा भगवानदास भारमलोतरो दोहितो ।

१७२१ कवर गोपीनाथ राव रतनरो राव वैठा राम कह्यो राव सत्रसाल गोपीनाथोत राव रतन आपं बैठा इणनू रावाई दिवी. पातसाह बूदीरो टीको सत्रसालनू दियो राव रतनरी अरजसू सवत १६६३. राव सत्रसालरा बेटारी विगत ।

१७२२. कवर गोपीनाथरै वेटा – सत्रसाल १, राजसिंघ २, इंदरसाल ३, महोकम ४, महासिंघ ५, वैरीसाल ६, सूरजी ७, केसरीसिंघ ८, स्यामसिंघ ९, काकील काम आया ।

१७२३ राव चत्रसाल गोपीनाथोत सुनेर सोळकिया भिलै ज्यारो दोहितो ।

१७२४ वूदीरो धणी हाडो चतरसाल गोपीनाथोत सवत १६६२रा आसोज सुद १५ जनम संवत १७१४ जेठ सुद ८ आगरासू नजदीक धोलपुर वेढ़ हुई साहजादा दारासाहरै नै औरगजेबरै जद दारासाह साथै हुतो राव चत्रसाल औरगजेवसू लड काम आयो ।

१७२५ छव सतिया हुई राणिया. खवासा ३४ सती हुई. चत्रसालरी राजलोकां वासे रही ज्यारी विगत – जादम भारथसिंघरी मा १, सीसोदणी वंहूजी हाडीजीरी मा २, कछवाही भगवतसिहजीरी मा ३ ।

१७२६ हाडो भारथसिंघ चत्रसालोत चत्रसाल साथै काम आयो ।

१७२७. वूदी रावराजा चत्रसालजीरो करायोड़ो महल चत्रमहल कहावै ।

१७२८ सत्रसालरा वेटारी विगत – भावसिंघ १, भीव २, भगवंतसिंघ ३, भारथसिंघ ४ भावसिंघ राठोड़ारो भाणेज, भगवतसिंघ नरूकारो भाणेज, भारथसिंघ यादवारो भाणेज ।

१७२९ वूदीरो धणी रावराजा सत्रसालजी ज्यारी वेटी कल्याणवाई महाराज जसवतसिंघजी परणिया सासरारो नाव जसवतदेजी ज्या कल्याणसागर तळाव करायो नाव श्रीमाळियारो नाड (?) दियो ।

१७३० वूदी रावराजा भावसिंघ राणा जगतसिंघरो दोहितो ।

१७३१. रावराजा भावसिंघ चत्रसालोत राठोड़ दळपत राजा उदैसिंघ सालदेवोतरो जिणरो दोहितो ।

१७३२ वूदी अजे रावराजा भावसिंघजीरी आण कहीजै ।

१७३३ रावराजा वुधसिंघ अनरूधसिंघोत नाथावत सोळकी ज्यारो भाणेज ।

१७३४ रावराजा उमेदसिंघजी १, दीपसिंघजी २, दीपकवरवाई ३ – तीनू वेगमरा वणीरा भाणेज ।

१७३५. रावराजा उमेदसिंघ वुधसिंघोत वेगमरा चूडावतारो भाणेज ।

१७३६. रावराजा उमेदसिंघजी जोधपुर परणिया आया जद चवदा दिन नोलक रह्या दिन पाच फतैमहलमें रह्या. दिन ११ तळेटी रह्या ।

१७३७. ईसरीसिंघजी पाट बैठा जद हाडा रावराजा उमेदसिंघजी बूदीमे अमल कर जैपुररो नायब नारायणराव जिणसू जग कियो पैली जैपुररी फौज भागी पछै उणियारारै रावराजा सिरदारसिंघजी घोडारी वाग उपाडी उमेदसिंघ रावराजारो लोक काम आयो, पग हाडारा छूटा, घोडो · · · · · रावराजा उमेदसिंघजीरो काम आयो ।

१७३८ उमेदसिंघजी तेरै घोडासू इदरगढ गया देवीसिंघ इदरगढरो धणी सत्रु वहे निवडियो बूदी अपणाय देवीरी पूजारै मिस कबीला सहित इणनू उमेदसिघ मारियो ।

१७३९. विखा माहे रावराजा उमेदसिघजी हा जद ईडरिया राठोडा डोळो मेलियो, ओ पैलो व्याव उमेदसिंघजी कियो ।

१७४० श्री जी उमेदसिंघजी देसूरी सैल करण पधारता जद भमरा वा कीपलारी कावड़ा जळेव वैती गावरा डावडा मागता ज्यानै कीपला भमरा दिरीजता ।

१७४१ सिलामयीरो नै गोविंददेवजीरो दरसण कुंवर उमेदसिघजी जैपुर पधारिया, महाराज प्रतापसिंघजी सामा पधारिया सनान कर अपसंमे होय गोविंद-देवजीरो दरसण कियो फूल ठाकुरजीनू चढावण श्री जी वागमें गया, साथ महाराजा प्रतापसिंघजी जद श्रीजी आकोडियासू व्रक्षरी डाळ नमायी, फूल प्रतापसिंघजी वीण लिया जद श्रीजी बोलिया कयाहीक दिना फल भुगतियो वीण तो प्रतापसिंघजी कह्यो – म्हारै तो आप ईसरीसिंघजी माधोसिंघजीरै ठिकाणै हो ।

१७४२ कापणरो महाराजा दीपसिंघजी जिकारी वेटी प्रतापसिंघजी परणिया श्रीजीरै भतीजी जिणसू मिलण श्रीजी जैपुररा रावळामे पधारिया, प्रतापसिंघ-जीरी राणिया सरबनै उमदा पौसाक दिवी सारी राणिया श्रीजीरो दरसण कियो छोटा भाईरी बेटीरै माथै हाथ फेरियो ।

१७४३ प्रतापसिंघजी श्रीजीरै डेरै आय कह्यो – आप कहो तो कोटा-बूंदी माथै फौज ले हू आपरै सग चालू श्रीजी कह्यो – इण कामसू तो म्हारा धोळामें धूळ पडै, दोनू ठिकाणा दोनू म्हारा पोता है जिका माथै काई कोप करू ?

१७४४ पूरबरा तीरथ कर श्रीजी बूदी पधारिया जद केदारनाथजी कनै आपरा डेरा उठासू प्यादल थका काधै गगाजळरी कावड लिवी, पगामे खडाऊं, हाथमें आसो सरब परिगह सहित रगनाथजीरै मदिर पधारिया रगनाथजीनूं गगा-जळ चढावणनू ।

१७४५ श्रीजी साहब देव पूजता आ निसचै नही, आरै मुख इस्ट कुण देवता है? अेक दिन रगनाथजीनू श्रीजी पुसप चढावे है, पोतो रावराजा छानो थको लारै ऊभो जद दुरगारो मत्र पढ नै श्रीजी तुळसी-दल रंगनाथजीनू चढायो. पछै देखै तो पोतो ऊभो है जद फुरमाया – भगतियानै मंत्र सुणियो कांई? आ अरज किवी – सुणियो. आप फुरमाया – विखामे मैं ओ इस्ट धारण कियो हो, पाचूही देव अेक करि जाणां छा।

१७४६ उमेदसिंघजीरै आठ राणिया हुई।

१७४७ रावराजा उमेदसिंघजीरा कवर अजीतसिंघजी, वहादुरसिंघजी दोनू रासरो धणी ऊदावत केसरीसिंघजी जिणरा भाणेज।

१७४८ अजीतसिंघजी, वहादुरसिंघजी दोनू रावराजा उमेदसिंघजीरा वेटा रासरा ऊदावत केसरीसिघजीरा भाणेज।

१७४९ वळवतसिंघजी वहादुरसिंघजीरो वेटो केसोरायजी पाटण कोटा वाळा चूक कर मारियो।

१७५० उमेदसिंघजीरै वेटा सिरदारसिंघजी, रायसिंघजी ईडरर धणी जिणरा दोहिता।

१७५१ रावराजा अजीतसिघ उमेदसिंघोत वांसवाळारा रावळरो दोहितो।

१७५२ हाडै रावराजा अजीतसिंघ अड़सी राणानू मारियो सो प्रसग लिखते. लालस पीरदान कह्यो हुई सर चेलो अल्लारो वारटनू।

१७५३ अजीतसिंघजीरी वूहरे यी वरछी दे मारियो सू राणारी पीठ फोड़ छाती फोड़ घोडाका घेरै आणी वरछी लागा राणो वोलियो कीका लागां. जद कीकै धायभाई अजीतसिंघजी माथै तरवार चलायी अजीतसिंघजीरो कमरवधो कट चीलगत कट अजीतसिंघजीरै पसवाडारै खाणी।

१७५४ अजीतसिंघजीरी तरवारसू कीकारा घोड़ारो पग कटाणो।

१७५५ रावराजा पदवी अजीतसिंघजी तीन वरस भोगवी पछै राम-सरण हुवा।

१७५६ रावराजा विसनसिंघ वासवाळारा रावळरो दोहितो।

१७५७ रावराजा रामसिंघ विसनसिंघोत किसनगढरा राजा प्रतापसिंघ वहादुरसिंघोतरो दोहितो।

१७५८. हाडो हालू हरराजरो आंरै रजपूत हुवो।

१७५९ वूदी डावी मिसल नाथावतां सोळकियारी जीवणी मिसल हाडारी।

१७६०. बूदी मीरांजी जागतो पीर है. राव घणी मानता राखै जिणसू बूदीरा राव आगै सूर खावता. विखामे श्रीजी सूर खायो जिणसू हमै बूदी राव सूर खावै है ।

१७६१. हाडो राव बूदी तखत बैठो सो दारू न पीवै, भाई बेटा दारू पीवै ।

१७६२ सथूर बूदी कनै स्थान जठै अदंतिका देवी विराजै है ।

१७६३. आगै बूदीरा रावराजा नवाब दरियाखारा नगारा खोस लिया अेकरो नांव वैरीसाल, दूजा नगारारो नांव रणजीत केसरिया निसाण उण नबाबरो लियो जदसू बूदी केसरिया निसाण रहै है ।

१७६४. बूदी तळहटीरा महला विवाहादिक महोत्सव हुवै ।

१७६५. कोटारा महारावारी पीढिया लिखते – राव रतन १, माधोसिंघ २, मुकुंदसिंघ ३, किसोरसिंघ ४, रामसिघ ५, भीमसिंघ ६, दुरजणसाल ७, चत्रसाल ८, अजीतसिंघ ९, गुमानसिंघ १०, उमेदसिंघ ११, किसोरसिंघ १२ ।

१७६६. कोटारा महारावरी पीढि लिखते – राव रतन १, माधोसिघ २, मुकदसिंघ ३, किसोरसिंघ ४, रामसिंघ ५, भीवसिंघ ६, दुरजणसाल ७, सत्रसाल ८, अजीतसिह ९, गुमानसिंघ १०, उमेदसिंघ ११, किसोरसिंघ १२ ।

१७६७ माधोसिंघ राव रतनरो रावजी बैठा पातसाहरी चाकरी लागी. रावजी काळ कियो जद कोटो, पलाइतो पातसाहजी दियो सवत १६५६रा जेठ वद ३ जनम ।

१७६८. राव माधोसिंघरा बेटारी विगत – मुकदसिंघ १, मोवणसिंघ २, जुझारसिंघ ३, राम ४, सूरसिंघ ५, राणो उमेदसिंघ ६ उदैपुर वसायो, उदैसागर तळाव करायो. सवत १६२८रा फागुण १५ राम कह्यो राणै उमेदसिंघ ।

१७६९. हाडो मोवणसिंघ माधोसिंघोत जिणरा वेटा पाच कछवाहा मारिया ।

१७७०. महा बूदी हेटेसू कोटा हेटै महाराव जीवसिंघजी घालियो ।

१७७१ इण तरै महाराज अजीतसिंघजी कोटै रावराजा दुरजणसिंघजीरी गादी कोटे महाराव हुवो ।

१७७२ चत्रसालजीरो बेटो न हुवो जद चत्रसालजीरी गादी चत्रसालजीरो भाई गुमानसिंघजी वैठो ।

१७७३ महाराजकवार फतैसिंघजी जोधपुरसू पधार कोटै गुमानसिंघजी महारावरी बेटी परणिया महाराव त्याग आछो चारणा-भाटानूं दियो घणा घोडा सिरपाव दिया. जस लियो ।

१७७४ रामदत्त नै विजैमाणक दोनू हाथी कोटारा महाराव गुमानसिंघजीरा लड़िया।

१७७५ अजीतसिंघजीरो तीजो वैटो सरूपसिंघजी अणतै रह्यो ।

१७७६. वघवाड़िया भोपतरामनू कोटारै माहरावजी कोटासू तीन कोस गाव कोटड़ी, तीन हजार घरारी वसती, उवा तावापतर कर दिवी. कोटारा राजमें जालमसिंघ पहला भोपतराम मुसाहिव हुतो ।

१७७७ दिखणियांरी फौजसू जग्गमे भागो सायद – भोपड़ो गूघरा तोड़ भागो ।

सोनगरा

१७७८ चहुवाण कान्हड़दे सावतसिंघरो वेटो जिण संवत १३६८ वैसाख सुद ६ गुरुवार जाळोरगढ साको कियो ।

१७७९ सवत १३५६ सोनिगरै कान्हडदे साको कियो जाळोर अलाउदीन लियो जद।

१७८० साचोर १, थिराद २, काकरणघर ३, वाराही ४, कच्छ ५, गेहडी ६, ऊमरकोट ७, वीकमपुर ८, जेसळमेर ९, ववनोर १०, पारकर ११, पूगळ १२, मारोठ १३, साळकोट १४, जांगळू १५, जाजासहर १६, सारण १७, हासेर १८, वावरो १९, सोजत २०, डोडियाळ २१, रीणक २२, काछेल २३, त्रिसीगडो २४, आवू २५, भीलडी २६, सिवाणो २७, तारंगो २८, राडद्रह २९, सूघो ३०, मेहवो ३१, भाद्राजण ३२, मंडोवर ३३, सूराचंद ३४ – इत्यादिक ठिकाणासू कान्हड़दे भड तेडाया ।

१७८१ सोनगरा कान्हडदेसू जाळोररा महाजनां अरज कीवी. रामो साफड़ियो वोलियो – मूग चोखा जव काठा गेहू साठ वरस ताई हू पूरीस.जैतसी दोसी कहै – कपडा साठ वरस हूं पूरीस. भोळै साह कह्यो – असी वरस तेल हूं पूरीस मोलहण साह वोलियो – तीस वरस ईंधण हू पूरीस भीमैसाह कह्यो – म्हारै इतो गुळ है, अठारै वरस ताई ढीकली गुळरा हीज गोळा चलावो. सादूसाह कहै – म्हारै व्हीरा पहल भरिया है ।

१७८२ जाळोररो गढ दहियै वीकै भेळायो अलाउदीनरा नायबांसू मिलनै ।

१७८३. सोनगरा कान्हडदेरै भड – भाई मालदे १, वेटो वीरमदे २, जैत वाघेलो ३, जैत देवडो ४, लूणकरण माल्हण ५, सोभित देवडो ६, अजैसी ७, सहजपाळ ८ – इत्यादिक ।

१७८४. वीरमदे वांसै सुण काज, अउठ दिहाडा कीधो राज।

....॥

जै सुकलीण साहसी, मुवा न मूकै माण ।
मसतक उपराठो हुओ, तणो विसलहू आण ।।
अेक असभव सुण लियो, जळ तिरिया परवाण ।
मुवां अपूठो सिर फिरचो, दूजो अेह परमाण ।।

१७८५ कान्हडदेरै भाई मालदे, मालदेरो अबराजा, अबराजारो खेमसी, खेमसीरो अखैराजसू खत्री हुवो ।

१७८६ सिवाणै पहाडरी डाग ऊपर गढ चढता जीवणी तरफ गढरो नव चोकियारो गोख त्रिकळस कहीजै जूनी ख्यातामे अलाउदीन आयो जद चहुवाण सात त्रिकळस ग्राम बैठो हुरकणियारो नाच करायो हो ।

१७८७ सोनगरारी वसावळी – चाचगदेरो सावतसी, सांवतसीरो मालदे, मालदेरो वणवीर, वणवीररो रणधीर, रणधीररो लोलो, लोला नै राव रिडमलजी जेसलमेरसू आण वाई परणाय पटै पाली दिवी ।

१७८८. चाचगदे १, सावतसी २, मालदे ३, वणवीर ४, रणधीर ५, लोलो ६, सतो ७, खीवो ८, रणधीर ९, अखैराज १० राव मालदेजीरै काम आयो सूर पातसाहसू जग कियो जैताजी कूपाजी सामल समेळरै खेत ।

मानसिंघ अखैराजोतरो वंस

१७८९ मानसिंघ अखैराजरो राव चदरसेणजीरा विखामे राणा प्रतापरै गयो हो. पातसाही फौजासू हळदीघाटी राणारै वेढ हुई सवत १६६३ जद मानसिंघ राणारै काम आयो ।

१७९० राम मालदेवोत सवत १६२१ चैत वद ४ हसनकुलीखानू पाली माथै ले आयो जद मानसिंघ अखैराजोत राणाजीरै गयो ।

१७९१ जसवत मानसिंघोत वडो सिरदार हुवो मोटै राजा राणाजीरासू आणियो संवत १६२७ गावा २७ सू पाली पटै दिवी ।

१७९२ पालीरो गाव देईखेडो मागळियो धनराजरै पटै इण ठाय अहमदावादमे जसवतजी मोटा-राजाजीसू अरज करायी जद हजूर फरमायो – इण गावरै बदळै दूजो गाव देसी आ वात सुण सवत १६६५ राणाजीरै गया उठै हीज राम कह्यो ।

१७९३ सोनगरो जगनाथ जसवतोत सवत १६७७ राणाजीरासू आयो जद गाव मिणियारी विसीनू दिवी पछै गाव ११ पटै जगनाथजीनै दिया मणियारीसू सवाय दिया ।

१७९४. दळपत जगनाथोत, भोजराज जगनाथोत ।

१७९५ भाखरसी जसवतरो १, वाघो जसवंतरो २, मार्वोसिंघ जसवंतरो ३, सोनगरो स्यामसिंघ जसवंतरो ४, रामचद्र जसवंतरो ।

१७९६ राजसिंघ जसवतोत राणाजीरासू आय जोधपुर चाकर रह्यो जद संवत १६६६ गुदोचरा पटारो गांव कुडनी दिवी ।

१७९७ सवत १६७९ सिवाणारो गाव निवाई सोनगरा भाखरसी जसवंतोतरै पटै हुई ।

भाण अखैराजोतरो वंस

१७९८ सवत १६३३ अकबररो उमराव सहबाजखा कुभळमेर लियो जद सोनगरो भाण अखैराजोत काम आयो राणा उदैसिंघरै ।

१७९९ मोटा-राजा सोनगरा भाण अखैराजोतरी बेटी परणिया हुता सो मोटा-राजा साथ बळी ।

१८०० सोनगरो नारायणदास भाणरो पहला पातसाही चाकर हुतो. पछै मोटा-राजाजी कनै आयो जद सवत १६४१ भाद्राजण पटै दिवी ।

१८०१ सोनगरो नारायणदासजी राणाजीरै चाकर गांव खोड पटै जद जाळोररो साथ खोड़ माथै आयो नारायणदासजी निसरिया तुरका वसी वद किवी जद वंदमे चतरभुज नमियो वंदसू छूट दिन पाय महोवतखारै चाकर रह्यो. पछै महोवतखारासू छूट पातसाही चाकर हुवो पूरवमें जागीर पायी ।

१८०२. मोटा-राजा सवत १६४५ सिरोही माथै पधारिया जद राव सुरताण कागद मेल नाराणदासजीनू बुलाया. नाराणदासजी राणाजीरै गया खोड़ पायी. उठै हीज राम-सरण हुवा ।

१८०३. सोनगरो सावत नाराणदासरो भीम सावतसिंघोत राणाजीरै काम आयो ।

१८०४ प्रताप १, सुजाणसिंघ २, अरजुण ३ – अै ही सावतसिंघरा बेटा ।

१८०५ सोनगरो सातल नाराणदासोत रावळै चाकर सवत १६८६ भाद्राजण गाव २१ सू पटै पायी पछै सवत १६८३ नवसरो गाव १० सू दियो. पछै सवत १६८८ बुरहानपुररा डेरा छाड गयो ।

१८०६. जैतसी सातलरो १, सूरसिंघ सातलरो २, जैसिंघ सातलरो ३ ।

१८०७. सोनगरो किसनसिंघ सातलोत ।

१८०८. सोनगरो मालदे नाराणदासोत, नाराणदास भाणोत ।

१८०९. सोनगरो चतुरभुज नाराणदासोत ।

१८१० पातसाह साहजहारै हिंदू चाळीस मनसबदार ज्यामे सोनगरै चतरभुज नाराणदासोत ही गिणीजै है ।

१८११. चतुरभुजरै गरीवदास ।

१८१२. सोनगरो प्रथीराज नाराणदासोत रावळै चाकर सवत १६७८ गुदोचरा पटारो गाव अंदळा पटै सवत १६८९ कुरनो गुदोचरो गाव ४ सू पटै पायो ।

१८१३ सोनगरो केसोदास भाणोत ।

१८१४. माधोदास केसोदासोत भलो राजपूत हुवो. सवत १६९४ रावळाथी गांव भवराणी गावां १० सू दिवी हुती इणरा चाकर जैमल मुँहणोत खानाजगी किवी जद भवराणी छोड सवत १६८८ मोहब्बतखारै वसियो पछै अमर-सिंघजीरै पछै राजा जैसिंघरै वसियो माधोदास ।

१८१५ सोनगरो कल्याणदास भाण अखैराजोतरो ।

उदैसिंघ अखैराजोतरो वंस

१८१६. सोनगरो उदैसिंघ अखैराजोत. जिणरै सगतसिंघ, सगतसिंघरै मुकनदास हुवो. सवत १६८४ गाव दामण जाळोररो पटै पायो ।

१८१७. सोनगरो सूरजमल उदैसिंघ अखैराजोतरो जिण सवत १६५७ पालीरो पटो भाई सगतसिंघ उदैसिंघोत सामल पायो ।

१८१८ सोनगरो देवीदास सूरजमलोत वणवीर सूरजमलोत ।

भोजराज अखैराजोतरो वंस

१८१९ सोनगरो भोजराज अखैराजोत कूपाजीरै वास थो सो कूपाजी साथ काम आयो ।

१८२०. भोजराज अखैराजोत कूपाजीरै वास हुतो सो कूपाजीरै साथ काम आयो ।

१८२१ सोनगरा अखैराज रणधीरोतरो भोजराज, भोजराजरो सिंघ, सिघरो जसवत राजा दळपत रायसिंघोतरै काम आयो भटनेर ।

१८२२ भोजराजरो सिंघ, सिंघरो जसवत भटनेर दळपत रायसिघोतरै काम आयो ।

जैमल अखैराजोतरो वंस

१८२३ सोनगरो जैमल अखैराजोत वीकानेर चाकर रह्यो ।

१८२४ जैमलरो अचळदास, अचळदासरो केसोदास जाटुअै मारियो ।

१८२५. वळभद्र १, पिराग २, अनरूव ३ – अै ही अचळदासरा ।

१८२६ सोनगरो सारगदे जैमलोत सारगदेरो नरहरदास ।

रतन अखैराजोतरो वंस

१८२७ रतनसी अखैराजोत कानो रतनसीरो ।

देवड़ा

१८२८ सोनगरा महणसीरै घरवासै देवी रहै उणरै पुत्र हुवो नाव देवो देवरा वसरा देवडा कहाणा ।

१८२९ महणसी रावरै दूजा च्यार वेटा हुवा ज्यारी विगत – वालोजी १ जिणरा वालोत, चीवो महणसीरो २ जिणरा चीवा है, महणसीरो अभो ३ उणरा अभा, वोडो महणसीरो ४ तिणरा वोडा – अै च्यारू वेटा ।

१८३० सिरोहीरा रावारी वसावळी – कीतू १, समरसी २, महणसी ३, पतो ४, वीजड ५, लूभो ६, सलखो ७, रिडमल ८, सौभो ९, सैसमल १०, राव लखो ११, ऊदो १२, रणधीर १३, भाण १४, सुरताण १५, राजसिंघ, उदैसिघ, चत्रसाल, मानसिंघ, जगतसिंघ, वैरीसाल, हमै सिवसिंघ ।

१८३१. कीतू १, समरसी २, पतो ३, वीजड ४, लूभो ५, सलख ६, रणमल ७, सोभो ८, सहसमल ९, राव लाखो १०, ऊदो ११, रणधीर १२, भाण १३, सुरताण १४, राजसिंघ १५, अखैराज १६, उदैसिघ १७, सत्रसाल १८, मानसिघ १९, जगतसिंघ २०, वैरीसाल २१, सिवसिंघ २२ ।

१८३२ देवडारी पीढिया लिखते – सवत १२१६ माह वद ११ परमारा कनासू देवड़ै कीतू आबू लियो ।

१८३३ सवत १५८९ राव सहसमल सिरोही वसायी. सीहनू मार वसायी जिणसू सीहरोही नाव दियो आगै देवडा ईडररी चाकरी करता ।

१८३४ सिरोहीसे धणी आगै ईडररी चाकरी करतो ।

१८३५ लाखोराव १, राव जगमाल २, रतनसी ३, गोपाळदास ४, केसोदास ५ ।

१८३६ केसोदासरो नरहरदास जिण कुल खानत देवडा राम भेळी राख अखैराज मरायो ।

१८३७ कुवरगा चावमे हरीदास नरहरदासोत, चापो प्रिथीराजोत सामल रै ।

१८३८. जगमाल १, हमीर २, साकर ३, साडण ४, ऊदो ५ – अै पाचू राव लाखारा वेटा ।

१८३९. जगमाल १, हमीर २, साकर ३, माडण ४, ऊदो ५ – सिरोहीरा · · · · राव लखारै ।

१८४० देवडो हमीर राव लाखैरो जिण राव जगमाल कनासू आध बटाय लियो. हमीरनू जगमाल मारियो ।

१८४१ हमीर अपुत्र हुवो ।

१८४२ देवड़ारै अेक अखैराज उडणो घणा भील मारिया घणा भोमियारी धरती लिवी धरतीयांरा मरापसू मुवो ।

१८४३. उडणो अखैराज राव मालदेरो मामो ।

१८४४ अखैराजरै पाट दूदो अखैराजोत जिणनू ऊदै रायसिघोत भतीजै मारियो. दूदो कहिय कसानीयो हो ।

१८४५ सवत १५७५रा पोस सुद ८रो जनम रायसिघ अखैराजोतरो. इणरी गादी उदैसिघ वैठो सवत १६१६रा चैत वद ६ नै ।

१८४६ राव उदैसिघ, रायसिघ अखैराजोतरो रावजी गागाजीरी वेटी चपावाई जिणरो वेटो ओ मुवा मानसिघ दूदा अखैराजोतरो सिरोही राव हुवो ।

१८४७ सवत १६२०रै आसोज सुद ११ पेट दूख उदैसिघ मुवो सिरोहीमे ।

१८४८ देवडो वीजो १, हरराज २, दूदो ३, तेजसी ४, आल्हण ५, भीवो ६, गजो ७, झाझो ८, डूगर ९, रावत सहसमल १०, सोभो ११ ।

१८४९ ढीकरी देवो आयो कलो मार राव मानसिघनू मारियो. मानसिघ मरतै वीजा हरराजोतनू कयो – सुरताण भाणरानू राव कियो ।

१८५० मानसिघ पछै राव कलो सिरोहीरो धणी हुवो राव सुरताण देवडै वीजै गाव कालदरी राड किवी कलानै कुभळमेरीमे हराय नै काढ दियो वीजै राव सुरताणनू रावाईरो टीको दियो ।

१८५१ सवत १६४१ गाव नोसरा गाव २२ सू मोटो राजा दियो ।

१८५२. सवत १६६६ मोटै राजाजीनू परणाया सवत १६६७ सूरजसिघजीनू मथुरा-जीमे परणाया राव कलै सवत १६६१ भाद्राजण राम कह्यो ।

१८५३ भाणरो सुरताण गाव पमैरा जठासू आण देवडै वीजै हरराजोत सिरोही राव कियो. भाणरो सुरताण पामैरासू आण वीजै हरराजोत सिरोही राव कियो ।

१८५४ राजा रायसिघ वीकानेरियै राव सुरताणरा कहणासूं देवडा वीजा हरराजोतनू

सिरोही माहेसू काढ दियो पछे वीजो जगमाल उदैसिघोतसू मिलियो. जगमालजी पातसाह कनासू सारी सिरोही ही लिखाय दिवी ।

१८५५ सवत १६४६ मोटा राजा पातसाही चाकर जामवेग जिणनू साथै ले वीजा हरराजोतनू साथै ले राव सुरताण ऊपर गया, राव रायसिंघजीरो वैर वालण ।

१८५६ वीजाजी आपरा साथसू आवूरी गाळमे गया राव सुरताणरै साथरा मारिया।

१८५७ राव सुरताण सवत १६६७ रा असाढ वद ८ रामसरण हुवो नै राणी ७ रजपूत ५ साथै वळिया ।

१८५८ राव सुरताणरी गादी राजसिंघ ।

१८५९ देवडो भैरव समरारो वडो रजपूत हुवो ।

१८६० महादेवजी जातानू राव राजसिघरी वारमे देवड़ा प्रथीराज सूजावतरा भाई भतीजा मारियो ।

१८६१ राव सुरताणरो वेटो सूरसिंघ जिणनू राव कियो अहमदावादसू दिखणरै मुहिम पधारता महाराज सूरजसिघजी सिरोही पधारिया सवत १६६९ जद सुरताणरी गादी राव रायसिंघ हुतो जिणनू काढ दियो ।

१८६२ पछै राव रायसिघजी सिरोही लिवी सूरजसिंघनू देस मायसू काढ दियो । सवत १६७२ रावळासू भाद्राजण पटै दिवी गाव २५ सू सवत १६७५ राव सूरसिघजी भाद्राजण रामसरण हुवो ।

१८६३ सूरसिंघरै वेटो सवळसिंघ गावा २४ सू भाद्राजण पटै पायी पछै सवत १६७७ भाद्राजण छूटी जद सबळसिंघ राव अखैराजरै चाकर रह्यो गाव काछोली दियो ।

१८६४ जगमालरो अखैराज उडणो राजसिंघरो अखैराज पाडरो कहाणो ।

१८६५ सिरोही राव अखैराजरो कवर उदैभाण, महगसिया राठोडारो भाणेज जिण रावनू पकड कैद कियो ।

१८६६ कवर उदैभाण गाव मठाड थाणो हुतो उठै रजपूतानू लालच दे आपरै अधीन किया मुदै ठाकुर पाच – डूगरोत रामो भैरवोत १, डूगरोत ठाकुरसी मैरावत २, डूगरोत उगरो जसवत वीजावतरो ३, राजसी चीवो ४, उदैसिघ दूदाणी ५, वीजा ही डूगरोत सौ, चीवा सौ, देवळ वाघेला जेठुआ भेळा. सीसोदियो साहिवखान, महेसदास गोपाळदासोत आधाइक मालणसू आनै अवसी भेळा हुआ नही कवर उदैभाण मठाडसू चढ राणकवाड़ै डेरा किया.

रावनू लिखियो – भीलवाड़ा माथै जाऊ छू, सोर, सीसो मेलावसी राव मेलियो पछै हजार सवारासू चढिया सवत १७२० पोस वद १२ घडी अेक रात पाछली थका सिरोही आयो. रामा भैरवोतरो पोतरो साथ रामारो मेलियोडो सारा जिणसा लिया थका सिरोही पोळमे बैठा, हडवडाट सुण जाळीमे मूढो काढ रावजी पूछियो – साथ किणरो ? जद नारखान परबतोत बोलियो – साथ कवर उदैभाणजीरो है राव कह्यो अठी कठी जावो हो ? परवतोत कह्यो – कवरजीरा हुकमसू आवा हा, राव कह्यो – लालै म्हासू आ विचारी, कोई रामजीनै सदै सोदै नाहरखान कह्यो – रामजीरो पोतरो साथै है सारो साथ महलरै चौगिर्द फिरियो महलरै नीसरणी लागोडी राव ऊची खैच लिवी महलरा किवाड आडा जडिया जिणसू रावनू मार सकिया नही. पछै रावरा सारा माणस उण घरमे घालिया राव आडो ताळो जडियो ऊपर महोर छाप दिवी. कवर उदैसिघनू दूजा महलमे कैद कियो सूतो हो जठै हीज ताळो दे महोरछाप किवी पछै रामजी तिरवाडी, भगोतीदास पटणी हुजदार हुता सो यानू कैद किया, आपरी तरफरा नव हुजदार खडा किया रावजी सात दिन धान न खायो उदैभाण विचारियो – रामो भैरवोत रावनू मरण न दै जिणसू कैदमे हीज बैठा राखणो ठोड-ठोड कागद लिखिया ज्यांमे लिखियो – जमीमे भोमिया, ग्रासिया धध मचायो, रावजी देसरी निगै राखै नही, जिणसू पाचा ठाकुरा मोनू चाटी भोळायी है सो हू करु छू पछै सवत १७२० रा माह वद ८ टीकारो महोरत हुतो सो रामो टीको होण दियो नही यू करता महीनो डोढ बतीत हुवो जद राणाजीनूं चूक तेवडियो घोडा पाच ठाकुरानू दिया नै कह्यो जण पीठनू हजार रुपिया देसू राम भैरवोतनू, साहवखान परवतसिघोतनू, ठाकुरसी चीवानू, उदैसिघनू, उगरानू साठ सिरपाव दूजानू दिया आढो रुपो, आढो भीमराज दुरसावतरो, आसियो सुरताण मेघराजरो, चाचाळो देदो – अै चारण च्यार ज्यानू सिरपाव दियो, भाट सहसमलनू सिरपाव दियो सारा ही सलाम किवी हसमरो डोढो रातब कियो. रोज रुपिया ३००) भुजाईरा लागै सिसोदिया नाहरखान दुरजणसालोतनू घोडो-सिरपाव दे मठाड थाणै मेलियो।

१८६७. सीसोदियो साहवखान परवतोतनू राणैजीरा सारा समाचार लिखिया जद घोडो सिरपाव पाछा फेर पिंडवडै गयो. देवल वाघानै घोडो – सिरपाव दिया, नगारारी जोडी दिवी, डूमाणी गाव वधारै दियो जद रामो भैरवोत वेराजी हुवो – मो बरोवर देवळरो समाधान कियो ठोड - ठोडरा कागद रामाजीनू आया – रावजीनू बाहर काढो. रामाजीरी ठकुराणी राडधरी

जिणरी रावजीनू कह्यो – रावजीनू बाहर काढो. जद रामो भैरवोत सिरोही आयो माह सुद ११ कवर उदैभाण दारु पी नै जिण महलमें सूतो हो उण महलरै ताळो जड राव कनै रामो आयो जद राव जाणियो मोनूं मारण आयो जद राव पेट मारण कटारी काढी. जद रावरै राणी वाघेली अणमानैती तिण कह्यो – यूं काई करो हो, रामो थानै मारसी तो हूँ रामानू मारसू जद रामो हथियार छोड जाय रावरै पगा लागो कवर उदैसिघ छूटो. दूजा ही रावरी तरफरा कैदसू छूटा. कवर उदैभाणनू कैद कियो. दूसरा उदैभाणरा चाकर माय हुता जिणनू अटकिया – उगरो जसवतोत १, ईसरदास नीबावत २, सीसोदियो नाहरखान परवतसिघोत ३, सीसोदियो नाहरखान दुरजणसाल्होत ४, मोहणदास भैरावत ५, माधो राजसीरो ६, जैसिघदे नाराणोत ७ अै दिन सात कैदमें रह्या. कवर उदैभाण च्यार दिन जीमियो नही. सातवें दिन राव कंवर उदैसिघनू विदा कियो इण जाय कवर उदैभाणनू मारियो. उदैभाणरा वेटा दोय मारिया अेक सीसोदिणी सुजाणसिघ सूरजमलोत राणा अमरसिघरो पोतो तिणरी वेटी जिणरै पेटरो कवर कल्याणसिघ वरस छवरो उदैभाणरो वेटो उदैसिघ मरायो, दूजो वेटो उदैभाणरो च्यार मासरो जिणनूं उदैसिघ मारियो पछै सीसोदणीनू राणैजी वुलाय लीवी अखैराजरी गादी उदैसिघ सिरोही धणी हुवो सो आबू माथै मुवो सवत १७३२ रा आसाढ सुद ११ ।

१८६८ सिरोही डावी मिसल राणावतारी, जीवणी देवड़ारी देवडांमे सिरै पाडीवरो धणी, उण हेटै कळदरी, उण हेटै प्रभूजीरा गाँवरो धणी, नेजावाळरो धणी वैसै ।

१८६९ तेजावत १, सागावत २, प्रथीराजोत ३, कलावत – इत्यादिक देवडा लाखावतारी खापा है ।

१८७० रणधीर देवडो जिणरै वेटा तीन – भाण १, सूजो २, प्रताप ३ ।

१८७१ सवत १६३० देवडो लाखावत सूजो रणधीरोत प्रथीराजरो पिता जिणनू डेरै वैठानू देवडै वीजै हरराजोत मारियो।

१८७२ देवडो प्रथीराज सूजावत वखेल। परणियो हुतो जिणसू सिरोहीरा राव छाडणो कर वेच लेनापर हुयो राव अखैराज देवड़ा जीवराजसीनू महल प्रथीराजनू चूक करायो ।

१८७३ चादै अखैराज राव कनै सिरोहीरो आध लियो ।

१८७४ रणधीर १, पतो २, तेजो ३, मेघराज ४ ।

१८७५. मेघराजनू राव अखैराज राम साईदासोत भेळो मारियो. मेघराजरा भटाणै ।

१८७६ मेघराज सीसोदियो परवतसिंघरो जवाई ।

१८७७. देवड़ा मेघराजरा बेटारी विगत – नाटो १, भाखरसी २, डूगरसी ३, नरहरदास ४. नाटानू राम देवड़ारै बेटै मारियो भाखरसी चादा प्रथीराजोत कनै छै नरहरदासनू राव भटाणो दियो ।

१८७८ राव लखो १, जगमाल २, मेहाजळ ३, कलो ४, पतो ५, हरिदास ६ ।

१८७९. देवडो मेहाजळ राव जगमालरो भाखर माथै अखैगढ जठै रह्यो राव मानसिंघ मेहाजळनू मरायो मानसिंघ मुवो जद कलो मेवाजळरो सिरोही राव हुतो. काळदरी वेढ कर विजैजी राव सुरताण कलासू भाजियो ।

१८८० मेहाजळरा बेटारी विगत – कलो १, रायसल २, पचायण ३, जैतमाल ४, परवत ५ ।

१८८१ देवड़ा मेहाजळ जगमालोतरा बेटारी विगत – राव कलो १, परबतसिघ २, जैतमाल ३, रायसल ४ ।

१८८२. लखावत राव कलो मेहाजळोत देवडो जिणरा बेटारी विगत – पातो १, आसकरण २, महेमदास ३ ।

१८८३ पातारा वीसळपुर, आसकरणरा वाकली नै कोटडै, महेसदासरा अेके गावमे है कोरटो जुआचार है ।

१८८४ देवडा पता कला मेहाजळोतरै वालीसानू मार वीसळपुर लियो ।

१८८५ देवडो डूगर १, रुदो २, नरसिघ ३, सिखरो ४, भैरव ५, रामो ६ ।

१८८६ डूगर १, रुदो २, हरराज ३, वीजो ४, रामसिंघ ५ ।

१८८७ हरराज रूदावतरा बेटारी विगत – वीजो १, लूणो २, मानो ३, अजैसी ४, वणवीर ५, धनो ६, जैमल ७ ।

१८८८. देवडा हरराजरा बेटारी विगत – वीजो १, वणवीर २, धनो ३, अजैसी ४, भगवानीदास ५, मानो ६, लूणो ७ ।

१८८९ देवडा वीजारा बेटारी विगत – रामसिघ १, अमरो २, जसवत ३, भोजराज ४ ।

१८९० वीजैजी महाराणा जद जाम वेगरा भाईरै लहोडा लागा राव चद्रसेणरी बेटी जामवतीबाई वीजाजी लारै बळी ।

१८९१ वीजारा वेटारी विगत – भोजराज १, खीवराज २, रामसिंघ ३, जसवंत ४, अमर ५ ।

१८९२ देवडो केसोदास खीवराज वीजावतरो राव रार्जासंघ साथै माराणो ।

१८९३. अमरावत १, वीजावत २, सूरावत ३, सिखरावत ४, भैरावत ५, कुंभावत ६ - अै खापा देवडा डूगरोतारी सिरोहीमे ।

१८९४. रहवाडै अमरावत डूगरोत है ।

१८९५ उयपण माचाळ वगेरै ठिकाणा डूगरोता मेरावतांरा है ।

१८९६ रामपुगसू तीन कोस वररायो ठिकाणो देवड़ारो मालमराव वाजै अै देवडा सामतसीहोत है चद्रावतारा चाकर ।

१८९७. राव पातसाह कनै गयो जद देसमे लूणा हरराजोतनू राख गयो हो. कटार मारी. अकवर राव सुरताणसू कह्यो – लूणानू मार नाखजे राव सुरताण सिरोही महलामे लूणा हरराजोतनू मारियो मानो हरराजोत ही लूणा साथै माराणो.

१८९८ लूणारो महेस, महेसरो भोपत ।

१८९९ मानारो सादूळराव रायसिंघ साथै काम आयो. राव मया घणी राखतो ।

१९०० सादूळरो ईसरदास ।

१९०१ वणवीर हरराजोत राव सूरसिंह सुरताणोतरै काम आयो ।

१९०२ धनो जैमल माहो-माहरी वेढमे माराणा ।

१९०३ देवडो डूगर १, रुदो २, नरसिंघ ३, सिखरो ४, भैरव ५, रामो ६ ।

१९०४ डूगर १, रुदो २, नरसिंघ ३, सूरो ४, सावतसी ५, जसवत ६, करण ७ ।

१९०५ देवडा सूरा नरसिंघोतरा वेटा तीन – सावतसी १, तोगो २, पतो ३, वगडीरा धणी जैतावत वैरसल प्रथीराजोतरा वचनसू हटे मोटै राजा मारिया आप सिरोही ऊपर पधारिया तरै ।

१९०६ सवत १६४४ मोटो राजा सिरोही माथै गयो जद देवडो सावतसी सूरावत, पतो सूरावत, देवडो तोगो सूरावत, राडधरो हमीर कूभावत, राडधरो वीदो सिखरावत, नेतो चीवो - अै मारिया ।

१९०७ आवू मत कर और तोपा, देखे फौजा डाणै ।
जव लग ऊभो पातडो, तव लग मूछा ताणै ।।
ओ दूहो पता सूरावतरो है ।

१९०८. नरसिंघ देवडारो वैटो कूभो, कूभारो मेगळ जिण देवडा वणवीरनू वाह दे आण मारियो ।

१९०९. डूगर १, रुदो २, नरसिघ ३, सूरो ४, कलो ५, मैरादो ६, ठाकुरसी ७।

चीवा देवड़ा

१९१० चीवो १, खीमो २, जैतसी ३, दूदो ४, उदैसिघ ५, देवडा चीबारा बेटारी विगत – खेतसी १, खीवो २, रूपो ३, राजसी ४।

१९११ चीवा चहुआण भीले सिरोही गाव महेसर जिणरो धणी चीबो खीमो जिण लखावत देवडा कलानू सिरोही रावाई दे गादी बैसाणियो।

१९१२. खीमारो जैतो, जैतारो करमसी राव अखैराजरो उमराव करमसीरा बेटा दोय – गोयंददास नै भगवानदास।

निरवाण देवड़ा

१९१३. देवड़ो निरवाण जिणरै वसरा निरवाण कहावै।
कुकारसी डाहलिया कनैसू खडेलो लियो।

वागड़िया देवड़ा

१९१४. सिरोहीमे अेक खाप देवडा वागडिया कहीजै।

१९१५ देवड़ो केसरसिंघ वैजनाथोत सिरोहीरै गाव फळवद हुवो. बडो सतपुरस. इणरै रसोलो चाकर हो।

बोडा चहुआण

१९१६. बोडो चहुवाण, बोडारो लाखो, लाखारो बीकलदे, वीकलदेरो महीपाल, महीपालरो करमो, करमारो वीजो, वीजारा बेटारी विगत – वाघो १, वैरसाल २, सीहो ३।

१९१७ वाघा वीजावतरी बेटी फूलाबाई महाराज सूरजमलजी परणिया।

१९१८ सवत १६७४ गावा १० सू गाव सवाणो नाराणदास वाधावतनू महाराजा दियो।

१९१९. नाराणदासरै बेटा दोय – केसरीसिंघ नै कल्याणदास, राव रतन महेसदासोत जाळोररो धणी हुवो जद कल्याणदास कनासू सवाणो खोस लियो।

१९२० हरीदास कल्याणदासोत सिरोही राव अखैराजरै चाकर रह्यो।

१९२१. चहुवाणा के काल वार रजपूतानै मार दोय सौ पैंतीस गावासू वाव लिवी।

१९२२ चहुवाण बीकमसी राणुआ जातरा रजपूत मार पाच सौ सत्ताईस गावासू सूराचद लियो।

१९२३. चहुवाण हाफो वीकमसी सगा भाई हाफै कालवानूं मार साचोर लिवी. वीकमसी राणुवानू मार सूराचद लिवी।

१६२४ भीनमाळ चहुवाण भिलै लाखणसीरा वसमे है।

राणा नींबावतरो वंस

१९२५ चहुवाण राणो नीवावत राव मालदेजीरै चाकर रह्यो. सिवाणारो गाव समदरड़ी पटै पायो।

१९२६ राणारै वडो वेटो लूणो वडो रजपूत हुवो. १८९० चहुवाण माडण राणावत।

१९२७ चहुवाण मेहकरण राणावत दळपत उर्दैसिघोतरो नानो तुरकाणीमें काम आयो।

१९२८ चहुवाण महकरण राणावतरा वेटारी विगत – सिखरो १, देवीदास २, रायसल ३, रतनसी ४, रावत ५, सावतसी ६।

१९२९. दळपत उर्दैसिघोतरो सगो मामो सावतसी।

१९३०. चहुवाण सिखरो महकरणोत महाराज गजसिंघजीरो सुसरो।

१९३१. सिखरा महकरणोतरा वेटांरी विगत – दयालदास १, रामसिंघ २।

१९३२ पीपरली चहुवाण देईदास महकरणोतरा है।

१९३३. चहुवाण सावतसी महकरणोतरा वेटारी विगत – सादूळ १, गोपाळदास २, वळू ३, अचळदास ४, भीव ५, कलो ६, अजो ७।

१९३४ सादूळ महोवतखानरै चाकर. दिखणमें काम आयो, गोपाळदास दोलतखान आगै दोलतावाद काम आयो।

१९३५. भीव जुझारसिंघ दळपतोत आगै काम आयो।

१९३६ वळू सामतसीहोतरा तीन वेटा – नरहरदास १, सहसमल २, वेणीदास ३ – आ तीनारै वसरा साचोररै परगनै चहुवाण है।

१९३७ साचोरीमे वळू सावतसिंघोतरा वेटा तीन ज्यारी तडां तीन – नरहरदासोत १, सहसमलोत २, वेणीदासोत ३।

१९३८. ईडरमें चहुवाण फतैसिघोत है – देईदास १, फतैसिंघ २, प्रथीराज ३, दयालदास ४।

१९३९ कागनडै चहुवाण भोजराज दयालदासोतरा है।

१९४०. चहुवाण जैसिघरो भैरूदास, भैरूदासरो जाजण, रावजी मालदेवजीरै चाकर पहोकरण रहतो देवराजोतसू वेढ हुई जठै काम आयो।

तेजसी वरजांगोतरो वंस

१९४१. वरजाग १, तेजसी २, प्रथूराव ३, वाघो ४, सिंघो ५, वणवीर ६, सूजो ७, रामो ८।

१९४२ राव वेगड़ो वरजाग, वरजागरो तेजसी, तेजसीरो प्रथमराव, प्रथमरै रावजी सूजोजी परणिया सेखोजी, देईदासजी प्रथम रावजीरा दोहिता।

१९४३ प्रथूरावरो वाघो जिण कोढणावाटीमे वाघावास गाव वसायो वाघारै सिंघो, सिंघारै वणवीर, वणवीररै मोटो राजा परणियो।

१९४४. वणवीररो सूजो, सूजारो रामो वडो सीकाई वडो रजपूत हुवो थोभरी खारडी पटै रही।

१९४५ चहुवाण अजो प्रथूरावरो बेटो, देईदासजीरो मामो चित्तोड भिळता देईदासजीरै काम आयो।

वागड़िया चहुवाण

१९४६ सरणो देवी कुळदेवी वागडिया चहुवाणारै।

१९४७ कालो भीमसिंघजी ईडर परणीजण जावै जठै महीरै घाट जान आयी. वागडिया प्रण माडियो उण घाटानू छोड दूजै घाटै जान उतरी.

१९४८ मही नदीरो अेक घाट वागडिया चहुवाण तोलक है उण घाट माथै वागड़िया काम आया ज्यारी छत्रिया है।

१९४९ राकसिया चहुवाण लवेरै भाटियारै पेटसू ठावा आदमी है।

१९५० दूहो—

रिपु भगतणरो राडियो, जाजक रिपु सी जाण।
कोयलरो रिपु कागलो, चारण रिपु चहुवाण॥

अै पूरबिया चहुवाण।

चावडा

१९५१. चावड़ा जादवामे मिलै सुणीजै है।

१९५२ अणहल ग्वाळैरा कहणासू वनमे वनराज चावडै नगर वसायो. नाव अणहलपुरो पटण. मुसळमान पीरान पटण कहै।

१९५३. चावड़ारा ठिकाणा च्यार-माणसा १, वरोहीडो २, लाकरोडो ३, वसी ४।

१९५४ चावडो रावळ आसो जिणरी लुगाई वाघेली उघळ नै राव मालदेजीरो बेटो गोपाळदासजी हेडर जाय रह्या जिणरा घरमे बैठी।

तुंवर

१९५५ तुवर चद्रवसी ज्यारी साख नव – जनवारीअट १, चांद २, लवो ३, डाणा ४, कळपा ५, भमर ६ – इत्यादिक।

१९५६. यजुरवेद माध्यदिनी साखा, पच प्रवर यग्योपवीतरा, व्याघ्रपद गोत्र, चील कुळदेवी खेजडी सहित आसोज सुद ८ रै दिन पूजीजै तुवरारै।

१९५७ खतान जातरो ढाढी, सीवोरो जातरो भाट, श्रीमाळ जातरो पुरोहित तुवरारै।

१९५८ दिलीमडळमे तुवरारी चौरासी है गाव दोयसी गहलोतारा दिलीमडळमे है. राणो नरपतसिघ उठै हुवो हमै अेक राणो वाजै, दूजा गहलोत चौधरी वाजै।

अरजुणवंसी

१९५९ डूगरपीठामे नूरपुर सहर है उठारो राजा चंद्रवसी है अरजुणरा वसमे निसाण झडामे कपिरो चिह्न मांडीजै।

कठोछ

१९६० चद्रवसी सुसर्मा राजा जिणनू पाडव पकडियो आ कथा महाभारतमे है. सुसर्मारा वसज खत्री कठोछ कहावै है ज्वाळाजीरै राजा कठोछ है।

१९६१ ससारचद कठोछ ज्वाळाजीरो राजा जिणरा निसाण झडामें त्रिसूळरो चिह्न मडित हुवै।

१९६२. सहसारचदरी गादी सहसारचदरो बेटो अनिरुधचद्र हमे है।

झाला (मकवाणा)

१९६३ मारकडे मुखर वसमे हुवा जिणसू मकुआणा कहाणा।

१९६४. उत्तरमे कुतळपुर जठै राज कियो किताईक पीढी. उठासू उठ करांटा ठिकाणो जठै राज कियो पछै केहर मकुआणो गुजरातमे आयो केहर देहर पाळवण गूजरखड आया आसापद है।

१९६५ वाकानेररो धणी झाळो राजा कहावै. धागधडे झालो महाराणो कहावै. नीवडी वढवाणरो धणी झालो ठाकुर कहावै।

१९६६. हेम झालारै राजधानी धागधड़ो हहेल वदनी।

१९६७ झाला जालमसिंघरो दादो माधोसिंघ झालावाडमे वढवाण ठिकाणो है जठासू सावर सगतावता कनै आयो सावररै धणी मोडी नावै गाव दियो सायद–

मोडी माधोसिंघरी, वतै न ऊजड थाय ।

१९६८ छोटी धांगड मुहरा सगतावत ज्यारो भाणेज झालो जालमसिंघ ।

१९६९ पछै कोटारा महारावजीनू बेटी परणायी कोटै नानतो ठिकाणो पटै पायो. सायद–

माधो अटक न ऊतरै, माधो कटक न जाय ।
बेटी साटै वेगडो, घर वैठो घर खाय ।।

१९७० झालो जालमसिघ कोटासू जाय राणा अडसीजीरै चाकर रह्यो जद सगतावतारो ठिकाणो गाव चीताखेडो पटै पायो ।

१९७१ उजैण माह राडसू झालो जालमसिंघ भागो मैदपुरमे दिखणिया पकडियो पछै ईगाळियै त्रवकजी छोडाय कोटै पोचतो कियो ।

१९७२ वढवाणरा धर्णारै बेटो हुवो नाम जालमसिंघ दियो आ वात सुण राजा जालमसिंघ कोटै वेराजी हुवो – मो वैठा जालमसिंघ कवररो नाव वढवाण दिरायो सो अनुचित काम कियो ।

१९७३. वडवो मुसलमान जिणरी बेटी झालै जालमसिंघ खवास किवी. वा जवारण कहावती उणरो वेटो गोरधनदास ।

हुल

१९७४ हुलसार, हुलसाररै सीमाल, सीमालरै वाघल, वाघलरै जैतसी, जैतसीरै हरो, हरारै गैंनो, गैंनारै मेलो, मेलारै सिखरो, सिखरारै कीतो, कीतारै करण, करणरै भादो, भादारै पतो, पतारै केसोदास ।

१९७५ हुलसार १, सीमाल २, वाघुल ३, जैतो ४, हरो ५, गैंनो ६, मैलो ७, सिखरो ८, कीतो ९, करण १०, भादो ११, पतो १२, केसोदास १३ ।

१९७६. हुल करण कीताउत बडी वेढमे काम आयो ।

गोड

१९७७. गोडारै कुलदेवी नारायणी केळमे विराजै है केळा गोड न खावै केळारा पानरा दोनामें जीमै नही ।

१९७८ लाखण गोड भाट हुवो जिणरै वशरा लाखणोत भाट गोडारा व्रतेसरी ।

१९७९ करसाण जातरो ढोली गोडारो व्रतेसरी ।

१९८०. ढाकासू गोड राज वावनजी कछ राज दुवारका गया. पाछा आवता पुसकरजी कनै दहियानू मारियो प्रथीराज चहुवाण वहन परणायी दिली प्रथीराज गयो जद अजमेर गोडानू दे गयो ।

१९८१ कुतल आव न चक्खिया, थिरराज कटाया ।
आव काटि आवेरा, मारोठ मगाया ॥
थिरराज गोड मारोठ हुवो ।

प्रकीर्णक राजपूत वंश

वालीसा

१९८२ हाथी, सूजो, मूजो, तोगो, रणभू – अै वालीसांमे ठावा हुवा खीमरो वालीसो नामजादीक हुवो ।-

वाला

१९८३ वालै धवचै पहला कुतवखाननू मारि पछै पुरदलखांनू सिवाणचीमें मारियो ।

१९८४. धवेचा दासारै भाखरसी हुवो दहियारो भाणेज जिणनू पातसाह अकवर सांचोर सिवाणो अै ठिकाणा दिया ।

१९८५ अेभल वालो पडवाज घोड़ै चढि सेवड़ां मेह हिरणांरा सीगड़ां वधो जिको छुडावण गयो ।

१९८६ कावारो पड़गनो लूखो कहावै. सताईस गावांरो. आवातरी कावारो दत्त सावळांरो गाव. सावळ कावारो वारट ।

बुंदेला

१९८७. राजा हरदेस बुदेलै वंसीधर कनांसू उदारा लडणरा दूहा कराय रामचद्रिकामें धराया. केसोदासरा वणायोडा नही है ।

कासी

१९८८. कासीरो राजा वळवर्डसिंघ तगो, जिणरी मूछ माथै कागदी नीवू ठैरतो ।

१९८९ वळवर्डसिंघ सूजा वुधौलारी सभामे गयो सूजा वुधोलो वोलियो – वनसीनद वळवर्डसिंघ समझियो नही मुनसी वोलियो नवाव फरमावै है वैठो वळवर्डसिंघ वैठो उण दिनसू फारसी पढणी सरू किवी कितांईक वरसां फारसी वोलण लागो वळवर्डसिंघ ।

१९९० वरान राजा कासीरो धणी नित्य पाच जवनारै गळै कराय उवांरी छाती माथै पग धर पछै जमी माथै पग धरतो. जवनां काळपीरै खेत वराननूं

हटायो कासीरा कोटमे घालियो. पछै पीरां हल्लो कियो कासीरो कोट भेळण जद वरानरी तिरिया दासिया नगन कागर माथै चढी. पीरारै सनमुख हुई. पीरा पीठ फेरी कासीरो किलो पडियो. जमी भेळो हुवो. वरान परियह सहत दटि मुवो. कासीरी वसती विगड गयी ।

तिरहुत

१९९१ वारै पुसकर तिरोहितमे राजा सिवसिघ वणायो जळ तळजीरी हुवो. तळाव घोडा दोड अेक कोसरी गिरदमे वणायो उणमे कमळा नदी आय पड़ी ।

१९९२ तिरोहितरै राजा सिवसिघ अैराकी घोडारै अेड लगायी, ताजणारी दिवी, डोर काढी. घोड़ो सिवसिघनू ले भागो सो आज आवसी ।

नेपाल

१९९३ गणेसप्रसाद, भैरूप्रसाद, विष्णुप्रसाद इत्यादिक हाथियारा नाम नेपाळरै राजारै ।
नेपाळ माथै चीणरो लसकर आयो हो जिणरो पार नही हुतो—नेपाळरा कहै ।

मुसळमान रजपूत

१९९४ परमार १, पडिहार २, खीची ३, तुवर ४, सोळकी ५, भुट्टा ६, सम्मा ७, जोइया ८, दहिया ९, मोहिल १०, जझा ११, चहुवाण १२—इत्यादिक रजपूत मुसळमानामे है वरसिघ भाटी मुसलमान हुवा ज्यारा घर पूगळमे है ।

१९९५ जैतमाल राठोड मुसळमान हुवा ज्यारा घर छै-सात नागोरमें है ।

१९९६ वाघेलो वेट दहियो देसोत दीठो नही ।

जाट

१९९७ कछवाहासू जग कर जाट जवारसिघ अठारै दिन अलवर रह्यो जद अलवर जाटरै हुती ।

मराठा

१९९८ दिखण डभोळथी सूरत खुसकीरै राह कोस १३० तठी सिवा दिखणीरो चाकर नैमूजी जादोराय तीन हजार असवार पाच हजार पाळा ले साथै नै सवत १७२० रा माह वद ५ सूरत मारी पाच दिन रह नै गाव लूटियो, वाळियो पचास लाखरी मता ले गयो केईक अधकी कहै छै ।

१९९९ विलदा अगरेजियारी कोठी वची अै सभ ऊभा रह्या।

२००० गाव वुदडादे सौ वाळियो पातसाही थाणादार हुतो जिण कोट पकड़ियो सो पातसाहजी दूर कियो पातसाहजी फुरमाया – च्यार लाख रुपया लगाय सूरन दोळो कोट करावणो अेक वरसरी जगात वोपारियानू माफ किवी।

२००१ वालाजी पडितरो वेटो पेसवो वाजेराव पिंगळिया जातरो मरहटो छत्रपतीरै पेसवो हो वाजेराव पहला।

२००२. कोकणरै नै गुजरातरै विच डाभाडारो अमल हुतो।

२००३ त्रवकजी डाभाडानू वाजेराव पेसवो मारियो।

२००४ त्रवकजी डाभाडानू वाजेराव पेसवो मारियो हैदरावादरो नवाव आपरै माथासू पाग उतार दिवी कह्यो – हमारा दस्तार भाई त्रवकरावकू मारा जिणकू मार मै पाग बाधूगा पछै वाजेराव नवावसू मिलियो है. नवावनू राजी कियो जद नवाव कह्यो – माग, तूठो. इण कह्यो – पाग वाध लीजै नवाव पाग बाध लिवी।

२००५ साहू राजारो नव वाजेराव सवा लाख रावत ले वगालै गयो. सरजंगनूं भजायो, पछै लखणेऊरो नवाव मनसूरअली वसीण कनै अढार लाख रुपया पेसकसीरा लिया।

२००६ पूनै दिखसु आनि वाजेरावरै तीन वेटा हुवा – नानो १, भाऊ २, रुघनाथराव ३।

२००७ नानारो वेटो वडो विसवासराव काका भाऊ साथै गिलजारी राड़में काम आयो।

२००८ सवत १७७२ छठ बुधवार दिखणी भाऊ माराणो अहमदसाह दोजथी जीतो।

२००९ अजमेररो सूवैदार सताजी वावळियो दिखणी भाऊरा जगसू कंगालरै भेख किसनगढ छतरीमे आय वैठो हो. माळी कनासू मूळा मांग खाधा।

२०१० पेसवा नानारी गादी नानारो छोटो वेटो माधोराव वैठो।

२०११ पेसवा माधोरावरी गादी माधोरावरो वेटो नारायणराव वैठो।

२०१२ पेसवा नारायणरावरी गादी नारायणरावरो गरभावास छोटो माधोराव वैठो।

२०१३ नानो फडनवीस रात-दिनमे दोय घडीरी नींद लेतो।

२०१४ दोनू पेसवाका उमराव अम्रतरावजी कासी रहै, वाजेरावजी विठूर रहै।

२०१५. मानकरी उमराव सवा सै पेसवारै हुता.

२०१६ उभाड गायकुहाड़ा जोडैंज हुता ।

२०१७. नागपुरका भोसळा श्रीवतका दिया हुआ मुलकमे मुहम मालकी करै. गायकवाड ही अै से सीधिया हुलकर पेसवारा अमलमें सर्वत्र मुहम मालकी करै।

२०१८. नागपुररा धणी वडा रघूजी, ज्यारै तीन वेटा हुवा – जानूजी १, मूधाजी २, सोबाजी ३ ।

२०१९. मूधाजीरा वेटा तीन – रघूजी १, चिमना बापूजी २, मानिया बापूजी ३ ।

२०२० रघूजीनू जानूजी खोळै लिया जानूजीरी राणी दरियाबाई।

२०२१. सोबोजी खोळो उथामणनै फोज ले आया जगमे मूधाजीरै हाथरो घमाको लूटो हाथी चढिया महावत नूरमोहमदरा कह्यासू सोबाजीरै गोळी लागी. हाथीरै होदै खेत रहिया।

२०२२ लालप्यारो घोडो, नगीनो हाथी नागपुरा राजारी मरजीसू हुवा ।

२०२३. दस हजार घोडो सासतो नागपुर तबेलै हुतो ।

२०२४ सिंधिया दिखणी सावतारा पायपोस वरदार नै हुलकर सावतारा उमराव है।

२०२५ सिंधियारो सेस - कुळ कहावै झंडामें सरपरो चिह्न है आरै ।

२०२६ सिंधिया मानाजी फाकडा वडा बहादुर हुता टीपूरी नोकरी करी. करणाटकसू दरब रोजगारको जबरीसू दिखणमे लाया ।

२०२७ मानाजी फाकड़रा बेटा अगदराव फाकडा धाडा किया सिरजीत रावरा मारणमें सामल हुता गुजरातमें गया, उठै हीज मुवा. अणदराव फाकड़ारा बेटा मुकदराव हमै दोलतरावजीरै खोळै गादीनसीन हुवा।

२०२८ कनेर खेडासू उठ चमार गूदो सिंधिया अपणायो चमार गूदारो नाव श्रीगूदो प्रसिध दायो कियो।

२०२९ दिखणमें किनेरखेडी उतन सिंधियारी जयाजी, जोत्याजी, दत्याजी तीनू राणोजीरा बेटा राणोजी जनकूजीरा, जनकूजी दत्याजीरा।

२०३० जयाजीरै लुगाई सखूबाई, जोत्याजीरै लुगाई सगुणाबाई, दत्याजीरै लुगाई भागीरथीबाई ।

२०३१ सिंधिया जमायानू लोक आपो कहै ।

२०३२ दोलतरायरी वायकू बायजाबाई, सरजैरावरी बेटी, हीदूरावरी वहन दूजी वायकू रुकमाबाई ।

२०३३ सिंधिया राणोजीरै खवासरो वेटो पटेल माधजी केदारजी. सिंधियारी लुगाई मेणावाई जिणसूं पुत्र प्रगट हुवो दोलतराय।

२०३४. माघजी पटेळरी त्रिया पारवतीवाई जिण दोलतरायसूं जग कियो।

२०३५ भाऊगरदी हुई जद पटेल माघजीरो पग कटाणो. पठाण राणंखां आपरै घोड़ै चढाय ले निसरियो पूनै गया पछै पटेळ वडो भाग पायो।

२०३६ दिखणी जगू वापूजी ओ दादोजी लखू ओ दादो किसनजी गोपाल भाऊ-रायजी पटैल राणोजी वायडाण वगेरै माघजी पटैलरै ठावा आदमी हुता।

२०३७ हुळकर मलारराव दिखणमे वेटीरो व्याव कियो जद भेळपरै तावै वुलायोडा व्याव ऊपर बूंदीसूं उमेदसिंघजी रावराजा दिखणमे गया हुता।

२०३८ सवत १८२३ रा वैसाख वद ११ मलारराव मुवो।

२०३९ धनगर नराणराव वारगळरी वेटी गोतमावाईनै विलाडै दिवाण मोहणदासरी वेटी ननूवाई दोनूं हुलकर मलाररावरी त्रिया सत कियो।

२०४० हुलकर मलाररावरी लुगाई गोतमावाई वेटी वेटो खाडेराव भरतपुररा जाटा मारियो खाडेरावरै अहल्यासूं पुत्र भालेराव पुत्र हुवो महा नीच उण मुवा तकूजी खोळै आया।

२०४१. अहल्यारै मूकतावाई वेटी फणसियानूं परणायी।

२०४२ अहल्यारी वेटी ऊदावाई फणसियानूं परणायी हुती।

२०४३. कासीराय १, मलारराय २ – दोय वेटा तकूजी हुलकररै।

२०४४ माधवारो वेटो वापू हुलकर।

२०४५ सतावारो वेटो भीखाजी।

२०४६ तकूजीरी तिरियारो नाव रुकमावाई।

२०४७ तकूजीवा १, माघजीवा २, सताजीवा – अै तीन सगा भाई।

२०४८. पाटणकर आभाजीराव वडो उमराव हुवो है पेसवारै उठणरो कुरब हुतो।

२०४९ गढमडळामे गूंडरो राज हुतो सो दिखणिया खोसियो।

२०५०. सोलापुररो राजा ढेढ है सो वेडर कहावै हमै हैदरावादरै नवाव सोलापुर ले लियो।

पिंडारा

२०५१ पिंडारा करणाटकरा कदीमसूं पछै करणाटकसूं आया सावतारै चाकर रह्या आ हिंदुसथान माथै हुलकरानूं विदा किया जद पिंडारा तईनात किया जदसूं हुलकरारा चाकर ठैरिया पिंडारा।

२०५२. पिंडारारी बाईस ढाल हुलकररै तावीतमे हुती खरडारी राडमें हैदराबादियानू लूटी पिंडारा धनाढ्य हुवा।

सिख

२०५३ गुरु नानगरै बहन हुई नानगी।

२०५४ चमार तेगबहादुररै सामल माराणो उणरा सिख रैदास कहावै रैदास गुरदे पास।

२०५५ मिरासी नाम मरदानो तेगवहादुररै साथ माराणो, जिणरा मिरासी मरदानारा पथरा सिख रवाबी है सिख हजारीरो माल उणानू दैवै।

२०५६ चडाळ तेगबहादुररै साथ काम आयो उणरा सिख रगरेटा कहावै रगरेटा गुरुदा वेटा।

२०५७ लाहोररो राजा सिख रणजीतसिंघ जिणरै दोय कपू तिलगारा, अेक कपू गोरखियारो, अेक कपू हिदुस्तानियारो, जुमले च्यार कपू।

२०५८ सिखारी हाल दस लाख बदूक है।

२०५९ सिख मसीतमे ग्रथसाहब पधराय मसीतनू मसूगढ कहै सेवापथी सिख दयावत विसेस हुवै, सबकी सेवा करै, दुखीकी विसेस सेवा करै भीख न मागै वडी वट नै आजीवका करै।

२०६०. गुरु नानकरा भेखमे अकाली हरामजादा हुवै।

२०६१ सिख सिखनू कहै – मुडितका विसवास न करणा।

२०६२ सिख चक्रवर्ती हुसी – ग्रथसाहब कहै है।

२०६३ सिखारै ग्रथसाहबमें कहै हे – चवदै सौ वरस ताई सिखरो प्रताप वधबो करसी।

२०६४ चवदै सौ वरस सिखारो राज रहसी – यू सुणीजै है।

जोगी

२०६५ द्वादस गुरू, द्वादस शिष्य, जुमलै चौबीस कापाळिक हुवा है।

२०६६ उगरभैरव कापाळिकरै नै शंकराचार्यरै विवाद हुवो है।

२०६७. जोगी गरीबनाथ सिववाडी आयो भागढभूतड थका रहै कहै हमीर पतरपुरो जिणकू सिववाडीका राज दै।

२०६८ अेक दिन चापै पेटियो गरीबनाथजीनू दियो आं कह्यो तू सिहवाडीरो मालक हुसी आ वात सुण रणधीर सिववाडी माहेसू चापानै काढ दियो. ओ नगर जाय रावळ वीदारी चाकरीमे रह्यो।

२०६९. जोगी गरीवनाथजी सोव आसण वांधियो चापा दूदावतरी वारमें. नागुड़दो भाडरवे गरीवनाथजीरा जोगी है ।

२०७०. गोरख टीलासू पीर नदीनाथजी अखड वस्ती अटकरै तट वारै तट जठै आण आसण वांधो. सवा लख हिंदू आरा सेवक है अटकसू किलासू मखड नजदीक है ।

२०७१ मखडा नवीनाथजीरी गादी पीर सीतळनाथजी. सीतळनाथजीरा चेला हुसियारनाथजी जोवपुर आया सवत १८८५रा सावण सुद १२ ।

२०७२ मखडा सीतळनाथजी पीर कहता – जोगी हमारे वरसमे अेक वार आवै सो हमेसा गुरुनै वरसमें दोय वार आवै सो हमारो गुरुभाई ।

२०७३. सवत १८८४रा आसोज सुद १५ आयसजी महाराज श्री लाडूनाथजी महामदिर हाथी पचीस दिया. ज्यारी विगत – हाथी १ भाडियावासरा आसिया वाकीदासनू दियो, हाथी १ मूदियाडरा वारट अनाडसिघनू दियो, हाथी १ कोटडारा वणसूर भैरानू दियो, हाथी १ लोलावसरा वारट गोकळदासनूं दियो, हाथी १ मोरटउकारा वारट चालगदाननू दियो, हाथी १ भदोरारा सांदू गिरवरदाननै दियो, हाथी १ कवाळियारा खडिया जालानू दियो, हाथी १ मिहरूरा महियारिया नदलालनू दियो, हाथी १ मयाणियारा वारट वगसीरामनू दियो, हाथी १ खुरलारा सुरताणिया वीजानू दियो, हाथी १ वड़ोईरा रतनू केहरानू दियो, हाथी १ खारावाररा वोगसा सुरतानूं दियो, हाथी १ कसूवलारा वारट सिवदासनू दियो, हाथी १ घवूकड़ारा गूगा उदैरामनू दियो, हाथी १ भोजग मनोहरदास जोवपुररो जिणनू दियो, हाथी १ जोवपुररा भाटनू दियो, हाथी १ जोगियांरा भाटनू दियो ।

२०७४ नाटेस्वर पथरा जोगेस्वर सतोखनाथजी अंजा भादारो कोढ गमायो ।

२०७५. राजेन्द्रगिरजीरो चेलो उमरावगिरि, उमरावगिरिरो वेटो रूपगिरि खिताव दिलावरजग, रूपगिरिरो वेटो रामलालगिरि ।

२०७६. कोटै उत्तमगिरजीरा विसणूगिरजी, वखतगिर दोया चेलां भंडारो आछो कियो आं लारै ।

२०७७ विसणूगिरिरै चेलो दयागिरि वखतगिरिरो चेलो गैवगिरि ।

२०७८ सूळी घोडी कठपीजरो नागोर आग्या करि प्रभातगिरजी दूर करायो ।

२०७९. सन्यासी धूणीगिरि धूणीनाथ कहायो वीकानेर सूरतसिंघजी आनूं गुरू कर मानिया ।

२०८०. चितोड माथै रावत भीमसिंघजी जद आ आगै समीचा खेडारा सध्यागिरिजी मनीजता ।

वैरागी

२०८१. पूरबमे मकसूदाबाद चद्रकाणै रामावतारा वडा असतळ है. दोय सै वैरागी सासता रहै, वडा सदावर्त दिरीजै है ।

२०८२ पूरबमे पढै वैरागी टकसाळी कहावै, अपढे अडवगी कहावै ।

२०८३. वरधमान, अरणघटा आ दोना ठिकाणा नीबावतारा वडा असतळ है, वडा सदावर्त दिरीजै है ।

२०८४. झालारो वाकानेर जठे कूवावतारो ठाकुरदुवारो है ।

२०८५. कबीर सवत पनरासैमे हुवो. दादू पहला सौ वरसा पातसाह सिकदरनू परचो दियो सिद्धपुरादिक ठिकाणा नेमीस्वर विहारादिक जिन-मदिर सप्रति कराया गजधर, अस्वधर, नरधर मडित जोतिसिया अरज किवी – आपरी आयु सौ वरसरी है सौ वरसरा छत्तीस हजार दिन हुवा छत्तीस हजार जिन-मदिर सप्रति कराया मातारा उपदेससू आपरी ऊमररा दिना जिता जिन-मदिर कराया. जुमलै सवा लाख जिन-मंदिर कराया राजा सप्रति नवासी हजार जिन-मदिररो जीर्णोद्धार करायो सगती राजा परमार कली भरत क्षेत्र राती क्षेत्र जीतो सिंध सौवीर देसरो राजा उदई नाम सो साधू हुवो जैनी ।

जैन साधु

२०८६ हीरविजय सूरि तपगछमें श्रीपूज, जिनचद्रसूरि खरतरगछमे श्रीपूज, अेक समैमें हुवा अकबरनू परचा दिया ।

२०८७ विद्या खरतरारै विसेस, घन तपारै विसेस ।

२०८८ तपागछमें तेरै बैसणा है, खरतरगछमें इग्यारै बैसणा है ।

२०८९ विजयदेवसूरिरा वसरो श्रीपूज जिणरा जती तपामे घणा है उण पछै विजयाणद सूरिरा वसरा श्रीपूजरै जती घणा है ।

२०९० तपगछरो जती जानविजै महाराज अजीतसिंघजीरो विद्यागुर ।

२०९१ ग्यानविजै तपगछरो जती महाराज अजीतसिंघजीरै विद्यागुरू पळासणी पटै हुती. उणरै सारा चेला कपूत हुवा ।

२०९२. ग्यानविजै अजीतसिंघरो गुरू, जिणरो चेलो वीरमविजै, घरमे त्रिया घाली ही. उणरी बेटी फळोधीरा मथेण श्रीचदनू परणायी ।

२०९३ हीरविजै जिनमतरो टीपणो वरतियो हो पछै संवत १८४१ रै वरस नागोरी लूंकारा गछरा श्रीपूज हरखचंद जिनमतरा टीपणारो वरतारो कियो ।

२०९४ कछ देसमें कच्छी ओसवाळ कक्खसूरी किया उवै हमै आधाईक आंचळियामें वसै है, आधाईक तपामे वसै है ।

२०९५ वीकानेरमे सात सौ घर खरतरगछरा स्रावकारा है ।

२०९६ जिनदत्तसूरि परचा घणा दिया देवानुग्रहात् ।

२०९७. जिनदत्तसूरिरो पोतोचेलो जिनकुसळसूरि दादागुरू पोतोचेलो दोनूं दादाजी कहावै ।

२०९८ रूपो-रंगो गुरू भाई रूपारा वडा खरतरा, रंगारा रंगविजया ।

२०९९. खरतरो जीवण जती अेक महाराज अभैसिंघजी आगै मनीजतो चुगली घणी करतो चेला इणरै कपूत हुवा ।

ओसवाळ

२१०० रतनप्रभ सूरि पछै कवळैगछ कक्खसूरि हुवा ज्या वहतर गोत्र ओसवाळ किया वाघरेचा, वांघसार इत्यादीक ।

२१०१ कवळैगछ रतनप्रभसूरी गांव ओसियामें अठारै गोत्र ओसवाळ किया – तातेड़ १, वापणा २, करणावट ३, वलह ४, मोराक ५, कुळहट ६, विरट ७, लोहडे साजने ८, श्रीश्रीमाळ ९, श्रेष्ठ १०, सचेती ११, आदित्यनाग १२ इत्यादिक ।

२१०२ श्रेष्ठ गोत्र साखा – वैंद्य १, विरट गोत्र साखा भुरट २, वहल गोत्र साखा चोरडिया ४ ।

२१०३ साह भैंसो माडूगढ, हमीर लालाढो इलवर तजारै, सुराणो सोम सैंभर, लोढा रामो भैरव दोनूं भाई आगरै, कोठारी रणधीर मेडतै, मुहणोत जैमल जाळोर, कोठारी आसकरण मेडतै, परवत लूणियो जाळोर, कांकरियो वाली कुंभळमेर, रतनसी गांधी जाळोर, मलकसी विहारी आगरै, थिरो भंडसाळी जेसळमेर, वछावत करमचंद संगरामोत वीकानेर, कावड़ियो भाभो भारमलोत उदैपुर—अै आछा दाता हुवा ।

२१०४ जगदेव परमाररो बेटो मधुदेव, मधुदेवरो सुर जिणनूं श्रीपूज धरमघोसाचार्य वाणियो कियो सुररै वसरा सुराणा कहाणा ।

२१०५ संवत १११५ सुराणा नागोर वसिया ।

२१०६ नागोररै सुराणै सहदेव चूहडमलोत लाख रुपिया आफरा घरसूं राजमें भर मुहणोत नैणसी सुंदरदासरा छोरू कबीला कैदसूं कढाया ।

२१०७ नागोररो सुराणो पूजो, पूजारो कुजो, कुजारो सतीदास, सतीदासरी बेटी सुसाणी जिणरी सगाई दुगडारै किवी ही उवा कवारी हीज बीकानेररै गाव मोरखाणै जमीमे प्रवेस कर गयी इणरो वडो देवळ है – मूरखाणै इणनू सुराणा दुगड दोनू पूजै है ।

२१०८ खाटूरो परमार खीवसी जतीरा उपदेससू वाणियो हुवो उणरै वसरा खीवसरा वीसळपुर अेकण जोधपुररा अेकणरा उदैपुर राणाजीरा कामेती है ।

२१०९ पूगळियो मुहतो फळोधी राव हमीररो कामेती राव हमीररी सभामे बैठो उणरै बेटो हुवो जद वधाई दिवी उण वेळा भैरवी बोली. रावजी पूगळिया मुहतानू कह्यो – इणरो नाम कोचर दीजो, इणरो घणो परवार वधसी, ओ भागधारी हुसी, यू हीज कियो कोचर मुहतारा हमै मारवाडमे तीन सै घर है ।

२११० अेक जगडू वधमानरो, दूजो जगडू सोलावत हुवो ।

२१११. विमळसा उदै भाणरो पोरवाळ ।

२११२ वसतुपाळ, तेजपाळ, मालदे, लूणा – च्यारू आसराजरा बेटा ।

२११३ वस्तुपाळ तेजपाळ देलवाडै जिणमदिर करायो जिणनू अठारै करोड रुपिया लागा ।

२११४ आबू माथै गाव देलवाडो विमळसाह जिनमदिर करायो जिणनू नव किरोड नै किताईक लाख रुपिया लागा है ।

२११५ खरवै तपरो बेटो भैंसोसाह आभानगरी हुवो ।

२११६ माडूरो नाम आभानगरी है ।

२११७ भैंसोसाह जातरो गधइयो हो जिण सवत ९८८ ।

२११८ अणलपुर पाटणमे गुजराततरा वाणियानू वैक छकिया ।

२११९ रायमल वैद मुहतो सोजत हुवो वीरमदेजीरै काम आयो सिर पड़िया जूझियो कवध हुय वेटानू मारियो सायर –

मुहता माटी मारका, घरराः गणै न पारका ।

२१२० पतो वैद मुहतो सिवाणै कला रायमलोतरै काम आयो ।

२१२१ वैद मुहतो पतो अजावत सिवाणै कलाजीरै काम आयो सायर –

पडियै सिर दीधो पातो कुभट गिरवर ।

२१२२ पता वैद मुहतारै नराणदास ।

२१२३ पळसी वैद मुहतो महाराजकुमार गजसिंघजी जाळोर लियो जद विहारियांरै काम आयो ।

२१२४ सवत १६८५(?)करमचद डोसी सैत्रुजयरो जीरणोद्धार कियो उदैपुरवासी ।

२१२५ मुहणोत नैणसी जाळोर आमल जद वाडमेररो कामदार कुमो जिणरी वेटीरी सगाई नैणसीजीसू किवी नैणसी परणीजणनै गयो, खाडो वाडमेर मेलियो कमो मूसळ खडग सामो मेलियो डावडी औरठै परणायी जिण कारणसू नैणसी वाडमेर हदवाट मेलियो वाडमेर प्रोळरै कगाररै काठरा किंवाड हुता जिके आण जाळोर गढरी पोळ चढाया. सायर—

वाहडमेर जुगा लग डूबो, कमला - तणी कमाई ।

२१२६ मुहणोत सुदरदास जैमलोत गाव कवळै सीधल सीधलारा आदमी कट पाच सै जणा मारिया पचीस सती हुई वडो राहचक हुवो ।

२१२७ गाव सूजासररो वाणियो जात भडसाळी करणीरै दरसण आयो इणरो रग भूरो हुतो आप फरमायो – आव म्हारा भूरिया ! जदसू उणरो नाव भूरो प्रसिद्ध हुवो भूरारै वसरा भूरा कहावै देसणोकमे माताजीरा खजानारी कूचिया आ कनै रहै छै ।

२१२८ जगनाथ १, रायमल २ – अै दोय वेटा लूणा गोरावतरा ।

२१२९ भडारी जगनाथजीरा वेटा दोय – अेक जीवराज, दूजो हेमराज ।

२१३० चतुरभुज भडारी जीवराजोत है ।

२१३१ गगारामजी नै वछराजोत भडारी – अै हेमराजोत ।

२१३२ सिवाणै भडारी मेघराज रावडैरारी पीढिया लिखते – लूणो १, जगनाथ २, हेमराज ३, वछराज ४, खीवराज ५, जुझारमल ६, मेघराज ७, जीवमल ८ ।

२१३३ मेडतारो लूणियो तिलोकचद जिण रुपिया तीन हजार आपरा घरसू दिखणियानू दे नै पुरोहित हरजीवण, भडारी सोभाचद नै मुहणोत ग्यानमल, मुहता वाकीदास वगेरै जोधपुररा मुसद्दी आगरै ओळिया हुता ज्यानू छुडाया ।

२१३४. भडारी भगवानदास रायमलोत वीठळदासरो पिता खैराडू राड़ सईदासू हुई जठै काम आयो ।

२१३५. साहजी सय्यद पटैलरैं मुखतार हो जिणरो वेटो मोहमद मीरखा दिली फिरगीरी सिरकारसू पाच सौ रुपिया महीनारा - महीनै पावै. सिकल अकल आछी है।

२१३६. सीघोजी वाघोजी दोनू भाई मारवाडमे आया. सींघोजीरैं पारसजी नै चापसीजी दोय वेटा।

२१३७ पदमोजी राणोजी. भैरूजी, सोभोजी दोनू पदमाजीरा।

२१३८ सुखमालजी १, रायमलजी २, रिडमलजी ३, प्रतापमलजी ४, प्रिथीमलजी ५, नथमलजी ६, सुखमलजीरा।

२१३९. प्रिथीमलजीरा वेटा दोय – विजैमलजी १, ।

२१४० सीघोजी १, पारसजी २, पदमोजी ३, सोभोजी ४, सुखमलजी ५, प्रिथीमलजी ६, विजैमलजी ७, तखतमलजी ८, धीरजमलजी ९, तिलोकमलजी १०, सुमेरमलजी ११।

२१४१. भीमराजोत चापसीजीरा जोरावरमलोत राणाजीरा।

२१४२ फतैचदजीरा रायमलोत पीपाडरा सिघवी।

२१४३ चैत वद ९ सिंघवी धनराज चलियो चैत सुद ९ सिघवी भीमराज चलियो।

२१४४ वनो वाघनेर हालाकूडी इत्यादिक ठिकाणा सिंधमे ओसवाळ रहै है।

सरावगी

२१४५. जैपुर सरावगी मनीराम टूकियो वडो धनाढय रहै दोलतरामरा लसकरसूं वाधियो।

ब्राह्मण

२१४६ सुध द्राविड पचधा – वडम द्राविड १, अकडतिमड द्राविड २, वृहच्चरण द्राविड ३, अष्ट सहस्र द्राविड ४ इत्यादि।

२१४७. श्रीमाळी ब्राह्मण ज्यारा चवदै गोत्र चौरासी अवटक है श्रीमाळिया अणहल्लपुर पाटणसू आणि भीनमाळ सोळकियानू वसाया।

२१४८ श्रीमाळियारै च्यार फेरा वीद-वीदणी साथ परणै जिण दिन फिरै दूजै दिन कसाररा लाडूरा कवा सात वीद वीदणीरा मुखमे द्यै, इता ही कवा वीदणी वीदरा मुखमे देवै छै वीदणीनू कळाया माथा लेनै च्यार फेरा फिरै।

२१४९ किणहीक सहरमें पाच जणा श्रीमाळी श्रीमाळियारी पचायती करता उवै देवाजोगसू पाचू ही सरीरपात हुवा कितांईक वरसा माहोमाह मतो कियो –

पंचायती कियांनू आपानू घणा वरस हुवा सो हमैं निहचो करो, पचायती करणी आपै भूला क न भूला इत्तामे एक ब्राह्मण विनती किवी – आज म्हारै घर आरोगजो जद आं कह्यो – थारी मा डाकण है जिणसू थारै घर न जीमां. जद उण कही – इण वातरी मोनू प्रतीत नही आं कही तू जागतो सोय घोरावजे, आ थारो रातरै समै मूडो सूघसी ।

२१५० त्रिवेदी १, चतुर्वेदी २, जैठी ३, घीरेजा ४ – इत्यादिक खट मोढ।

२१५१ नेड़ियाभू पीपरलो पीयराई – अै पलीवाळारा गांव तैमडा कनै है ।

२१५२ पलीवाळ जाट घाम नाम तोतो जिण वीकमपुररी हदमे गाव वाप वसायो. तोनारा वेटारी विगत – भवड़ो १, लखो २, वेहरो ३, मेघो ४ – वापमे मेघड़ासर तळाव करायो।

२१५३ कनोजियामे व्यास पदवी नही, सरवरिया व्यास कहावै है ।

२१५४. गौतम-गोत्री श्रीमाळी, गर्ग-गोत्री पोहकरणा ।

२१५५. महेस्वरियारी साढी सात जातरी विरत पोकरणा छोगाणियारै है हाल तक ।

२१५६. व्यास तेजो, गंगो, तिलोकसी तीनू सगा भाई तेजारो तापी, गगारो गिरघर, तिलोकरो कछरो ।

२१५७. गंगाराम - सुतेनाऽयं द्विजेन हरिशर्मणा ।
कृतस् तार्क्ष-पुराणस्य सारोद्धार-समुच्चय ॥

२१५८ गगारामरो वेटो पारीक हरदेव ज्यारा वंसमे प्राणनाथ वीकानेर दरवारमे कथा करै हमैं ।

२१५९ हरजीजी, हरदेवजी सगा भाई. मेड़तै लोकमणजी आंरै कडूवै भाई-भतीज लागै ।

२१६०. डडी श्रीघर चितोड़ा नागररो दूघ हुतो ।

२१६१ पारख गोकळ मोढ जातरो वाणियो हो गुजरातरा सेठ खुसालचद अभया-दासरो गुमासतो दोलतराय आगै कुलकुलां ।

२१६२ भागरा जातरा रैवारी खारोडा हुवा. उवारै हाथ देवळजीरा खजानारी कूचियां रहती ।

२१६३. मारोतरा जातरा, मलिक खिताव, सगा भाई दोय ललू १, जगता २ वडा वनाढ्य मुलतानमे हुवा ज्या खत्रियारै वहन वेटीरो नातो होण दियो नही, पातसाही आग्या उथापी ।

२१६४. नाहर डैररा भील सिंदूररी आड किया, कमरे गूघरमाळा वाधिया बैस नै पगा धुणामे पाल तीर चलावै. झगड़ै गाढा अलवाणा पगा अेक वैत च्यार आगळ भाळ तीररी, अढाई आगळ भोई ।

२१६५. पहाडमें नीवार जात हिंदू भैंसो मार खावै है. नीबारानू मार नै सिसोदियां नैपाळ लियो ।

२१६६. धनगरारी जाता लिखते – हुलकरी १, वारगल २, वाघ ३, वाघमारिया ४, ढमढेरिया ५, भागवत ६, सैनगिया ७, खोळिया ८, गाडला ९, धोरापत १०, खटकिया ११ इत्यादिक गाडरी धनगर कहीजै ।

चारण

२१६७. दागल १, गोलमा २, मीसण ३ – अै तीनू भाई है ।

२१६८ टापरिया १, मिहड २, केसरिया ३ – तीनू मकुआणा माहेसू निसरिया. माहेमाहे सवध हुवो छै ।

२१६९. रोहडियारी वारै साखा – रोहडिया १, घूना २, कुरड़िया ३, पायेंड ४, घीरण ५, सावळ ६, मीकस ७, कळहट ८, हाहणिया ९, वीठू १०, भाणू ११, गूगा १२ ।

२१७०. महियारियांमे सुदरवाई वैलाई कहावै कदीमसू कुळदेवी जाणराव सांदुवांरै महमाय वरदेवी छै ।

२१७१ पहला नरूका मुजरो करै, पछै आढा सुभराज करै ।

२१७२. सोरठिया वडा चारण है सासणारा धणी ।

२१७३ वारट ईसर सूरावत, सूरो दीतावत ।

२१७४. सीचाणो १, हाफा २, वीरवद्रका ३, राजपीपळा ४, कुहाटिया ५, इत्यादीक ईसर पोतारा गाव हालाहारमें ।

२१७५ सांदू गोयद १ राव गागाजीरै काम आयो ।

२१७६ सांदू चागारो गोयद, गोयदरो ऊदो, ऊदारो मालो, मालारै च्यार बैटा हुवा – जसवत १, सावतसी २, ईसरदास ३, आसकरण ४ ।

२१७७ लाडणू परै गाव जोगलियै सामोरारो वास जठारै सामोर महेसदास महाराज गजसिंघजीनू राजी कियो ।

२१७८. इणरो भतीज हेमो गणेसदासरो बेटो जिण जोबनेर जाय महाकाळीरो वर पायो, चत्रभाख रूपग वणाय गजसिंघजीनू रिझाया ।

२१७९ भीमराजरा वसमे आसिया हरराम उदैभाणोत हुवो ।

२१८० गाव जोगलियारो सामोर महेसदास जिण महाराज गजसिंघजीनूं जीभ दिखाडी महाराज सामोरारी जातसू ऊदावत हुवा. महेसदासरो भतीजो हेमो, गणेसदासरो वेटो जोवनेर जाळपादेवीरी क्रिपासू विद्यावान हुवो भाखा चत्र रूपग महाराजरो वणायो ।

२१८१ वेल्लारो अमरो, अमरारो राणो, राणारो सूरो, सूरारो करमसी, करमसीरो वैरो नै कावल, कावलरै भीमराज जिण दारोली नै जीतावास दोय सासण पाया ।

२१८२. वैंलो १, अमरो २, राणो ३, सूरो ४, करमसी ५, कावल ६, भीमराज ७, अखैराज ८, उदैभाण ९, हरराम १० जीतावत हुवो ।

२१८३ भारमल १, सादूळ २, जगमाल ३, किसनो ४, कमो ५—पांच वेटा आढा दुरसारै हुवा ।

२१८४ भारमलरा गाव पेसुवै १, जगमालरा गाव झारवा २, सादूलरा गाव लुगीमे, किसनारा गाव पाचेटियै, रायपुरियै ।

२१८५ भारमल दुरसावतरै च्यार वेटा हुवा—रूपजी १, भीमजी २, नदोजी ३, चदोजी ४, वडी डोढी रूपजीरी चालक नै चरोमढ रूपजीरो डोढीमे ।

२१८६ वरायळ १, हींगोळो २, लासोळ ३, पाचेटियो ४—च्यार गाव किसनै दुरसावत पाया किसनारै वेटा दोय—महेसदास १, मेघराज २. वरायळ, हींगोळो मेघराजरै रह्या पाचेटियै ।

२१८७ पसायत गाडणरी वेटी नाम मेली आढानू परणायी मेलीरो सावकुत वेटो हो जिणनू मार पसायतरा वेटा आढारी जमी अपणाय गाडणा वसायी वाय कनै ।

२१८८ लालस पीरदानरी वहन नाम कामळ उवा गाव खारडै महेवामे वारट कुभानू परणायी हुती वडो धन हुतो लालसजी कहाणी. वडा लाहा लीधा ।

२१८९ सवत १७८४ जेठमें राणै अजैसी सोदा वारूनू प्रोळपात कियो चितोड़ ।

२१९० महपैरा धधवाडियै वधवाडासू चितोड जाय सागा राणानू रिझाय गाव ढोकळियो लियो सवत १५५३ सासण पायो ।

२१९१ मूळीरै धणी सोढै रतन ऊगा-आथविया ताईं मीसण परवतनू कोड़पसाव दियो पचास लाख नगद, पचास लाखरो भरणो नै लाख रुपियारो माल नवैनगर वाई सोढीनू मेलियो ।

२१९२ गाव राडद्रहरो दुगहदो महिरेळण रायपाळ धूहडियारो दत्त चंद पायो ।

२१९३. महावड निकस काछेलानू कूपै मलीनाथोत दियो ।

२१९४. कपार तळाव मडावेर काछेलारो वीत जीवण सादू कूपैजी खिणायो ।

२१९५. राणै परताप लखा वारटनू गाव मनसुओ दियो ।

२१९६ कवियो गगादास रूपसिघोत गाव वासणीसू उठ गोड वीठळदासजी कनासू गाव कुभारियो तावापत्र दियो ।

२१९७ रावत वळू नगर हुवो जिण देवानू गाव मुडरवळो दियो ।

२१९८ गाव धूधाउर रावत खीमकरण जैतमालोत रोहड़िया कान्हनू दीनो ।

२१९९ गाव वोर रावत खीमकरण जैतमालोत चारण कूपानू दियो ।

२२०० गाव पड़गनै वड़गाव सासण चारणानू गाव कुहाडी आसिया दला सोभावतनू देवडै रामै मेघराजोत दियो ।

२२०१ गाव डोडवाडियो सवत १६९१ देवड़ै चतुरै चारण पता जोधावतनू दियो ।

२२०२. गाव जालहेड़ो देवडा राव मानसिघ, दूदा, अखैराजोत, जगमोतरो दत चारण त्रिभवणनू ।

२२०३ गाव पुळियो राव सुरताण भाणरै दियो ।

२२०४ महियारिया लिखमीदासनू रावजी माधोसिघजी चोईस गावासू तुणपुर दियो ।

२२०५ कोटारै राव माधोसिघ चौईस गावासू तुणपुर लखमीदास महियारियानू दियो ।

२२०६ मीसण ईसरदासनू गाव वाटासू हीरणा कवरपदै भोज दिवी हाडावा नेग दियो ।

२२०७ ठीकरियो मिहडू वळूनू रावराजा चत्रसाळजी दियो ।

२२०८ नीलराहडो कविया गगादासजीरै पटै हुतो सो श्रीजी उमेदसिघजी मिहडवानू दियो ।

२२०९ बारा गावसू गाव हिरणा मीसण ईसरदासनू दियो भोज कवरपदै बूदीरा नेग दिया ।

२२१० कवियो गगादास रूपसिघोत वासणीसू उठ गौड वीठळदासनू रिझाय गाव कुभारियो मालपुरारो सासण पायो ।

२२११. इणनू गाव मोरटहूको राजा भोज सासण दियो. नीलहडो पटै दियो ।

२२१२ सेसपुरी वावी वनबा – औ वूदीरा रावराजारा दियोडा गाव सगेलिया भावूनू ।

२२१३ मीसणनूं सासण खडेला खडीसो अेक, पुररा घोडा दो वूदीरी हुईन गांव हरियाणा हाडारो दियोड़ो ।

२२१४. चावड़ पूजै वनरलोत सासण देवरा हरण दियो ।

२२१५. राव खगार कछमें तूवेरानू साठ सासण दिया ।

२२१६. मोटैरो १, सैंग्रावडो २, पीपार गुडो ३, माणको ४ – इत्यादिक गांव कलहरारा धाणावारमें त्रिहारियारा दियोडा ।

२२१७ हरभमरो पातल, पांतलरो दासो, दासारो भाखरसी जिण गाव आगडाऊओ रोहडियानू दियो ।

२२१८ दूदा जोधावत कनै वारट पातो महराजोत खोरीसूं गयो जद चारणवास दूदैजी पाताजीनू दियो ।

२२१९ नागोररो गाव डैहरवो सूंडायचांनू राणै सगर उदैसिघोत दियो ।

२२२०. सरवाड़रै परगनै गांव गुंदाळी भादानूं परमारा दियो ।

२२२१ सेखावत मनोहरपुररै राव पालावत वारट गिरधरदासनै गोविंदपुरो दियो. भूधरदासनू हणमतियो दियो, केसवदासजीनूं किसनपुरो दियो, वनमाळीदासजीनूं कल्याणपुरो दियो ।

२२२२. कछवाहै रूपसी वैरागर कविया अलूजीनू गांव जसराणो सासण कर दियो. सो मारोठरा गेडां जसराणो वैताळीस जवत राखियो. पछै मेड़तिया रुघनाथसिंघजीनू मारोठ पटै हुई जद रुघनाथसिंघजी जसराणो कवियानू दियो ।

२२२३ मकराणारो धणी कछरो करमचंदोत जिण चौरासी गावरी चौथाई चारण, भाटा, ब्रामणांनू दिया ।

२२२४. हरळायां वधाउड़ै घोडारणियै दासोड़ी भोजा रतनू है ।

२२२५. मीसण अणंदनू धायलजी पोळपात कियो ।

भाट

२२२६. राजोरा भाटानू सुरताणपुरो वेदळारा रावरो दियोड़ो है, सुरजणियावास राणाजीरो दियोड़ो है ।

२२२७. टाक जातरा भाट ज्या माहे पाळूपोता सेखावतांरा ताटीसेवी ।

२२२८. टाक विष्णुदासोत राजावतांरा ताटीसेवी. टाक काळू करमसीरा नरूकांरा ताटीसेवी ।

प्रकीर्णक

२२२९. अेक सौ तुरी अेकै दिवस सूरै सपलाण दिया. मेवाडरो गाव आदोळो जठै गलूडियो सूरो नगराज हासावतरो जिण भोजगानू सौ घोडा अेक दिन दिया ।

२२३०. मगतो ओसवाळ ओसवाळारो है जिको वीकानेरमे भ्यारियो कहावै ।

२२३१. म्रतक ओसवाळ आगे झालर बजावै. उवै ओसवाळ उवानू पुप्परो दै ।

मुसलमान

२२३२. नजूमियां अगाऊ नजूमरी किताबामे लिखियो हो – आखर जमानारो पैगंबर सुतर सवार होसी ।

२२३३. सो मुहम्मद हुवो मक्कासू कुरेसी तीन सै तेरह मुहम्मदरै साथ मदीनै आया. उवे शेख मुहजर कहाया ।

२२३४. अगाऊ नजूमिया किताबमे लिखियो हो इत्ता वरसां आखर पैगवर जनमसी, सुतुर सवार होसी ।

२२३५. नवियामें सुतर सवार महमद हुवो ।

२२३६. नजूमिया प्रमुख मेछा ज्यारो वचन है – आसमानरी जवरी देखो मसूरान्न खावा वाळो, ओठो दूध पीवा वाळो अरबरो आदमी आपरी किवी किताबरो जहानमे मत चलावण लागो ।

२२३७. मौलवी डग्यारै कबीला सहित महसद साथै मदीनै आय वसिया ।

२२३८ तीहामा गावरो वासी महमद पैगवर मक्कासू महमदरै साथ आया मदीनै उवै सेख मुहाजर मदीनारा सेख अनसारी कहावै महमदरी उमत ।

२२३९ मदीनारा सेख अनसारी कहावै ।

२२४० दुहु कुतुव आसमानरा आधार है – नजूमी कहै ।

२२४१ जवनारा नजूममे कहै है – आसमानरो बारमो है सो बुरज खरबूजा है लकीर ज्यू यू आसमानरै बुरज है रासरो नाव वुरज जावन्या ।

२२४२ मुसलमानरै किताबामें लिखै है – अगरेजारै आगै रूमरो पातसाह भाजि हिलबमे जावसी, पछै इमाम महदी हुसी, कित्ताहीक वरस पातसाही करसी, पछै अगरेजारै हाथ ओ सहीद पछै कयामत हुसी ।

२२४३. मक्कारो नाम अरबीमे अेसरब ।

२२४४. मदीनारो नाम वतहा ।

२२४५ मुहमद मुवा पछै छटै महीनै खातून जन्नत हुई ।

२२४६ मुरकव सैपुर कैवरारी लडाईमे महमदरै आयो हो सो महमद मुवां पछै घास दाणो पाणी तज तीजै दिन मुवो ।

२२४७ अलीरा खुदा न मे दानम अज खुदा जदो न मे दानम ।

२२४८ अहमद महमूद अै दोय नाम पेकवररा फरेस्ता पढै. महमद ओ नाम पैंगवररो जमी ऊपररा लोक पढै ।

२२४९ फार कलीता ओ महमदरो नांव तोरेतमे है, याजुन माजुन ओ नाव महमदरो अजीलमे है ।

२२५०. मैहम नवीनै वडै पीर किणनू ही सराप न दियो मुहम्मद ईसम, अवुल वासुम लकव, मुस्तफा खिताव ।

२२५१ सूरत नूर १, सूरत फिजर २, सूरत इखलास ३, सूरत तुलवर ४ इत्यादीक सूरतां कुरानमे है ।

२२५२. कुरानमे खुदा कहै है – वोल महमद खुदा १, खुदा किसीसे पैदा हुवा नही २, खुदासू कोई पैदा हुवा नही ३, जात जमातसू पाक खुदा ४ ।

२२५३ कुरानमे कहै है – रोजा राखै, नमाज पढै, नित खुदारो जिकर करै सो खुदा कहै, म्हारो वदो ।

२२५४ कुरानमे कहै है – मुसल्मानरी त्रिया विधवा हुवां पछै मनमे आवै तो च्यार महीना दसा दिना पछै अन्य पुरससू निका करै, दूसण नही ।

२२५५ सेख, मुगल, पठाण – आं तीन खांपारै आ रीत है – कुराणरी अग्या मुजव पितारो चाळीसो कर अवृद्धा मातानू पुत्र जाय कहै – म्हारो पिता थारो भरतार मर गयो उण माथै ईमान राख तू वैठी रहै तो भला ही, नही तो थारा मनमे आवै जिणसूं निका कर पछै उणरी मातारै मनमे आवै ज्यू करै ।

२२५६. अळी जीवता खातून जनमता मर गयी जिणसू सईदारै आ रीत नही ।

२२५७ मुसळमानांरै कहै है किनावमे – पुरख आपरी त्रियासू भोग करै गुदा तरफ तो उणसू कियो निका सो टूट जावै ।

२२५८. यवनरै चाळीस हाथ कपडो चाहीजै म्रतक सरीरमे. जनाजा कहै म्रतकरथीनू यवन ।

२२५९ ईदुलजुहा वकरीदरो नाम ईदुलफितर रोजा ईदरो नाम ।

२२६० चित्र लिखणो, मूरत वणावणी मुसळमानांरै मनै है ।

२२६१. यमनरा पातसाहरी बेटी परीजादी, वलकिस नाम, जिणनू पातसाह सुलेमान परणियो ।

२२६२. वलकिसरी भुवारी नजर घणी दूर पहुचती ऊची जायगा माथै बैठी निगा राखती, कित्ताईक कोसा नजर पहोंचती पर चक्ररी खवर देती. अेक समै सत्रुवा वृक्ष काटि हाथमें ले लिया इण देखि भ.ई पात जिणानू कह्यो– वृक्षारो लसकर आवै है उण वात न मानी पर चक्र सहरमे आयो फतै पाय ऊभो वलकिसरी भुआनू पकडी पूछियो– इत्ती रोसनी चसमरी किण कारणसू इण कह्यो– पहला म्हारी मा आखामे सुरमो घालियो जिणसू दूर नजर दोडै सत्रुवा इणरी आखा काढि निगै कीवी आखारै हेटै सुरमारो दळ जमियोडो हो ।

२२६३ याकूत जजीरामे आदमनू खुदा पैदा किया उठै गेहू पैदा कियो उठासू काढि सरनदीप जजीरामें आदमनू राखियो ।

२२६४. याकूत जजीरामे रूमरा पातसाहरो अमल है आगै तुरगारी वढी आफत हुती इण जजीरामे ।

२२६५ अथ यवनारा तीर्थ लिखते – मक्को १, मदीनो २, करबलो ३, बगदाद ४, स्थान जफ ५, काजमैन ६, मसहद ७, रुकनावाद ८, वैतुलमुकद्दस ९, तखत रवुल आलमीन १०, कोहनूर ११, दमिस्क १२, कोहे लुवनान १३ ।

२२६६ अथ नवी पीरा प्रमुख यवनारो प्रसग दोलतावादरो जामे पीर जरजरी जर वकस १, दोलतावादरै किलामे पीर साकडै सुलतान २, औरगाबादमे पीर बुरहानुद्दीन ३, अेलचपुरमे पीर रहमान सादुला ४, गिडदमे पीर बाबा फरीद ५, अलवरमे पीर ईमानसाह ६, वासममे पीर दावलसाह दरियाई ७, हैदरावादमे मुरतजा अली ८, मिरचमे पीर मीदासमत्ता ९, पूनामे सेख सलाउद्दीन १०, पूनामें बुरहानसाह ११, बीजापुरमे पीर अमीनुद्दीन आला १२, नजरवागमे पीर आमानसाह १३ ।

२२६७ गोरा १, कलदर २, कुतब ३, अबदाल ४ – इत्यादीक अवलियारा भेद है ।

२२६८ अउलियाकी करामात पैअबरकी मोज जो कहावै लात मन्नात उजाती तीनू वोत मकामे होती ।

२२६९ नासीरुद्दीन चिराक दिहलवी दिली अवलिया हुवा है ।

२२७० सुरतान तारकीन कुतुब साहिव दोनू मुरीद खाजा मुईनउद्दीनरा ।

२२७१ नागोर हीरावाडीरी पौसाळामे हमीनुद्दीन रह्या तिण जतीरा भेखमें ऊमर पूरी करी इणनू दफनायो हमीनुद्दीन नागोरी ।

२२७२. सेख हमीदुद्दीन रेहानी १, सेख हमीदुद्दीन खोही २, सेख हमीदुद्दीन खालिस ३, सेख हमीदुद्दीन मुवैलिस ४, सेख हमीदुद्दीन कासालेस ५ – यां हमीदारी रैलत नागोरमे हुई सेख हमीदुद्दीन नागोरीरी रैलत दिलीमे हुई जवन कहै सातू हमीदारी रेलत नागोरमे होती तो नागोर खुर्द मक्को होय जातो।

२२७३. खाजाजीरै चौरासी सागिर्द ज्या माह तरकीनजी गिणीजै सारासू छोटा।

२२७४ खाजैजी सुलतान, सुलतान तारकीन कहि वतळाया अरथ पातसाह त्यागियूका।

२२७५ खाजैजी जमान सहित नमाजमे रजू होते जद तारकीनजी इमाम होते नमाज गुजरा मरवा दवा मागि ऊचो जोवते जद अरसको कागरो साराकै नजर आवतो ओ भेद पाय खाजैजी सुलतान तारकीननू कह्यो – तुम हमको ठगे सो हमकू आपका सागिर्द न किया आप हमारे सागिर्द होय ने फेर कह्यो – तुमारी औलादकै अर हमारी औलादकै परसपर परणीजणा परणावणा होहिगा।

२२७६. खाजाजीरा पोता नै खाजाजीरा मुजावर सारा सीया होय गया हमै आगै च्यार वारी हुता।

२२७७ गुजरातमे तुरकिया वोहरा सारा सीया है मुसळमान कहै – सीयारै मुकर दोलत होय, सुन्नी फतैनसीव होय।

२२७८ इलवरस्याई रसूलस्यारी गादी हिनीफस्या, हिनीफस्यारी गादी फिदाहसन, फिदाहसनसू खलना कीवी रावराजा वखतावरसिघ।

२२७९ पातसाह लोदी वहलोलखा जिण मुलतानमे मोलवी सेख यूसफनूं वेटी परणाय दिवी नै कह्यो – वन्य भाग म्हारी वेटीरो जिणरै इसो विद्यावान भरतार।

२२८० सिंधमे लकारी सइयदारी मानता विसेस है।

२२८१ अमान हजरत अवासकू लखनऊरो नवाव विसेस मानै।

महदी

२२८२ पूरवमे जीवणपुर सहर जठै महदी हुवो नवीअत महमद ऊपर खतम हुई. व वलायत महदी ऊपर खतम हुई।

२२८३ महदवी कहै – कुराणमे आयत है महमदकी रैलतसूँ नव सै पाच वरसां महदी दावो करसी।

२२८४. कितावमे महदी कहै – जिण दुनियामे महमदनू भेजियो उणरो भेजियोड़ो हू ही दुनियामे आयो छू।

२२८५. नवाज गुजारनै हाथ पसारै नही महदवी ।

२२८६. रमजानरी सत्ताईसवी तारीख सारी तारीखामे उत्तम मानै ।

२२८७. दूजा मुसळमान सारा महीनारी सत्ताईसवी तारीख उत्तम गिणै ।

२२८८ महदी नावमे वैठा तरीरै राह किणही विलायतनू जावै इणरा मुरीद नाव वैठा किताईक कोस गया नाव दरियावमे डोलण लागी नावमे बैठा जिका धूजिया. महदी कह्यो – यूनस पैगवरनू मच्छी सात दिना पेटमे राखियो, पछै खुदारी आग्या उगळ दियो, मोनू निवाजस हुई नही जद वही हुई – महदीरो तोनू दीदार होसी इण वचननू साचो करण खुदा नावनू ऊची करै है, मच्छी जळ माहेसू परवत परिमित सरीर जाहिर कियो है सो मोनू देखी जलमे लीन होय जासी, नाव डुलनी रह ज्यासी यूहीज हुवो ।

२२८९ महदीरी औलादसू आल वहोत है महदीरै वंसरा पीरजादा कनै महदवियारा दिनरी किताव है ।

२२९० पठाण महदवी विसेस है ।

२२९१ कुराणरा हदीसरा सरारी विद्दत मेटण महदी जनमियो – महदवी कहै ।

२२९२ महदवी दरवेसारो थान दायरो कहावै, तकियो कहावै नही ।

२२९३ गुजरातमे महदवी घणा रहै दिखणमे घणा रामराजारा देसमे. देसमे महदवी है ।

२२९४. कपडा वगेरै चीजारो व्यापार ज्यादा करै ।

२२९५ रातरो भजन विसेस करै ईरानी तूरानी गैरमहदी कहै महदवियानू ।

२२९६ हैदरावादरा नवावरै कानडी वेगम उणरो गुरु मौलवी महदविया मारियो. चदूलाल हैदरावाद माहेसू लोक चढायो महदवियारो गाव चतुर गुडा माथै गयो महदी मारिया गया लाखा रुपियारी दोलत लुटाणी ।

पठाण

२२९७ वनी इसराइल यूसफरो भाई जिणरै वसरा पठाण – पठाणरी जात लिखते – रूरी १, सरवानी २, किरवानी ३, लोदी ४, वाव्रर ५, गिलजी ६, मीराजी ७, तोपा ८, करमली ९, करली १०, लंगा ११, मोहा १२, अमालजई १३, ईसपजई १४, महमदजई १५, वारकजई १६, सदोजई १७, कमालजई १८, दबाजई १९, काकडजई २०, तोआजई २१, उसतरानी २२, समानी २३, गोरी २४, खिलजी २५, आकोज २६, उमरबेल २७, आफरीदी २८, खद्दक २९, वगस ३०, नूरजई ३१, लोहानी ३२, वाव्री ३३;

विहारी ३४, पणी ३५, गजफूर ३६, तरनी ३७, मुसाखेल ३८, बुदैलवार ३९, दिलाजाक ४० ।

२२९८ अेक समै हसनवसरी १, वीवीरा विया २, सेखमकी कबलकी ३, मालिक-दीनार ४ – च्यारू अवलियारो मिलवो हुवो हो ।

२२९९ पणी पठाणारी वावन खेळ है ।

२३०० पणी सेरसाहरै वखतरो है विलायतसू हिंदमे आया ।

२३०१ पणी नागड भाई है ।

सीदी

२३०२ अवर कवर अयाज रयाज वगेरै सीदियारा नाम है ।

२३०३. अयाजनू केई कहै सीदी केई कहै कसमीररा राजारो कवर, खूबसूरत ।

ख्वाजैजादा

२३०४. कासमीररा उठियोडा मुसळमान ख्वाजैजादा कहावै ।

तुरकांरी जात

२३०५ उजमक १, किलमाक २, कजलवास ३, ताजी ४, चगेजखानी ५, हस्तर-खानी ६, सीरानी ७, ऊव ८, मुगल ९, चिकता १०, गुरगानी ११, सुवतगी १२ ।

अलाउद्दीन खिलची

२३०६ अलाउद्दीन कहो – गोड १, चोळ २, गाजणो ३, कनोज ४, मरहट ५, पलाड़ ६, सिंध सपादल ७, गूजर ८, सोरठ ९, माळवो १०, चदेरी ११, मांडव १२, सारगपुर १३, रणथभोर १४, चितोड १५, नागोर १६, मणिपुर १७, मथ्रा १८, अतरवेद १९, काकपुर २०, भुजपुर २१, उडीसो २२, हिंदुसथान २३, जाळधर २४, कसमीर २५, कामरू २६, हिमाचळ २७, खुरासाण २८, ठठा २९, मुलताण ३०, चीण ३१, भोट ३२, तिलग ३३, वग ३४, विदरभ ३५ – इत्यादिक ठिकाणा अलाउद्दीन जीतो ।

२३०७ तुरकां वतै हिंदुआं गमियां न जाय २० वतै हुत ।

२३०८ रळियो भायल आगेवाण होय भीनमाल माथै अलाउद्दीनरी फोज ले गयो पैताळीस हजार श्रीमाळियारा घर धनाढ्य चहुवाणारी वणायी ब्रह्मपुरी ।

२३०९ देवगिरिरै राजा रामदे बेटी दिवी अलाउद्दीननू ।

२३१०. अलाउद्दीन गिलची लोक खिलची कहै ।

तैमूर

२३११ अमीर तिहमूर बलख सहरमें पाट बैठो ।

२३१२ अमीर तिहमूररो बेटो मीरासाह साहजादो थको मुवो ।

२३१३. जात मुगल बरलास नख चकता गोरगा ।

बाबर

२३१४ हिंदरो पातसाह लोदी इब्राहीम, सुलतान सिकदररो बेटो, सुलतान बह-लोलरो पोतो, जिणनू बाबर मारियो ।

२३१५ सुलतान इब्राहीम दाना वजीरनू मारियो, अनहरखा काकानू उदास कियो, कोल तोडन लागो, झूठ बोलण लागो, दारू पियै थो, पर स्त्रियासू गवन करतो, जगतनू बेराजी कियो. बाबर जिसी आफत इब्राहीम माथै आयी ।

२३१६ पांच हजार बरकदार, बारै हजार सवार उजबक मुगलारा साथ ले काबुलसू पाणीपत आयो उठै ही सुलतान इब्राहीम आयो. सात हजार पठाणासू खेत पडियो सुलतान इब्राहीम फतै बाबररी हुई ।

२३१७. बीकानेर, सिरोही, मेडतो, गागुरण, बूदी, भीलवाडो, आंबेर, मेवाड, माळवो, रायसेण, चदेरियारा ठिकाणारा मालक, अजमेररा जमीदार, मेवाड़रो लोक. . .सू सागै सीकरी बाबरसू जग कियो जोधपुररो धणी साथ नही हुतो जिणसू फतै हुई नही सागा राणारी सुलतान इब्राहीमरो साहजादो, डूगरपुररो रावळ—अै पिण सागा राणा कनै हुता ।

२३१८. सेरसाह तमाम पठाणासू अेको कर बिहार देसमे फिसाद किवी दिलीरो राह बंद कियो हुमायू अै समाचार सुण चाकरारी सलाह लोपी, वरसातमें सेरसाहसू जग करण चालियो सेरसाह जग करि जण.नै खिस गयो पछै पाछली रात प्रभातरो पाछडी ऊपर आय पडियो हुमायू सभाय सकियो नही कवीला छोड भागो नीठ लाघि नीठ बचियो घणो लोग नदीमे डूब मुवो ।

२३१९. माळवा-गुजरातमें, बगालमें पहलै हुमायूरो अमल होय गयो हो गुजरातरा थाणा छोड हुमायूरो भाई मिरजा असकरी जाय सेरसाहसू मिळियो ।

२३२० हुमायू दिली आयो भायारी फूटसू नै सेरसाहरा डरसू सिधमें गयो भाई इणरो लाहोर पातसाह होय बैठो ।

२३२१. सेरसाह दिली आय पातसाह हुवो पछै लाहोर गयो लारै घर माहसू हुमायूरा भायानू काढ दिया सिंध मुलतानां ई जबत किवी ।

२३२२ हुमायू सिंघसू राव मालदेजीरो बुलायो फळोधी चिराई आयो वात दगा भरी देखी उमरकोटनू गयो पछै सिंध लाघि ईरानमे इसपाहन गयो ।

२३२३ ईरानरै पातसाह खधार गजनी कावुलमे वदखसां हुमायूरो अमल कराय दियो ।

२३२४ गुजरात घघ विण सौ देम लडि-लडि लिया सेरसाह ।

२३२५ काळिजररै गढ लागो सेरसाह उरड़ आघो गयो गढ माहला हल्लारै वखत सोररा होका उपरसू नाखिया नीचै सार हुतो सू आरा पडनासू भभकियो सोरसू वळ सेरसाह मुवो ।

२३२६ सेरसाह साचो, सीळवत, आदिल, नेक, नीतवत, खवरदार अवलियो रैतरो पीहर, सिपाहरो मित्र, चाकरा ऊपर मिहरवान वडो पातसाह हुवो ।

२३२७ पाट इसलामसाह बैठो वडो पातसाह हुवो सो देस वारे पजवनमे रह्या. इण मुवा इणरै पाट इणरो बेटो गढ गवालेर बैठो पछै इण डावड़ारो मामो सेरसाहरो भतीज नै जमाई सो इसलामसाहरा बेटानू मार गादी बैठो जिणसू दिली, लाहोरमे सेरसाहरा भतीजजवाई पातसाह होय बैठा पूरबरा ठोड-ठोड जुदा-जुदा पठाण आप मतै हुवा जद पातसाह हुमायू सोळै वरसरो विखो काढ दिली ऊपर आयो. सिकंदरसाह जंग करण आयो. सो जगमे घणा पठाण मराय भागो ।

२३२८ हुमायूं दिली आय तखत बैठो कितोईक कनलो देस जवत कियो सिकंदर-साह लाहोररा पहाडामें पैठो इण ऊपर साहजादो अकवर नै बहरामखा हुवा जाय लाहोर लिवी पहाड़ां ऊपर चलाया उण समै पातसाह हुमायू दिली पुराणीरा कोटरी मैडीसूं पडि मुवो आ खबर लाहोर पहोची कला-नोरमें अकवर तखत बैठो ।

२३२९ दिलीमे सूवै उमराव हुमायूरा हुता ।

२३३० गवाळेर मवारजसाह अदली पातसाह हुतो तिणरै सारो चलण वाणिया हेम ढूसररो हुतो तिको वडो दातार, जूझार सिरदार हुतो तिण वडी-वडी लडाया करी पठाण जेर किया मवारजसाह दुखी हुतो जिणसू वडो सामान करि दळ वळ करि हेमू ढूसर दिली ऊपर आयो ।

२३३१ दिलीसूं अकवररा ऊमराव दळ ले हेमु सामा आया युद्ध हुवो आखर हेमू जीतो अकवररा उमराव हुमायूरी लोथ ले, पातसाहरा कबीला ले, अकवररी तरफ चालिया हेमू दिलीमे अमल कियो मवारजसाहरै पूत नही हो नै आप चाकर नही हुतो जिणसू हेमू ढूसर दिली तखत बैठो राजा विक्रमाजीत कहायो ओ खिताव पायो ।

२३३२. आ खबर पाय अकबर आगै फोज मेली दिली तरफ बहरामखांरी सलाह उदी अकब्बर पाछै आवै हेमूनू खबर हुई उण समै हेमू कनै पचास हजार सवार, वीस हजार पाळा, हजार हाथी, हजार गाडी तोपखानारी ।

२३३३ अकबरनूं दूर जाणि मसलत चूकि तोपखानो अकबररी फोज सामो पहला वहीर कियो सो तोपखानो दिलीसू तीन कोस पाणीपत पाथो हेमू चढणरी त्यारी करतो हो उण समै अकबररी फोजरा हरोळ हलकार करि अजाणिया तोपखाना माथै आय पडिया लोक तोपखानो छोड भागो ।

२३३४ पातसाह अकबर आपरी जणणीनू काध दियो हो ।

२३३५ सिपहसालार खानखानारो खिताव ।

२३३६. सिपहसालार ओ खिताव खानखानानै अकबर दियो ।

२३३७ मुमारज नाम पहलवानरो है मुमारजुद्दीनखा खानखानारो खिताव है ।

२३३८ अैतजादुलमुलक खिताब खानखानारो अतभुजरी अैतजाद कहावै ।

२३३९. उम्दतुलमुलक राजा टोडरमलरो खिताव ।

२३४० सवत ९९० पातसाह अकवर फिरगरा पातसाह कनै सय्यद मुजफ्फरनू वकील मेलियो, खत लिख दीनो, तोरात अजील जबूर आ किताबारो तरजुमो मगायो ।

२३४१ सिपहसालार खानखानारो खिताव मुमारज पहलवान मुमारजुद्दीन खानखानारो नाम ।

२३४२ वीरबल माराणो जद पातसाह अकबर कसमीर हुता खानखा गुजरातमे हुता खानखानू खत इनायत कियो अकवर जिणमे लिखियो – म्हारी सभानू नजर लागी जिणसू म्हारी सभारी जेब वीरबल माराणो हू वीरबलरी लोथ काधै ले बाळतो तो उणरी चाकरीसू उरिण होतो खुदा-तालारी कृपासू वीरबल मोनूं मिळियो हो म्हारा दिल माहली बात बाहर आणतो दारु ज्यू म्हारा सुखनवाण सवारणनू खुरासाण हुतो वीरबल जीव तन रुप मागियोडो पड त्यजने दो अधल पडदा मोनू हमै सामो कनैसू निवाजस पाया करो हू तोसू फायदा लेवो बरु हमेसा खुदारी महरसू म्हारी नजर तो माथै पडै म्हारा जलाल महलरो तू थभ है वीरबलरो जीव तन रूप मागियोडो पडदो त्यज अधल पडदामे दाखल हुवो ।

२३४३ पेसवा अगसर खिताव है ।

२३४४ वड़ी फोज जैस जावन्या ।

२३४५ खानखानारी अरज कसमीर आयी गुजरातरो मालक मुजफ्फर गुजराती चाळीस हजार सवारारो धणी जगमे पकड कैद कियो है सेख इब्राहीमखा सीकर वाळनू अठै मेलसी सो ओ सूबो उणनूं भोळायनै हू दिखण माथै जाऊ ।

२३४६ च्यार गुजरातरा उमराव ज्यानू मै वचन दिया है सो उवानू नवाजस कीजै. जाम खगार १, ऊदो २, जगन्नाथ ३, साहिमखा ४. आप दिखणरा हाथी मगाया सो दुरस्त पिण प्रतीत वाळा हाथी - महावत अठै मेलजे साथ हाथी मेल देमू ।

२३४७ पातसाह अकबर वेराजी हुवो खानखानासू जद खानाखान राव कल्याणरै सरणै वीकानेर आयो हुतो ।

२३४८ अकवर कसमीरमे जद खवर मक्कारी हज करण मुसळमान जाता हा हिंदसू ज्यानू वलोचा लुटिया. आ वात सुणता ही अकवर नाक सळ घालियो तीरै मार वफादार राजा वीरवल वलोचां माथै विदा होतो हुवो ।

२३४९ नीराह १, विजो २ वगेरै च्यार ठिकाणा जवर वलोचारा वडा पहाड़ारा घेरमे राजा वीरवल फोज ले गयो पहाडारा घाटा भाजिया वलोचानू मारिया पकडिया, गाव लूटियो फोज धनसू अभरी हुई फतै कर पाछी वली वलोच पहाडा चढिया. घाटा वद किया मारगमे खाडा खणिया फोज ले वीरवल घाटामे आयो जद तीर, गोळी, गोफणासू पत्थर वलोच लावता हुवा भाठारी लाग वीरवर मुवो सिपाह वेसुमार माराणो आ वात सुण अकबर राजा टोडरमलनू जैस दे नै विदा कियो इण वलोचारो देस ले लियो वलोचारा ठिकाणा तोड़िया ।

२३५०. तिरीह १, विजोर २, किकली ३, दतोर ४ – अै च्यार ठिकाणा बलोचारा जैस वडी फोज, तीराह, तरवारा, आछी घडीजै है ।

२३५१. मिरजो सरफुद्दीन अलवर किलेदार हुतो, अकवररो उमराव आवेररा राजारा भाईवेटा दोय सरफुद्दीन पकडिया ।

२३५२. ध्योसारा डेरा भगोतसिघजी, जैमलजी, जगमालजी, आसकरणजी वगेरै सात कछवाहा पातसाह अकवररा पगा लागा ।

२३५३ माहम नगा नामा अकवररी धाय जिणरी मारफत सैभररा डेरा कछवाहा अकवरनू डोळो दियो ।

२३५४ दोय वडी नोवत, दोय वडी देग रकवाई घडियाल, सोनारी पीलसोज, रुपारा किवाड चितोडसू आण अकवर अजमेर ख्वाजैजीरै भेट किया ।

२३५५ जोरागढ अकबररा उमरावा लियो जद राजा वीरसिंघ गढपतीरी राणी कळावती भली तरै गढ भिलता काम आयी. आऊ गढ हमै नागपुर हेटै है ।

२३५६ पातसाह अकबररै बारह सूबा हुता ।

२३५७ भारतरो तरजुमो फारसीमे अकबर करायो, नाम रजवनामो रसायणरा सोनारी लाखा मोहरा अकबर पडाय अेक ही ओरियामे राखी हुती, आखर-वत दान सारु अकबर अकसमात मर गयो जहागीर वागी थको प्रयागमें हुतो मोहरा धरी हीज रही

धरे धराये रह गये, चौकुटे अर गोळ ।

२३५८ अकबर कुटवाळानू लिखियो – लुगाईनू घोडा माथै चढण मत दीजो ।

२३५९ विन घगरो नगरो गये, अकबर साह जलाल ।
लाल कहै इक तालम, भये विराणे माल ॥

२३६० सवत १६७८ साहजादा खुरम भीव सीसोदियानू मेडतो दिरायो ।

२३६१ राजा ईदो राड सवत १६८१ काती सुदमे भीम परवेजसू मोहवतखासू जग कर काम आयो खुरम आगै ।

२३६२ भीवरै कुवर किसनसिंघ मेडतै रामसरण हुवो ।

२३६३ सवत १६८३ परवेज वुरहानपुर मुवो ।

२३६४ दसहजारी दारासिकोह नवहजारी साहसुजो नवहजारी औरगजेब. पाच-हजारी मुरादवकस ।

२३६५ साहजादा दारासिकोहरो वेटो सुलेमान सिकोह ।

२३६६ हरिवसरो, योगवासिस्टरो, सिहासणवत्तीसी वररुचि कृत जिणरो फारसीमे तरजुमो दारासिकोह करायो नाम गुलपसा ग्रन्थ राजावळी मिस्र विद्याधर कृत, ग्रन्थ राजतरगिणी पडित रुघनाथ कृत फारसीमें तरजुमो दारासिकोह करायो ।

२३६७ श्रीमत भागवतरो ही फारसीमे तरजुमो दारासिकोह करायो राणा रतनसेनरो नै पदमावतीरो अहवाल फारसीमे करायो दारासिकोह. नाम किताबरो रतनसेन-पदमावती ।

२३६८ भिदारियै राजा ओरगजेबनू चाबळ पगार वतायी उणरा चाबळ उतरि धोळ-पुर आ ओरगजेव जग कियो साहजहारी फोजसू ।

२३६९ धोळपुररा झगडामें गोळासू पजि हाथी भागो, चावळमे पैठो ओरगजेबरो साहजादो जहादारसाह हुतो सो चावळरा पाणीमे डूब मुवो ।

२३७०. गुमा वीवी नोरगजेवरै मरजीरी वेगम हुती ।

२३७१ सवत १६७३ रा फागुण सुद १ ओरगजेव फोत हुवो ।

२३७२. नादिरसाहरो वकील दिली हो उण नादिरसाहुनू लिखियो – वेगा पधारिजे मारगमे काटो भाटो है नही ।

२३७३ नादर पातसाहनू महमदसाह मिरजा कहतो महमदसाहनू नादरसाह मिरजो कहतो ।

२३७४ ईरानिया धन वास्तै दिलीरी जायगावा अति ऊडी खणी, जमीरा हाड काढ लिया हा ।

२३७५. अहमदसाह दुरानी लाल किलामे विलायती याकूवखानू राखियो पातसाह अलीगोहर जद पूरवमे हुतो याकूवखा कनै पनरै हजार सिपाह हुतो ।

२३७६ साहग्रालम नाम अलीगोहररो है ।

२३७७ दिलीरा हिंदुवानू लाल किला मांहली जायगावा पातसाही वाग, याकूवखां दिखाया, जस लियो ।

२३७८ ईव्राहीमखा और मल्हारराव हुलकर भाऊ सामल न हुवा अजी तै अहमद-साह अवदाली भाऊसु जग न कियो ।

२३७९. दोयसै तोपा वारह हजार गारदां इवराहीमखा तालकै हुती ।

२३८० च्यार दस्ता साह कनै हुता जुमलै चाळीस हजार असवार साह कनै हुता ।

२३८१ हाफिज रहमतखा नजीमखा रूहेलो, अहमदखा वगस लगड़ा बावनहजारी सुजा वुघोलो इत्यादिका मिल भाऊसू झगडा किया फतै न पायी अहमदसाह अवदाली मदत आया जव न जीता ।

२३८२ दिलीसू नजदीक साहरी फोजसू दिखणियारै जग हुवो साहवसिंघ १, दत्ता २, काम आया जनकू भरतपुर आयो पेसवानू अरज लिखी – म्हारी मदत कीजै नही तो साह दिखण माथै कमरवधी करसी ।

२३८३ आ वात सुणनै पेसवै विस्वासरायनू नै भाऊनू हिंदुसथान माथै वडी फोज दे विदा किया दिखणसू दिली आया जुमा मसजिद ऊपर इवराहीमखा गारदी तोपा चढायी लाल कोटमे गोळा पडण लागा याकूवखां मरहटारी व्राह लेनै लाल किला वारै निसरियो लाल किलामे भाऊरो अमल हुवो. भाऊ दिखणी नारूसकरनू लाल किलामे राखियो ।

२३८४ दिली लाल किलामें खास दिवाणरी छत सोनारी हुती उवा नादिरसाह लेगो. आम दिवाणरी छत रूपारी भाऊ ले लीवी ।

२३८५. भाऊ दिली निगमबोधरा घाट ऊपर यग्य करायो. देवीरी आग्या हुई–हमै भाऊ पाछो दिखणनू परो जावै, दूजै महीनै आय साहसू जंग करै तो भाऊरी फतै हुवै. विरामणा ओ व्रत्तात्त भाऊनू सुणायो. भाऊ न मानियो।

२३८६ साहरी फोज भाऊ माथै आयी भाऊ विसवासराय सामा मोरचा माडिया. वहरामखा गारदी आरावो दागियो. अहमदसाहरो लोग गोळासू घणो खेत पडियो खधारियारै भाजणरी ताकीद ही. इतै सुतरनाळरो गोळो लाग विसवासराय हाथीरा होदामें मुवो आ खबर पाय भाऊ विसवासरायरै मोरचै जावणनू हाथीसू उतरियो लोका जाणियो भाऊरै ही सुतरनाळरो गोळो लागो खधारिया घोड़ा उठाया भाऊ काम आयो. दिखणी घणा माराणा भाऊरी कतल भाऊ–गरदी कहाणी।

[पातसाहां, वजीरां, नबाबांरा प्रसंग]

सिंध

२३८७ सिंधरो मिया नूरमहम्मद जिणरो नाम स्याहकुली नादरसा दियो।

२३८८ अखैराज १, हुदैराम २, जगतसिंघ ३, अभजी ४, सेरसिंघजी ५, महमद ६, अलीपास सिंधमे आयो सगासू नूरमहमदरो वडेरो।

२३८९ आरै मुहमदस्या इनायत फकीरनू मारनै झोक नामै ठिकाणो लियो।

२३९०. स्या इनायतनू लोग इनायतुल्ला कहै ओ वारह सय्यदारो मुरसद हो।

२३९१ पैंगबररो काको मीर हमजा जिणरी औलादमें बलोच है।

२३९२ मीर वहरामरो बेटो मीर वीजड, दूजो मीर सोभदार. सोभदाररो बेटो परमीर फतैअली वीजडरी बेटी परणियो।

२३९३ इलायरो धणी माडणोत हरनाथसिंघ १, करणरो धणी पातो मोहकमसिंघ २, लाडणूरो धणी गैनू साखलो ३, धीरो सहलोत ४, मथाणियारै बारट जोगीदास – आ पाचा खुदाबादमें मीर वीजडनै मारियो ।

२३९४ वीजडरो बेटो मीर अवदल्ला, सोभदाररी बेटी परणियो अबदल्लारो मीर गुलाम, सोहराबरै परणियो।

२३९५ मीर सोहराबनू फतैअली मिलवानू तेडियो – इण चूक तेवडनै फतैअली कनै आवण लागो सोराब जद बैरी फतैअलीरी मा सोराबनू कहायो – मीर वीजडनू चूक हुवानू किता वरस हुवा तोनू याद है कै नही ? अै समाचार सुण पाछो सोराब वावडियो फतैअलीसू मिलियो नही।

२३९६. सोराव फकीर कहावै, कागदामे फकीर लिखीजै है जईफ है कडप करावै नही सलूकरी किताबा सुणै है, आदल सखी जिणसू ।

२३९७ सोरावरै च्यार भाई, पाचवो आप अेक भाई मीर सोरावरो ऊमरकोट काम आयो हो मीर सोरावरा मुलकसू दिखण हैदराबाद आथमणो सिंधुरो दरिया पचनद मिल हुवो जिकै उत्तर दाऊद-पोहरा, पूरव जेसळमेर ।

पालणपुर

२३९८ हयातखारै बसरा विहारी पालणपुररा धणी ।

२३९९. पालणपुररो दीवाण कमालुद्दीखा, जिणरै वेटो पीरोजखा पीरोजखारो करमखा पातर-जादो पालणपुर दीवाण हुवो जिण धधवाडिया दुवारकादासनू खासो घोडो दियो गुजरात पधारता अभैसिंघजीरा डेरा पालणपुर जद ।

२४०० दीवाण पीरोजखारो वडो वेटो फतैखा पालणपुर दीवाण हुवो ।

नागौर

२४०१ सन ७८५ ममसखा विजदुलमुलकरो वेटो गुजरातसू नागोर आय मालक हुवो ।

कालपी

२४०२ काळपी मुसळमान काम आया ज्यारी चौरासी गुमटी है ।

२४०३ जवन कहै—पाच पीर जो काळपी जुझनै मरता तो काळपी मक्को हुतो ।

लखनऊ

२४०४ लखनऊरो नवाव गाजूरदी हैदर जहापना कहावै सात करोड रुपियारो मुलक लखनऊ हेटै हुतो आधो मुलक अगरेजा अपणाय लियो साढी तीन क्रोडरो मुलक वजीररै रहतो ।

२४०५. हस्तरजाखा हैदरवेगखा आसद्दोलारै मुखतार हुता तासीन १, अपरीन २, डल्यास — तीन ख्वोजा मनीजता आसउद्दोलारै ।

हैदराबाद

२४०६ हैदराबादरा नवावरै नव क्रोडरो मुलक हो क्रोड रुपियारो मुलक अगरेजा लीवो आठ क्रोड रुपियारी पैदासरो मुलक हैदराबादरा नवावरै है ।

२४०७. बहराई छव हैमारी नागपुर हेटै ही, दस हैंमारी हैदराबाद हेटै हुती हमै मारी हैदराबाद हेटै है ।

२४०८. हैदरावाद मीर आलम तीन लाख रुपिया लगाय भारी तळाव करायो. सहरमें जळरो पुर हो गयो ।

२४०९ कनकरी १, अेळचपुर २ पठाणारै पटै है हैदरावादरा नबाबरा दियोड़ा ।

२४१० हैदरावाद मीर आलम वजीर हो उणरो भाई मीरसाह टीपूरो वजीर हुवो ।

२४११ घोडोर, परेडी, आंसरे—अै किला हैदरावादरा नबाब कनासू सतारारै धणी लिया ।

टीपू

२४१२ टीपू आपरा देसरो धन परायै देस जावण देतो नही सिपाह वगेरा इणरा अमलमे हीज रहता ।

[फिरंगी]

२४१३ अग्रेज १, पुर्तगीज २, विलदेज ३, फरासीस ४, फिरगी ५, डीगमार ६, गुरजी ७, इस्काटलेंड ८, जरमनी ९, चिलवी १०, कुतबी ११, उरैसी १२—अै बारै टोपी निसारारी ।

२४१४. चीणा पटणरा नबाबनू अगरेज किंग करनाटक कहता. पछै उणरो राज खोस लियो ।

२४१५ आगै सूरतमे च्याराँरो अमल हुतो नवाबरो १, अगरेजरो २, गायकवाडरो ३, पेसवारो ४ ।

२४१६ पटेल गवालेर तोडियो जद पापन साहब फिरगी पटैलसू जग कियो ।

२४१७. अगरेज कपतान मिस्टर आन स्काट साहब नै वगलरामरै मोलविया दोनू मिल हफत अकलीम किताब वणायी जिणमें कहै है कितीक जमी झडा हेटै, कि पहाड हेटै, कि वरफ हेटै, कि खारमय, कि आधारा माहे, कि जळ हेटै, कि बळियोडी है ।

२४१८ पूरबमे गगारै तट किलकत्तासू बारह कोस उलदे जाच चौडो सहर वसायो फरासीसा फरासडागो सहर वसायो दोनू सहरा अधकोस वीच है ।

२४१९ पहला लालमडी सहर हो गगारै तट महा काळी देवी विराजै जठै सहर कलकत्तो अगरेजा वसायो ।

२४२० नेघडालन साहब नीमचरी छावणी मुवो ।

२४२१ मिसटर मटकलबरो छोटो भाई तामस मटकलव ।

२४२२ इफ अवरगेस नाम गवर जेलरो, व्यासजी जिणसू मिळिया ।

२४२३ फरासीस मरियमनू मानै, अगरेज ईसानू मानै. फरासीस कहै जमीसू आछी वसत प्रगट हुई उण वसतरी तारीफ नही, जमीरी तारीफ है ।

२४२४ अगरेज कहै सीपसू मोती प्रगट हुवै सीपनू चीर मोती लोक लियै तैरी ऊपर काड्या पवन ऊपर है इणनू पायदार मत जाणो मास खाणो ईसे कितावमे कह्यो है नही नै थे सरब जतुआरो मास खात्रो सो क्यो ? ओ प्रश्न कियो अगरेज उतर दियो – कासमीरियारै धरमरी कितावामें त्रियारै माथै पाग वाधणी न कही है, पिण कासमीरमे सरदी वहोत, इण कारणसू प्रथम अेक औरत पाग वाधी, पछै देखादेखीसू सारी कासमीरणिया पाग वाधी, हमै देसातरमे रहै जिकेही कासमीरणिया पाग वाधै है, परपरा ठैरायी, यू फिरगमे सरदी वहोत जिणसू हकीमा मास खाणो अगीकार कियो, अब देसातरमे ही फिरगी मास खावै है ।

२४२५ अगरेज अेक अजमेर छावणी हुतो व्यापारी सो महा भूठो हो अेक चाकूरै मोलरा पचास रुपिया कहतो दूजा चाकुवा जिसा उणरै चाकू हुता ।

२४२६ अेक कुत्तारा मोलरा हजार रुपिया करतो ओ अगरेज. दो सै रुपिया तो घणा जणा घामिया हुता ।

२४२७ जैपुर अगरेज रहतो असटरजी जिणगे अेक हाथ टीपूरी राडमे गोळासू वढ गयो हो ।

२४२८. अगरेज कहै – छोटा मछनू मोटा मछ गिळ जावै, छोटा मछनू क्या सुख हुवा ।

२४२९ फिरगमें डूक पदसू वडो पद किंगरो है ।

२४३०. तुरमनामो अगरेजारै वाजो हुवै ।

२४३१. वाजा जितरा फिरगमें इता वाजा और विलायतमें नही ।

२४३२ अगरेज हुडीनू विल कहै ।

२४३३ अगरेजांरै वीवी मेम साहव कहावै ।

२४३४. फिरगण वीवी मुतसद्दी अगरेजनू अगीकार न करै, जगी अगरेजनू अगीकार करै ।

[प्राचीन इतिहासरी वार्ता]

नंद

२४३५. पाटलीपुत्र पुरै राजा नवनद हुवो (? हुवा) ज्यारी लक्ष्मी दानाभावात् गगा तीरे पीत पाखाण हुई अजू है।

२४३६ जैनरा ग्र थामे कहै है नव ही नद श्रेणकरा वसमे जनमिया।

२४३७ राजा नदरा ठावा आदमिया वनमें पाटळा व्रखरी डाळ बैठा पखी नीळ टाच, जिणरा मुखमें विना उद्दम किया लटा पडै, जिका देखिया हा. विचारियो – अठै सहर वसावजै तो इण सहररा लोकनू आपहीनू रजक मिळै. पछै सहर [वसायो] पटणो कहै मुसळमान अजीमाबाद कहै।

विक्रमादित्य

२४३८ विक्रमार्कनू अगनी वेताळ दोय सोनारा पोरसा दिया था जिणसू जगन अन्हण (?) कियो हो।

२४३९ विक्रमार्क सहज दानविधि आरतियानू हजार, जिणनू वतळावै उणनू दस हजार, वाणी सुण हसै तिणनू लाख, जिणरी विक्रम तारीफ फुरमावै उणनू क्रोड सोनइया दिरीजै।

२४४० गळीमें पडियो अन्नकण जिणनू गजसू उतरि विक्रम माथै मेलियो जद अन्न – धिष्ठानको लक्ष्मी वर दियो तेण वरेण माळवै दुर्भिक्ष्याभाव।

२४४१ सू गळीमे पडियो धानकण गजसू उतरियो विक्रम माथै धरियो. धान देवतारो वर हुवो माळवामे दुकाळ पडै नही।

२४४२ विक्रमादित्यनू राजा साळवाहण मारियो कठैईक लिखै – समुद्रपाळ जोगी, जिण मारियो केई कहै विक्रमार्कनू साळवाहण मारियो, कोई कहै समुद्रपाळ जोगी मारियो।

[धार्मिक वार्ता]

वैदिक धर्म

२४४३ गगाजीरै वाहण कूर्म, जमनाजीरै वाहण मच्छ।

२४४४ नैमखार मिश्रमें सर्व तीरथ आया, पुसकर प्रयाग न आया. अेक गुर, अेक राजा, तीरथारो जिणसू।

२४४५ अरबुदवासी भील मरि नळ हुयो, भीलणी मरि दमयती हुई, सन्यासी मरि हस हुवो।

२४४६ राजा सागर पुत्रासू धापो नही ।

२४४७. रामचद्र दस हजार वरस राज कियो ।

२४४८. पुराण लिखै है – आनै ग्यानवापीरो जळ आगला जुगांमे कासीमे लोक पीवता आमें ग्यानलिंग प्रगटी लोक त्रिभग हो जातो ।

२४४९ पुराणमें कळपातर मानै. पूरव मीमांसामे होणहार मानै· वेदातमे ईश्वरेच्छा मानै ।

२४५०. वेदातमे बावन मत है ज्यामें अद्वैतवाद प्रबळ है ।

२४५१. अद्वैतवादी चक्रवर्ती कहावै ।

२४५२ सोयगकार यथा सोय देवदत्त ।

२४५३. नैयायिक भनित मानै सव्दनू ।

२४५४. सेय दीपज्वाळा स्मद स्यात् दीसै न तु वास्तव ।

२४५५ मीमांसक वैयाकरण सव्दनू नित्य मानै ।

२४५६. न्यायरा प्राचीन पडितोरा मतमे नै आधुनिक पडितारा मतमे फरक है ।

२४५७. दक्षिणात्याका न्याय, मैथिलूका न्याय, वंगालियूका न्यायमे कही-कही फरक है ।

२४५८ वनमे आठ वरसरो खोडो ब्रामणरो डावडो आयो उण समै सिविकारूढ समाज समेत कुमारळ भट्ट उण वनमे आय निसरिया, इण डावडासू पूछियो गाव अठासू नेडो है कै दूर है ? जद ओ वोलियो – हू वालक छू, खोडो छू, वकरिया वित्त है, दिन किंचित आय रह्यो है, गाव अति नेडो है जिणसू अजे वनमें खडो छू अकलसू लोक ईश्वरनै जाणै है, मोनू वनमें खडो देख गाव अति नेडो जाण लेणो. इण डावडानू कनै राख पढाय भट्ट प्रभाकर नाम दियो इणरो कुमारळ भट्ट ।

२४५९ कवीर सवत पनरासैमे हुवो, दादू पहला सौ वरसा पातसाह सिकदरनूं परचो दियो ।

जैन-धर्म

२४६०. जिनागममे कहै है – सैत्रुजा ऊपर दस कोड मुनिराज काती सुद १५ सीधा ।

२४६१. सारी तीरथामें आमाक श्रेष्ठ तीरथ है ।

२४६२. जिन प्रतिमा जिन सरावी, कही जिनागम मांहि ।
ये जाकै दूखन लगै, वदनीय सो नाहि ।।

२४६३. धुलेव रिखभदेव केसरियानाथ कहावै सोळ जणा फरासी पंखारा चाकर है ।

२४६४. दोय जणा दोय पंखा फरासी सासता धुलेव रिखभदेवजीरै चलायवो करै ।

२४६५. बीइंद्रिया त्रीइद्रिया प्राणी कहावै ।

२४६६ पचेंद्रिया जीव कहावै ।

२४६७. नख भूत कहावै. अन्य सत्त्व कहावै ।

२४६८. अेक घडीरी साठ पळ, पळरा साठ उपपळ जिन मते ।

२४६९ अेक वरसरा तीन सै चौपन दिन मानै जिनमते ।

२४७० जिनमते पाच वरसरो जुग मानै ।

२४७१ भरत चक्रवर्ती आपरी हाथरी मूदरीरा माणकमें आदीस्वररी प्रतिमा खुदायी. नाम उणरो माणिक्य स्वामी दक्षिण देसमे कुलापाक नगरी जठै अज्यू विराजै सुवर्णद्वय पुरुष प्रसादात् विक्रक जगत अनृण कियो ।

२४७२ सैणक मरता पुत्र माथै कोप कियो जिणसू पहली नरक गयो चौरासी हजार वरस नरक में रहसी ।

२४७३ घर आगण आयो उठै ।
श्री सैणक महाराज ॥

२४७४ राजा सप्रति माळवेस्वर हुवो ।

२४७५ सौलै हजार मुगटबध राजा सेवा करता सप्रतिरी ।

२४७६. सवा क्रोड जिनविंव कराया राजा सप्रति ।

[भौगोलिक वार्ता]

राजस्थान

२४७७ जोधपुर ईदगाह दिखण तरफ है, उत्तरनू पहाड है जिणसू ।

२४७८ मडोवरमे भैरू विराजै है ।

२४७९ परमार भवसेन राजारी बेटी सेजळदेवी हुती सोजतमें सेजळरै नामै सोजत सहर वसियो हो ।

२४८० लाडणू डाहळिया रजपूत वसायो डाहळिया पछै जोहिया मालक हुवा. जोइया कनासू मोहिला, मोहिला कनासू रावजी मालदेवजी लाडणू ठिकाणो लियो ।

२४८१ वडला जातरा जाटा ओ गाव वसायो जिणसू वडलू नाम प्रगट हुवो ।

२४८२ वडलू पहाडीरी गुफामे भूतेस्वर विराजै है, नदवाणा ब्रामण सेवा करै है ।

२४८३. मेडतै चतुर्भुजजीरा मदिर कनै मदिररा कोट माहे सोनगरो सूरजमलजी पूजीजै है चतुर्भुजजीरै भोग लागोडो थाळ सूरजमलजीरै भोग लागै, पछै ओ थाळ ठाकुरजीरा रसोवडा दाखल हुवै ।

२४८४ गुडामे सोनार ठगारा सगसू ठग-विद्या करै है ।

२४८५ गुडारो ठग महमदियो करणाटक माहेसू साडी तीन मण सोनो लायो हुतो सोजतरा डेरा वडा महाराजरै पगा लागो अस्सी मोहरा नजर किवी गुडा छोड वातै वसियो आठवारा सिरदार सिवसिंघजीनू मनवार किवी हुती ।

२४८६ थेटू ठगारा घर वगडीमे हुता जैतावत सूरजमल वगड़ीसू गुडा वसियो जद ठगारा घर साथै ले गयो ।

२४८७ वगडीसू ठग देवगढ जाय वसिया घर डग्यारै सिरयारी जाय वसिया ।

२४८८ गाव धारवी कोटडारो है ।

२४८९ आगै ठठारो मारग कोटडा होय निसरतो लाखारो माल वहतो. दाण कोटडारा धणीरै घणो आवतो ।

२४९० आगै वापडाऊ नामै गाव हुतो उण जायगा नवो वाहडमेर वसियो दोय कुवा तीस पुरस घणो पाणी, मीठो पूठनू भाखर छै भाखर निरूखो छै जूनो वाहडमेर जठै पहाड है गढ छै भाखररै आघोफरै भाखररी गिरद वाई कोस पररै छै भाखरमे गढमे कुवा, तळाव, झरणा, वावडी घणा छै भाखर निपट सझाडो छै थोहर, वोर, गूदी, गागडी, लोकस, गूगळ निपट सझाडो छै ।

२४९१ वाहडमेरथी पचीस कोस वाळेतो, पचीस कोस नीवळो, तीस कोस ऊमरकोट, वाहडमेरथी कोस छव विसाळो, तीस पुरस, मीठो पाणी, त्रणो ।

२४९२ कोटडो गढसू भाखरी ऊपरै कुवा गढमे छे, तीस पुरस मीठो घणो पाणी अेक कुवो गावमे है ।

२४९३ फळोधी किरडारो जोहड जठै नाना प्रकाररी सुगध आवै लोक कहै इणमे पोसता रहै है ।

२४९४ वाळारा पाणीसू महेवा मे गेहू हुवै ज्या गेहूवारी साखमें पाणीरो हासल हाथी वाळीसे लियो वेडारो धणी ।

२४९५ भूरीघाट ऊपर पाबूजीरो थान है अठै माडरो नै मालाणीरो काकड है ।

२४९६ गुडा हेटै वाडमेर हेटै केईक गाव सूराचदरा, केईक सोढा दाविया ।

२४९७ सूराचदरा गाव २७ सासण, ५०० सूराचदरा धणीरै सूराचदरा गाव पाच सौ सत्ताईस ।

२४९८ डेराठरसू अधकोस ऊपरै ठिकाणो जोधो है उठै मधु राज करता, ओ मधुरो राजसथान हो हमै जोधो सूनो है ।

२४९९ वीकमपुर कनै लूडीरो हेडर कहीजै है ऊ विक्रमादित्य गाया, भैसा, साढा, छाळियासू भिळायो आपरो पण राख लियो ।

२५०० सिवाणै गढ सीह लको है, सरापियल जायगा है ओ किलो कडतोडो है जिणसू राजवियारै रहण योग्य नही ।

२५०१ सिवाणारो खेडो पहला पोरवाळा वसायो. मुसळमानारा वासमे सोनाणारा पत्थररो जिनमदिर नै आथूणो भाखरी हेटै सिवाणारो सिंदूरियो पत्थर जिण रचित पारसनाथरो मदिर, जुमलै दोनू जिनमदिर सिवाणै ।

२५०२ गाधो तेरारोप छाड परा गया पछै जाळोरीरो गाव वाघरो जठासू वाघरेचा ओसवाळ आय सिवाणै वसिया ।

२५०३ भीनमाल नगर रतन महेसदासोतरै समै स्वप्न देनै श्री वराहजी प्रथी बाहर आया ।

२५०४ जुजाळासू गुसाईंजी सेघाळै प्रगटिया भाखर माथै मदिर है सेखलासू खिरजा प्रगटिया मीठो नेवज चढै भैसा चढै गुसाईंजीनू गुसाईंजी घोडे असवार रहै. आ मूरत देवळमे गोगादे गुसाईंजीनू पूजै ।

२५०५ जेसळनेरसू खाडाळ पश्चिमनू है ।

२५०६ खाडाळसू आथमणा वरूरा मदिर है कुत्ता घणा राखै गाया, भैसा, साढियारी वार चढै जद डोर माहसू कुत्ता काढ देवै कुत्ता दौड आपडनै धाडैतारा घोडा ज्यारा अडकोस पकड लै पछै घोडा चढिया मैहर आवै वारू परै वनमे अेक जाळ है उण जाळ कनै वारूरा भाटियारै नै वारूरा मैहरारै सत वडा झगडा हुवा है, सैकडा मानस मारणा है ।

२५०७ ऊटडिया महादेवसू बारह-बारह कोस चौतरफ हर वरस सुगाळ रहै ।

२५०८ वीकानेरीमे कोडमदेसर तळाब है, गाव नही है ।

२५०९ काकरोळीरा गुसाईजी ज्यारा सेवक आनू पूजै, और गुसाईजीरा बाळकनू न पूजै हरिरायजीरै घररा सेवक हरिरायजीरै वसरा गुसाई ज्यानू पूजै, दूजा गुसाइयानू न पूजै गोकुळेमजीरा सेवकही इण हीज प्रकाररा है ।

२५१० उदैपुर आथमणो पीछोळो है, उगवणै सहर वसै है पीछोळारी पाळ रडो है, माटी नही है रडा माथै राणाजीरा महल है ।

२५११ कलाळियो पीछोळारो अेक देस ।

२५१२ जगमदिर जगनिवास पीछोळै मे रडो जिण ऊपर राणै जगतसिंघजी कराया ।

२५१३ राणोजी जगमिदरा जावै सारी असवारीरो लोक चटकमा मोरचाँ पीछोळामे हगै पीछोळारो पाणी सहर पीवै ।

२५१४ उदैपुर माछळारै आकार छोटो डूगर है – उत्तरनू पूछ दिखणनू मूडो ऊ माछळो मगरो कहावै ।

२५१५ वघेरै वराहजीरो मदिर वेगमरै धणी रावत वडै मेघ करायो ।

२५१६ भीलवाडो मेवाडरो जठारा भील माथारा केस खुलियां झगडो करै, पीठ लारै ऊभी भीलड़िया बोलै – धीरो पाखरिया ।

२५१७ मेवाडी गाव दूधुवो जठै वालो वघेरामे रावत मेरो ।

२५१८ तोडासू च्यार कोस पहाड ऊपर वनासरा दरहछवाळ नाडी ऊपर सिसोदिया रायसिंघ भीम अमरसिंघोतरै महल कराया, गाव वसियो जिणरो नाव राजमहल ।

२५१९ ईंदावाटीमे धूताबर गाव चीमड विराजै खाडो देवळ वडो देवळ है ।

२५२० ईंदावाटीमे गाव दूगर माता दुगाय भाखरमे विराजै है हाल तक ।

२५२१ जागळी नामे भील राठोड राजानू बेटी परणाय आवू दियो राठोड कनासूं आवू गोहिला लियो दोय सै वरस गोहिलारै रही गोहिला कनासूं परमारा लियो परमारा कनासू प्रीतू देवडै लियो ।

२५२२ अवायजी अेक सिरोहियो दरवाजो है ।

२५२३ अवावजीरी सेवा करै उदबर जातरा बामण ।

२५२४ दातारा धणीरी दुकान अवायजीरा पगा है घ्रतादिक वस्तु यात्री उण दुकानसू खरीदै ।

मालवा

२५२५. मालवै सहर रुणीजो जठै देवडा मोकळोतरो राज है, भोजकराव वाजै आ माडवारा पातसाहरा चाकर हुता ।

गुजरात

२५२६ गुजरात मे वडा-वडा तळाव है ।

२५२७ हडियारो घाट १, मडोळोररो घाट २ सतवासरो घाट ३, मरदानारो घाट ४, घोडा घाट ५, इत्यादिक त्याहीरा घाट है ?

२५२८ आवारो पेड, महुवारो पेड, रायणरो पेड, आमलीरो पेड, गुजरातमे करसणी थीत गिणै ।

२५२९ गुजरातमे गरबो गावै – वेगळो रहे वरणागिया रे, वरणागियो रसियो ।

२५३० महतारी गरवारी तुक अेक वार कहै, दूजी त्रिया दोय वार कहै ।

२५३१ गुजरातमे रोवणनू रडनो कहै ।

२५३२ गुजराती काकानै काचा कहै ।

२५३३ गुजराती आपरी त्रियारो जार होण आवै विणनू कहै – च्यार रुपिया आलसै तो अमानी वेर दोय सेर सोनो पहर तुमारे पास आवसै, रुपियामे दोय सेर सोनो घसावसै नही ?

२५३४ कुणवी गुजरातमे हाड माडै, मनोती करै, करसण करै, सालवी पणो करै, छेसाई पणो करै ।

२५३५. गुजरातमें पालीसूको बदर कहावै ।

२५३६ डंड, मुड अर डाम – द्वारकानाथरी यात्रारो वर्णन ।

२५३७ कोरी न नाल मुल द्वारका ।

२५३८ वेचराजीरा चरणा कूकडा है ज्यानू मिन्नी न मारै ।

२५३९ पावानी पटराणी भवानी काळिकारै लोग गरवा रियै ।

२५४० डभोईरो भलो तळाव है तेलरो भलो तळाव है वडनगर, वीसळनगर वडा तळाव है ।

२५४१ डभोई सहरी पच महालामे है ।

२५४२ नादोल राउपीपळा अेक घर है ।

२५४३ राधणपुररो परगणो वढियार कहियै आबूरो पाणी वढियारमें लावै इण पाणीसू गेहू चणा सेवज हुवै अर वढियारमे आवूरा पाणीरो हासल लियो राव अखैराज भालो पाण ।

२५४४ आलीराजपूर १, उदैपुर २, वारियो ३ – अै ठिकाणा चहुवाणारा गुजरातमे ।

२५४५ आली मोहण राठोडारा ठिकाणा आ ठिकाणासू नजदीक है ।

२५४६ सवत १७१९ भावनगर वसियो ।

२५४७ गुजरातजी नटवरजी वाळा व्रजरायजीरा पुत्र व्रजभूखणजीरै खोळै व्रजभूखणजी गुजरातमे काकोजी कहावै ।

२५४८ नीमाणियासू व्रजभूखणजी, व्रजरायजी, रुघनाथजी पालणपुर सेरखा दीवाण भूतडी गावमे खोसिया ।

२५४९ गोरखमढी प्यारनाथजीरा घरमे बासणी गिरनारी है ।

२५५० पाटणमे वैजनाथ वाबू वडो धनवान है, वल्लभकुलरो सेवक है ।

२५५१ रेलत कूचरो नाम लुणावडा कनै वीरपुर वसती है जठै हाजी मोहमद दरियाईरी वडी दरगा है हजारा ज्यारतनू आवै है ।

२५५२ नवसारी १, घणदेवी२ – अै परगना कोकण सूरत विचै–ज्यामे लारला दिना गायकवाडरो अमल हुतो ।

२५५३ मही वडी नदियामे गिणीजै है ।

२५५४. अैमदावाद बाभियारो वधायोडो काकरियो तळाव वडो सरोवर है ।

२५५५ अैमदावाद चवदै दरवाजा है इत्ता ही दरवाजा सूरत है ।

२५५६ सायपुररो, खेडारो, अैमदावादरो दिली-दरवाजो, वडो दरियो दरवाजो, समतोडियो दरवाजो, कळूपुररो दरवाजो – इत्यादीक चवदै दरवाजा अैमदावादरा है ।

२५५७ अैमदावादरा आठ दरवाजा साबरमती नदी वहै है अैमदावाद जुमै–महजीनरो वडो कमठो है ।

२५५८ ममोई दरवाजो, वरियागो दरवाजो इत्यादीक चवदै दरवाजा सूरतरा है ।

२५५९ वरिया परिया दोय वडा सहर है सूरत कनै ।

२५६० हमैं माडवै रजपूतारो राज है ।

२५६१ ईडररी हदमें सावळियै भील सावळियो सहर वसायो ।

दक्षिण

२५६२ गुजरातसू दक्षिण ऊची है ।

२५६३ पडरपुरमे प्रथम परचाधारी नामदे छीपो हुवो ।

२५६४ कोकणमे खानदेसमें वगलाणानू वांगलाण कहै ।

२५६५ देव पूजामे ही विरामण तमाखू वाटियोड़ी सरव दिखणरा विरामण तमाखू सूघै ।

२५६६ मूळा १, मोठा २–अै दोय नदी पूना हेटै वहै है ।

२५६७ दिखणमे भीम नदी भीम सकरी कहावै ।

२५६८ कृष्ण वेणी कृष्णा कहावै ।

२५६९. दक्षिणमें वेदारण तीरथ है ।

२५७०. इकावरेस्वर पृथवीरा लिंग १, जबुकेस्वर जळ-लिंग २, त्रिण मळय वहे-लिंग ३, काळाग्थि वायु-लिंग ४, चिदवरेस्वर आकासलिंग ५, चिदवरेस्वर द्वितीय नाम सभापती ।

२५७१. कावेरीरै तट पाच वडा सिवरा थान है–पचनद १, कुभको २, मध्यार्जुन ३, मायुर ४ स्वेताणय ५ ।

२५७२. वाळार्क १, सिंघार्क २, तरुणा ३, वाघार्क ४, सिघार्क पिंगळस्वामी कहै ।

२५७३. अेक सिंघलदीपमें कुवो है उणमें नर-नारी झाकै जद माहेसू काकरा चालिया आवै जाणजे कोई मनुस्य माहेसू काकरा चलावै है ।

२५७४. हैदरावादमे गुजरातियारो पुरो कारवान कहावै. कैई गुजराती वणिक जैनी, कैई वैसनव है. केसोमदनू क्रोड़ीमल वगेरे ठावा आदमी हुता ।

२५७५. मसीरुलमुलक उमरतुल उमराव असतु जहा प्रमुख छाईस मसीरुलमुलकनू हैदरावादरै नवाव दिया ।

२५७६. मोहार बधार बराडरा सूबा माहे छै, लारला वरसा वधाररो धणी गोड भीमेस्वरजी ज्यारी बेटी वेगमरा धणीरो छोटो भाई सकतसिंघजी परणियो हो।

२५७७ नर्मदारो अेक देस धारा-क्षेत्र है जठै वाणनाथ सिव नीसरै है, रेवाककर।

२५७८ नर्मदा माहेसू नीसरी कावेरी जिका कुवा कहावै पुराणमे।

२५७९ हुसगावाद हडिया गाम सत वास प्रमुखाकै थाटू लसकर उतरते है।

सिंध

२५८० सिधमे माथैलो मैहरारो वतन है।

२५८१ मीर वाह, नसीर वाह, कतूर वाह, वहराम वाह, इत्यादीक वाह सिंधमे है।

२५८२ मुराद गजै वाह चलायो सो मुराद वाह कहायो सिधमे।

२५८३ मुराद गजो वेवै भव जद फकीरणीनू इण कह्यो – हमकू दवा कीजै इण कह्यो घोडा सियाररो मालक हुसी फेर कह्यो – दवा करो इण कह्यो फीरोज जग हुसी इण कह्यो–फेर दवा करो जद फकीरणी कह्यो–फासीसू थारी मोत हुसी।

२५८४ खैरपुर मीर सोराब वसायो।

२५८५ खुदावादनू महमद वसायो।

पंजाब

२५८६ वहावळपुरसू आवी मुलक सरू हुवा कसमीर ताई सीसमरा वृक्ष उठै वहोत घणा छाया है।

२५८७ वगपुर १, हसपुर २, सामपुर ३, मुलतानपुर ४–अै च्यार नाम च्यार जुगरा है मुलतानरा।

२५८८ मुलतानरा किलारै च्यार दरवाजा है–रेडी १, सीरवी दूजो २, खिदरी तीजो ३, दे चौथो ४।

२५८९ केसोपुरी मुलतानी जैमल बट आवादानी।

२५९० केसोपुरी मुलतानी जीवता मुलतानमे समाध लिवी रामतीरथ है जठै।

२५९१ पीर वहावुलहकरो रोजो मुलतानरा किलामे पीर साह कुल आलमरो ही रोजो मुल्तानरा किलामे है।

२५९२ मुलतानरा किला माहसू रणजीतसिघरै हाथ धन घणो आयो।

दिली

२५९३. दिलीमे राजा आरपुरो, लालपुरो, जसवतपुरो, जैसिघपुरो, वीठलपुरो इत्यादीक।

२५९४ दिली सहर मैना वाहर पठाणारी करायोडी ईदगा है, साहजीरी करायोडी ईदगा है, महम्मदसाहरी करायोडी ईदगा है, दिलीसू दिखण तरफ. जुमलै तीन ईदगा हदीसमे कहै है ईदगा सहर उत्तर तरफ करावणी दिली ईदगा दिखण दिस है उत्तर दिस जमना आयी जिण कारणसू ।

२५९५ लाट समसुद्दीन मुतसल दरगाह कुतुवसाह मुतसल, समीप ।

२५९६ सुई प्रमुख सजातीय वारह वसतां मिलियोडी दरजन कहावै दिलीमे ।

२५९७ दिलीनू आगरैरा रणवासमे जोगमायारो थान हुतो पका कुडमे सिवलिंग जिसी सभ उठाऊ जोगमायारो सरूप है ।

पूरव

२५९८. फतैपुर पातसाह अकवर वसायो ।

२५९९ मय दाणवरो वसायोडो मकान, मेरट ।

२६०० गणमुकतेस्वरनू गढमुकतेस्वर लोक कहै ।

२६०१. काळपीरा वावन पुरा है ।

२६०२ व्रदावन हेटै जमना सोभा घणी दे, गगा कासी हेटै सोभा घणी दे ।

२६०३ तिल भडेस्वरी १ सूल टकेस्वर २, प्रयाग राजेस्वर ३, अै तीन सिव प्रयाग वट कनै है ।

२६०४ सध्यावट हेटै हणूमान पौढै है, वडी मूरत है ।

२६०५ वेणीमाधव प्रमुख चवदै माधव है प्रयागे ।

२६०६. सरस्वतीकूपरो जळ लाल है प्रयागे ।

२६०७ लोपा मुद्रा ठोय देवी प्रयागे ।

२६०८ मणिकर्णिकेस्वर सिव मणिकर्णिका विसै ।

२६०९ कर्दमेस्वर सिवकाम्या ।

२६१० दुर्गेस्वर सिवकाम्या ।

२६११ केदारेस्वर काम्या ।

२६१२. कुमार राज विनायक कासी समीपे कपिळ समीप ।

२६१३ कासीमे उदैपुररा राणारी करायोडी जायगा खालसैपुरो वाजै है ।

२६१४ वूदी रावजीरा करायोडा महल कासीमे राजमदिर कहावै हाडारो वगीचो कासीमे है ।

२६१५ कासीमे कछवाहै मान महल करायो, उवै मानमदिर कहावै ।

२६१६ सेहरसाह जवन पूरवमे जवनेद्र हुवो जिणरा आतकसू कासी सूनी हुई । विरामण विस्वेस्वररो लिंग जमी ऊडी खिण भडार दियो पाछै किताईक वरसा दिखणसू विरामणां देसस्थ रामेस्वर भट्ट वेटा नारायणभट्ट सहित

स-कुटुम्ब कासी आय वसियो जवनरी कन्यानू जवख लागो हुतो सो नारायण भट्ट काढ दियो जवनेंद्रनू रिझाय इण कासी वसावणरो आरभ कियो कासी-वासी जमीदार कासी तेडिया कह्यो—सारा अठै आय वसो, जवनेद्र आपोरी रछ्पिाल करसी पछै कासीमे वस्ती होण लागी डूब परपरासू कासीमे वसै है उवै कासी इजाड हुवाही कासीमे रह्या उवारा कहणासू विस्वनाथरो लिग बाहर थापवा जमी देखी सिवलिंग नही पायो जद कासी-वासी तीन दिन अनसन ले बैठा सिव सप्रेम आज्ञा किवी-ऊ लिग कैलास गया और रैवास कर आणि उठै स्थापित करो यू-ही-ज कियो ।

२६१७ वैद्यनाथ सिव वैजनाथ कहावै ।

२६१८ झूलनारो उत्सव ठाकुररो बगाली विसेस करै हजारा रुपिया खरच करै ।

२६१९. जलापानात् अेक वा दोनू चरण त्रसब-गळ-स्थूळ हुवै बगालियारै ।

विलायत

२६२० कधार खुरासाणरी हदमे है, काबुल हिंदरी हदमे है ।

२६२१ विलायतमे खातून जन्नतरो नाम आख मीचनै लेवै ।

२६२२ कमरकोहसू नील नदी चालै मगरबमे होय, जगवारमे होय, मिसरमे होय, रूमरा समुद्रमें मिलै ।

२६२३ अमरीके वरसन नवी दुनियारो नाम है ।

२६२४ नवी दुनियामे उत्तरनू अगरेज है, दिखणनू इसपेन है ।

विविध स्थानांरी प्रसिद्ध वस्तुवां

२६२५ खुटिया लखनऊको, गटा कनोजको, पेडा मथुराको ओळा सिकदराका अदभुत हुवै है ।

२६२६ अभ्रक कपूर लोबान कृष्णागुरु प्रमुख यवनारै देसासू हिन्दमे आवै ।

२६२७ कासी पीतळ प्रमुख धातु मारवाडसू सिधमे जावै ।

२६२८ वीकानेररा जोहडरी घोडिया हमेसा जगळमे चरै हिरणिया ज्यू ।

२६२९ जेसळमेर भूरो पत्थर सावटू कहावै नै भूरै पत्थरमे धोळासा चाढा हुवै सो वीछियो कहावै खरळ वीछियारी आछी हुवै ।

२६३० जैसळनेर वाडोरो वाग जठै मिसरी नामै आंबो है घणा मीठा मोटा आवा लागै केतकी इण वागमे है ।

२६३१ वीकमपुररी हदमे सुगनी आछा है उठै गायारो राव जिसो दूध है ।

२६३२. कछमे चितराणा अगियारा ऊट आछा हुवै है ।

२६३३ सिंधरी तमाखू नव सेर विकै १) री, जठै माळवण सेर विकै ।

२६३४ आबा मुळतान आछा हुवै ।

२६३५ गुजरातमे चद्रकळा साडी उमदा हुवै धनवतारी त्रिया ओढै ।

२६३६ पावागढरो पाखाण गुजरातमे है इण पत्थर सिवाय और खाणरो पत्थर नही ।

२६३७ सूघणी तमाखू पूनै अति चोखी हुवै है पाच रुपिया सेर विकै ।

२६३८ काफरी वदूका दुरपलारी दिखणमे बोह मोली ठावा बहादुरा कनै पावै ।

२६३९ पाच सेर घास पाच सेर दाणो उजवकारो घोडो आठ पहरमे खावै अेकमे सौ कोस जावै ।

२६४० मरकव यवन देसा वाहण हुवै सो नित सौ कोस जावै घोडासू ही मजवूत हुवै है रुमयोडो कान, आवाज गधारै सरीसी ।

प्रसिद्ध गीत

२६४१ ब्रह्म-मूहूर्त्त समै लाखो फूलाणी गवीजै दोय घडी दिन चढिया धनासरीमे वाघो कोटडियो, तीसरै पोर सामैरीमे रिडमल, रातरो सोढो महदरो गीत गवीजै ।

२६४२ दोय घड़ी रात लारली रहै सो ब्रह्म-मुहूर्त्त. इण वेळा विभास वेळावळमे लाखों फूलाणी गवीजै – प्रह लाखो सु विहाण ।

२६४३ दोय घडी दिन चढिया धनासरीमे कोटडियो गवीजै ।

२६४४ सामहरीमे दुपहरी पछै रिडमल गवीजै ।

२६४५ जेही मावत जनमियो, लाखणसी सोनल्ल । गागणियाणी जेहीरै मावत वेटो हुवो लाखो फूलाणी सोनल अपछुरारी कूख जनमियौ ।

२६४६ पच्छमरा गावा वीद चवरीसू परणीज उतरै जद, चारणारै रीत है, लाखो फूलाणी गवीजै, रुपियो गायक पावै ऊ लाखाणीरो रुपियो कहावै ।

प्रसिद्ध व्यक्ति और वस्तु

२६४७ जाम तमाईची नूरी गवीजै, हीर-राझो गवीजै, पनो ससुई गवीजै, मिहर-सोहणी गवीजै, मूमल महदरो गवीजै, मारवी ऊमर गवीजै सिधमे ।

२६४८ नूरी मीर वहररी वेटी, जाम तमाइची घरमें घाली हीर-राझारा गीत जोग कहावै तमाइची नूरीरा गीत कामेमन कहावै ।

२६४६ विरामणरै बेटी हुई जोतिसिया कह्यो इणरो पत मळेछ हुसी जद सिंदूकमे घाल दरियामे वहाय दिवी आगै धोबी वडो धनवान हो उण पाळ मोटी किवी नाव ससुई दियो केचमे वलोचामे जातहोत वसमे पनो होत हुवो, जिण केचसू आण ससुई परणी ।

२६५० भैंसारो चरावा वाळो मिहर कहावै सिधमे मिहरसू सनेह हुवो सोहणीरै ।

घडो भागो तो घोलियो, भग्गो जान घडीह ।
उणो मझा अमी चवै, कर दरियाव दडीह ।।

२६५१ जैसळमेर परै मूमलरी मेडी है – काकनै ऊपर मूमल, सूमल, सहजा अै तीन वहना है ।

प्रसिद्ध गढ़

२६५२ आमेर १, गवाळेर २, चितोड ३, चापानेर ४, भाभेर ५, माडव ६, सालैहर ७, माल्हैर – अै वडा गढ है ।

२६५३ चहुवाणा सातल सोमरै घर जनम हुवो गढ सिवाणैरो ।

२६५४ जाळोर सोनगरा कान्हडदे घर जनम हुवो ।

२६५५ रणथभोर चहुवाण हठीला हमीररै घर जनम लियो ।

२६५६ चितोड राणा अडसीरै घर जनम हुवो ।

२६५७ सिहोर गोहिलारै घर जनम हुवो ।

२६५८ जेसळभेर दूदा तिलोकरै घर जनम हुवो ।

२६५९ गागुरण खीची अचलदासरै घर जनम हुवो ।

२६६० अकबर चितोड लियो जद राणारै घर जनम हुवो ।

२६६१ सिवाणो कला रायमलोतरै घर जनम हुवो ।

प्रसिद्ध हाथी-घोड़ा

२६६२ श्रीकलस हाथी सिधराव जैसिंघरै, दळवादळ आसफुदोलारै, श्रीप्रसाद नैपालरा राजारै, जसतिलक उदयपुर, फतै मुमारख जोधपुर – अै हाथी वडा कारणीक हुवा ।

२६६३ पाबूरै घोडी काळवी, वहलिमारै पीवळी, दूदा जसहडोतरै रीमी, सागणरै वैरवोर, भोजरै बोळी, वीरमरै समाध, वैरसी रायपाळोतरै ताजण, वालणरावरै हिरणी–इत्यादिक अग्यारै घोडी जग-जाहर हुयी ।

प्रसिद्ध राजा, बादसा, मंत्री आदि

२६६४ हैदराबाद मसीरुलमुलक १, नागपुर देवजी बापू २, पूनै सखाराम बापू ३ –अै तीनू वडे मत्री भये है ।

२६६५ सितारो १, मलैवार २, हैदराबाद ३, श्रीरंगपट्टण ४ – अै च्यार राज श्रीसै छक हुता लारला वरसा ।

२६६६ श्री रंगमे टीपू, सितारै भोसळो राजा, मलैवार रामराजा, हैदराबादमे वतमान हजरत मुडा पातसाह नवाब ।

२६६७ आसामरो मालक १ नैपाळ पती २ रणजीतसिंघ लाहोर – पती ३ – अै हिंद अहृद अकलीममे वडे जोर है ।

२६६८ इण जमानामें चीणरा पातसाहरो नै असतबोलरा पातसाहरो वडो जोर है लसकर खजानो जर रुपियारो पातसाह असतबोलरो मालक ।

मुसलमान

२६६९ साह अब्बास ईरानरो पातसाह १, अबदुल्ला उजबक तूरानरो पातसाह २, अकबर हिंदरो पातसाह – तीनू अेक वक्तमें हुवा ।

२६७० ख्वाजा हाफिज, अत्तार फरीदुद्दीन, मौलाना रूमी वगैरै अेक सदीमे हुवा ।

२६७१ सतरजरी रामत, केसारो कळप, पचाख्यान ग्रन्थ – अै नौसेरवारै वकत तीन चीजा हिंदसू ईरानमें गयी ।

प्रसिद्ध कवि और लेखक

२६७२ काळीदास नामै पडित तीन हुवा है अेक काळीदास विक्रम आगै, दूजो भोज आगै, तीजो काळीदास वळे हुवो है ।

२६७३ कविरमरु कविरमरु ।

२६७४. उत्तरराम चरित्र नाटक राजा भोज व भवभूती दूना मिले कियो ।

२६७५ पुरसोतमदेव पुरसोतमपुरीरो राजा जिण नवा सिलोक वणायनै गीतगोविंदरी अस्टपदियारै अत धरिया, च्यार सौ सिलोक भागवतरा अध्यायरै आदि अत धरिया ।

२६७६ अब्दुरहमान जामी मसनवी ऊपर टीका किवी ।

२६७७ खडियै तेजसी भोपतोत सुजाण-रासो वणायो है जिणमे सुजाणसिंघजीरा परवाडा है ।

इतिहास

२६७८ तवारीख साहबुद्दीनी, तवारीख नासिरुद्दीनी, तवारीख अलाउद्दीनी, तवारीख फीरोजसाही, तवारीख अफगानी ।

२६७९ तैमूरनामो, जफरनामो, तैमूररी तवारीख है ।

२६८० तवारीख अकबरसाही, अकबर-नामो, तवकात-अकबरी, इकबालनामो जहागीर, जहागीर नामो, जहागीर आप वणायो, तवारीख साहजहानी, तवारीख

आलमगीरी, तवारीख कासमीरी, तवारीख वहादुरसाही, जिणमे गुर्जरेस, मालवेस, सिंधुपति, मुलतानपति, दिखणरा पातसाह ज्यारो हाल है।

२६८१. इतिहास पुराणाभ्यां वेदार्थ-निर्णयो भवति।

विविध

२६८२. सौ सुरंगामे अेक सपूत नै सौ कुमेतामे अेक कपूत।

२६८३. सुरग रग पायदार है।

२६८४. सुर्ख १, सफेद २, रग दोनू ही होय सो करडो रंग कहावै।

२६८५ स्याह चमर, स्वेत चमर, स्याह - स्वेत चमर हुवै है।

२६८६. सुरह गायरी ग्रीवा इण गायसू लावी हुवै. वैळै ही लावी छै सुरह गाय इण गायसू १३ लाख चमर प्रमुख देसासू हिंदमें आवै है।

२६८७ वनेरियो पछी कवूतर जिसो हुवै लाल पग हुवै, पाखा लावी हुवै, दिनरो दिखायी न देवै, रातरो वोलै, सवदवेधी वदूक चीडननू मारै, उणरी पाखवा, उणरो मास वा रुधिररो चीथरो पाणीमे उकाळ त्रियानू पाया सूवा-रोग हरै।

२६८८ विहारी, गूदडियो, कागदी तीन जातरा नीवू।

२६८९. हीगमे, किसतूरीमें मेळ हुवै इसो और चीजमे न हुवै।

२६९० राळनू रायाल कहै यवन रायाळनू गाळै जद सोमलरी वास आवै धुवामे रायाळ घाले वडो जतन आखियारो राखनै सोनार।

फुटकर वातां

२६९१. ईसवर निरकुस है, चाहै स करै।

२६९२ खुदा इरादो करै अेक चीजको, पैदा करै असवाव उसको।

२६९३ खुदा तालारी पातसाही वे जवाल है।

२६९४ अेतजादुल मुलक।

२६९५ ईस्वरमे सतसाधन फोडा मिल जावणो ओ काम आछो नही।

२६९६ पच वकारसू पडित पूज्य होय – सुवपु करि, वित्त करि, वाणी करि, विद्या करि, विनय करि।

२६९७ जाहल इलम विन सोभै नही, पातसाह अदल विन सोभै नही।

२६९८ असील विद थकोही लोगारी अदव वजावै, कमीना आडै दिनही अदव वजावै नही।

२६९९ पातसाह कह्यो आलैकम सलाम आधै साह।

उण कह्यो – आलैकम, पातसाह !
वजीर कह्यो – आधै फकीर !
इण कह्यो – कहो, वजीर !
काजी कह्यो – अधे राजी !
उण कह्यो – काजी !

२७०० थाढो पाणी पीनै खुदारी सुकरगुजारी न करै जिणनू परलोकमे खुदा सजा दे ।

२७०१ पोसाक, धन, पुत्र, त्रिया दुनिया नही है, खुदानू न जाणनो आ दुनिया है ।

२७०२ वलकी घोडै न चढणो, वासतो न पहरणो, मैदारी रोटी न खाणी, जवन कहै तीन चीजा अै अगीकार किया वदो मौत वीसर जावै ।

२७०३ सूरज यू न कहै मै सूरज नू जगत उणनू सूरज कहिनै वादै है ।

२७०४. आपमे दूसण हुवै सो दूसण औरमे काढिया वदो निरदूसण हुवै नही ।

२७०५ तू वडाई न पावै जित्तै वडांरी ठोड वैस मत ।

२७०६. उठ मत जो उठनै चालै तो सनै सनै चाल । अेक पग हेटै हजार जीव जावै है ।

२७०७ वाकरो कहै मै काटा खावा जिणरो गळो करीजै है, सदा खीर खाड खावै ज्यारो काई हाल होसी ?

२७०८ न दखल होहिगा विच वहिस्त वहिस्त कै दयूस ।

२७०९ जहान तव कामो फलक यार वाद जहां आफरीन त निगाह दार वाद ।

२७१०. हकीम सिकदरनू कहै गुपत्दान दै, असमानसू आवै जिका आफत गुपत-दानरा पुण्य प्रभावात मिटै ।

२७११. गुपतदानसू खुदा प्रसन होय ।

२७१२ स्त्र वस रकपण ही भलो, नहि पर वस रगरोळ ।
चर पोतानी पातळी, नही परायो घोळ ॥

२७१३. सोगात पत्र मेलणो, जाय मिलणो, तारीफ करणी, मदत करणी प्रगट मैत्री ।

२७१४ दिलसू भलो चाहिवो, दिलरी प्रीत – गुप्त मैत्री ।

२७१५. आपरो नही जिणनू आपरो मित्र जाणनो आ नादानगी है. कुळक्षयकार कुळागार कहावै ।

२७१६ वहादुरी, सखावत, आदली – अै तीन गुण अवस्य पातसाहमे चाहिजै ।

२७१७ नेक सिरदार ज्यानू लाजम है आप जिसा आदमी कनै राखै ।

२७१८. राजा पातसाह कनै खुसामद गोय अवस्य रहै, आ कनासू खुसामदगोय दूर होणरो उपाय ही नही – अबुलफजल कहै ।

२७१९ मालिकनू लाजिम है चाकर चाकरीसे वेपरवाह होय जाय इत्तो चाकरांनू न देणो ।

२७२० कुलीन, क्रितग्य, साधु, कार्यार्थीसू सामोपाय करणो ।

२७२१ नृपरो भ्रत्य हुवै, बाधव हुवै, अत पुरचारी सेनापति हुवै वो जिणसू दामोपाय करणो ।

२७२२ वित्रादीव व्यसनी होय ज्यासू दामोपाय करणो ।

२७२३. भय उपजाय भेद उपाय करणो ।

२७२४ रणमाल सो राजासू रूसै ।
राजा सो रणमाल विधूसै ।।

२७२५ नीत – सास्त्ररो रहस्य अेक पादमे कह्यो – लाभादल्पतरो व्यय ।

२७२६ दुनिया मकररूप है मकरसू वस होती है ।

२७२७ तू बिना वतळाया सभामे बोलै है सो दातवसोलैसू सुखन मोतीनू फोडै है ।

२७२८ ईखरा करसण सिवाय करसण नही, हाथरा वणज सिवाय वणज नही ।

२७२९. सुदर तो दाता नही, दाता तो नहि सूर ।
सैद फतामें तीन गुण, सुदर, दाता सूर ।।

२७३०. अेकसौ वरस जीवै सो बार्णू क्रोड सास लेवै ।

२७३१ गीतायां 'पडिता समदर्शिन' न तु 'सम-वर्त्तिन' ।

२७३२ मुरगी आण, मुरगा खाव ।

२७३३ मीर बहर मुहाणो नै माछी माही फरोस – अै नांव कीररा सिंधमें ।

२७३४ लसणियारो नाव अैनुलहीर है, अैनुलहूर नही ।

२७३५. सिकम पेटनूं कहै फारसीमे ।

२७३६ खुर्द छोटानू कहै, कला वडानू कहै ।

२७३७ खिलवत गोसै वैसणो ।

२७३८ जिलवत चोडै वैसणो ।

२७३९ निक्कार धिक्कार अेक अरथ है ।

२७४० देवदत्तस्य गुरो कुल देवदत्तगुरु कुलम् ।

२७४१ पाणीपतरा मारगमें अेक सिपाह राहजनारै हाथ मारियो गयो । सो लारला वरसा बोलतो – अे सिपाह सिरोही तलवार मत राखज्यो, राखै तो दोय राख इणनू सिरोही तरवार दगो दियो जाणीजै है ।

वात, दूहा, श्लोक आदि

२७४२ गीत—

वीरा रस तणो न भावै वरणण,
नह भावै मोनू जस – गीत ।
गरज नही म्हारै गीतारी,
गढवा ! काय सुणावै गीत ?

मोद मचै कर चढिया माया,
माथा - पच नह मोद मचै ।
रच थारा घरकांरा रूपग,
रूपग म्हारा काय रचै ?

खोटी हुवै, किसूं गुण खोलै,
गाठ वांधिया राख गुण ।
वणियो तू कायवरो वकता,
कायव - स्रोता अठै कुण ?

आखर वावन करे अेकठा,
तै कागळ लिख कीना त्यार ।
लापरपणो कियो तो लडसू,
चिडसू दियू न कोडी च्यार ।

२७४३. फूला ! थारो फूलियै, वळोवळी जस वाग ।
तू सिध पुरख महत तै, भारथिया सिर भाग ।।

२७४४ डाढी डाढाळाह, चांपा चहराडी नही ।
की तिल - तिल काळाह, दुजडा मुहडै देदउत ।।

२७४५. तूटै नीर तळावडा, खूटै आकां खीर ।
भाणू वन पावै भुटो, नगियो पालर नीर ।।

२७४६. भोजन देहि, राजेंद्र ! घृतशाकसमन्वितम् ।
माहिष च शरच्चंद्रचंद्रिकाधवलं दधि ।।

२७४७. धिक् धिक् शक्रजिता प्रवोधितवता, किं कुंभकर्णेन वा ।

२७४८ पंचाशत्पंचवर्षाणि सप्तमासान् दिनत्रयम् ।
भोजराजेन भोक्तव्यं........................ .... ।।

शेष रयोडी, अस्पष्ट और अधूरी वातां

२७४९ सायजादो अेक डोळीसू आयो, जिणनू तीन सलाम कर कतुह सेरा विछायत माथै बैठा ।

२७५० अेक कागद वाच आप फुरमायो – ठाकुरजी दाढी वाळारो मूडो नही दिखावै ।

२७५१ गुजराती नटणी उमेदी जिणरी जात वडगूजर दे उमट अचळसिंघ घरमे घाली ।

२७५२ गूजरारी नटणी उमेदीनू उमट अचळसिघ खवास किवी जात वडगूजर दिवी ।

२७५३ झामर राड हुई जद सूरजमलजी हरीसिवजी खाटूरो धणी, वातारो धणी इत्यादिक पहोर दिन चढिया काम आय गया सेख वगैर समसत ताप खाय रह गया फेर जग कीधो नही ।

२७५४ झामर राड हुई जद सारा सिरदारारी असवारीमे देसी घोडा हुता उवा खता किवी ।

२७५५ रणमल वीलवै हुवो खावडिया वीलवो छोड गराब वसिया ।

२७५६ रेवासागररै सनान जाता पीपळा दसरावारो प्रबन्ध दीठो जिणसू आने भाई भावनगर दसरावारो वडो उच्छव ठैरायो चारणा-भाटारो समाधान आछी विध है ।

२७५७ वहेडारा धणी राणावत ज्यारी वसावळी लिखते–१ राणो प्रतापसिघ, २ चतुर भुज, ३ महासिंघ, ४ रामसिंघ, ५ अनोपसिघ, ६ सिरदारसिघ, ७ उदैसिघ, ८ वीरमदे, ९ विसनसिघ, १० दौलतसिंघ, ११ हेम राणो धणी है ।

२७५८ सवत १५११ वैसाख वदीमे नीम दिराणी ।

२७५९ जफर यार फीरोज जग ।

२७६० वारू भुटो नगो ।

२७६१ सीराजी लुझा परीरूहा ।

२७६२ सैफ सू घोट तरवार ।

२७६३ हदीक तुलई कालीम ।

२७६४ रतवती गदला नेछ गुजरै गत तत्रैव मृत ।

२७६५ भीवसिंघ कह्यो–प्रतापसिंघजीरे हथाहरी बेटीरा म हाडो व आनै कुळको पडदायतरो रथ खडावसू ।

२७६६ धीराजी बेटो सिवसिंघ सहर जूनागढरा नबावरो हाल देवेजी गुडळवारथो लियो गोपालजी कामेतीरी सलाडी ।

२७६७ नवमा नद नाईसू घर वस रहियो पछै न रहियो ।

२७६८ लिज महासतीरी कोर दरोतरा लोक थळरा सोवै पाण पर मुख कोई विखधर वता न करै ।

२७६९ काळाउवा वड तळाई जठै पोळ माथै चूडोजीरो करेहे सी अजू पुलके ले नही ।

२७७० नेमसुख खवासनु रुको राजा अजवेसादूळ दियो जिणमे अति निर्लज्ज समाचार ।

२७७१ साडा सोडारा मूसा मालारा ।

२७७२ आपो आपी जद वोडा जाळोर भेळायो ।

२७७३ सूजो मूजो हाथी तोगो वाजीसामे सपूत हुवो ।

२७७४ जीवर्णसिघ पाहाड दिली राज कियो ।

२७७५ गाव नजीणरी वेटी राणी रूपादे वाजा परमारा भिळै नदी गोमती राणै ।

२७७६ वखतावरसिघ वडारो भाई रामसिंह ।